चालीस साल बाद

यशवन्तसिंह नाहर

देवनागर प्रकाशन, चौडा रास्ता, जयपुर

प्रकाशक :
देवनागर प्रकाशन
चौड़ा रास्ता,
जयपुर

प्रथम संस्करण :
1986

मूल्य 40/

मुद्रक
एलोरा प्रिन्टस,
जयपुर-302003

I बी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

स्व० पिताजी श्री मोतीलालजी नाहर

को सम्पर्ण

जो पक पकज की तरह रहे ।

—यशवन्तसिंह

इन्द्र सिंह विधान सभा के चुनाव मे जीत गया वह लोकतांत्रिक मोर्चा का उम्मीदवार था चुनाव सभा तिलक चौक म हुई विजय के उपलक्ष मे जुलूस निकला और वह सभा मे बदल गया इन्द्र सिंह के पुत्र महेन्द्र सिंह सज्जन प्रसाद, मोहन लाल ने विजय की खुशी जाहिर की–इन्द्र सिंह की जीत को अभूतपूर्व बताई। सारारा क्षेत्र स अब तक जितने चुनाव हुए उसमे इन्द्र सिंह को सबसे अधिक मत मिले थे और अब तक के चुनाव नतीजो से यह स्पष्ट था कि लोकतांत्रिक मोर्चा–बहुमत मे आ गया और अब भी 50 स्थानो के नतीजे निकलना बाकी है।

महेन्द्र सिंह ने कहा–बन्धुओ ! आपका प्रतिनिधि बडा योग्य, ईमानदार और जनता के हितों का रक्षक है मैं विश्वास करता हू कि आपको मन्त्री मण्डल मे उच्च स्थान प्राप्त होगा और यह हमारे क्षेत्र का गौरव होगा, सम्मान होगा, जय बोलो–लोकतांत्रिक मोर्चे की जय।

और श्रोतागण ने दोहराया–लोमो की जय, लोमो लोकतांत्रिक मोर्चे का प्यारा नाम है।

मेघ मण्डित आकाश के नीचे मौसम सुहावना था आनन्द की लहरिया चल रही थी, खेतों में हरियाली लहरा रही थी।

महेन्द्र सिंह न हाथ हिलाकर सब का अभिवादन किया और मुस्कराते हुए कहा—बन्धुओं अब मैं आपके नेता प्रिय नेता और जनजन के हित चिन्तक श्री इन्द्र सिंह जी से निवेदन करूगा कि वे आपको दो शब्द कह।

इन्द्र सिंह उठा, और हाथ जोड कर गले मे पडी मालाओ को उतारा और बोला––आपका प्यार और सम्मान पाकर मै आज अत्यन्त गर्व अनुभव कर रहा हू। विधान सभा क्षेत्र के 3/4 मतदाताओ न मुझ जसे नाचीज पर विश्वास व्यक्त किया है और एक चौथाई मे बाकी 20 उम्मीदवार है म प्रसन्न हू लेकिन आपने जो प्यार दिया, जो विश्वास

व्यक्त किया उसे मैं निभा सकूं और जन कल्याण मे अपना सब कुछ समर्पण कर सकूं। मुझे अपनी जिम्मेदारियों का ज्ञान है। अपने प्रदेश की 65 प्रतिशत जनता गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जी रही है और मेरे अपने क्षेत्र मे वह सख्या 75 प्रतिशत तक बढ गई है मेरी यह जीत उन गरीब लोगो की जीत है वे मुझ से आशा लगाये बैठे हैं कि मैं उनका हित कर सकूं। भूखे को अन्न नंगे को कपडा और सडक पर जीने वाले को मकान दे सकूं। मैं स्वीकार करता हू कि अब तक जिस दल का राज्य था उसने योजनाओं के द्वारा गरीबी उन्मूलन का महत्वपूर्ण कार्य किया। अनेको कानून ऐसे बनाये जिनसे उनका भला हो लेकिन ज्यो-ज्यो दवा की मर्ज बढता गया, निरक्षरो की सख्या कम नही हुई गरीब गरीब तर होते गए।

और इन्द्र सिंह गरजा, यह सब उन धोखे-बाज नेताओ के भ्रष्टाचार के कारण हुआ जिन्होंने राजकीय सहायता आप तक नहीं पहुंचा कर स्वयं हडप गए, इस चुनाव के पूर्व पाच आम चुनाव हो चुके और पाच बार जो आपका प्रतिनिधि चुन आया वह 5 वर्ष मे अमीर हो गया पक्का आलीशान मकान और आधुनिक सब सुविधाएं, खेत कुएं, कारखानो के वे स्वामी हैं और अगर मैं यह कहू कि वे सब भ्रष्टाचार से करोडपति बने हैं तो मैं कोई ज्यादती नही कर रहा हू—बन्धुओं मैं आज हृदय से विचलित हू। आपके प्यार के झरोखे में खडा होकर आपका सम्मान पाया है और आपने मुझे जिताया इस जिम्मेदारी को मैं नही भूल सकता।

आज मैं आपके सामने कुछ घोषणायें करूंगा और आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि आप आगामी पाच वर्ष मे मुझे मार्ग दर्शन दें, आपकी राय से यदि मैं इन घोषणाओ के अनुरूप काम नही कर सकूं तो मैं आपके सामने स्वयं पद त्याग कर लौट आवूंगा। यह जीत गरीबो की, निःसहायता की जीत है उनकी आहो का करिश्मा है। उन्होंने मुझ में विश्वास व्यक्त किया है कि मैं उनके जीवन मे सुधार लाऊं इसलिए मुझे इस जीत ने यह अहसास कराया है कि यह जीत कांटो का ताज

अरमान के बला मग 1984
पता मो 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मेरे सिर पर रखा गया है और जब तक मैं अपनी घोषणायें पूरी नही कर द तब तक ये काटे मुझे अपनी घोषणाओं की चुभन के द्वारा याद दिलाते रहेंगे

मैं अब उन घोषणाओं का विवरण दू उससे पूर्व एक बार और आपसे कहूगा कि मैं अगर आपके दुख दर्द नही मिटा सका तो मैं स्वयं अस्तीफा देकर आपके बीच मे आ बैठ गा।

तालियो की गड़गड़ाहट से वायु मण्डल गूज उठा। महेन्द्र सिंह उठ खड़ा हुआ, प्यारे दोस्तो—अब आप हमारे नेता की घोषणा सुन लीजिए—और इन पाच वर्षों मे जहा भी हमारा प्रतिनिधि दिशा भ्रम करदे टाग खींच कर नीचे उतार दें—

(1) सार्वजनिक जीवन मे व्याप्त भ्रष्टाचार की समाप्ति के प्रयास।

(2) मैं ऐसा कोई काम नही करूगा जिसमे भ्रष्टाचार की बू आए।

(3) पाच वर्षों मे हर गाव मे 50 कुटुम्बों को गरीबी के स्तर से ऊपर उठाना, उनको छत, कपड़ा रोटी की स्थायी व्यवस्था करना।

(4) हर गाव मे पीने के पानी की सुविधा और सिंचाई के साधन जुटाना व यथा सम्भव सड़कों का निर्माण।

(5) मेरे क्षेत्र मे निरक्षरता का उन्मूलन 50 प्रतिशत, अब तक के आकड़ो के अनुसार यह 30 फीसदी है।

(6) और बन्धुओ मैं आज अपनी सम्पत्ति का ब्यौरा सरपंच महोदय को दे रहा हू, पाच वर्ष मे अगर यह सम्पदा बढ़े तो आप मुझ से छीन लें।

(7) सहकारी संस्थाओं को सुदृढ़ करना।

(8) स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना—सरकारी दवाखाना आयुर्वेद और होमियोपैथी के केन्द्रों की स्थापना करना।

(9) सामाजिक कुरीतियो का उन्मूलन—जो हमारी आर्थिक स्थिति मे घुन लगा रही है।

(10) ऐसे समाज का निर्माण करना जहा ऊ च-नीच का भेद न हो।

बन्धुओ ये मात्र घोषणा नही रहेगी मैं इनके अनुकूल काय करने का भरसक प्रयास करूगा। आप मेरा माग दशन करें और मुझे शक्ति दें कि मैं आपकी सेवा म अपने प्राण तक न्योछावर कर सकू ।

इन्द्र सिंह के हाथ जुड गए, उसकी आखो मे आसू उमड आए, ये आसू हष के, अतिरिक्त वे आसू थे।

श्रोताओ मे अनको की आखें गीली हो गई, ज्यों ही इन्द्र सिंह न भाषण समाप्त किया तालियो की गडगडाहट से आकाश गू ज उठा, लोगो की जय, हमारे नता इन्द्र सिंह की जय।

लोग उठकर अपने अपने घर जा रहे थे, बैठक के कोने पर बैठा रघु चमार उठ नही पाया, रोशन लाल उसके पास मे निकला, भाई मीटिंग खत्म हो गई सब घर जाओ रात के 11 बज रहे हैं। मीटिंग की बिजली गुल हो गयी थी दूर पर खम्भे पर एक बल्ब जल रहा था और अन्धेरे मे जुगनु चमक रहे थे।

रघु चौंका, मुह उचा किया, कौन पण्डित साहब, बोले तो खूब लेकिन बस दूसरे ही दिन भूल जाते हैं कि उन्होंने कोई वादा किया था हा पण्डित साहब ठाकुर साहब की जायदाद का ब्यौरा तो आपने देखा है न, इन दस बातो मे एक बात भी पूरी पटक दी तो और वह ठडी सास लेकर लकडी के बूते पर उठा जय रामजी पण्डित साहब, हजारो वष बीत गए भगवान राम कृष्ण आए और चले गए गरीब गरीब रहा देखें ठाकुर साहब क्या करते हैं। पण्डित रोशन लाल हसा-करना धरना क्या ? आज उफान चढा है कल वह बैठ जायगा, और परसो वह कही नही रहगा, प्याला लुढक पडेगा और वह खाली हो जाएगा उफान किस म आए रघु काका। बस तुम याद करना हम तो मसान के मेहमान हैं लेकिन मेरे पोते की नौकरी लगवा देना 10 वी पास की 5 वष स बेकार बैठा है सब अपने अपने भाग रघु

निराशा स बोल रहा था। इ द्रसिंह घर पहुचा, उसने कपड़े बन्ले, श्रीमती मालती देवी को कहा कि वह भोजन नही करेगा दूध पीकर सोयेगा- गुलाल से सारा शरीर रग गया है—गम पानी मिल जाए तो नहा लू ।

मालती देवी ने दोनो हाथो से साडी का पल्ला पकडकर अपने पति के चरणो मे नमस्कार किया हुजूर, दर्वाजे हाथी हिनहिनाए गे जागीर गयी, कमेटी आई हुजूर आज का दिन भूखे सोने का नही है, कांसा तैयार है बस धनिश्वरी अभी 2 सोयी है वह आनन्द से फूले नही समा रही थी। इ द्रसिंह न विषय के उल्लास मे पत्नि को बाहुपाश म बाध लिया जसे यह उनकी सुहागरात हो।

गरम पानी आ गया स्नान घर मे रखकर नौकर चला गया इ द्रसिंह नहाया, और इस बीच मालती देवी ने बाजोट पर कांसा परोसा, और दाल के हलवे का कुवा इन्द्रसिंह के मुंह में दिया।

इन्द्रसिंह न भी वापिस रानी जी को कुआ दिया।

मालती देवी कह रही थी दाता, राजमाता फरमा रही थी कि बड़े हुजूर के समय जब जग जीत कर पधारना हुआ तो सारा गाव उमड पड़ा था और आज भी सब लोग दाता की खुशी म खुशी मना रह थे, रामू ढोली तो दोह देता हुआ अभी अभी गया है बैठक मे गया सुबह आयेगा उसकी घर वाली का, मगलिक गाने के लिए छोड गया है।

इन्द्रसिंह न म लती के प्रसन्न मुख म झांका वहा आनन्द का साम्राज्य था, उतना ही विराट जितना उनके मन मे था

दूसरे दिन राजधानी स तार आया कि वह शीघ्र पहुंच चूंकि लोगो का स्पष्ट बहुमत था इसलिए म त्रीमण्डल के निर्माण करने क लिए तार आया था, तार में प्रान्तीय मोर्चे क सचिव न लिखा था।

म त्रीमण्डल का निर्माण शीघ्र आए, और गाव मे चर्चा फल गई कि श्री इ द्रसिंह भी मन्त्रीमण्डल म लिया जा रहा है।

तार मिलते ही इन्द्रसिंह ने राजधानी जान की तैयारी करली, और राजमाता के पास गया, चरणो मे सिर देकर प्रणाम किया मातेश्वरी, यह आपका आशीर्वाद था जिसन मुझे जिताया राजमाता

ने दोनों हाथों मे इन्द्रसिंह के चहरे को लेकर उसमे देखा राजमाता की आखें छलक आई ।

केरा पीढियां बीत गई तब यह जागीर मुडकटी म मिली थी-बस इस घराने ने कभी जनता को नही सताया गया न कभी भ्रष्टाचार ही पनपने दिया बडे हुजुर न तो भ्रहलान करा दिया था कि कोई किसी राजकमचारी को अपना काम कराने क लिए पसा न द बस हमारे बाप दादो की लाज रह और हम उन लोगो का काम कर सकें जिन्होंने आप को वोट दिया अपनी सेवा निष्काम हो यही मैं चाहती हू।

इन्द्रसिंह गद्‌गद हो गया उसने विनम्र स्वर म कहा आज वडे हुजुर होते ! जागीर चली गयी लकिन जनता न वापिस राज थमा दिया। मुझे याद है वडे हुजुर किसी का मन नही दुखात थ रघु चमार भीमा भील बखता बलाई और कितने हैं जिनम ठिकाने क रुपय बाकी हैं, उनको बिना लिए फारखती लिखनी । रामराज्य कही था तो यहा था खैर अब जागीर गयी जागीर क हुर गए म आपकी आज्ञा पालन करता रहूगा उसम कभी कोई कमी नही आन दूगा । मैने कल ही जनता को बता दिया अब आशीर्वाद दीजिए कि मैं जनहित म अपने आपको लगा सकू ।

माता का आशीर्वाद लेकर वह अपनी पत्नि के पास गया बस बुलावा आ गया है शायद मन्त्रीपद भी मिले हमारे मोर्चे का स्पष्ट बहुमत हो गया है मैं जल्दी सूचना दूगा ।

इतने मे उनका छोटा भाई भानुसिंह आया-दाता नीचे सैंकडा लोग आ गए हैं वे इन्तजार कर रहे हैं, पहले उनमे मिल लीजिए प्रारम्भ म ही आप मिलने म देरी करें तो लोगो की धारणाए अच्छी नही रहेंगी और भीमपुरा के ठाकुरसाहब बीजापुर क आवन महाराज भी पधारे हैं मैं इनको दीवान खास म ठहरा आया हू, आप झरोखे नही नीचे पधारें मैं मेहमान खाने म जाता हू और इन्द्रसिंह सीढिया उतर कर नीचे चला गया । गांव के महाजन ब्राह्मण राजपूत दरोगा भाट चमार सब जाति के लोग प्रतीक्षा म खडे थ रामू नाई ने मोहरा बोला

प्रस्थान (क । मयह 1984)
ना मी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भ्रौर कहा हुजूर करोड दीवानी राज करे राजा राज करेगा, जनता का बनकर हुजूर सब लिहाज से योग्य हैं।

सब लोग इक्टठे हो खडे हो गय।

महेन्द्र सिह न कहा—हमारा प्रतिनिध मन्त्री बनकर लौटेगा, सबन घोष किया लोमो की जय हो हमारे नेता अमर हो।

इन्द्र सिंह ने हाथ जोड कर कहा—आपके प्यार ने मुझे जिताया आपका प्यार ही मुझे आगे बढायेगा लकिन मेरे लिए सबसे बडा काम होगा मर क्षेत्र मे व्याप्त गरीबी निरक्षरता रोग व्याधि मुझे बल दीजिए कि म आपका चुना हुआ प्रतिनिधि हू तो मैं उस गरीबी का शिकार हू जो यहा है। मैं उन सब रोगो से स्वय बीमार हू जहा मेरी ही काया बीमार है, म इन सब व्याधियो से ग्रस्त हू जिनमे हमारे मतदाता सलग्न हैं, मुझे मन्त्री पद मिले न मिले यह गौण है बस मैं नि स्वाथ भाव से अपने मतदाता की सेवा कर सकू, यही मेरी कामना है।

रघु चमार लकडी के सहारे खडा था उसन लकडी हाथ मे रखे ही कहा—हुजूर मेरा लडका दसवी कर चुका है हुजूर की कृपा होगी तो—

इन्द्र सिंह—रघु भाई तुम्हारे लडके की नौकरी लगाना मेरा काम है और भगवान स प्रार्थना करता हू कि तुम्हारा लडका ही नही कोई पढा लिखा लडका बेकार न रहे यह मेरा प्रयास रहेगा, म कितनी सेवा कर सकता हू यह आपके आशीर्वाद पर निभर करता है, क्योकि जीता मैं नही आप जीते हैं, कल कोई पद मिला तो वह पद आपका होगा और मै तो भगवान राम की पादुकाओ को सिंहासन पर रख कर भरत की तरह रहना चाहता हू ये पादुकायें मेरे मतदाता की होगी मतदाता की बात मानकर चलना मेरा काम है सावजनिक काम को लेकर मैं आपकी सेवा म उपस्थित रहूगा।

पण्डित रोशन लाल न कहा—हुजूर हमारे पहले नुमाइन्दे है जिन्होन त्याग और निराभिमान की बात कही है राजधानी से मन्त्री परिषद् म लेने के लिए आपके पास तार आया है।

इन्द्र सिंह ने सहज बनते हुए कहा--नहीं यह सच नही है हमारे मोर्चे के सचिव ने तार भेजा है कि म जाऊ और मन्त्री परिषद् बनाने मे उचित सलाह दू मेरा मन्त्री बनना न बनना गौण है पण्डित साहब यह क्या कम है कि मैं इतने अधिक मतो से विजयी हुआ हू।

सेठ हरिराम का लडका मदन लाल आगे आया, लीजिए माला पहनिये, आज से ही आप हमारे मन्त्री हो गए।

उपस्थित जनता न जय जय कार के नारे लगाए।

इन्द्र सिंह वापस सीढियां चढ कर दीवान खास मे आए जहा आयस जो एव ठाकुर साहब उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

ठाकुर साहब ने आगे बढकर इन्द्र सिंह को गल लगाया, आयस जी खडे हो गए--जिनको इन्द्र सिंह ने दोनो हाथ जोड कर प्रणाम किया--आयस जी से आशीर्वाद मागा गया, और आयस जी न अपने गुरू को प्रणाम कर कहा--मोतियो क आखे चढे यही मेरा शुभ काम नाथ है प्रभु आपको इज्जत दे आयस जी ने विदा ली।

बीजेपुर के ठाकुर न मुस्करा कर कहा-- -

आप मुख्य मन्त्री बनकर लौटें ताकत हाथ मे है क्षत्र की सेवा मन्त्री बनकर कर सकते है मात्र विधायक रहकर नहीं।

आप चाहें तो मैं भी चमू मोर्चे के विधायकों स मेरा अच्छा परिचय है और अगर आप मुख्य मन्त्री नही बने तो जो भी मुख्य मन्त्री बनेगा हमारा व्यक्ति होगा।

इन्द्र सिंह ने हाथ जोड कर कहा--हुजूर पधारें।

और ठाकुर साहब बीजेपुर ने कहा--तो मैं चलता हू मैं सीधा राजधानी पहुच जाऊ गा।

इन्द्र सिंह ने ठाकुर साहब स क्षमा मागी कि उन्हे इन्तजार करना पडगा न केन्द्र के मन्त्रीगण स तो आपका परिचय है।

ठाकुर साहब ने कहा--है, खूब है बस आप पधारें मैं भी आता हू मन चाहा कर सकें ऐसी आशा है।

इन्द्र सिंह गद्गद था ठाकुर साहब नीचे गये इन्द्र सिंह भी

प्रस्थान (कविता ग्रह 1984)
बी 50 गौरनगर सागर विश्वविद्यालय, सागर--470003

उनके साथ साथ नीचे गया ठाकुर साहब बीजेपुर को कार मे बिठाकर वे लोटे एक बार मा के चरणों म फिर प्रणाम किया फिर रानी जी के पास गये और उनको बाहो मे भर कर उनके ललाट का चुम्मन लिया राणी जी ने उनके चरणो मे झुककर प्रणाम किया।

और वे रवाना हुए, जनता जुलूस मे बदल गयी, और गाव के किनारे तक उन्हे छोडने गए, गदगद इन्द्र सिंह जी के मन मे वह प्यार हिलोरे ले रहा था। मतदाता चाह रहा था कि उनका प्रतिनिधि मन्त्री बने और अपने क्षेत्र की अधिक से अधिक सेवा कर सके।

उमडे गाव को गाव के छोर से विदा दी, लगभग 2–3 हजार पुरुष और स्त्रिया थी स्त्रिया विदाई के गीत गा रही थी।

राम ढाली ने दोहा किया हमारे हुजूर राज के दीवान बनेंगे— और इन्द्र सिंह इतने बडे प्यार और सम्मान से सम्मोहित थे कि उनकी आखें उमड पडी थी।

बस वे कार म बैठ कर जा रहे थे उन्होने अपने पिता का राज्य देखा है, नरम मधुर और जब उनके पिता स्वय निर्णय करने बैठन उस वक्त गाव क 5 व्यक्तियो को बुलाकर उनकी राय मांगते और उस राय के अनुसार अपना निर्णय देत।

उनके ठिकाने मे अकाल का काम चला जिसे वे स्वय देखभाल करते थे अनाज का सही वितरण कराया अपने ठिकाने म स्कूल खोले और अस्पताल की स्थापना की।

इन्द्र सिंह जी कार मे बठे थे उनके विचार चल रह थे क्या वे पूरे निस्वार्थ से जनता की सेवा मे नही लग सकते, क्या अपने बाप के बडप्पन को नहीं निभा सकत ठाकुर साहब बीजपुर उनको म त्री बनाने म मदद देंगे, तब ठाकुर साहब की उचित अनुचित बातें भी मानना पडेगा—भूमि सुधार का काम पूरा करना है, क्या ठाकुर साहब जैसे अनेक जागीरदारों के हित म वे गरीबों को भूल जायेंगे ? ठाकुर साहब बीजेपुर का ठीकाना सदव डाकुओं का सरक्षण रहा है, यही नही इस पीढी के कई लोग स्वय डाकू रहे हैं आजादी के बाद वे सदैव सत्ताधारी

पार्टी के मनमाने काम कराते रहे है और यही नही स्वय काम कराने की एवज मे रिश्वत खाते रहे हैं, उन्होने गलती की कि उसे राजधानी बुलाया।

लेकिन-- क्या भावुकता मे ही उन्होंने 10 सूत्र रख थे क्या वे उनका अनुपालन नही कर सकेंगे क्या वे मात्र घोषणाएँ रह जायेंगी क्या भ्रष्टाचार म स्वय लिप्त नही हो जायेंगे ?

वे मुस्कराए---त्यागी साधुओ की कमी नही ढोगी राजनेताओ का बाजार गरम है। कल सोमपुर के ठाकुर आए थ, उन्होने एक ही बात कही--बस अपना घर खाली मत रखना, 5 वर्ष बाद चुनाव आते हैं चुनाव लडने के लिए पसे चाहिए अमीर उद्योग चलायेगा---मुनाफा कमायेगा उसमे से वह देता है तो क्या पाप है। आप राजनीति म घुस पड तो कार्यकर्ताओ का पेट भरना होगा।

और इन्द्र सिंह उस वक्त भी चौंका था और अभी भी चौंक पडा जसे नींद से उचट गया हो सीधा बैठा ड्राइवर से कहा---जरा तेज चलाओ सन्ध्या होने से पूर्व हम पहुंच जायें।

ड्राइवर न गदन हिलाई, और चाल तेज कर दी।

हवा के झोंको से इन्द्र सिंह के बाल लहरा रहे थे, कभी पीछे कभी आगे पडते। आस पास के खेतो म फसल खडी थी, पीले श्वेत और श्वेत फूल खिल रहे थ। गाडी गाव क बीच से गुजर रही थी। कई निम्न वर्ग व्यक्ति उठ खडे हुय और झुक कर इन्द्र सिंह को प्रणाम किया--- उनके शरीर पर अगरखी फट रही थी धोती घुटनो तक बांध रखी थी और पीछे उसका टाढा हो गया था।

इन्द्र सिंह ने कहा---ठहरो।

वह रुक गया---आस पास के लोग उमड आए और गाडी से दूर खडे हो गये।

इन्द्र सिंह गाडी से नीचे उतरा, 50 घरो का गाव---सब कच्चे कवेलू छाये घर बस एकाध के पौर थी और पक्के रहने के मकान थे बनाया सब एक घर की बस्ती थी।

प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
1 सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर---470003

ओर स्वागतकर्ता मन्त्री न गत 5 वर्षों म इन्द्र सिंह को खूब सहायता दी थी, उसक भूमि सीमा के मुकद्दमा को निपटाया था तथा उनके कहने से 4–5 व्यक्तियो को नौकरिया दिलाई थी।

इन्द्र सिंह को इस वक्त मुख्य मन्त्री के यहा जाना अच्छा नहीं लगा लोकतान्त्रिक मोर्चे के लोग यहा कहीं दिखाई नहीं दि। क्या पहले ही कदम म उनके पैर लडखडाऐंगे।

उसन हाथ जोडे लेकिन मन्त्री महेश्वर प्रसाद न कहा–य आपके मोर्चे का विधायक है आपको मुख्य मन्त्री जी से मिलाने में अब तक आपका ही इन्तजार कर रहा था।

मन न होते हुए भी वह मन्त्री महोदय के साथ मुख्य मन्त्री निवास पर गया जहा मुख्य मन्त्री महोदय मोर्चे में खडे प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्होंने एक के बाद एक को गल लगाया और फिर बैठक में ले गये– भोजन तयार है बात करेंगे।

इन्द्र सिंह ने कहा–हा थोडा पानी मुह पर लगा दू और उन सबने मुह धोया फिर भोजन कक्ष म पहुचे 10 बज रहे थे।

इन्द्र सिंह के मुख्य बगने म और बकाया पाच की स्वागत कक्ष म ही ठहरने की व्यवस्था थी।

भोजन कर मुख्य मन्त्री इन्द्र सिंह जी को अपने निजी कक्ष म ले गये।

आपको दलगत सख्या का पता होगा। इन्द्र सिंह न कहा—हा हमारे मोर्चे के 128 हैं और आपक 100, बकाया निदलीय एव अन्य दल के हैं।

मुख्य मन्त्री हसा–उसकी हसी मे एक आकर्षण था परन्तु यह सख्या तो बदल गइ आपके दल के 100 रह गये 28 व्यक्ति मेरे दल मे आ गये और उसम से 20 व्यक्तियों न आज घोषणा करदी बकाया 27 व्यक्तिया न भी जनतान्त्रिक दल की घोषणा करदी कि उनका समथन मुझे मिलेगा और वे ज द के सदस्य माने जाए, मैंने तय किया कि आप उप मुख्य मन्त्री बनेंगे और जो विषय आप लेना चाह वे सब आप ल सकेंगे।

प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
१ मी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

इन्द्र सिंह के गले म अवरोध लगा उसकी जबान रुक गई, वह जैसे शून्य मे झूल रहा है किसी अदृश्य रस्सी को दोनों हाथो से पकड कर लटक रहा है, सारा व्योम श्याम हो गया है, एक भी नक्षत्र नजर नही आ रहा है, नीचे सूनी उजडी बस्ती नजर आ रही है जहा एक भी मानव या पशु नही दिखाई दे रह हैं।

मुख्य मन्त्री कहे जा रहे थे, भाई साहब, मैंने चुनाव म ही तय कर लिया था कि आप हमारे दल म शरीक हो जायेंगे, मुझे विश्वास था कि हमारा दल बहुमत म आयगा, नही आया लेकिन हमारा 5 वष का शासन जनता को मन्त्रमुग्ध कर गया कि लोक कल्याणकारी काय में हमारा दल पीछे नही रहेगा।

इन्द्र सिंह भकड गया हो, बस एक ही शब्द बोल पाया, मैं अपने मोर्चे के लोगो से मिल लू।

मुख्य मन्त्री बोला—कल नए नेता का चुनाव होगा अभी विधान सभा सचिवालय और राज्यपाल महोदय को हमारे बहुमत का पत्र भेजा जायेगा।

इन्द्र सिंह के जसे होश खो गय, मैं बाद म आजाऊ तो।

मुख्य मन्त्री ने कहा—नही, आप पर तो मेरा अधिकार है बताइये चुनाव मे चयन हुआ तब भी मैंने आपको अपने दल का उम्मीदवार बनाना चाहा था और घोषणा भी करदी लेकिन आपने ही लोमो की सन्स्यता स्वीकार की है। कल नेता म चुना जाऊगा। इस वक्त आप सहित हमारे दल की सख्या 155 है। आपके मोर्चे के अधिकाश सदस्य हमारे साथ हैं। ठाकुर साहब बार बार अवसर नही आते यो आप घर के सम्पन्न हैं, लेकिन चुनाव म जो खर्चा हुआ वह क्या 5 वष की वेतन से भुगतान हो सकता है आपके मोर्चे न मुझे नही मालूम क्या दिया।

इन्द्र सिंह ने कहा—चुनाव बडा खर्चीला हो गया। सही यह है कि गरीब चुनाव नही लड सकते। मुझे मोर्चे से भी कुछ नही मिला कौन देता यहो नही मेरे अतिरिक्त एक विधायक का व्यय भी मैंने किया है।

वही तो मै कह रहा हू—जनता के कल्याण क लिए चुनाव लडे

ग्रौर गाठ का गोपा च न लगाय, यह कम होगा, मुझे मालूम है ग्रापके यहा धन की कमी नही है लेकिन लुटाने के लिए तो नही है म समझता हू ग्रापका एक लाख स कम व्यय नही हुग्रा होगा।

इन्द्र सिंह हसा–सर 1 लाख से क्या होता है यह तो हमारे ठिकाने का प्रताप है कि लोगो ने बहुत बडा बहुमत दिया कुल पडे मतो मे 77 प्रतिशत मुझे मिले हैं।

वह तो मैं जानता हू–बिना पसा खच किए एक पग भी नहीं धर सकते कायकर्ता को पसे चाहियें, साधारण मतदाता भी ग्रब लोभी होता जा रहा है मुझे पूरे 2 लाख रुपये खच हुए है।

इन्द्र सिंह–हा ग्राप सही फरमा रहे हैं मेरे मुकाबले ज दल का उम्मीदवार लडा बुरी तरह हारा उसके भी एक लाख से ग्रधिक खच हो गया।

मुख्य म त्री ने मुस्करा कर कहा–तो ग्रापके तो 2 लाख से कम खर्चा नहीं हो सकता–देखिये ठाकुर साहब ये बडे बडे सेठ ब्लक कर रहे हैं जिसे लाख कानून पास करो ग्राप उसके पलाव को रोक नही सकते, शायद यह ऐसी बीमारी राष्ट्र को लगी कि जो बइलाज है तब हम सब ने मान लिया कि इस काले धन को चुनाव मे खच कर ग्रच्छी शासन व्यवस्था लाई जाए राज नेता भले ही चिल्लाए लेकिन काले धन से ग्राप गरीब की हानि नहीं करते उसका गला नही काटते, उसकी रोटी नही छीनते। ग्रमीर 1 करोड का काला धन इकटठा करता है उसमे मे 10 लाख देता है हम राजनेता को ग्रौर ठाकुर साहब मने ग्रब तक चुनाव के ग्रतिरिक्त इस रकम का कही उपयोग नही किया घर म कह रखा है कि इस पसे से ग्रन्न का एक दाना भी नही मगवायें ग्रन्यथा शरीर म फफोले उठेंगे ग्रौर चुनाव के लिए तो पैसा चाहिय वह कसे ग्राए–

इन्द्र सिंह के पास इस तक को काटने का कोई ग्रस्त्र नहीं था वह मौन मौन खडा सुन रहा था।

तो फिर सुबह बात करेंगे ग्राप भी पोढिय म तो गत एक माह से नहीं सो पाया हू ग्राज पहली रात है जब सो सकू गा।

ग्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
1 सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

साहब न तो आपके भविष्य की बागडोर मुझे सौंपी थी, सच म अपने मोर्चे से आपको कभी नहीं छोडता, लेकिन जो हो गया सो हो गया और सच बात यह है कि दोनो राजनैतिक दलों की विचारधारा मार्ग निर्देश और ध्येय मे क्या अन्तर है ? हमें जनहित म लगना है, लोगों की समस्या हल करना है हर गाव म सिंचाई-सडक पहुंचाना है और ग्राम जन की आर्थिक उन्नति करना है ये रुपए अन्दर रखिए आखिर आपके ऊपर मेरा भी कोई उत्तरदायित्व है ।

इन्द्र सिंह-आपके थूके को चाटने का साहस मुझ म नहीं है राजमाता ने भी यही कहा था कि मैं पहले सीधा आपके दर्शन करू बस मेरी ही झिझक थी सयोग ही ऐसा मिला कि हमारे दल का कोई व्यक्ति नहीं मिला अब म आपके साथ हू ।

मानव कुमार-तो विश्वास कीजिये मैं कभी आपका अहित नहीं करूंगा । सत्ता की राजनीति म सत्ता है उसको वरण करना पहला काम है, और आप जसे निष्ठावान सम्पन्न व्यक्ति के लिये अधिक सेवा के अवसर हैं कोई भूखा नगा होता तो सेवा करने म भी वह यही करता कि पहले अपना पेट भरता-दलबदल के लिये कोई नियम नहीं है न कोई कानून, लोकसभा या अन्य कोई राज्य इस पर कानून नहीं बना सके । जम्मू कश्मीर राज्य ने अलबत्ता कानून बनाया है लेकिन मैं सोचता हू वहां की स्थितियों से वह सत्तादल के लिये हितकारी है । लेकिन कभी कानून को चुनौती दी गई तो वह अवध हो जायेगा, सच ठाकुर साहब क्या ऐसा प्रतिबन्ध लगाकर आपकी आजादी पर अतिक्रमण नहीं है । सदन म बठे हो आपका दल एक कानून बनाता है, आप उसे आवश्यक नहीं मानते, यही क्यों आप यह मानते हैं कि यह कानून सावजनिक हित पर कुठाराघात होगा लेकिन आपको विधान सभा म बठकर अपने दल के साथ मन के विरुद्ध मतदान करना पडेगा क्या आपके लिए कह देना बुरा है ? लेकिन पालन करने का प्रश्न आयगा तब दुरूह होगा । तो मैं चलू मैंने राज्यपाल को सदेश भेज दिया है कि मेरे पास 147 सदस्य है स्पष्ट बहुमत-मैं आज्ञा से मिल लू ।

मानव कुमार चले गए, इन्द्रसिंह अपने कक्ष म अकेले रह गये इस सूनी

प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
ना मो 50 गौरनगर सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

घोषणा, तिलक चौक के वातावरण म की गई प्रतिना-क्या म एक ही भटके मे उलट गया हू ? लेकिन दस सूत्री कायक्रम म तो एसा कोइ नही है जो दल बदल के कारण अनुपालन न हो सके, और ग्राम जनता स इस सब का क्या लेना देना व मुझे जानती हैं और जब म उनके विकास कार्यों म योग दूगा, सारे क्षेत्र का विकसित करन म अपना योगदान करूगा तो फिर क्या रह जायेगा यही सयोग ही तो है जो होना होता है वह होना है, और इस मे कोई अनुचित नही है इन्द्रसिंह हसा और चाय पीकर टटटी चला गया ।

जनतान्त्रिक दल क मानवकुमार को विधायको की परेड म बहुमत होन से म त्री मण्डल निर्माण करने क लिये राज्यपाल न बुला लिया, मतदाता क मत का मूल्य निवाचित प्रतिनिधियो ने बदल दिया ।

मानवकुमार क बगले क बाहर लोको दल के पक्षपाती लोगा न नारे लगाये पत्थर फेंके, गालियां दी, पुलिस ने लाठी चलाई, भगदड मची कुछ गिरे पडे कुछ के चोट आई ।

अखबारो म मानवकुमार की तस्वीरें छपी दोना तरफ स एक ओर मानवकुमार की योग्यता के गीत गाए गये, दूसरी तरफ उस पर दल बदलुओ को प्रोत्साहन देने के आक्षेप लादे गय-मतदाता हमना हुआ देखता रहा-

और म त्री मण्डल का निर्माण हुआ । मानव कुमार मुख्य म त्री और इन्द्र सिंह उप मुख्य मन्त्री बने इस तरह अन्य निदलीय एव दलो क प्रतिनिधियो को मिलाकर फिलहाल 10 सदस्यीय म त्री मण्डल बना ।

इन्द्र सिंह ने लौट आकर अपने क्षेत्र का दौरा किया, कुछ काय कर्ताओ ने उसका साथ दिया कुछ ने उसके विरोध म सभा की और इन्द्र सिंह को बिका हुआ बताया गया ।

इन्द्र सिंह के सम्मान मे नागरिक अभिनन्दन किया गया-इन्द्र सिंह ने कहा बन्धुओ मैने आप स 10 प्रतिनाए की हैं मैं सोचता हू उनकी पूर्ति क लिये जनतान्त्रिक दल का साथ लेना पडा ताकि म अपने क्षेत्र का विकास कर सकू, मेरा अपना कोई स्वाथ नही था ।

श्रोताओं में एक आदमी उठा—और मुख्य मन्त्री जी ने आप को 20 लाख रुपये दिये और आपको खरीदा गया।

इस पर महेन्द्रसिंह उठा उसके हाथ परों में तनाव था, जबान में लोफी—ठाकुर 20 लाख में अपनी इमानियत बेच दी मतदाताओं को धोखा दिया, तुम चोर लफंगे हो जब स्वयम ही बिक गए तो 10 सूत्री कार्यक्रम को क्या आगे बढाओगे इन्द्र सिंह मुर्दाबाद, लोकतांत्रिक मोर्चा जिन्दाबाद ज दल मुर्दाबाद। तुम चोर हो गुण्डे हो बदमाश हो, तुम्हारा कोई भरोसा नहीं करेगा एक दिन जनता के कठघरे में तुम्हें खड़ा किया जाएगा जहाँ तुम्हारा कोई बचाने वाला नहीं होगा।

इतने में पुलिस आई और महेन्द्र सिंह के दोनों कन्धे पकड़ कर उसे बाहर ले जाने लगे, श्रोताओं में क्रोध उमड़ पड़ा व चिल्लाने लगे चोरी और सीना जोरी ऐसे कितनों को गिरफ्तार करते हैं, यह मंत्री बनकर क्या भला करेगा जो रुपयों में बिक सकता है, उसको क्या कहा जाए?

लोगों में भगदड़ मच गई वे पत्थर धूल फेंकने लगे पुलिस लाठी चलाने लगा आखिर सब तितर बितर हो गए इन्द्र सिंह पुलिस की सुरक्षा में अपनी मोटर में बिठाया गया और वह सीधा गाव छोड चला गया।

रघु चमार ने रोशन लाल को पूछा क्या हुआ, कल हम सबने अपना वोट देकर इनको जिताया था और अब हम उसको मारना चाहते हैं वे कुछ कहने के लिए पाये थे कहन तो देते। रोशन लाल पण्डित ने जनेऊ खींच कर कहा रघु!

तुम्हारे ठाकुर ने अपने आपको 20 लाख में बेच दिया तुमने मत दिया और वह तुम्हारे मत को भूलकर भाग गया, ऐसे आदमी का क्या किया जाय!

एक तरफ से ठाकुर खड़ा हुआ दूसरी पार्टी की तरफ से मेवा राम हम सबने ठाकुर को वोट दिया ठाकुर वोटों को पी गया, कुछ भी शेष नहीं रहा और दूसरी पार्टी में जा मिला, उसकी कीमत के 20 लाख रु दिए।

अहसास (कविता संग्रह 1984)
मी.50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

रघु चमार हँसा बहुत जोरो से हँसा क्या कहते हैं पण्डित साहब 20 लाख रुपये ! ऐसा गधा कौन है जो इनको 20 लाख मे खरीदे न खाने के काम का न पीने के काम का अरे ठाकुर साहब गन्ह होते तो 200) रु घोड़े होते तो 2000) रु, हाथी होते तो अजी अभी इस महगाई म कौन खरीदता और खिलाता क्या ? रघु ने दोनों हाथ जोड़े पण्डित साहब 2000) रु मुझे भी दिला दो मैंने अपनी जात के पूर के पूरे वोट इनको दिल ए हैं लेकिन अगर बिका तो यह काम अच्छा नही किया।

रघु, जमाना बदल गया है, जितना बड़ा होगा आदमी उतना ही अधिक चोर डाकू होगा आज राजा हो या सेठ अधिकारी हो या नेता सब अपना ईमान बेच चुके हैं, वे कोरे हो गए, अच्छा हुवा हमारे ठाकुर को बोलने नही दिया। अगर पुलिस का पहरा नही होता तो ठाकुर गोकन के देह पहुँच गया होता।

रघु–लेकिन इसको इतने म खरीदा किसने और उनके पास इतने रुपये कहा से आए ? पण्डित रोशनलाल हँसा- अरे रघु हमने तो 2 हजार रुपये नही देखे हमारे बड़े मन्त्री जी ने और सेठो से रुपया लिया और इन मेम्बरो को खरीदने मे खर्च किया ताकि वे मुख्य म त्री बने रहे और रिश्वत खाते रहे घर भरते रह और जब म त्री नही रहे तो करोडा रुपये के काले धन पर साँप बनकर बठे रहे।

सोहनगढ़ से मेरा ममेरा भाई रामू चमार भी खड़ा हुआ है उसको भी मिले होगे। पण्डित रोशनलाल उसकी औकात के अनुसार जरूर मिले होंगे लाख दो लाख मे तो कोई कसर नही समझो, वह किस पार्टी का था ?

यह तो नहीं मालूम है लेकिन ठाकुर साहब और रामू एक ही पार्टी के थ।

रोशन लाल न तानी चोटी तो पाँचो घी मे समझे नही नहीं तो 2 लाख से नीचे तो क्या गया होगा ! यह ठाठ देखो ठाकुर साहब मन्त्री भी बन गए और 20 लाख भी हड़प गए जो जितना बड़ा उतना

ही ज्यादा कीमती होगा। अभी देखना 5 वर्ष बाद ठाकुर साहब, करोड पति और फिर चुनाव की तयारिया यही तो सच्चाई है। वह जोर से हसा और रघ को कहा हम बन गए सभा मे सुनने आए और मार खा लौटे। महन्द्र सिंह जी ठाकुर की वहा पिटाई हुई कि अभी कई दिन तक खाट मे पडा रहेगा और जेल की मार खाएगा, वह आया मैने कहा कि ठाकुर म त्री जी का साथ दो, चोर हैं वे, तुम उस चोरी का हिस्सा बनाओ डाके डाले तो धन मिले उसम अपना भागीदारी कायम करलो लेकिन ठाकुर है कि जिद पर अडा रहा, नही माना सो नही माना।

रघु ने पण्डित जी की तरफ देखा और पण्डित जी आप !

म न राई म न दबाई मे म क्या बुराई मोल लू और क्यो म त्री का कोप भाजन बनू मैं तो आज दूर खडा मजे देखता रहा, मुझे क्या लेना देना नौतन नौ दिन का सब भूल जाए गे और ठाकुरा के पायो पर पर्दा पड जाएगा तब कोई परमिट लू गा रघु और लाखो कमाऊ गा नही तो ये स्साले चोर सरकारी कमचारी इनसे पैसे लेऊ गा और तबादिले कराऊ गा।

खुद खाते हैं और नताओ और कायकर्ताओ को खिलाते हैं बस अच्छा धधा है रघु देख रघु तू भी मेरे साथ आ जा, सरकारी विभाग से लाखो करोडो रुपय मिलते हैं स्साले गरीबी दूर करने चले।

रघु बता तेरी जात के कितन आदमी पैसे वाले हुए हैं क्या एक भी आदमी ? फिर भी म त्री मण्डल योजना बना रहा है रघु तुम गरीबा के लिए या इन नेताओ का पेट भरन क लिए तू ता जोरावर सिंह को जानता है क्या खूब सेवा सहकारी समिति बनाई खुद सचिव बन गया, रुपय पूरे अढाई लाख उठाए, और फर्जी अगूठा की निसानियो की और सब रुपया खा गया। एक भी जरूरत मन्द को पता नही मिला और सर कारी मशीन इतनी घटिया कि वह चलती ही नही।

रघु अर हमारे चमारो की सेवा सहकारी और चम उद्योग सह कारी समिति बनी, इसी में 4 लाख रुपए आया, खा गया और अपने औरो के नाम पर उन रुपयो से व्यापार कर रहा है। क्या जो सरकार इन पर गबन का मुकद्दमा नहा चलाएगी ?

प्रस्थान (कविता सग्रह 1984)
ई क्वा.50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

बेवकूफ कहो या लोकतन्त्र हो या जनता मोर्चा हो दल सब के कार्यकर्ता है, उनकी रोटी की व्यवस्था करना है,पेट पालना है, बड़े नेता बड़ो से खाते हैं ये गरीबो का हिस्सा खाते है और सुना है सरकार उन सब को कर्ज से मुक्ति दे देगी और जेल नही भेजेंगे।

अरे जेल क्या भेजेंगे मनख मारे तब भी नही मनख का खून चूसे तब भी नही तू तो देवी सिंह को जानता है न ?

हां हुजूर जानता हूं उसी सहकारी समिति के 2500) रु मेरे खाते में निकाल रखे हैं मैने एक पैसा भी नही देखा।

पण्डित साहब डर लगता है राज के बड़े हाथ वसूली करने आते हैं तो घर का एक एक कण बिखेर देते है मेरी बहू की गले की हंसली निकालने लगे नहीं निकली तो हथौड़ा दे मारा वह उसके गले पर पड़ा और वही ढेर हो गई पण्डित साहब न रुपए लिये न कभी दस्तखत किए ये जम के दूत गरीबो का भला करते है या सत्यानाश।

पण्डित साहब हँसे–अरे रघु तू मेरे साथ लगजा खूब मौज मारेंगे, गरीबा की गरीबी कौन बन्द कर पाए हैं ? दुनिया में एक भी उदाहरण नहीं मिलेगा बल्कि वे गरीबी से छूट गए जो गरीबी को चूसते है पहले ठाकुर और बनिया चूसता था अब ये नेता चूसते हैं। मैं अपने घर की नयी मालिक से पूछ लूं।

क्या नयी शादी करली ?

एक बार हो गया पण्डित साहब, हम नातायत ठहरे, औरतों को खरीदें तो मिलती हैं अब तो ठाकुर राजा, नेता सब ही खरीदे जाते हैं पण्डित साहब मेरे घरवाली बड़ी चतुर है धर्मात्मा है।

सच्च बात यह है कि कभी कन्जरो की तो कभी बलाइयों की, कभी बागरिया की तो कभी सांसावेलिया की कभी चमारो की सहकारी समितिया बनाए गे उनके नाम पर पैसा आएगा हम देवी सिंह नही बनेंग आधा दंगे पूरे की रसीद लेंगे खुले बाजार में ऊपर से 2 गवाही अलग–अरे पुलिस हाकिम क्या मुकदमा चलाए गे ये दुनिया मक्कारो

की दुनिया है हम मक्कारी नही कर रह हैं। बस चोरी स डकैती स, और तस्करी मे पैसा इकठ्ठा होता। है क्या सच्ची कमाई कर कोई लखपती बना है ? पण्डित जी गम्भीर हुए और बोलते गए, पूछने रघु। अपनी नयी घरवाली से लेकिन जोरू का गुलाम मत हो जाना वह इन बातो मे क्या समझता है ? देख रघु ! सेठ कल्याण मल मोहन राम को तू जानता है जो दप हुए लोटा डोर लेकर कलकत्ता गया आज वह करोड पति है कम ? न व्यापार न उ धा बस दलाली करता है परमिट लाइसेंस की और अधिकारियो को ओग न दता है। उसमे खा जाता है बस जितने का परमिट उस पर 50 प्रतिशत उसका खरा–औरत क 100 रु तो 20 वह रख लेगा, रोज की आय पूरी होने पर राह चलत व्यक्तियो के साथ घूमता फिरता है उनके काम मन्त्रियो स करवाता है उसकी फीस एव खर्चा अलग। म त्री बडो से लते हैं और छोट स छोटा कायकर्ता छोटे से लता है कोई बाकी नही बचा है मन्त्रिया के ग्लान बढ रह हैं और भ्रष्टाचार इतना अधिक व्यापक हो गया है कि जसे वह तो कानूनी फीस है कोई लत दत हिचकता नही।

रघु लेकिन पण्डित साहब मै यह सब कसे कर पाऊगा, मेरी जाल मे कौन चिडिया फसगी ?

अर शुरू कर सहकारी समितिया बनान स–बस लोगो क काय पर अगठ लगवाल फिर जब बक रुपये दे तो अपना पूरा कमिशन अर सब हो ऋण क रुपए खा जाए तो इस राज म कोइ पूछन वाला न हो है, योग्य विधायक म त्री से मुह लगाई होनी चाहिए वह सब म बना दगा।

जमा म पता हुवम बस पण्डित साहब मैं गरीब ठहरा, बड चार नहीं फसत छोट फसने हैं लेकिन आप तो मेरे साथ हैं वह हसन लगा और पाव लागणा कर अपने घर की तरफ गया।

अपने ही गाव म दलबन्दुपन पर धिक्कार खाकर जब इ द्र सिह राजधानी लौटा तो उसने मुख्य म त्री को सारे काण्ड स परिचय कराया और बाद म आकर पुलिस भाई जी पी को बुलाया। मह द्र सिंह–

करवान (कविता संग्रह 1984)
बी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मोहन सिंह, ताराच * सुन्शन देव जो लोकतान्त्रिक मोर्चे के कार्यकर्ता थे और तहसील के प्रमुख मोर्चा अधिकारी थे, को गिरफ्तार कर मुक़दमा चलाने को कहा।

आई जी पी सुन्शन सिंह ने कहा सर अच्छा हो इस घटना को लेकर मुकदमा न चले अन्यथा वार पर प्रतिकार और फिर प्रत्युत्तर चलता ही रहेगा जिसका कही अन्त नही होगा। मेरे पास थाने से प्रतिवेदन आया है उससे तो किसी तरह का मुकदमा नही बनता फिर भी आदेश होगा तो अवश्य मुकदमा चल सकेगा। इन्द्र सिंह क्रोध मे था उसने मुख्य मन्त्री से कहा इतना बडा अपमान अपने ही साथियो के हाथो मैं बरदास्त नही कर सकता, यदि मुकदमा नही चला तो मुझे अस्तीफा देना पडेगा यदि मैं राज्य मे नही होता तो सर, वही एक दो को निपट लेता फिर चाहे मुझे जेल जाना पडता आई जी पी साहब थानेदार, मोहन सिंह जी का भानजा है महेन्द्र सिंह और मोहन सिंह ही तो प्रमुख थे जिन्होंने विरोध किया मैं सारे गाव को घसीटना नही चाहता। ये प्रमुख व्यक्ति यदि सबक सीख गए तो सब शान्त हो जाएगे और गाव का भला तो इन्द्र सिंह कर रहा था दल विशेष से उसका क्या सम्बन्ध था।

और मुख्य मन्त्री ने आई जी पी को कहा आप एक बार गिरफ्तार करवा दें इन लोगो को फिर हम बीच बचाव करें तो उनको हमारे दल मे शामिल कर लेंगे। भारत मे राजनीति अभी घुटने चल रही है यह दल बदलुपन से क्या अन्तर आता है ? नीतियो और सिद्धान्तो म कोई अन्तर नही है। दोनों दल गरीब की अवस्था सुधारने की बात करते हैं दोनो मानते है कि योजना बद्ध 10 वर्ष म गरीबी का उन्मूलन करना है म लोकतान्त्रिक मोर्चे मे रहना या जनतान्त्रिक दल मे रहू, क्या फर्क पडता है।

आई जी पी ने कहा मैं अब आना चाहू अभी वायरलेस करता हू और आज ही इन सबको गिरफ्तार करवाता हू आप के पी ए के पास सबके नाम हैं—आपके इसे साथियो के नाम भी जिनका मेडिकल

करवाता है जिनके चोटे आई हैं। इंद्र सिंह ने पी ए को आवाज दी
तुम सारी घटना और उन कार्यकर्ताओं के नाम आई जी पी साहब को
बता दो और रघु चमार रोशनलाल राधेश्याम, जिनके चोट पहुंची
है उनके नाम भी लिखवा दो अच्छा आई जी पी सा० व आप पधारें
आर देख लें।

आई जो पी न दोनों को सेल्यूट दी और वहां से चले गए।
आइ जी पी के जाने के बाद मानव कुमार ने इंद्र सिंह को कहा अच्छा
हो हम कार्यवाही नहीं कर क्योंकि ये ही लोग पत्रकारों की शरण में
जा ग और ये पत्रकार तोड मरोड कर तथ्यों को पेश करेंगे ये हमी
तल श म ह कि राज्य पर किस तरह हावी हुआ जाए, लेकिन मैंने कुछ
पत्रकारों को अपना बना लिया है।

म अभी प्रेस का फ्रेंस बुलाता हूं आप यहीं ठहरें, आप पूरा
ब्यौरा जिससे कत्ल करने का प्रयास सिद्ध हो बता सकेंगे न।

आप अभी बुला रहे है जी देर करने से हम पिछड जाएंगे।
अभी एक घंटे बाद यहां ही बुला रहा हूं तब तक राज्य के एडवोकेट
से पूरा सलाह करल इन लोगों ने पत्थर तो फेंके ही, कुछ पत्थर आप
तक पहुंचे हैं कुछ आपके साथियों के लगे हैं बस हमें पूरी तैयारी के साथ
आगे बढ़ना है म त्री महोदय आपके गुस्से को मैं समझता हूं लेकिन पद
पर रहकर हम सयम से काम लेना चाहिए, कुत्ते भौंकते हैं भौंकते रहें,
हम क्यों ध्यान दें हमारे कमरों की खिडकियों को बंद कर देंगे हम
तक आवाज नहीं पहुंच पायेगी।

इस वक्त रात्रि के 8 बज हैं फरवरी का महिना और ठंड है
बाहर काफी ठंडी हो रही है।

मन्त्र म त्री न घण्टी बजाई, और सचिव को बुलाया क्या अभी
प्रेस कान्फ्रेंस हो सकती ?

सचिव न गदन झुका कर कहा सर एक घंटे में सब पत्रकारों
को अलग अलग गाड़िया भेजकर बुला लेता हूं सर, डिनर रखना है या।
मुख्य म त्री न इन्द्र सिंह की तरफ देखा और फिर कहा– हां, 50

हा तो हाथ मुंह धो लीजिए भोजन तयार है तब तक पत्रकार बंधु आने हैं उनको मैं निपटा लूंगा, आई जी पी का पी ए भी आ रहा है।

दोनों भोजन कक्ष मे पहुंचे भोजन करते हुए श्रीमती मानव कुमार भी बातचीत मे शरीक हो गयी उसने सहानुभूति जताते हुए कहा ठाकुर साहब विरोधियो के तोडफोड के अलावा और क्या काम हैं ? आप दूर रहिये, साहब आपके साथ हैं और आपने किया क्या ?

ठाकुर इन्द्र सिंह भोजन कर रहा था जोर की वर्षात् प्रारम्भ हो गयी थी बिजलिया आकाश म समा नही रही थी कि पूर्व मे एसी कडक हुई जैसे पास मे बिजली गिरी हो मोर बोलना शुरू कर चुके थ इन्द्र सिंह ने आखे बन्द करली।

मानव कुमार न कहा—क्यो आप डर गए कुछ भी तो नही हुआ वर्षात् के साथ एसी गडगडाहट और कडक तो होनी ही है।

भोजन कर इन्द्र सिंह हाथ धोने वास बेसिन पर नही गया बाथरूम मे गया मुंह धोया नाक साफ किया पशाब किया, टावल से मुंह पोछा—फिर स्वय मुस्करा गया क्या उसका दल बदल सही है उसके साथियो ने ही उसके साथ बगावत की तो वह कहा—लेकिन उनका क्या बिगडा मैं उन सब को नए दल मे शरीक कर लेता तब नए दल के कार्यकर्ता जो पराजित उम्मीदवार के साथ थे वे या तो उसका साथ छोडकर मेरे नये दल मे शरीक हो जाते मामा सदैव के लिए मेरे क्षेत्र से समाप्त हो जाता, दूसरा कोई व्यक्ति मुकाबले के लिए खडा नही हो सकता था। कार्यकर्ताओ का गुस्सा तो ठीक था, उनको उस गेट लगाना चाहिए पुलिस की कार्यवाही करा कर उसने अच्छा नही किया। दल बदलने पर अपने कार्यकर्ताओ को राजधानी मे बुला लेता उनको सम्मान देता और वस्तु स्थिति से परिचित कराकर फिर सिद्धात एव नीतियो पर बात करता फिर बाद मे मुंह देखा खैर अब तो मुख्य मन्त्री जी के हाथ मे सब कुछ है। महेन्द्र सिंह उनका मोसी आया भाई है, दूसरे भी नजदीकी रिश्तेदार हैं उनका गुस्सा या वह हाथ जोड लेता

और जनता का रौब उमडा था तो वह हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता, पता व० भी कर सकता था कि जिस गांव मे जन्मा, पला और बड़ा हुआ आज मन्त्री बना वह उन्हीं लोगो के आशीर्वाद से—मैं समझता हूं मैं शान्त और समझ से काम लेता तो फिर कौन शक्ति थी जो उस पर आंख उठा पाती जिनके हाथ उठ न नीचे हो जाते, जिसके तेवर चढ़ वह नीचे झुक जाते राजनीति में झगड़ा बढ़ा कर आप कुछ नहीं कर सकते आपको जो गाली दे उस आदमी को स्नेहपाश मे बांध लो आपको जो मारने दौड़े उसके सामने विरोध मत कीजिए, झुक जाइए कब तक वह आपको मारता रहेगा उसके हाथ रुक जावेंगे।

वह स्वयं अनुभव करेगा कि वह फिर गलती कर रहा है तब मेरी बात न मानने में क्या कमी रह जाती थी लोगो में यह धारणा तो बनी है कि मुझे जनतान्त्रिक दल और मुख्य मन्त्री ने खरीद लिया 20 लाख मैंने 20 लाख तो नहीं लिए यह झूठी अफवाह किसने उड़ाई आखिर बस 2 लाख रुपया तो लिए हैं और मैंने अपने साथियो का साथ छोड़ा।

स्वर दबा जायेगा पत्रकारों की कान्फ्रेंस में मुझे शालीनता और स्नेह मे पेश आना चाहिए—मुख्य मन्त्री जी से बात कर लेना चाहिए।

वह बाथरूम से बाहर आया तब तक उसके मन का वजन बहुत हल्का हो गया था।

मुख्य मन्त्री जी राज्यपाल से बात कर रहे थे, टेलीफोन पर। जब फारिग हुए तो ठाकुर इन्द्र सिंह ने कहा—पत्रकारो के बीच मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

मैंने तय कर लिया है आप उस पत्रकार सम्मेलन में नहीं आयेंगे, मैं निपट लूंगा। ठाकुर इन्द्र सिंह ने कहा—मैं समझता हूं कि हम नरमी का रुख अख्तियार करना चाहिए।

मुख्य मंत्री हंसा—लोकतन्त्र के शासन में लड़ाई से लाभ नहीं होता आप देखेंगे कि मैं सीमातीत नरम हो गया हूं नरम नहीं होगा

प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
60 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तो 20 व्यक्तियों को जिसमें से आप भी एक हैं मैं भला अपने साथ कैसे ले सकता था गत वर्ष आपने अपने भाषणों और लेखों से मुझ पर जो आक्रमण किया उसका बदला मैंने क्या दिया आपको ? भूमि सीमा अधिनियम के अधीन जो रियायतें दी वे मेरे दल के साथ अन्याय था, मुझे विपक्षियों का हित चिन्तक बताया गया है, खैर छोडिए आप अपने शयन कक्ष मे जाइए, आराम कीजिए, सब काम मुझ पर छोड़ दीजिए, आप रहेंगे तो आप शायद क्रोध में आ जाएं। मैं कभी भी क्रोध में नहीं आता, लोग गाली निकाले उनकी जबान खराब मेरा क्या बुरा करेंगे ठाकुर साहब मेरी पार्टी वाले तो विश्वास करते ही हैं विरोधी भी विश्वास करते हैं।

ठाकुर साहब इन्द्र सिंह जी मुस्करा रहे थे तब आपके व्यवहार और मेरे व्यवहार में कोई अन्तर नहीं है बल्कि आप मुझ से ज्यादा आगे हैं आप में स्निग्ध मुस्कान है, आप में मृदुलता है तो दुश्मन को भी दोस्त बना देते है धर्म के अधिष्ठाताओं ने जो व्यवहार कर उदाहरण प्रस्तुत किये उनमें सबसे आगे आपका नाम रहेगा। लोग तो कहने लगे कि आप राजनेता क्यों हुए आपको तो धर्मगुरू होना चाहिए, खैर छोडिए मैं अपने शयन कक्ष में जा रहा हूं, शुभ रात्रि, सर।

मुख्य मन्त्री ने उनकी पीठ गुदगुदायी।

गांव के प्रमुख लो मो कार्यकर्ता उसी रात गिरफ्तार किए गए और दूसरे दिन छोड दिए गए जब छोडे गए तो यह कहा गया कि मन्त्री महोदय के आदेश से छोड़े जा रहे हैं, पुलिस ने ही व्यक्तिगत मुचलके लेकर रिहा कर दिए।

कार्यकर्ताओं में विद्रोह था और जब छोड़े गए तो उनका विद्रोह कम पड गया था। रोशन लाल महेन्द्र सिंह से मिला और कहा कि महेन्द्र सिंह को इस विद्रोह मे नहीं कूदना चाहिए।

महेन्द्र सिंह ने कहा—सार्वजनिक जीवन मे व्यक्तिगत आचार नहीं चलते, इन्द्र सिंह जी ने गलती तो की—अच्छा होता व मीटिंग में आए उससे पूर्व हमसे बुलाकर बात कर लेते तो कार्यकर्ता कभी विमुख नहीं होते।

रोशन लाल–तो परसो ही हम चल देते है म अभी फोन कर देता हू ।

जरूर ।

अनुसूचित जाति एव जन जाति के किसी प्रतिनिधि को और अल्प सख्यको म से रघु चमार जेता भील और मुहम्मद खा पठान य तीनो भी नरम विचार वाले हैं उनसे मने बात करली है । क्या पहले यहा सब का एक साथ बिठाकर बात करना जरूरी है ?

नही ऐसी कोई बात नही है । सच यह है कि सत्तापरस्त राजनीति लाभ की राजनीति है सबको अपना अपना लाभ देखना पडता है । अरे जो हमारी पार्टी के 20 सदस्य 25 लाख मतदाताओ के प्रतिनिधि ही लोगो छोडकर चल गए तो साधारण मतदाता को क्या अन्तर पडता है ? सच यह है कि इस वर्ष के अन्त तक सारे राज्य मे लोकतान्त्रिक मोर्चे के विधायको की सख्या कितनी घट जाएगी कौन कह सकता है । कल अगर सारा जनतान्त्रिक मोर्चा ही लोकतान्त्रिक मोर्चे में मिल जाये या लोकतान्त्रिक मोर्चा ही जनदल म समा जाए तो क्या दलबदल कहलाएगा ? राजनीति की भाषा म उसे मजर कहेंगे अर्थात् एक दल का दूसरे दल म समापन । यों हमारे मन्त्री महोदय कच्ची कौडियो के खिलाडी नही हैं । मुख्य मन्त्री के बाद दूसरा स्थान लिया है, उनकी योग्यता और क्षमता के आधार पर आश्चय नही वे जल्दी ही मुख्य मन्त्री बन जाए तो हमारा क्षेत्र लाभान्वित नही होगा ? भाई, हमने तो पूरी तरह विचार कर लिया है हमारा हित इसी म है कि हम हमारे नेता का साथ दें ।

महेन्द्र सिंह एक बात समझ मे नही आती उन्होने हमारी गिरफ्तारी की कार्यवाही क्यो की ?

रोशन लाल ने ताली पीटकर कहा–और क्या यह समझ मे आया कि गिरफ्तारी के बाद हो बिना जमानत छोडभी दिए गय, मुकदमे भी उठ गये अजी सत्ता अपने खेल खेलती है । मेरी धारणा है कि इन्द्र सिंह जी अपने गाव वालो को ही जेल मे ठूस कर फिर सत्ता म रह कसे सकेंगे ?

यह तय हुआ कि 20 व्यक्तियों का एक मंडल राजधानी जाएगे और शुभस्य शीघ्रम को मानकर परसों ही पहुँचने का निर्णय लिया गया और टेलीफोन से सारी बातों का अधिकार रोशन लाल और रामधन सेठ को दिया गया। रोशन लाल ने उस समय जाकर टेलीफोन अत्यावश्यक दर्ज करा कर सबको सूचना करादी।

लोकतांत्रिक मोर्चे के अतिरिक्त जनतांत्रिक दल के कुछ आवश्यक सदस्यों से भी बात करली गई मंत्री महोदय ने उन लोगों से भी सम्पर्क कर लिया था ताकि दोनों दल के एक जुट होने में बाधा उपस्थित न हो।

जब मंत्री महोदय के फोन से सूचना आयी तो मंत्री महोदय बड़ी प्रसन्न मुद्रा में रोशन लाल का अभिवादन कर रहे थे सेठ रामधन का भी धन्यवाद किया कि विलीनीकरण की क्रिया में उनका भी हाथ है।

रामधन ने कहा हुजूर मैं तो पहले से यही मानकर चलता हूँ कि हमारा प्रतिनिधि मुख्य मंत्री बने और क्षेत्र का विकास करे, आप जैसे योग्य, सक्षम, और अनुभवी लोगों से मार्ग दर्शन पाकर हम कृतार्थ होंगे हां हुजूर मन यह निर्णय कर लिया कि हुजूर की कृपा रही तो कपड़े की एक मील अपने गांव में खोलूं।

इन्द्र सिंह ने कहा मेरा पूरा योग रहेगा। मुख्य मंत्री महोदय बुला रहे हैं नहीं वे ही मेरे यहां आ रहे हैं, परसों बात करेंगे। स्टेशन पर आपको गाड़ी मिल जाएगी मेरे बंगले पर ही ठहरने की व्यवस्था की है धन्यवाद।

रामधन-हलो हलो करता ही रह गया, टेलीफोन बन्द हो गया था। सेठ ने टेलीफोन रख दिया फिर रोशन लाल से बोला हमारे मंत्री उद्योग मन्त्री हैं और साथ ही उप मुख्य मन्त्री भी हैं। कपड़ा मील चला तो गांव का ही हित है। एक उद्योग लग जाएगा तो गरीबों को रोजगार मिलेगा हां यह सब तो मन्त्री महोदय की पूरी दृष्टि रही तो होगा अन्यथा नहीं। सीमेन्ट लौह मशीनें आदि तो उनकी ही कृपा से

लब्ध हो सकेगी, पण्डित जी आपको मालुम है अद्ध सरकारी साझीदारी मे ज्यादा रुपए सरकार के और प्रबन्धक के आधा से भी कम और मशीन खरीद से लगाकर सारा काम वह प्रबन्धक ही करता है। क्या कहना पाचो उगलिया घी मे हैं। प्रबन्धक को एक पैसा भी लगाने की जरूरत नही यही क्यो, मशीनो मे कमीशन म ही वह लाखो खा जाता है, फिर उस पर उसके चालू व्यय किसी राज रईस से कम नही, बस पण्डित जी आप तो यह जोर लगाना– गाव का भला और उद्योग चल निकलेगा।

८। एक बात और कल ही गाव के बेरोजगार पढे लिखों की सूची तयार करलें ताकि म त्री महोदय का गाव मे सम्मान बढे। रोजगार मोहिया करना सबसे बडा काम है। अरे पुराने जमाने म तो देवता करते है अब म त्री हा पण्डित जी आप –

मै तो ज्योतिषी वध हू, आयुर्वेद रसायन शाला खोलने की सोच रहा हू परसो मन्त्री महोदय को कहा तो बडे प्रसन्न हुए सोना शक्कर सब कन्ट्रोल रेट से मिलेगा पूजी के लिए म त्री महोदय ने कहा कि म किसी तरह की चिन्ता नही करू कई योजनाए हैं उनसे हम लाभ उठा सकते हैं यही क्यो कृषि उत्पादन को बढावा देने के लिए अनेको योजनाए अनेको रियायतो के साथ है बस लाभ लेने वाला चाहिए। हमारे म त्री बडे समझदार हैं। मै समझता हू शायद 5 वष म 2 4 छोटे मोटे उद्योग, कृषि उत्पादन मे अनेक सहुलियत और रियायतें दूध व्यवसाय भी सरकार ने हाथ मे ले लिया है। लाखो का नुक्सान उठाकर सरकार किसानो से दूध खरीद रही है गरीबी दूर करने के लिए अनेक योजनाए चल रही हैं। हम मन्त्री महोदय को क्षमा कर कितना लाभ अर्जित कर सकते है, यह सब अपन ऊपर निभर है, हा भाई तीन दिन की रहन की योजना बना लेना, हमारे लिए म त्री महोदय न दशनीय स्थान देखने कई उद्योग और योजनाओ को देखने का कायक्रम बना लिया है। अजी यह तो आनन्द की यात्रा है। मानलो कि हम सबने एक दूसरे के मतभेद भुला दिए हैं यह तो आनन्द प्रमोद की यात्रा भर है। हा, हम गाव

गाव के सकडो श्रादमियों को रोजगार, बस मुझे क्या ? मैं भी एक नौकर ही तो–

रोशनलाल–तो बहुत देर हो गयी, परसो सुबह की गाडी से चलना है।

सारे गाव मे सन्नाटा छा रहा है इमलों के पेड पर उल्लू बोल रह हैं–कभी भी गाव मे कोई रोशनी नजर नहीं आती एक दिया भी नही टिमटिमा रहा है।

तीनो तीन अलग अलग दिशाओ मे रवाना हुए–प्रसन्न मुद्रा मे जैसे उन्होने सब कुछ पा लिया है।

दिन को 3–50 पर ट्रेन राजधानी पहुची, स्वय मिनिस्टर स्टेशन पर उपस्थित थ, अतिथियो के लिए 5 कारें आयी थी, इनके अलावा 5 कारें मेजमानो के लिए, मन्त्री महोदय ने सब से हाथ मिलाया रघु चमार और भील को जब पास खीचना चाहा तो वे मन्त्री महोदय के हाथो से नीचे सरक आए, स्लीप ऑफ हो गये। वेटिंग रूम मे उन सब को चाय बिस्कुट दिए गए और पूरा काफला मन्त्री जी के बगले की ओर चल चला।

रघु चमार और भील ने सबसे पहले राजधानी को आज देखा, बडी-बडी इमारतें सडक और आस पास हजारो व्यक्तियों का रेलपल, जैसे किसी को फुरसत नहीं है सब चले जा रहे है। अनजाने स्थान की तरफ से मानव–मदिनी उमड रही थी, गाडियो, रिक्शो और आटो रिक्शाओ का काफला दोनो तरफ आ जा रहा था।

सेठ रामधन ने मन्त्री महोदय के पी ए को पूछा–भाई ठहरने की व्यवस्था।

पी ए ने कहा–ऐसी व्यवस्था जो पहले कही आपने नहीं देखी होगी–सेठ मोहन लाल महेशचन्द्र को आप जानते हैं नाम तो सुना ही होगा, यहा उनके दस कारखाने हैं जिनमे एक सौ करोड से अधिक पूजी लगी है, सेठ साहब उसकी राज की मानिन्दी 2 लाख सफेद और

की तरफ देखा—वह शरमा गया, लेकिन सब प्रसन्न थे म त्री महोदय सब काम छोड कर महमानदारी मे लगे थ।

इतने मे ही भोजन परोस दिया गया। रघु चमार, जेता भील और मुहम्मद खा टेबिल के एक सिरे पर वठ गये।

25 थालिया लगी थी दस दस सागो से भरी कटोरिया, दस तरह की मिठाइया तस्तरियो मे सजाई हुई थी और इसी तरह के नमकीन थे, ठडा पानी स्टील के कलसो मे भरा था, तीन चार बेयरे नपकीन कन्धे पर डाले खडे थे, महमान सारी सामग्री को देखकर आश्चय प्रकट करने वाले थे लेकिन शब्दो के चयन के अभाव म वे भाव-विभोर हो रहे थे।

स्वयम म त्री महोदय बेयरो के हाथ से सामग्री लेकर परोसकारी कर रहे थे।

म त्री महोदय ने कहा—बस आप भोजन समाप्त करलें मुख्य मन्त्री महोदय पधार रहे हैं हमारे क्षेत्र की योजना बनाई है सब को कुछ न कुछ मोहिया किया जाएगा।

मुख्य म त्री का नाम सुनकर रोशन लाल ने कहा—हमारे भाग हुजूर को जानते हैं और मेरी ज्योतिष तो कहती है।

मन्त्री ने अपने मुह आगे हाथ रखकर चुप रहने का इशारा किया।

भोजन के उपरा त सब को सुग धी पान पेश किए गये—फिर एक वडे हाल म ले जाया गया जिसमे कीमती झाड फानूस लगे हुए है। लगभग न्सो व्यक्तियो के लिए बठने की गु जाइश है। हाल स्वेत सगमरमर का बना है—कुसिया के गद्दे वेस कीमती चमडे के हैं जिस पर रोशन लाल ने हाथ गडाया तो हाथ गडता ही चला गया—कितना मोटा कुर्सी का गद्दा है कही चुभन नही एसा लगता है जैसे आप मुलायम गद्दो पर बठे हैं—मन्त्री महोदय ने कहा—मुख्य मन्त्री वस एक घ टे मे आ रहे है उनकी तीव्र इच्छा है कि सारे प्रान्त के साथ हमारा गाव भी उन्नत बने उद्याग पनपे, खेती का उत्पादन बढे, स्कूल कालेज खुले, मैं सोचता हू

सडक एव सिचाई की व्यवस्था तो अपने आप निहित है–फिर पी ए स योजना मागी–हमने योजना तयार की है उसे 5 वष क्यो हम तो इसी माह स काम शुरू करना चाहते हैं। हमार पू जी पति बाहर से नही आएगे हमारा साथी कारखाना खालेंगे रसायन शाला, बागबानी जो भी करना चाहें और चम उद्योग–दुग्ध उद्योग सब ही तो शुरू किए जा सकत हैं बस आप हम यह तय करें कि कौन उद्योग कौन करगा।

रोशन लाल ने कहा–सेठ रामधन तो सूती धागा मिल लगाएगे मै औषध शाला खोलू गा ज्योतिष हमार पक्ष म है गाव की तरक्की के साथ हमार मन्त्री महोदय के नक्षत्र भी बडे तेज है।

मन्त्री महादय न कहा–हमारे गाँव म लकडी चिरायी का उद्योग–चूने का पत्थर भी बहुतायत म है सीमेन्ट उद्योग या मर्वोदयी भट्टा चालू किया जा सकता है। म चाहता हू कि हमारा गाव 5 वष म हमारे राज्य मे गाँवों म अग्रगी हो जाय—

महेन्द्र सिह हाथ जोड कर उठ खडा हुआ–मन्त्री महादय ने उठकर उनको गले लगा लिया–महेन्द्र सिंह की आखें गीली हो गयी, *म त्री महोदय ने कहा अब बीता उसे भुला दीजिए, अब तक राज्य के विकास क काय म हमे एक जुट हो जाना चाहिए।*

रोशन लाल गम्भीर हुआ हुजूर सारे गाव की यही भावना है उस रोज जो कुछ हुआ अच्छा नही था।

सेठ रामधन–बीती ताहि बिसाइए आगे की सुधि ले ही। मेरे दादा जी कहा करते थे कि किसी बात की गाठ बाधकर मत रखो बस कोई बुरा हुआ तो उस भुला दीजिए कोई कडवी घूट मुह म आई हो तो थूक दीजिए। और थूक से भी कडवाहट कम न हो तो मुह धो लीजिए बडा से बडा जहर या कडवाहट भी मर जायगी।

मन्त्री महादय–बस अब उस याद मत कीजिए। मैने आप सब को अभी लिए तो सुनाया था कि हम बैठकर अपने क्षेत्र के विकास का किस तरह गति मिले पाच वर्षीय याजनाए बनती हैं और पाच वष बाद आप देखो कि उनका आधा भी लाभ गरीब जनता को नहीं मिला

हमारा उद्देश्य यह है कि धनवान फले फूले तो गरीब भी कही बैठकर सुख की सास ले सके, उस पर अत्याचार हो रहा है उससे उसका मुक्ति दिलाए, ऊच नीच भगवान ने नही बनायी हमारी बनायी हुई है, उस बनावट को हम तोड देना है, तितर बितर करना है और गाव मे ऐसी हश बध जाए कि सारा गाव तरक्की कर रहा है डोम आगे बढें रेगर तरक्की करें, मुहम्मद साहब अपना हुनर चलाए कौन रोडा अटकता है बस याद रखिए कि आपको आगे बढ़ना है किसी को पीछे ढकेलना नही है। हमारी कोशिश यह होना चाहिए कि भूरा रेगर चमडा न चीरे, सरकार व्यवस्था कर लेगी सहकारी समिति के द्वारा चमडा चिराई, रगाई और आगे के उद्योग पनपें–भगी मला क्यो उठाए हम राज्य की ओर से अनुदान लेकर नयी किस्म की टट्टिया बना दें भगियो के लिए रोजगार के नए रास्ते खोल दें लेकिन बन्धुओ आप जानते हैं शताब्दियो मे जो चला आ रहा है उसे समाप्त करने म समय लगेगा, धैय और सब के सहयोग की जरूरत है। मै आपसे कहू मै महलो मे पला हू, झोपडी की पीडा को क्या जानू ? उसका सामजिक आर्थिक और राज नतिक क्या स्वरूप बने वह सब हमारे पुरान परिधानो को फेंककर नए आयाम मे समझना होगा तब ही हम आगे बढ सकेंगे।

हा आप अपने 2 उद्योग का नाम मेरे पी ए को लिखा दें, आप 3-4 दिन यहा रहेंगे, यहा के दशनीय स्थल देख लें और 15 दिन के अदर 2 हमारे व्यवसाय उद्योग या विकास काय को प्रारम्भ कर दें और छ माह मे हम उसे चालू कर दें, देखिए मुख्य म त्री जी पधार रहे हैं —

इतन मे मुख्य मन्त्री जी आ गए। सब उठ खडे हुए। वे मन्त्री महोदय के पास की कुर्सी पर बैठ गए मखमली कुर्सी पीठ शरीर से ऊपर तक की।

सुनहरे हत्था वाली, रोशन लाल न उचक कर देखा–हा पीठासीन शकराचार्यों की बठक मे ऐसी कुर्सियां देखी थी, या सेठ रामधन के सम्बधी सेठ करोडी मल के दुल्हे के लिए लाई गयी थी।

रघु चमार और जैना भील देखते ही रह गए–मुख्य मन्त्री जी ने कहा–भाइयो हमने तय किया है कि कोई गाव ऐसा न रहे जहां विकास की किरण नहीं पहुच पाए। आपके विधायक श्री मान इन्द्र सिंह जी की अपने क्षेत्र के विकास म बडी रुचि, है उनका गांव तरक्की करे इसके लिए म आज हा विकास कार्यों क लिए 2 लाख का अनुदान स्वीकृत करता हू– आप देखेगें आपका गाव उद्योग का केन्द्र बन रहा है आपका गाव कृषि उत्पादन म आगे है आपका गाव तहसील और जिले शीघ्र ही सड़क से जोड दिया जाएगा इसके लिए मैंने सावजनिक निर्माण विभाग को तुर त आदेश प्रसारित कर दिए हैं। आपका योग सरकार को अपेक्षित है आप किसी तरह की सहायता न करें तो कम से कम अच्छे काम का विरोध तो न करें।

हमने तय किया है कि सेठ रामधन को सूत के मिल का लाइसेंस मिल जाए और ऋण भी ताकि एक वष में मिल चालू हो सके, जमीन का आवटन मिल क लिए कर दिया है।

कागज का कारखाना भी लग सकता है हम शीघ्र ही किसी को कागज कारखाना लगाने का लाइसेंस दे देंगे गोरी बाध का सर्वेक्षण हो चुका है उससे 10 हजार एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकती है आपका गाव सब का सब लाभान्वित होगा–खादी ग्रामोद्योग आदि के छोटे 2 धंधे चालू करेंगे चमड़े की रंगाई क लिए भी सहकारी समिति का निर्माण किया जाएगा, आप अपने अपने धन्धे तय कर लें आपके मन्त्री गजम अच्छे म त्री हैं उनकी बराबरी राज्य म कोई कर पाए यह शक है गोया यह काम आपको करना है मन्त्री मण्डल बनने के बाद म त्री महोदय न आपके गांव के विकास क लिए अनेक सहायताएँ स्वीकार कराई है गाउँ आपकी पेश हो गाव फले फूले। आप बहुत भाग्यशाली हैं आपका प्रतिनिधित्व एसा व्यक्ति कर रहा है जिसका दिल दिमाग अहर्निश आपके कल्याण क कार्यों को विकसित करने म लगा है।

जब मुख्य म त्री चले गए तो म त्री महोदय न विकास योजनाओं की सूची सामने रखी।

जन जीवन का जादू (कविता संग्रह 1981)
अरमान (कविता संग्रह 1984)
श्री ५० बौ...नगर सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

महेन्द्र सिंह ने कृषि उत्पादन का कार्य हाथ में लेने का तय किया, रामधन सूती मील, और रामधन ने कहा–कि उसके सम्बन्धी बम्बई के बहुत बड़े व्यापारी हैं, वे सीमेन्ट का कारखाना खोलेंगे। चर्म उद्योग के लिए सहकारी समिति को रघु कुमार के जिम्मे किया गया, गोपाल लाल को आयुर्वेद रसायन शाला चालू करने के लिए हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया गया। मुख्य मन्त्री जी ने सबसे हाथ मिलाया, और मुस्कराकर एक बार और दोनों हाथ जोड़े–प्रभु आपकी यात्रा को सफल करे, आप तरक्की करें। मन्त्री महोदय द्वार तक छोड़ने गए बाकी सब खड़े रहे–मन्त्री महोदय, लौटे, बस आगे फिर बात नहीं करेंगे कार्यवाही करेंगे–चाय आ रही है, पी लीजिए फिर आज तो आराम कीजिए, कल हमारे पर्यटन अधिकारी सब दर्शनीय स्थानों पर ले जाएंगे।

दो दिन 5 सितारा होटल में ठहरे अनेक दर्शनीय स्थान देख, उद्योगों को देखा, सेठ रामधन ने सूती मिल देखो तो बड़े गर्व से बोला एक वर्ष में हमारे गांव में भी इस जैसा एक मील होगा–मन्त्री महोदय की कृपा होगी तो इससे भी अच्छा।

तीन दिन बाहर बिताने के बाद चौथे दिन उद्योग मन्त्री के बंगले पर लौटे सब आवभगत से प्रसन्न थे, मन्त्री महोदय की असीम कृपा और सम्मान से अभीभूत थे। दुपहर का भोज मन्त्री एवं मुख्य मन्त्री ने गांव वालों के साथ लिया और दुपहर की गाड़ी से गांव के लिए रवाना हुए।

सब अपने आपको सुदामा कह रहे थे और मन्त्री महोदय को कृष्ण, उन लोगों ने वह सब पा लिया जो सुदामा नहीं पा सका तो सुदामा दयनीय था दीनहीन और कृष्ण समर्थ, सम्पन्न, और इसी दूरी पर कृष्ण ने सुदामा का सम्मान किया सुदामा का हीनभाव नहीं गया और कृष्ण का कृपाभाव नहीं गया लेकिन मन्त्री महोदय उच्चस्थ स्थान

पर बैठकर गांव वाला को हीन भाव से उठा पा रहे हैं वे समानता के सतह पर मिले, उसी स्थान पर वे विमोहित रहें—वे स्टेशन पर गाडी म बिठाने गए और अपने आतिथ्य सत्कार से इस सीमा तक दब गए कि उनक पास मन्त्री महोदय के गुणगान करन के अतिरिक्त कोई चारा नही रहा। उनके द्वंद भेद जसे पिघल गए और अब मन मे घुला रोष वाष्प बनकर उड गया।

मुहम्मद न गद्गद् होकर कहा—भाई इतने वर्षों से राज चला आ रहा है हमारे विधायक न सही महेशपुर के विधायक तो म त्री रह चुके हैं उन्होने कभी अपने कार्यकर्ताओ को चाय तक नही पिलाई हमारी महमानदारी तो राजा जसी महमानदारी थी क्या कहना। सेठ न कोई कसर नहीं रखी कहते हैं हमारे पीछे सेठ ने 1-25 लाख रुपए खच किए।

सोहन सिंह हँसा—क्या अहसान कर दिया उद्योग म त्री से 5 लाख का लाभ लेगा बनिया का सौदा पक्का होता है वह खच करना जानता है तो उस खच को वसूल करना भी जानता है।

सेठ की तरफ से सबको भेंटें दी गई, थी गाडी में आकर सबने भेंटें ली—कपडे के मिल की बनावट थी—2 बड़े शीट, किसी के कुर्ता और धोती का कपडा तो मुहम्मद के लिए पजामा और कुर्ते का कपडा भी था—सब बढ़िया।

रामधन ने कहा—300 300 की भेंट होगी अरे भेंट मे ही 6000) रु खच कर दिए। हमे मोर्चा या दल से क्या वास्ता, गाव का भला होना चाहिए विधायक को हमने चुना है विधायक किन कबडा म था ? हम क्या वास्ता अन्त बन्न बुरा होगा मेरा विचार है कि हमारे विधायक ने सही समय पर सही कदम उठाया।

रोशन लाल अरे इस एक महीने मे 20 और विधायकों ने दल बदल लिए हैं। अब जनतान्त्रिक दल की सख्या 170 पहुच गयी है और लोकतान्त्रिक मोर्चा जैसे कुछ ही समय का महमान रह गया है।

जल अजगर (कविता संग्रह 1981)
बारहमास (कविता संग्रह 1984)
५७ गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

महेन्द्र सिंह–मुझे तो विरोध इसलिए करना पड़ा कि गांव में आया उससे पूर्व वे हमसे सफाई कर लेते तो बताइए, मैं क्या विरोध मोल लेता।

अरे साहब हमारे यहां विपक्षी दल तो बन नहीं पाते, बिखराव होता जा रहा है और कुछ कठोर विशेष दल के सदस्य हैं वे भी क्या कर रहे हैं सिवाय गाला गलौज, मारपीट, सदन की गरिमा तो रही ही नहीं, एक दिन शायद गोली चल जाए, पुलिस पहुंच जाए, अच्छा है सब एक हो जाए तो फिर यह नौबत तो नहीं आएगी। रघु चमार एक तरफ बैठा वह जैसे सम्मान पाकर भूल ही गया था कि वह चमार है। उसने अत्यन्त स्नेह एवं सम्मान के स्वर में कहा–हुजूर तो भगवान इन्द्र के अवतार हैं आपको मालूम है हुजूर के पर दादा तो नए वर्ष के दिन गांव वालों को भोजन के लिए निमन्त्रण देते थे और खुद अपने हाथों से परोसकारी करते थे।

सेजेता भील–हां बड़े हुजूर भी बड़े थे, मेरी तो पीढ़ियां खप गयीं, उनका अन्न खाते खाते–उधार लिया, नहीं चुका सके तो बड़े हुजूर ने माफ कर दिया।

सोहन लाल–भाई हमने खाया पीया मौज की लेकिन यह सब कहां से आई–भ्रष्टाचारी सेठ ने खर्च किए। सेठ 10 लाख का नुकसान राज कौन करेगा।

सब गांव वाले सोहन लाल के तर्क से सहमत नहीं थे क्या सेठ ने सौदा कर लिया, क्या सेठ ने 10 लाख का नुकसान कर दिया–वह कमाता है और खर्च करता है, कोई धर्म के नाम पर करता है कोई राज के नाम पर, किसी को यह शौक होता है कि उसका बड़े से ताल्लुक रहे–इसीलिए खर्च करता है। सेठ भूरामल रामपत को आप जानते हैं, पंजाब में उसके चार मील हैं बम्बई में कई कल कारखाने हैं, उसने सारंग में 10 लाख की लागत का उपासरा बनाया है न उसमें मूर्ति न उसमें देवता। साधु साध्वी के ठहरने की व्यवस्था, क्यों किया? धर्मात्मा है और वह जानता है कि धर्म करने से धन घटता नहीं बढ़ता है, इसलिए आप इसे रिश्वत कैसे कहते हैं? यही क्यों गए मान एक

सेठ न अपनी बुनिया का विवाह कर दिया उसम एक लाख रुपए खच किए दहज दो लाख का दिया, बेचारे क बेटी नहीं थी, कुमारा घर नही रह इसलिए तो—और तुलसी की शादी तो जरूर होती है यह तो अपनी 2 रुचि है, मुमकिन है सठ का आगे कोई काम करना हो, और यह सब इसलिए किया कि आगे आदेश लेने म सरलता रह, ता भी क्या इसको रिश्वत कहना होगा ? आज कोई अच्छे काम के लिए खच करो उसस राज सरकार के अफसर प्रसन्न रहें तो आपको इसके लिए क्या मिला ?

मोहन लाल ने मच्छो पर ताव दकर कहा—अजी साहब कोई मेरे कहने से 5 पसे भी खच नहीं करता। सेठ ने हमारे लिए 1-25 लाख खच कर दिए क्यों ? हमारा उनसे क्या जान पहचान, सही यह है कि यह भ्रष्टाचार की शुरुआत है। कल सेठ ठुकरानी साहब के लिए बम्बई से जवर लायेगा, कीमती साडियों का स्टाक भी क्या वैसा लेगा ? अब अब तक क मुनाफ से ता नहीं—आयकर लाभ क लिए सब करते हैं, तब फिर करोडों के ढेरों मे करोडो का लाभ उठा लेते हैं। खर यह तो होती रहा है इसको रोकना सम्भव नहीं है, हर राज म होता आया है, अगर यह नहीं होता तो चुनाव नहीं लड जाते, एक एक विधान सभा के चुनाव म एक एक लाख रुपए खर्च होते हैं, वह रुपया कहा से आए। लोक सभा चुनाव म 5 स 7 लाख रुपए और आम दा चुनाव मे 10 लाख स एर पैसा भी कम खच नहीं होता। भाईयो हम गरीबों के लिए ता चुनाव नहीं है और यह ता साधारण बात हो गई है कि कई भ्रष्टाचार भ्रष्टाचार नहीं रह वे सदाचार हो गए हैं लकिन सीधी अगुली घी नहीं निकलता—जहां अगुला बाकी की घी साफ निकल आएगा।

यह बोकापन क्या है ? भ्रष्टाचार नहीं है तो क्या ?

मुन्नम—जनाब आप ठीक कह रहे हैं लेकिन यदि यह सब नही करना हो तो मन्दिर म भभूती लगाकर बैठ जाइए फिर उपदेश दीजिए। सरकार का सीधा अपरोक्ष लाभ लेना भ्रष्टाचार है लेकिन इसका कोई मापदण्ड और प्रमाण नहीं है। उद्योग कोई निज म ही लगा

एगा, सेठ रामधन की बताइए कि वे राज से सब रियायतें ले लें लेकिन किसी को एक पसा भी न दें।

सेठ रामधन हसा—अरे आप व्यथ की बहस कर रहे है मुझ तो मन्त्री महोदय का आदेश है, मैं उनके रहते रिश्वत दूगा—सब रियायतें तो नियमा के साथ है।

द्वारका जो अब तक मौन था, सारी यात्रा मे एक शब्द भी नहीं बोला अब उसकी जबान तेज तर्राट हो रही है—भाई साहब नियमो का पालन हो जाए तो भ्रष्टाचार भले ही नहीं लकिन नियमो का लाभ लेने के लिए अधिकारियो, कमचारियो का हाथ गम करना पडता है। सारग म सेठ लक्ष्मीमल को आप जानते हैं वह बडा बहादुर है, वह घर बैठा सब काम करा लेता है। क्या किसी की उस पर महरबानी है उस घट्टरो, रेले और सीमट के परमिट मिलते हैं वह अधिकारी की जेब गरम कर आता है, फिर वही आता जाता नहीं न मन्त्री महोदय से मिलता है और न किसी विधायक को साथ रखता है। बधे बधाए रेट हैं, स ध्या को घर बैठे उसे सब मिल जाता है। लेकिन 10 पसे का मुनाफा कमाता है तो 5 पसा रिश्वत म देना होता है। भाई भ्रष्टाचार बहुत गहरा है सुना है परमो हमार ठेकेदार देवीसिंह न 2200) रुपये देकर खयामत के मामले मे बरीयत ली, अर याय भी बिकने लगा—अब कहीं कोइ रास्ता नहीं है हम दलदल मे फस गये हैं अब तो प्रभु ही बचाए—कोई बचा नहीं है। चपरासी से लेकर सबसे बडा अधिकारी मन्त्री, मुख्य मन्त्री—लोग कहत हैं कि शुक्ला साहब मुख्य मन्त्री पद स अलग हुए तो 15 करोड की सम्पत्ति छोड गये मुख्य मन्त्री बन तो 2 कोडी के नहीं थ, ईमानदारी का नाम लेना गुनाह हो गया—सुना है, हमारे म त्री महोदय ने दल बदल के 20 लाख रुपये हासिल किए हैं वे बीस लाख कहाँ से आ गये, सेठ साहूकारों से और व देते हैं, 5 तो 100 कमाने के लिए भाई साहब—जो न कहा जाए, वह थोडा—विधायक तबाल्लो मे खा रहे हैं कायकर्ता एजेण्ट का काम करते हैं वे भी कुछ हिस्सा रख लेत हैं लोकतन्त्र मे भ्रष्टाचार भी लोकतान्त्रिक हो गया है—

आप राज्य से रियायतें लो और खूब फलो फूलो। खुद भी रिश्वत दो और दूसरों से भी दिलाओ। अब तो महात्मा गांधी नहीं उनसे भी बड़ा महापुरुष आएगा तो रिश्वत खोरी खत्म होगी।

जंक्शन स्टेशन आया—यहां के तहसीलदार साहब आए और चाय नाश्ता की व्यवस्था की—2–3 मिठाई, नमकीन, चाय, फल, चाय पिलाई और बचाया नाश्ता पैकेटस म बन्द कर के दे दिया गया। तहसीलदार प्रसन्न था उसने कहा उद्योग मन्त्री की इत्तला आई है आपको किसी तरह का कष्ट तो नहीं हुआ हां आप भी मन्त्री महोदय को खबर दे दीजिये—बस म क्या लिखूंगा, हां मारग पर बस तैयार मिलेगी। आप शाम को ही घर पहुंच जायेंगे स्टेशन पर सब लोगों की निगाह इन विशेष अतिथियों पर और वे सब अनुभव कर रहे थे कि वे सब महा पुरुष हैं विशेष व्यक्तित्व वाले, जिनका सब सम्मान करते हैं।

आप मेरे सम्बन्ध म लिखना न भूलें—गाड़ी चलती, तहसीलदार मुस्कराकर हाथ जोड़े खड़ा था। जब गये तो द्वारका ने कहा—हम बुराई क्या करें बस मन्त्री महोदय का शब्द, और सब रास्ते साफ, तहसीलदार हमारी खातिरदारी करने आया अरे रोज तो इनकी अदालत म जानते हैं हाथ जोड़े खड़े रहते हैं, साला झांकता तक नहीं, साधारण रजिस्ट्री कराओ तो रिश्वत के 100) रुपये नहीं तो रजिस्ट्री नहीं। अहलकार अलग नामान्तरण म चार चार, 200) रुपये तो मामूली बात है। मेरे परमां नहीं गये सप्ताह म मारग गया था, पूरे टाइम बैठा रहा। तहसीलदार जब भी मुंह ऊंचा किया मैं हाथ जोड़ कर उठ खड़ा हुआ, लेकिन साला झांका तक नहीं। आज वह हमारी परवाह कर रहा है। जब 100) रुपये का नोट अहलकार को दिया तो अगला के टाइम के गरम होते होते हुक्म दिया—कोई काम नहीं था जमीन का सब का स्वीकृति से पांचों बटवारा।

अहमद—अरे साहब इनके नसरे किसी से कम नहीं है, मुझे याद नहीं आता कभी हथेली गरम किए बिना कोई काम नहीं किया।

महेन्द्र सिंह—मुझे मालूम है साला चार कहीं का महीने के

1 बी ५० मौलनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

10 हजार रुपये कमाता है, हा मै तो मन्त्री महोदय से शिकायत करने वाला था कि इसका मुह काला करो लेकिन याद ही नही रहा, मै लिखू गा, कल ही मन्त्री महोदय को—और इसका तबादला करवाऊंगा, नाश्ता कराकर वह साला हमसे शिफारिस कराना चाहता है—मै अपने बाप का नही, जो सस्पेण्ड नही कराऊ तो तबादला तो होगा ही ।

द्वारका—बताइये तहसीलदार अपनी वेतन से खर्च करेगा, कही न कही बडा हाथ मारा है। यह मात्र सौ रुपये का खर्चा था ही नही किया—कैसे हाथ जोडता था साला अदालत मे बैठता था तो गरूरी मे और यहा दीन दुखियों की तरह—चोर तो निकला होगा, सबने उसकी क्रूरता देखी है ।

गाव मे पहु च कर कार्यकर्ताओ ने इन्द्रसिह की प्रशसा के पुल बाध दिए—रामधन ने तो कहा कि बस एक वर्ष ठहर जाओ, सारा गाव स्वर्ग बन जायेगा, राजधानी की कपडा मिल देखकर वह सोचने लगा कि उसकी भी एक ऐसी मिल होगी जिसकी सालाना आमदनी 50 लाख से ऊपर होगी उसने जमीन देखली, पूरी 250 बीघा जमीन, सस्ती मिल जाएगी, आगे वही कीमत बन जाएगी, उसम फाटक कहा होगी जमादार कैसे खडा रहेगा, वह जब जाएगा तो जमादार उसे सेल्यूट कैसे मारेगा ?

रोशन लाल ने गाव की नई सेवा सहकारी समिति बनाना तय कर लिया, पहले वाली सोसायटी डिफाल्ट मे है उस पर हजारो रुपये बाकी हैं रोशन लाल और महेन्द्रसिह इस सोसायटी के क्रमश अध्यक्ष व मन्त्री हैं लगभग 20 लाख रुपये सदस्यो के नाम पर लाकर खुद ने फर्जी अगूठ की निशानी कर रुपये खा गये, रोशन लाल ने अपनी पत्नी धापू बाई के नाम से कारोबार प्रारम्भ कर दिया था, और महेन्द्रसिह ने अपनी मा दाखी बाई क नाम सारी जायदाद कर दी थी, क्यों इन लोगो से वसूली के मुकद्दम चलते रहे, अब इनकी तरफ से मोहनसिह ने मन्त्री महोदय को मुकद्दम उठाने का निवेदन किया था और सहकारी समिति ने मुकदमा उठाने का आदेश प्रचलित कर दिया और एक एक प्रतिलिपि महेन्द्रसिह और रोशनलाल को दे दी ।

महेन्द्रसिंह ने रोशनलाल को कहा—भाई, इससे ज्यादा मंत्री महोदय क्या करते, रुपये तो हमारे जिम्मे थे, उनको माफ कर दिया राज्य सरकार में क्या घाटा पड़ेगा ऐसे करोड़ों रुपये हर साल राईट आफ कर दिये जाते हैं।

यद्यपि इसमें पूर्व के सहकारी मन्त्री ने यह आदेश जारी कर दिया था कि इनके मुकदमों का छः माह में निपटारा कर दिया जाय ताकि अपराधी को नसीहत मिले, अगर ये अपराधी नहीं हो तो साफ सुथरा होकर सार्वजनिक जीवन को जी सकें लेकिन दो साल से यह आदेश भी पड़ा रह गया और अब उद्योग मन्त्री के आग्रह पर मुख्य मन्त्री ने आदेश प्रचलित कर दिया।

रोशनलाल ने आंखें बन्द कीं दोनों हाथ जोड़े और प्रभु से प्रार्थना की कि वही है जो हमारी गति विधियों को देखता है जिन गरीबों के नाम पर कर्ज लिए उनसे तो वसूल नहीं होगा रहा राज्य के खजाने का—वहां किसके कमी पड़ती है सब विभागों में लाखों के गबन हैं, अपने अपने मन्त्री आते हैं और वे मुकदमे उठा लेते हैं लेकिन हमारे मन्त्री बड़े साहसी हैं गत वर्ष भी हमारा ही राज्य था लेकिन मन्त्री महोदय ने उसका आदेश दे दिया।

महेन्द्रसिंह—बस अब सम्भल कर चलना चाहिए, रोशनलाल सम्भल कर चलने से क्या लाभ होगा, हम दो गबन करने में रह जाएंगे, सब जगह कुआ में भाग पड़ी है कहां तो आप पीने में गुरेज करेंगे। राज्य का पैसा किसका पैसा है, हम नहीं खाएंगे तो ये पूंजीपति बड़े ढंग से खा जाएंगे। एक पैसा न लगाए और करोड़ों की सम्पत्ति भोगें यह रामधन मशीन खरीदने में 10 लाख खा जाएगा—भवन निर्माण में 2 4 लाख का मुनाफा करेगा—फिर बंगला, कार मोटर, दैनिक भत्ता आदि तो अलग है यह सरकार इन सेठों को पैसे क्यों देती है, बड़े-बड़े अफसर बैठे हैं जो राज्य का काम चला रहे हैं क्या ये अफसर उद्योग धन्धे नहीं चला सकते—अरे सही स्थिति यह है कि ये सब उल भनें भी तो राज्य के बड़ अधिकारियों ने इन सेठों के लिए पैदा की हैं।

अब सुना है कि 51 प्रतिशत शेयर वाले सरकारी कारखाने भी बड़े सेठ हो चलाएंगे तुम्हें मालुम है सरकार को 50 करोड़ से 5 अरब रुपये हर साल नुकसान में दे रहे हैं—ये सेठ नहीं सरकारी अफसर खा रहे हैं और अपनी अयोग्यता की छाप लगा रहे हैं ताकि सब बड़े बड़े कारखाने सरकार इन सेठों को सौंपदे ताकि बड़े अधिकारी सेवा मुक्त होने के बाद बड़ी वेतन शृंखला पर इन ही कारखानों में नौकरी कर लें और तब ये अफसर ही मुनाफा कमाने लगेंगे।

महेन्द्रसिंह शान्ति से सुन रहा था उसने चौंक कर कहा—क्या हमारे मन्त्री इसको नहीं समझते ?

रोशनलाल—क्या नहीं समझते जरूर समझते हैं, लेकिन मन्त्री महोदय को जब धन चाहिए, तो कहां से आएगा ये सेठ ही तो देते हैं यह ऐसा गोल माल है कि आप एक बार इसमें उलझ जाओ तो निकल नहीं सकते।

महेन्द्रसिंह—बस हम भी इस तरह की योजना बनाएं कि जिससे लाखों पर हाथ साफ करें और कोई हमें न पकड़ सके सरकारी ठेके लीजिए और ऊंचे दामों पर और एक ही ठेका आपको लखपति बना देगा, तुम नहीं जानते सारंग का सेठ मुरलीधर पांच वर्ष पहले क्या था ? कच्चे मकान में रहता था, स्कूल में बच्चों को पढ़ाता था और केन्द्र के मन्त्री की कृपा हो गयी कि बस आज उसकी करोड़पतियों में गिनती है।

रामधन भी उधर हो आ गया—ऐसा क्या तरीका है मैं कल ही सारंग जा रहा हूं मेरा तो मुरलीधर सेठ सगा है लेकिन हम चूक कर अब वापिस सही रास्ते पर आ गए हैं, मुख्य मन्त्री एवं मन्त्री महोदय की छत्रछाया रही तो हम भी बड़े धन्ना सेठों की गिनती में आ जाएंगे।

महेन्द्रसिंह ने कहा—सेठ साहब हम मत भूलना—मैंने जो सोचा उससे तो मैं हजार पति भी नहीं हो सकता, खेती में क्या लाभ होगा ?

रोशनलाल—और मुझे भी मत भूलना, हम तीनों साथ ही रहेंगे।

सेठ रामधन—जरूर-जरूर।

रोशनलाल—झूठा ही खाना है तो फिर थोडा क्या, पट भर कर खाए।

हा रघु चमार के लिए चम उद्योग ही चालू करना चाहिए—रामधन अरे रघु चमार और जेता तो हमारे साथ हैं—चम उद्योग दो तरह क होते है एक ग्रामोद्योग म एक बडे उद्योग मे, हम बडे उद्योग स प्रारम्भ करेंगे, चमडा रगाई धुलाई— फिर चमडे के अच्छे से अच्छे सामान बनाना, तुम को नही मालुम यह सामान कई गुणा मुनाफे से बाहर देश म जाता है, बेचारा रघु चमार और जेता भोल भी तर जाए गे और हमारी तो पाचो अगुलिया घी म रहगी।

रोशनलाल—मन सोचा इनकी सहकारी समिति बनालू।

रघु का अध्यक्ष और जेता को म त्री और म भी डाइरेक्टर बन जाऊ लेकिन अब ऐसे छोटे धन्धे क्यो करें? सेठ साहब आप भी बढो और हम भी बढाओ। महेन्द्रसिह आप कल सारग जाकर सारी जानकारी ल लो फिर हम सारी तैयारी कर राजधानी चलें, ताकि जल्दी स जल्दी उद्योग चालू कर सकें। लेकिन म त्री महोदय ने कहा कि गाव म पढे लिख लोगो को रोजगार देने के लिए फहरिस्त भेज दू ताकि उनको नौकरी मिल जाए म यह फहरिस्त बना लू। रघु का लडका दसवी पास है उसको फिलहाल नौकरी पर लगा दू बाद म हमारे कारखान म लगा देंगे।

मोहनसिह आ गया। हा, सारग का सठ हरिकिशन आया है मुझे राजधानी ले जाने क लिए म त्री महोदय से काम है वह मै ही करा सकता हू।

क्या कह रहा है?

मोहनसिह माला 10 हजार से आग नही बढ रहा है और जो हुक्म होगा उसम उसको 25 लाख का फायदा होगा।

महेन्द्रसिह तुम मुझ मिला दो, एक लाख स नीचे सोदा मत करना, हम इसको चारो म बाट लेंग, अब हम सब एक हैं एक कमाएगा,

उसम दूसर का हिस्सा है हा तहसीलदार आया था, 2 हजार दे रहा है, उसके तबादले की बात न छेड़ें।

रोशनलाल–फिर उसको सबक कस मिलेगा–कि हम चाहे तो रखें, नही चाहे तो वह एक मिनट नही टिक सकता।

मोहनसिंह–अब कसम खाता है कि वह हमारे इशारे पर चलेगा कभी इधर उधर नही जाएगा और हर महीने हमे 500/ रु माहवार देगा।

साला कन्जूस है तुम्हे नही मालुम 10000/ रु महीना रिश्वत खाता है और फिर हमारा सरक्षण लेकर तो कितना खाएगा भगवान जाने, इसलिए उससे कहो कि कम स कम 2000/- र महीने तो दे भाई रात दिन काम आएगा राजधानी जाने का खर्चा कहा से लाए गे।

महेन्द्रसिह–थानेदार भी तो बहुत खा रहा है बस 2000/ रु माहवारी देता रहे नही तो सालो का पार काटो।

मोहनसिह–तहसीलदार तो यही आया हुआ है, म त्री महोदय ने उसको हमारा आतिथ्य करने के आदेश दिए उससे हमारा रुतबा बढ गया, 2000/ रु से नीचे नही लेना, आने वाला तहसीलदार इससे ज्यादा देगा और फिर इस बेईमान तहसीलदार को भी सबक मिलेगा, हमारी वाहवाही हो जाएगी कि हम भ्रष्टाचार को जड स समाप्त करने पर तुले हैं और तहसीलदार का इसी कारण तबादला कराया है इसलिए मैं सोचता हू म उसको कह दू कि न वे उससे रुपया लेंगे और न उसके भ्रष्टाचार को पनपने देंगे।

रोशनलाल–यह अच्छा है, कल अखबार म निकलवा देना चाहिए कि तहसीलदार हमे 2000/ रु दे रहा है, हम ऐसे भ्रष्ट तहसीलदार को नही रखेंगे।

मोहनसिह–सोच लो।

महेन्द्रसिह–हा अभी तो तहसीलदार हमारा दास हो जाएगा सेठ रामधन को अपने उद्योगो के लिए जमीन आबटन कराना होगा,

रा ख्याल है 2000/ रु म राजी हो जाए तो अभी किसी तरह का
उफान मत उठाओ कई मौके आएंगे और जो हम पर किसी तरह का
लाछन लगाएगा तो हम फौरन उसका तबादला करा देंगे, अरे तह
सीलदार की क्या हस्ती है अभी तो दो हजार रुपये की बात करलो,
आगे फिर देखा जाएगा, जब चाहेंगे तबादला हो जाएगा, मन्त्री जी को
बहुत की जरूरत है।

सब न कहा-ठीक है लेकिन अभी तो कई डाकू बठे हैं, हम उन
डाकुओं को सम्भाल लें तो लोग अपने आप आ जाएंगे, हा याद रखना
है कि महेन्द्रसिंह जी मोहनसिंह जी, रोशनलाल को ही इसम शरीक
रखा जाए सेठ साहब तो यों ही बहुत बडा हाथ मार रहे हैं पूरी 5
कराड की मशीन ले रहे हैं, रोशनलाल ने कहा-हम अधिक हल्ले मे नही
पडना है।

महेन्द्रसिंह न कहा-म थानेदार को बुलाकर कल बात कर लेता
हू यो मेरा रिश्तेदार है लेकिन 10000/ रु माहवार पर हाथ साफ
करता है, बाट बाट कर खाना चाहिए।

भाई 2000/ रु की इससे भी बात कर लू आगे फिर देखा
जाएगा यो थानेदार का व्यवहार अच्छा है सबको बराबर समझता है,
उसने अच्छा असूल बना रखा है सबकी बात मानता है और उनके
हुक्म की तामील करता है।

मोहनसिंह-और आवरसियर की रिश्वत को नही जानते साला,
सबसे ज्यादा डकारता है। 20000/ रु महीना।

रोशनलाल-अच्छा ?

मही तो-अरे 1/ रु का काम कराना हो तो 5/ रु खर्च करो
ताल म झूठ मोल मे बेईमानी, नाप तो मत पूछो कुल नाप तो 10
फुट दर्ज करता है सुना नही गुना है सडक निर्माण हुआ नही हुआ,
हिसाब उठाकर 1300000/ रु उठा लिए।

य माल तनख्वाह की क्या परवा करें महीने के 600/ रु
मही मिलती है सोचता हू 5000/ रु महीना बाध लेने चाहिए कौन

बात करेगा—रोशनलाल ने उग्र होकर कहा—मोहनसिंह में बात कर लूगा।

महेन्द्रसिंह—तुम नही जानते बडा जोरो का आदमी है, कई के छक्के छुडा चुका है।

मोहनसिंह—बुद्ध का ज्यादा हो तो।

रोशनलाल—देख लेना हम कौन सा घी तौल रहे हैं, हम लेते ही नहीं लेकिन गावाई काम के लिए रोज पातरे राजधानी जाना पडेगा, खर्चा तो लगेगा, गांठ का गोपी चन्दन कब तक लगाते रहगे।

सेठ रामधन—भाई जब तक मेरी मिल चालू नही होती तब तक—मै एसे खर्चे होगे तो कहा से करू गा, कल मन्त्री महोदय आए गे मुख्य मन्त्री भी आ सकते हैं, उनका स्वागत सत्कार करना हो तो बताओ भला कहां से होगा।

अरे सेठ तुम्हारे कौन सी कमी है और यो ऐसे काम के लिए जरूरत पडी तो खच होगा ही—हम पीछे रहगे क्या ? एक ही दावत मे 5000/ रु का खर्चा समझो, गरीब घर बक को सहायता देना होगा तो वहां स आएगा, बिना खर्चे के आप हिलडुल ही नही सकते इन अफसरो के नाक म नकेल डालना चाहिए, चोरी करते हैं तो भले काम मे खच भी करें रोशनलाल जोर से हंसा।

———

मारव ग्राम मे बहुत बडी डकैती हो गयी, सेठ मोहन च द के यहा बच्ची का विवाह था। सब महमान एकत्रित हुए, लगभग 100 महिलाए और 200 पुरुष बाहर से आये थे महिलाओ की ठहरने की व्यवस्था मोहन चन्द के घर पर ही रखी गयी, पुरुषो की ठहरने की व्यवस्था अलग अलग स्थानो पर की गयी। विवाह की पूर्व सध्या को बिन्दौरी लगभग 7 बजे निकली और गाव भर म घूम कर 10 बजे घर पहुची, इतने म चार जीपें गांव म आयीं और मोहन चन्द के मकान को घेर कर रिवालवर निकाल कर खड हो गये डाकू न चेतावनी दी—

समारोह जो कोई आगे बढ़ा और बकाया डाकू मोहन चन्द के मकान म दाखिल हुए सब मेहमानों का जेवर एकत्रित कर जीप म रख दिया, युवा महिलाओं क साथ बलात्कार किया। सारण म ही पुलिस थाना था लेकिन कोई नहीं आया सेठ ने रामू दरोगा को थाने म खबर देने के लिए भी भेजा था लेकिन पुलिस वाले पहुचे तब तक लूट कर डाकू भाग गये गाव क किसी आदमी ने साहस नहीं किया, कुल 8 डाकू थे, दो बन्दूक लेकर खड़े हो गये बकाया ने औरतो के जेवर उतार, लगभग एक हजार तोला सोना और 500 किलो चांदी लेकर चले गए, गाव म किसी को साहस नहीं हुआ कि उनको रोकता। लगभग 25 लाख की डकैती थी और राज्य म पहली इतनी बडी डकैती पडी थी उद्योग मन्त्री चन्द्र सिंह फौरन सारण पहुचे। अपने साथ आई जी एवं विशिष्ट पुलिस अधिकारी भी मौजूद थे राज्य की ओर से 50 हजार का इनाम घोषित किया गया और राज्य क डकैती के विशिष्ट अधिकारियों को तफतीश सौंपी गयी लेकिन गाव मे ही सेठ के विरोधी लोग थे जिनको यह आनन्द आ रहा था कि मक्खीचूस की मक्खी चूसी आज जाहिर हो गयी लेकिन नुकसान का 90 प्रतिशत भाग सेठ के मेहमानों का था जो विवाह म आए थ। पुलिस म रामलाल दरोगा का बयान हुआ, उसमे जो भयावह चित्र प्रस्तुत किया वह इस प्रकार था—

6 डाकू मकान म घुसे दो आदमी रिवालवर निकालकर खड़े हो गए और 4 डाकुओं ने घर म घुस कर औरतो के जेवर उतरवाय उनकी पटियों की तलाशी ली और जो युवा थी उनके साथ बलात्कार किया— पुरुष बाहर खड़े रह और जब सब लूटकर ले गये तो पुरुष घर म घुस कुल 6 युवतियों के साथ बलात्कार हुआ लेकिन किसी भी युवती न बलात्कार की बात नहीं कही।

सारण क सेठ की पीढ़ियों से सेठ रामधन के साथ दुश्मनी चली आ रही थी और सेठ मोहन चन्द की शका यह थी कि सेठ रामधन ने ही यह डकैती करवाई है। पुलिस के पास काफी गुंजाइश थी इस बात

की कि सेठ रामधन चोरी के माल को खरीदता रहा है डाकुओं को सरक्षण भी देता रहा है।

इसलिए पुलिस अधीक्षक ने पहले रामधन को बुलाया, रात को *11 बजे एक जीप आई तो लोग चौंक गए लेकिन वह जीप आई जैसी* चली गयी किसी को मालूम भी नही हुआ। सुबह रामधन के घर पर हा हा कार मच गया कि रात को डाकू आए और रामधन को अपने साथ ले गये, गाव वाले इकटठे हुए। महेन्द्र सिंह मोहन सिंह, रोशन लाल रामदत्त, नन्दा रघु चमार भूरा भील और कई इकटठे हुए और *रोशन लाल ने म त्री महोदय को फोन किया कि रामधन को कोई रात* को उठा ले गया, वापिस अब तक नही आया—इस पर म त्री महोदय ने थानेदार को फोन किया तो पता लगा कि डकैती की पतेरसी म सेठ रामधन की पूछताछ चल रही है। इसी सिलसिले मे यह भी पता लगा कि सेठ रामधन चोरी का माल लेता रहा है। सुबह ही उनके द्वारा दिया हुआ सोने का जेवर–रेवत राम बजारा से बरामद हुआ है।

उद्योग म त्री ने किसी तरह की दखल देने की बात नही की, यदि रामधन से पता चल सके तो बहुत बडी बात होगी, यो इन्द्र सिंह को मालूम है कि सेठ रामधन चोरी का माल खरीदता रहता है।

सेठ रामधन के भाइ भतीजे, और मोहन सिंह इस पैरवी म लग गए कि रामधन को छुडा लाए मोहन सिंह न फोन किया तो इन्द्र सिंह ने कहा—इसमे अपने को दखल नही देना चाहिये, वरना राज्य की सबसे बडी डकैती का पता नही लग पाएगा।

मोहन सिंह पीछे हट गया लेकिन सेठ रामधन के भाई ने 25000) रुपय देकर रामधन को छुडा लिया। चोरी के माल खरीदने की बात समाप्त कर दी गयी और यह कहा गया कि वतमान डकैती के सम्बन्ध स उसका नाम लिया जा रहा है वह मात्र दुश्मनी के कारण है।

हेड का सटेबुल गाव-गाव बिखर गए और ऐसे किसी आदमी को नहीं छोडा जो चोरी का माल खरीदने क सम्बन्ध म पुलिस म पकिस है।

सौ डेढ सौ व्यक्तियों से लगभग 5 लाख रुपये ठग कर ग्राम की कार्यवाही खत्म कर दी कोई गाव ऐसा नहीं बचा जिसमे शंका भरे व्यक्तियों का गिरफ्तार नहीं किया गया—उनको गाव मे लाया गया और पहिचान कराई गयी महिलाओ ने अधिकाश को पहचाना लेकिन उनके द्वारा किसी चोरी की चीज की बरामदी नही हुई। किसी से एक हजार किसी से 2000) तो किसी से 5000) रु लेकर छोड दिए गए। विधान सभा म कई प्रश्न प्राय पुलिस निकम्मी है, वह रिश्वत खाकर मुकदमे को बिगाड रही है—4 जीपें थी, किसी का भी नम्बर नहीं बताया गया। 8 डाकुओ म एक भी पकडा नही गया—और 3-4 माह बाद मुकदमे की पतरमी को एक थानेदार की साधारण तफतीश की तरह दफ्तर विशेष कार्यवाही बन्द कर दी गई।

रामधन ने रोशन लाल महेन्द्र सिंह मोहन सिंह का कहा कि पुलिस ने उसके साथ मारपीट की और पूरे 25000) रु रिश्वत के लिए थानेदार से जहा हम मासिक देते वहा पहले ही बार म उसने हमें परेशान कर दिया आज मुझे किया कल तुम्हें करेगा, परसो और को करेगा—

महेन्द्र सिंह ने कहा—साले की नानी याद करा दू गा, उसके खून म से 25 हजार की जगह 50 हजार वसूल नही किए तो मेरे बाप का मूत नही हू। अभी तो हमारे मासिक चन्दे की बात भी नहीं की है इसके साथ ही इन 25000 को वापिस निकलवाने का काम भी हमारा है सेठ साहब आप तो मिल लगाने म लग जाइये हम हैं किस काम के ?

मोहन सिंह आज ही थानेदार आ रहे हैं मैं उस रावले म बुलाऊगा और पूछूगा कि हम सब मन्त्री महोदय के आदमी हैं, उसने सेठ पर वार कर किया-मान गया तो ठीक नहीं तो बन्द स ही लेन हाजिर आप इसलिए मेरे हुक्कट जब पीठ पर बन्द दीवान साहब का हाथ है तो डर किस बात का—और इन 25000) रु को तो निकाल सु मा हो उसका मासिक भी तय कर लेता हू सेठ साहब आप ता अपना

मिल चालू रखिए गाँव में एक कारखाना लग गया तो हमारा गाँव बड़े शहर को मनक पा लेगा, लेकिन मेरी म त्री महोत्य स बात हुई, उसमे उन्होंने बताया कि पुलिस के पास सबूत हैं कि सेठ चोरी का माल लेता देता है लेकिन एक डाका पड़ा, पुलिस न इस डकैती की बरामदगी म कई डाक वाले पूर 1000000) रु वसूल किये, समझो यह दूसरा डाका था, पचास हजार क इनाम की कौन परवाह करे–

रोशन लाल–अच्छा ? पुलिस अपना हाथ साफ करती है तो ऐसी कि कुछ मत कहिए। चारो ओर आदमियो स पूछताछ करती है उनको फमाने का डर बताती है और रिश्वत खाकर छोड़ देती है–अजी स्साले–ये पुलिस अफसर किसी की गल नही गलने देते, हमारे म त्री महोत्य ने फौरन एस पी से पूछताछ की कि सेठ रामधन जस प्रसिद्ध सेठ को क्यों गिरफ्तार किया, फौरन कह दिया हुजूर यह डाका ही उनकी प्रेरणा से पड़ा है, तलाश करते हैं, म त्री महोत्य क्या भला ऐसा नहीं कहत, मह द्र सिह जी इसका जवाब देंगे।

इतने म सामन से थानेदार रमझू खाँ गाँव में आता नजर आया और इनके पास आकर रुका–ये सब सेठ रामधन के मकान के बाहर चबूतरे पर बैठे थ।

महेन्द्र सिह उठा, थानेदार साहब चलिए रावल म चलें, यहाँ बाजार मे बठने से लाभ क्या ?

सेठ रामधन हाथ जोड़े खड़ा था, उसको जसकी नानी याद आ रही थी, उसक घुटनों, कुहनियो और ऊपर म जो मार पड़ी थी–थानेदार का डंडा देखकर ताजा हो गयी, थानेदार ने सेठ को कहा–बस मैं आता हू आप यहा बठिए लेकिन बाबू महेन्द्र सिह जी आप रावले चलिए मैं सठ साहब से दो टूक बात ही करलू ।

महेन्द्र सिह हँसा–दो टूक बात ही तो और तो कुछ नही–आपको मालूम है हम सब सत्ताधारी दल म शरीक हो गए हैं, अभी पूरे एक सप्ताह मन्त्री महोदय के मेहमान रहकर आए सारंग स्टशन पर तहसीलदार मिला था मैं सोचता हू अब सुधर गया है, हमारी वो खातिरदारी की कि कुछ कहते नही बनता।

लेकिन मुझे तलाशी तो लेना पड़ेगा, नही लूंगा तो उल्टा बदनाम हो जाऊंगा। और 25000) रु मेरी क्या औकात ये ठेठ ऊपर तक पहुंचते हैं।

सेठ पैर पकड़े गिड़गिड़ा रहा था–उसने अपनी पगड़ी उतारी और थानेदार के पैरो म रखदी।

थानेदार ने कहा–कागज तो भरने पड़ेंगे, चलो म तलाशी नही लूं मेरे पास सबूत है कि डकैती का माल आप यहां रखते हैं–एक बार हमने आपके जेवर ले लिया तो समझिए आप से तो गया हो, 10 वर्ष बाद भी आप नही ले सकेंगे।

सेठ रामधन ने थानेदार के पैरो में सिर टेक दिया थानेदार साहब मेरी इज्जत आपके हाथ मे है खरीद फरोक्त तो होती है, कौन जाने कौनसी वस्तु चोरी की होती है।

आप 10 हजार रुपए और ले आइए और म ऊपरी ऊपरी तलाशी ले लेता हूं तहखाने म माल रखा है उसकी तलाशी नही लूंगा। आप इसके बाद माल इधर उधर कर दीजिए सोना गला लीजिए हम आपकी इज्जत बिगाडने से क्या मिलता है, हमें मालूम है *आप डकैत तो हैं नही, डकैती का माल ही तो लेते हैं।*

सेठ उठा और अन्दर गया 10 हजार के नोट लाकर थानेदार को दिए–थानेदार ने 5 पचो को इकट्ठा किया, उसकी बैठक के नीचे तहखाना है उस पर दरी और गद्दी बिछी है।

पचनामा बना, कोई चीज बरामदगी नही हुई खाना पूर्ति की कार्यवाही हो गई और दस हजार रुपए देकर सेठ ने एक बहुत बड़ी डकैती के माल खरीदने से मुक्त दोषी पायी।

महेंद्रसिंह भी काफी इन्तजार के बाद वहा आ गया, तलाशी में वह भी शरीक हुआ, सेठ की वाह वाह हो गयी।

फिर थानेदार रावले मे गया वहा चाय, पानी और भोजन का प्रबन्ध था।

महेंद्रसिंह ने कहा–देखो थानेदार साहब, उद्योग म भी की

बुरी जगह नही आप नही कमाते होगे आप से पहले वाला 20000) रु मासिक कमाता था, मेरा मौसी आया भाई ही तो था और हम क्या या ही ले रहे हैं, समझिये सब ठीक होगा–कार्यवाही तो रात दिन चल सकती है झूठी सच्ची शिकायतें लगाना मामूली बात है आपकी तरफ से भी कोई बोलने वाला हो।

थानेदार–ठाकुर साहब मैंने आज तक कभी रिश्वत नही ली, अब आप चाहें तो 1000) रु महावार इकट्ठा करूगा।

नही थानेदार साहब इससे काम नही चलेगा राज आपके पास काम आता रहता है आप 2000) रु का प्रबन्ध कर दें हमारा काम भी चलता रहे और आपका भी महेन्द्रसिंह जोरों से हँसा।

थानेदार ने दोनो हाथ जोड दिये। मै जब बाहर जाता हू तो किसी के यहा पानी तक नही पीता, रिश्वत लेना तो दूर लेकिन फिर भी दीवान जी को कहकर आपकी आज्ञा का पालन करूगा, एक हजार भी मुझे मुश्किल मालूम पडता है दो हजार कैसे होगे।

महेन्द्रसिंह का क्रोध आ गया, तो आप जानें आपका काम जाने, बस मैं तो कह चुका–रमेश चन्द्र शर्मा मोहनपुरा का थानेदार है कल ही आया, सारंग आना चाहता है, और बडी खुशी से 2000) रु मासिक की व्यवस्था कर देगा–खुद भले ही कुछ ले–ऊपर उद्योग मन्त्री जी ही क्यो मुख्य मन्त्री जी की छाया भी सदैव बनी रहेगी–छोडिए आप जैसे ईमानदार थानेदार के लिए 2000) रु ही क्यो एक हजार भी मुश्किल है–चलिए भोजन कर लेते हैं, आपको देर हो रही है, और थानेदार साहब अपनी ईमानदारी की टांग मत मारिए, अभी भी फोन कर मैं एस पी साहब को बुलाकर आपकी जेब की तलाशी लिवा सकता हू, सेठ के तहखाने की तलाशी क्यों नहीं ली, जब कि आपको मालूम है कि आप तलाशी लेते तो 20 लाख का चोरी का माल बरामद होता, स्साला रामधन–हमारे साथ क्यों लगा है अपने पापो पर पर्दा डालने। आप उसके बाप निकले, पूरे 10 लिए हैं न ?

खर छोडिए आपकी ईमानदारी को मैं क्या चुनौती दू, और कसम खानी है कि आपसे जो रकम आएगी पहले सार्वजनिक खर्चे में लगाए गे, एक पैसा भी नहा खाए ग ।

थानेदार म पसीना आ गया ठाकुर साहब आप तो नाराज हो गए। हमने सेठ रामधन की तलाशी भी इसलिए नहा ली कि वह गोयाल साहब का आदमी है आपके साथ है तो फिर 2000) रु मासिक आपके पास पहुचते रहेंगे-

आपकी कृपा चाहिए-हा ठाकुर साहब मेरी प्रमोशन होने वाली है, मैरिट का प्रश्न है-आप जानते हैं जिस मन्त्री महोदय चाहें वह मैरिट वाला हो जाता है बस आप यह काम करा देंगे, बाल बच्चों का भला होगा और मैं जिन्दगी भर आपका अहसान नहीं भूलू गा ।

ठाकुर महेन्द्रसिंह ने थानेदार का हाथ पकडा आप देखेंगे हमे जो करना है वह हम करेंगे आप को जो करना है आप करेंगे-दोनों हाथ साथ धुलते हैं एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

थानेदार-आप बजा फरमा रहे हैं, मेरी खिदमत करने का काम है, वह करता रहूगा-आप की नजर रही तो मैं डी एस पी बन जाऊ गा तब नीचे के थानेदार को वह कर आप जितनी जरूरत समझेंग करा दू गा ।

वह तो होगा ही । ठाकुर ने थानेदार का हाथ पकडा और उसको भोजनकक्ष म ले गया।

महेन्द्रसिंह सारण क्षेत्र का प्रतिनिधि ही नहीं बना वह राज्य भर के लोगो के व्यक्तिगत एव सामूहिक आरोपो को निपटाने का माध्यम बन गया इन्द्रसिंह उप मुख्य मन्त्री ही नहीं वे बडे शक्तिशाली मन्त्री थे और महेन्द्रसिंह के द्वारा अन्य क्षेत्र के लोग भी इन्द्रसिंह या मुख्य मन्त्री के पास पहुचने लगे ।

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सारण का अब्दुल हुसन ईशाली चद्दर, सीमेन्ट और फौलाद के कोटे के लिए जब महेन्द्र सिंह क पास आए इसक पहले राज्य मे कवल दो व्यापारियो को कोटा दिया जाता रहा है उद्योग मन्त्री का निजी क्षेत्र होने से तीसरे व्यापारी अब्दुल हुसन ईशाली को कोटा दिलाना था–व्यापारी ने महेन्द्रसिंह को 20000) रु दिए–महेन्द्रसिंह न म त्री महोदय से आदेश प्राप्त कर लिया और राज्य भर के लिए निश्चित कोटे मे से तीसरा हिस्सा व्यापारी को दिया जाने लगा–यह आदेश महेन्द्रसिंह का मुख्य मन्त्री का नजदीकी व्यक्ति बना गया, फिर तो पुलिस, प्रशासनिक एव अन्य अधिकारियो के स्थानान्तरण का काय भी महेन्द्रसिंह को मिल गया–और वह इस महान काय के लिए राजधानी म एक विशाल मकान लेकर रहन लगा–आलीशान कोठी, कार नौकर सब व्यवस्था हो गयी ।

सेठ रामधन को सूती मिल चलाने का आदेश प्राप्त हो गया और उसके साथ ही–उसे राज्य के वित्त निगम से ऋण मिल गया–धरती पूजन के लिए मुख्य म त्री और उद्योग म त्री पधारे–जिन्होने घोषणा की कि हमारे दल के उद्देश्य के अनुसार राज्य के प्रत्येक गाव मे उद्योग ध धे चलें, लोगो को रोजगार मोहिया हो ।

सेठ रामधन ने हाथ जोडकर कहा कि उसने मिल की स्थापना भी कवल गाव में रोजगार देने के लिए की है ।

रघु चमार ने मन ही मन कहा–मेरा चम उद्योग कब चलेगा—उसने एक उसास भरी, वह सभा स्थल मे एक तरफ बैठा था, जेता भील और दूसरे आदिवासी एव जनजाति या अनुसूचित जाति के लोग भी एक तरफ बैठ बठ सुन रहे थे । उद्योग म त्री क भाषण के बाद मुख्य मन्त्री न कहा–भाईयो हमारा उद्देश्य उन गरीब तबके को ऊपर उठाना है जिसे आज दो टक भोजन नहीं मिलता—हम चाहते हैं कि गाव में एक भी आदमी निरक्षर नही रहे । कोई ऐसा न हो, जिसे रोजगार मोहिया न हो, आपके ही नही समस्त ग्रामो को सडक से जोड़ा जाएगा, बिजली लगाई जायेगी । आप बटन दबाकर खेत पर सो जाइए, नीन्द

उठे तो देखेंगे कि बिजली से सारे खेत की सिंचाई हो गई। यह दिन दूर
नहीं जब गांव में कोई कच्चा मकान नहीं रहेगा हमने योजना बनाई
है कि कोयले से नहीं वरन् चुम्बक क्षेत्र से जो पृथ्वी के चारों ओर
फैला पड़ा है, बिजली का उत्पादन करें। आप जानते हैं हमारा राज्य
प्रथम है जहां सूर्य की उष्णता से भोजन बन रहा है जगत कन्ना अ
होने वाले हैं हो हमारे इंजिनियरों ने ही अपनी वैज्ञानिक खोज से
आकाश में फैले बादलों को एकत्रित कर मनचाही बरसात कराने का
जिम्मा लिया है अब हम सोचते हैं हमारे राज्य में कभी अकाल नहीं
पड़ेगा। एक बात और बता देना चाहूंगा कि इस महान यज्ञ में मैं
आपकी सहायता चाहता हूं आपका योग चाहता हूं ताकि हम आगे
बढ़ सकें और विश्व के राज्यों में हम अग्रणी बन सकें।

ये काम तब सम्भव हो सकेगा जब भ्रष्टाचार समाप्त हो
काला धन गायब हो जाए। भ्रष्टाचार का उन्मूलन कर हम राष्ट्र को
शक्तिशाली बनाना चाहते हैं। जिस देश में भ्रष्टाचार है वह देश तरक्की
नहीं कर सकता है हमने तय किया है कि हम पक्षपात से दूर रहेंगे।
किसी भी व्यक्ति को हमारे पास पहुंच कर अपने अभियोग को रखना
चाहिए हम उसके अभियोग को सुनकर उसके कार्य की पूर्ति करेंगे।

गांव के प्रत्येक नागरिक के रहने का मकान, खेती के लिए जमीन
और सिंचाई के साधन होंगे। आप के पास उत्थान नाम की नदी पर
एक बांध बनाया जा रहा है हमने उसका सर्वेक्षण करा लिया है, 100
करोड़ की लागत का बांध। कोई खेत ऐसा नहीं रहेगा, जिसमें पानी
नहीं पहुंचे। खेती के कार्य को औद्योगिक कार्य समझा जाएगा, हमारे
देश में दूध की नदियां बहती थी, आप देखेंगे कि शीघ्र ही दूध की
नदियां बहने लगेंगी हम आज ही घोषणा करते हैं कि आपके गांव में
उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन निर्माण के लिए 2 लाख रुपये देते
हैं सेठ रामधन एक लाख रुपये लगायेंगे।

मैं भूला नहीं हूं अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए हमने
हितकारी योजनाएं बनायी हैं चर्म उद्योग की स्थापना आपके रघु भाई

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ने आवेदन पत्र दिया है, मैं समझता हू आगामी महीने मे आपके उद्योग मन्त्री जी उसका शिलान्यास करेंगे।

लेकिन मैं आपस कहना चाहूगा कि विकास की दौड मे आपका भी बहुत बडा दायित्व है आप राज्य से काम कराने के लिए किसी को एक पैसा भी न दे।

कोई काम करन म देरी करे या रिश्वत मागे तो आप मुझे या उद्योग म त्री से शिकायत कर सकते हैं, गरीबी बहुत बुरी चीज है उसका उन्मूलन अकेला राज्य नही कर सकता, उसमे सब का योग चाहिए।

आपके यहा तो राज्य मे आदिम जाति एव जन जाति के लोगो की सख्या भी बहुत बडी है हमने उनके लिए भी बडी बडी योजनाए बनाई है जिससे उन सबको उनके अनुकूल व्यवसाय दे सकें।

हा जो श्रम करता है और कमाता है जो उत्पादन करता है उसे उसकी वस्तु के पूरे पैसे मिलने चाहिएँ। इसके लिए हम चाहते हैं कि सहकारी सस्थाओ को मजबूत किया जाए ताकि उनको आढत म उनको पूरी रकम मिल जाए। राज्य के सामने बडी बडी योजनाए है, उनको शीघ्र ही चालू किया जाएगा आपके उद्योग मन्त्री बडे योग्य व्यक्ति हैं अपने क्षेत्र को ही नही, सम्पूर्ण राज्य को उद्योगों से भर देना चाहते हैं।

इन्द्रसिंह न जिस व्यक्ति को विधान सभा चुनाव मे हराया था—आज मुख्य मन्त्री के पास डायस पर बैठा था।

मुख्य म त्री महोदय न कहा—आज मैं अपने साथी दौलतराम जी मरण को नही भूल सकता, यद्यपि य आपके क्षेत्र से हारे हैं लेकिन उनमे बहुत बडी लगन है और राज्य क विकास के लिए वे हमारे ही अग बन गए हैं। अब दोनो उम्मीदवार श्री इन्द्रसिंह जी और दौलतराम जी दोनो मिलकर कधे से कधा मिलाकर आपके क्षेत्र को आगे बढान म योगदान देंग वे अपन समस्त दल के साथियो क साथ एक हैं आपके क्षेत्र क विकास मे भागीदार हो रह हैं।

इन्द्रसिंह ने उठकर कहा—मैं माननीय दौलतराम जी से कहूंगा कि वे अपनी बात कहें वे मेरे निकट मित्र और साथी हैं, उनका योग पाकर मैं प्रसन्न हूं अब आपके यहां दो दल न होकर एक ही दल रहेगा ताकि विकास की गति तेज हो और आपका क्षेत्र राज्य में सबसे आगे हो।

दौलतराम उठे लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट में आवाजें दीं, दौलतराम जी जिन्दाबाद, भरत सिंह जिन्दाबाद के नारे लगाये।

मुझे आज प्रसन्नता है कि हमारे मुख्य मंत्री हमारे जनतांत्रिक दल के नेता हैं मेरे ही आग्रह पर हमारे प्रतिनिधि जनता के बीच दल में आए हैं मैं उनका स्वागत करता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि हम भ्रष्टाचार को समाप्त करेंगे और देश के विकास में सम्मिलित होंगे।

हमें खुशी है कि अब जोकताजि नक मोर्चे के कोई कार्यकर्ता हमारे बीच में भेद नहीं है हम सब एक ही कुटुम्ब के सदस्य बन गए हैं, मैं चाहता हूं कि हमारे मंत्री के हर काम में मैं सामन्ता बढ़ और जनता की सेवा में अपना सर्वस्व होम कर सकूं। महेन्द्रसिंह जी ने धन्यवाद दिया, उसके बाद मिल की जमीन पर शामियाने में वृन्द भोजन की व्यवस्था थी जिसमें सारा गांव शरीक हुआ।

थानेदार सुप्रिन्टेन्डेन्ट पुलिस तहसीलदार आकर स्थिर मंच पर उपस्थित थे लेकिन वे किस से शिकायत करें कि राजनैतिक कार्यकर्ता उनसे चौथ वसूल कर रहे हैं। थानेदार ने तहसीलदार को कहा मैं कसम खाता हूं एक पैसा भी किसी से रिश्वत का नहीं लूंगा लेकिन ये भेड़िए हमें ईमानदार नहीं रहने देंगे।

तहसीलदार हंसा मुझे तो चेतावनी दे दी गई कि आप ना मानेंगे मैं तीस हजार रुपए नहीं दिए तो मेरा तबादला करा देंगे और ऐसी जगह फेंक देंगे, जहां मैं किसी की सेवा नहीं कर सकूं। आखिरकार उदास था—क्या करें ? नौकरी नहीं करें तो बच्चे भूखे मरें लेकिन इन भेड़ियों का पेट बड़ा हो गया है, मुझसे कहते हैं 5000/ रु महिना दूं नहीं तो तबादला करा देंगे

सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

यह डर, तलवार की तरह लटकता रहता है, एक क्षण भी हमे चैन से नहीं रहने देता, अरे साहब मुझे क्या मिलता है ? एक परत 2 बाकी तो सब ऊपर के खा जाते हैं ऊपर वाले से बड़े नेता खाते है यह पटवारी साहब खडे हैं इनके जिम्मे 500/- रु रखे हैं फिर मुख्य म न्त्री जी के भाषण का क्या होगा ? देश का विकास कसे होगा ?

पास मे एक पण्डित दीनदयाल खडा था उसने कहा—भ्रष्टाचार तो इन राजनेताओं से प्रारम्भ होता है आप नही जानते इन्द्रसिह जी को, उप मुख्य मन्त्री पद के साथ साथ 20 लाख रु दिए गए थे, य 20 लाख रुपये कहा से आए ?

तहसीलदार हमा—अरे छोटे को छोटा खाता है बडे का बडा खाता है मुख्य म त्री बने तो पूरे 10 करोड रुपये बटे हैं दल बदलू बनाये गये, भ्रष्टाचार तो वहा से प्रारम्भ होता है मुख्य मन्त्री जी ने 30–40 सेठो को पकड लिया उन्होने दल बदलुओ को पमा चटाया और अब राज्य से वे ही सेठ मनमानी रियायतें ले रहे हैं लेकिन मुख्य म त्री जी से कौन कहे कि उनके मुख्य म त्री बनने म जब 10 करोड का भ्रष्टाचार पनपा तो फिर हम छोटे मोटे भ्रष्टाचार को कौन रोक सकता है ।

थानदार को ताव आ गया म 2000) रुपय महीना वहा स दू तबादला करा दें लेने हाजिर कर दें—आज सेठ रामधन पूरे 50 हजार दावत मे खच कर रहा—10 हजार आदमियो का भोजन है, 100 आदमियो से ऊपर जीमाना अपराध है यह अपराध नहीं है, मैंने एस पी साहब से बात की है कि सेठ रामधन को इस अपराध म गिरफ्तार कर दू और इन पर मुकदमा चलाऊ । लेकिन एस पी साहब हम पडे—मुझे न्सवर बोले—तरा दिमाग फिर गया है, अर सेठ रामधन को पकडो तो मुख्य मन्त्री को भी पकडो । भोजन करने वाला, जीमने वाला दोनों अपराधी हैं बेवकूफी मत कर लना लेकिन अब क्या करू, मैन आज तक रिश्वत नही ली, अब लू और उनमें बाटू । पाप का भागी मैं और मौज करे महेन्द्रसिंह जी । तहसीलदार न चुटकी

सो सेठ रामधन कह रहा था कि तुमने रामधन से पूरे 40000/ रु लिए हैं।

थानेदार को क्रोध आ गया, स्साला झूठा है, हाँ कुछ रकम लेकर मैंने रियायत की है कि रहमान की तलाशी नहीं ली, लेकिन मेरे को सौगंध है कि रिश्वत के पैसों को अपने निए काम में नहीं लेता, यह पैसा कभी फलता नहीं है। पग पग फूटकर निकलता है, हड्डी तोड़ता है बच्चों के काम में ले तो बच्चे बिगड़ जाते हैं वे भी भ्रष्टाचारी हो जाते हैं। मैंने रुपया लिया और बड़े अफसरों को पहुँचा दिया उनको पेश नहीं करें तो शायद एक दिन भी नौकरी नहीं कर सकता, आप जानते हैं रहमान खाँ इतना ईमानदार था कि किसी के यहाँ भोजन नहीं करता था बड़े अफसरों की भी कभी पूर्ति नहीं करता था, कभी किसी थाने पर एक महीने से ज्यादा नहीं रहा दस हजारी उसकी नौकरी थी।

और अंत में क्या हुआ? आप शायद नहीं जानते, उसे नाकाबिल करार देकर हैड कांस्टबिल बना दिया गया और कुछ दिन बाद उसे पुलिस सेवा के लिए अयोग्य सिद्ध कर नौकरी से निकाल दिया। इस झूठे आरोप ने उसको आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया, वहाँ भी असफल रहा कुएँ में गिरा लेकिन निकाल लिया गया। तब विवश होकर उसने जबान खोली। भाई साहब वह हमारे माथे पर पुलिस के ललाट पर ऐसा काला धब्बा है कि कभी धुल नहीं सकता कभी साफ नहीं हो सकेगा।

महेन्द्रसिंह—इसलिए हमने भी यह सौगंध खाई है कि इस खोटे पैसे को अपने काम में नहीं लेंगे—जनता के काम में खर्च करेंगे आप रिश्वत खाएँ या न खाएँ अधिक अफसरों को खुश करने के लिए मासिक जकात देना पड़ता है वे उस पैसे से बंगले बनवाते हैं बीबियों के लिए जेवर, बच्चों को ऊँचे स्कूलों में शिक्षा दिलाते हैं और उनके लड़के फिर वैसे ही अफसर बनते हैं—जिन पर काला धब्बा कभी नहीं लगता वे कभी रिश्वत के दोषी करार नहीं दिये जा सकते—फिर भला हम क्यों

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सोचें ? हम तो एक बात जानते हैं कि ऐसे पैसे को कभी अपने अग नही लगाए गे ।

थानेदार—आप बजा फरमा रहे हैं बस आपकी और मन्त्री जी की कृपा बनी रहे तो कोई बात मुश्किल नही होगी, हम पराए भले के लिए पसा लेते है हमका तो छुना भी दोष है ।

महेन्द्रसिंह हसा—वही तो मैं कह रहा हू, आप जानते हैं गाव के लोग रोज अभाव अभियोग लेकर आते हैं, अपना काम कराने के लिए बडी बडी रकम लाते हैं लेकिन हम उस पैसे को छूने तक नही उसकी छाया तक नहीं पडन देत परमो ही तो देवाराम आया था पूरे 5000) रुपये लेकर—उसको 50 बीघा जमीन एलोट करना था नहरी जमीन—अरे साहब आज 50 बीघा जमीन के दो लाख लगे हा यह सही है कि ऐसे काम कराकर हम लें तो भ्रष्टाचार—आप जिनसे लेते हैं वे सब साले मुल्जिम होत हैं, डाकू चोर-कातिल तब ही तो देते है—वह पैसा उनके घर मे रहेगा तो किस काम का रहेगा ?

थानेदार और महेन्द्र सिंह जी दोनो भोजन के लिए बैठे मोहन सिंह जी को भी बुला लिया—सामने कुर्सी पर मोहन सिंह जी बैठ गए थाली म 5 मिठाईया 5 सब्जी नमकीन परावठ थे, दोनो न तन मन से भोजन किया हाथ धोकर जब सिगरेट पीने बैठे तो मोहन सिंह ने कहा—थानेदार साहब आपका और हमारा चोली दामन का साथ है। नीचे दो किसान खडे हैं आपके यहा मुकदमा चल रहा है—डकती का, 4–5 और साथी हैं मैं तो सिर्फ दो की बात कर रहा हू, आप देखलें—जमानत पर तो छूट गए हैं, गवाहो को आप सम्भाल लें, बडे गरीब हैं मेरे मिलने वाले हैं ।

थानेदार—कौन सोमा और नाथ ।

महेन्द्रसिंह—जी आपने ठीक ही कहा ।

थानेदार के चेहरे पर क्रोध क भाव उमडे, फिर रुका और सहज होते हुए बोला—साहब इनके घर से तो 100 तोला सोन क जेवर बरामद हुए, जेवरा को मुस्तगीस ने पहचान लिया—आप पहल कहत ।

मह इसि—आप समझें ।

मोहन सिंह के तेवर बदले थानेदार साहब जिन्दगी में एक ही काम के लिए कहा—अजी साहब आपके हाथ में तो ताकत है वह राष्ट्रपति के पास नहीं है जबर जो थाने में होंगे ही, वहन में क्या दर लगती है।

पंचनामा बनाकर रख गये हैं, थानेदार ने स्पष्ट किया पंचनामा के गवाह नहीं बदले जा सकते और सनाख्ती को ठीक नहीं किया जा सकता।

थानेदार ने हाथ जोड़ दिए—साहब, जिन्दा मवेशी केस सिगू—यह तफ्तीश एस पी साहब की देखरेख में नहीं, पूरी की पूरी उन्हीं तरफ से हो रही है।

महेन्द्रसिंह—कौन एस पी।

थानेदार—धर्मेन्द्र जी।

मोहन सिंह—वाह ! आप जो कुछ कर सकें कर उनको भी निपट सकते हैं बताइए क्या लेंगे वे।

थानेदार ने डंडा अपनी बगल में लिया क्या दे देंगे साहब ?

मोहन सिंह—कम में काम हो सकता है ?

थानेदार साहब के सिर पर पसीना आया—मैं सोचता हूं, एस पी साहब 25 से नीचे नहीं मानेंगे और आप खुद कोशिश करें तो कम से भी राजी हो सकते हैं।

महेन्द्रसिंह—भाई यह तो हमारा ही काम समझो, 2 आपका और 10 साहब के लिए—दो भाई आपको दो। थानेदार—मैं कोशिश करूंगा मैं आपके इस काम में न लूंगा—12 तो यों हो जायेंगे। 3000) और बढ़ा दीजिए 15 में शायद एस पी साहब राजी हो जाएं।

मोहन सिंह ने नीचे से दोनों को पुकारा और 15 हजार के नोट थानेदार के हाथ में दिए, बस थानेदार साहब यह काम तो आप करदें, आपकी जो सेवा होगी हम करेंगे हां परसों होम मिनिस्टर साहब से

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

बात चल गयी थी, वे आपके काम से बडे खुश है—शायद आपको इन्सपेक्टर बना दें—बस यह तरक्की तो होना ही है। मन्त्री महोदय ने मेरे सामने सारे रेकार्ड मगाकर देख लिए थे।

थानेदार न हाथ मिलाया बस साहब आपकी नजर रहो तो उसने फिर मुडकर सलाम किया और चला गया।

मोहन सिंह—देखो भाई तुम्हारे सामने 15000) रु और मेरे पास से 10 हजार जो तुमने मुझे पहले दिए, दे दिए, एस पी साहब इससे कम मे राजी नही होंगे। थानेदार को तो तरक्की की बात कह कर बेवकूफ कर लिया अब 100 तोला सोना भी तुम्हारा रहा।

सोमा ने मोहन सिंह के दोनो पैर पकड लिए।

बस ! हुजूर की नजर चाहिये 100 तोला सोना हुजूर की भेंट—

मोहन सिंह—नही भाई मै नही रखता मेरे ऐसे माल रखने की कसम है, तुम जानते हो यह माल मुस्तगिस का है, मेरा भला क्या हक है और बिना हक के रख लिया तो फिर आप जानो—मैं तो यह जानता हू कि मेरी नस-नस मे से फटेंगे—सो लाख के फोडे—नही भाई म नही चाहता मेरा काम मैंने कर दिया हां 5000) रु थानेदार को शायद देना पडे वह इनाम रखना, या वह हमसे तुम्हारे काम के लिए लेने से इन्कार है।

सोमा— नाथू भाई बोला ऐसे दयावान कोई और है, हुजूर हम तो आपके चरणो के दास हैं।

तो तुम जा सकते हो एकाध दिन मे मिलते रहना सब ठीक हो जायेगा दोनो ने झुककर सलाम किया और चले गये।

राज्य मे सब जगह अकाल की विभिषिका कई गावो म पानी का अभाव था चारे का कही पता नही, एक रुपये का एक पूला मिल रहा था और गाव-गाव म मवेशी भूखे मर रहे थे, मध्यम श्रेणी के काश्तकार के पास 100-150 मवेशी थे केवल गोबर के लिए उनको रखा जाता था। सो गाय भसो म केवल 3-4 ही दुधारी थी जिनका प्रति दिन 1 किलो दूध होता था ऐसी अनार्थिक मवेशिया के रहते हुए—

किसान की आर्थिक हालत बहुत बिगड़ी हुई थी, ऐसी अवस्था में मवेशी के चारे की पूर्ती सम्भव नहीं थी, और मवेशी मरना प्रारम्भ हो गए थे।

सागर में भी बहुत बड़ा अकाल पड़ा था, ऐसा अकाल जो पहले देखने को नहीं मिला—रघु चमार ने महेन्द्र सिंह जी को आकर कहा था हुजूर ऐसा काल तो 56 में भी नहीं पड़ा, मात्र अनाज की कमी नहीं थी लेकिन गरीब गरबा चोंडिपाड़े में भूठे रोटी के टुकड़े और दाल के दाने को लुन्ते थे, आज उससे ज्यादा खराब हालत है आप मन्त्री महोदय को बुलाकर अनाज चारे के साथ रोजगार की भी व्यवस्था कर दें हमारे गांव के 100–150 लोग तो सेठ रामधन के मिल में मजदूरी करते हैं बाकी बेरोजगार लोगों को काम में लगाना है।

महेन्द्र सिंह—रघु मैं स्वयं सोच रहा था कि जल्दी ही यह व्यवस्था करा दूं लेकिन तुम जानते हो मेरे लाला जी बीमार हो गये वे ठीक हुए तो घर वाले कम कम कम आज ही फोन से बात करता हूं प्रधान साहब कल आये थे वे सड़क का काम चालू करना चाहते हैं, हमारे गांव को सागर से जोड़ना—पूरे 2 लाख की मजूरी ले रहे हैं, मार्ई हमारी सरकार किसी को भूख नहीं मरन देगी—हाँ, चारे का इन्तजाम मुश्किल है हिन्दुस्तान के बाहर से तो चारा मगवाया नहीं जाएगा लेकिन मेट मिस्त्री किसको बनाना है इनके नाम बताओ, ईमानदार सच्चे होने चाहिए।

रघु ने कहा —ठाकुर साहब एक तो मेरा बच्चा दसवीं पास बैठा है दो तीन और नाम ढूंढ लेंगे।

महेन्द्र सिंह—ठीक है काम तो शुरू करना है लेकिन पिछले अकालों का तजुर्बा बड़ा बुरा है मजदूर को नियमित मजदूरी से आधी भी नहीं मिलती, दिन भर का जो काम तय किया जाता है वह आज तक एक भी आदमी पूरा नहीं कर सकता इसलिए 1II–1I से अधिक पौना और आधी मजदूरी मिलती है। फिर प्रधान साहब भी तो कुछ लेंगे वो ही क्या भी यह ही भर्ती थोड़े ही करता, तहसीलदार बड़

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ओडने वाला है हा तेरे लडके से बात कर लना कि तनख्वाह बँट तो वह प्रति मजदूरी महावारी 2) र स ज्यादा न ले।

रघु—अरे साहब, इन दो रुपयों से आदमी मरता नहीं है वह मरता है बडी लापकी से।

महेन्द्र सिंह—तुमने सुना है हमारे क्षेत्र के लिए कन्ट्रोल की 150 बोरिया आइ रजिस्टर भर लिए फर्जी निशानिया करा ली। ईं, और शक्कर प्रधान साहब के घर पहुँच गयी और वितरक खा गया। रातों रात गोदाम की दीवार टूट गयी और बोरिया चोरी होना बता दिया गया।

रघु—क्या पुलिस ने कोई कार्यवाही नही की।

महेन्द्र सिंह—सब की मिली भगत है, सब खा रहे हैं, पुलिस में भी बोरियो में हिस्सा बँटा लिया। इतने म रोशन लाल आ गया। महेन्द्र सिंह ने कहा—भाई राजधानी चलना है, अकाल के काम खुलवाने हैं नहीं तो लोग भूखे मर जायेंगे, मवेशी के ता बेसकिया पडने लगी है।

हां ता यह बताओ मेट मिस्त्री किसको रखना है। मजदूरी भी ऐसे लागो को दिलाना है जो हमारे साथ हो। ऐस आदमी को पालना और जहर पालना बराबर है। सांप को दूध पिलाकर जहर उगलवाना मैं न ी चाहता, आप जानते हैं यह साला दुर्जन जाट मोहन पिनारा—और ऐसे ही अनेको लोग हैं जो हम बदनाम करते हैं, चोर और भ्रष्टाचारी कहते हैं। बताओ रघु हमने क्या किया, पच और सरपच और प्रधान कर रहे हैं और ये साले सरकारी अफसर तर खाते हैं हम क्या लेंगे छाछ, न हमे घर खाना है और न छाछ पीना है पर तु इनका ध्यान तो रखना पडेगा ही।

रोशन लाल, आज टेलीफोन करलें जब म त्री जी बुलाए हम चलने को तयार हैं रघु भाई।

तुम तो जानते हो, आन जाने राजधानी म रहने करने का कितना रुपया चाहिए हम तो कार्यकर्ता हैं बेचारा का काम नहीं करें को भूखे मरेंगे हम गांव वालों से मांगने जाए ?

रघुनन्दन-साहब, आप तो परोपकारी हैं और मन्त्र यह पण्डित साहब, आप जैसे उदार कार्यकर्ता न हों तो हमारी पार्टी डूब जाए।

जेता भी न भी आ गया, उसने दोनों को प्रणाम किया और हाथ जोड़ कर कहा-हुजूर कम से कम सरकारी नौकरी नगर मिलें से लगावाएं थी थी अब जल्दी काम चालू करना ता नहीं तो हम गरीब बाहर काम ढूंढने जाए लेकिन जाने का खर्चा कहां से लाएंगे वह भी सेठों से लेंगे।

रोशन लाल-भाई तुम्हारे गांव आदमी को तो सेठ रामधन के मिल में आज लगा देता हूं ताकि तुमको खाने पीने की तकलीफ न हो।

जेता हँसा-हुजूर मैं तो हुजूर के साथ हूं लेकिन औरों के घर हैं उनका क्या होगा सबकी एक ही हालत है किसी के पास था का नाज है तो किसी के पास कल का है।

महेन्द्र सिंह-नहीं हम किसी को भूखा से नहीं मरने देंगे बस हम एकाध दिन में काम चालू करा देंगे और हम बता देना चाहते हैं कि हमारा दल सबका भला चाहता है।

रोशन लाल-वही तो यही तो।

अकाल राहत कार्य प्रारम्भ हुए। मोहनपुरा में सड़क का काम शुरू हुआ और उसमें लगभग 200 श्रमिक लगाए गए सरपंच माधु राम ने भी मन्त्री महोदय के साथ पार्टी वालों की घर बार एक आदमी का चयन किया जाना था यह काम सरपंच के जिम्मे था जिसके पास श्रमिक हाजिरी पुस्तिका थी।

कई श्रमिक मिल में काम कर रहे थे इसलिए 100 आदमियों को ही राहत कार्य में प्रारम्भ में रखना तय हुआ, सरपंच ने प्रत्येक मजदूर से 5) रु भर्ती में तय किए और पहला वेतन पर यह रकम देना तय हुआ, मिस्त्री ने हाजरी भरने के एक पखवाड़े के 2) रु प्रति मजदूर तय किए सरपंच ने मजदूरों को कहा कि रात दिन अफसर मन्त्री आते हैं उनकी खातिरदारी करनी पड़ती है।

मजदूरों ने हाथ जोड़कर स्वीकार किया एवं पखवाड़े में प्रति मजदूर प्रतिदिन 4) रु आए 60) रु में से 5) रु सरपंच के लिए 2) रु मेट मिस्त्री के लिए तथा एक रुपया प्रति मजदूर मन्त्री महोदय के चाय पीने के काटे गए वह रकम भी सरपंच ने रखी दूसरे पखवाड़े में, 4)रु की जगह किसी के 3) किसी के 2) रु आए, उनमें से भी उसी तरह काटा गया।

सरपंच ने, 100 मजदूरों को काम देकर 125 की हाजरी भरी और 25 मजदूरों का वेतन तीन हिस्से में सरपंच और प्रधान के रहे और एक हिस्से में मिस्त्री के लिए।

10 मजदूर प्रधान साहब के सारंग गांव में खेत पर काम करने गए।

गांव के दूल्हे सिंह ने कलक्टर, तहसीलदार को शिकायत की कि गत 15 दिन से 10 मजदूर जिनका नामजद किया गया था प्रधान साहब के बंगले पर काम कर रहे हैं उनकी हाजरी काटी जाए कलक्टर ने कहा जांच हो जाएगी और वह दूसरे काम से दौरे पर चला गया।

जब वापिस लौटा तो पड़ोस के विधायक सुखदेव प्राय को लाया गया, जिसके क्षेत्र का हिस्सा भी पंचायत समिति में पड़ता था। सुखदेव अड़ पकड़ कर बैठ गया कलक्टर को विवश होकर उसके साथ जाना पड़ा नामजद 10 व्यक्ति काम पर मिल गये तहसीलदार को भेजा गया तो उसने तस्दीक दी कि इन दस आदमियों की हाजरी बेरू पंचायत के मस्टरोल में दर्ज है—कलक्टर ने आगे कार्यवाही नहीं की।

सुखदेव प्राय ने मुख्य मन्त्री को सूचना दी, प्रधानमन्त्री को लिखा और टेलीफोन पर अकाल मन्त्री को कहा कि, प्रधान के विरुद्ध कार्यवाही नहीं की गई तो वह अनशन कर देगा। कार्यवाही का आदेश दे दिया गया, लेकिन आगे कोई कार्यवाही नहीं हुई, श्रमिकों ने बताया, कि वे प्रधान के पास शिकायत करने आए थे, कि उनकी हाजरी दर्ज नहीं की जा रही चूंकि, प्रधान साहब घर पर नहीं थे, काम हाऊस पर वे वहां पर बैठ गए और ट्राली के साथ थोड़ा बहुत काम करने लगे, इतने

मैं सुखदेव जी आ गए हमने कभी भी प्रधान न यहां काम नहीं किया,
लेकिन मेट ने कहा कि, प्रधान साहब के कहने से हाजरी भरी जा रही
थी, उन्होंने कभी काम नहीं किया और आगे की कार्यवाही बन्द कर
दी गई। आय को चेतावनी दी कि वह आधारहीन कार्यवाही कर किसी
का अपमान न करे, अन्यथा पद से दुरुपयोग के साथ उनके विरुद्ध
मानहानी की कार्यवाही करना पड़ेगा।

प्रधान स्वयम् आर्य के पास गया और भाभी के लिए, एक
तोला सोना की अगूठी–एक कीमती साडी ब्लाऊज और मिठाई ले
गया आय बड़ा प्रसन्न हुआ और दोनों कुटुम्बों के बीच मधुर सम्बन्ध
स्थापित हो गए।

आर्य ने कहा–मैं शिकायत करने आया और आपने मुझे प्रगाढ़
प्रेम बंधन में बांध लिया।

प्रधान ने मुस्कराकर कहा–देखिए साहब मैंने कभी एक पैसे को
छुआ तक नहीं और न मजदूरों से अपने काम पर काम कराया आपने
अच्छा किया जो हमें चेतावनी दे दी यह तो भला हो श्रमिकों का, जो
छेन पर तो मिल गये, लेकिन सच्चाई को नहीं छोड़ा, मैं सदैव इस
प्रयास मे रहता हूँ कि श्रमिक को पूरा वेतन मिले और उनके काम से
जनता को अधिक से अधिक लाभ हो। कीड़े पड़ेंगे यदि हम इन हरकतों
का करने लगें, भगवान तो सबको देखता है, हम झूठ बोल जाए तो
क्या अन्तर आता है।

सुखदेव आय ने कहा–भाई माफ करना, मुझे पहले से मालुम
होता कि आप सिद्धांतों के पक्के हैं तो कभी भी मैं शिकायत करने
नहीं आता, आप मुझे माफ करें हमारे बीच ऐसे लोग बैठे हैं जो
आधारहीन शिकायतें करते हैं।

श्रीमति सुखदेव आय ने कहा, भाई साहब आप अब बाल बच्चों
सहित 2 दिन के लिए हमारे महमान रहेंगे–आपके और इनके राज
नीति का झगड़ा हो सकता है लेकिन हम तो बहनें बन जाएंगी–आप

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

झगड़ो लाठी नोप, तलवार चलाना हो चलाओ, बस हमारे सुहाग पर आंच नहीं आनी चाहिए।

श्रीमति सुखदेव आय निश्चिन्त हैं, उनकी आयु अभी 20 25 से ऊपर नहीं है। यों उनकी शादी हुए 5 वर्ष हो गए, वह सुन्दर, मधुर भाषी और व्यवहार कुशल नारी है।

उसने प्रधान साहब के लिए विशेष नाश्ता तयार किया, आलु छोले गुजरात के मस्पश ढोकले बनाए उनमें काजू दाख, चौराली डाली गयी तथा 5 7 तरह के पकवान बनाए। बाजार से तरह तरह की बगाली मिठाई आयी।

प्रधान पंचायत समिति सैलेन्द्र कुमार माथुर भी आकर्षक व्यक्तित्व वाला है, यों वह 35 पार कर चुका है, लेकिन उसकी आयु 30 वर्ष से अधिक नहीं लगती वह दुबला पतला और मांसल शरीर वाला व्यक्ति है उसके व्यक्तित्व में आकर्षण है।

खाते खाते सैलेन्द्र कुमार बार-बार श्रीमती आय की तारीफ कर रहा था, उसकी तैयार की गयी सामग्री के लिए उसने कहा-भाभी, इतना स्वादिष्ट नाश्ता मैंने आज तक नहीं किया, एक तकलीफ दूंगा आप चाहें बच्चे की माँ को आपके पास भेज दूं और आप दस दिन मेरे यहां रह जाएँ और मेरी पत्नी को पाक शास्त्र की शिक्षा से और प्रयोग करा दें नहीं तो भाभी रोज रोज आपके स्वादिष्ट व्यंजन को खाने के लिए आना पड़ेगा।

सुखदेव आय घर आई साहब इस घर को आप अपना ही घर समझिए, आप जैसा चाहेंगे वैसा हो जायेगा, मेरी विधान सभा की समिति की बैठक परसों से चल रही है मैं तो एक सप्ताह चला जाऊंगा तब तक आप श्रीमती जी को अपनी महमान बना सकते हैं या आप मेरे घर को पवित्र कर सकते हैं, भाभी को जैसा अच्छा लगे।

श्रीमती आर्य को सम्बोधित कर कहा—लल्लु अब आप प्रधान साहब को अपना भाई समझो। आप चाहे आप इनके साथ जाए या इनको अपने यहां बुलालें। ललिता के मुख पर मुस्कराहट फैल रही थी प्रधान का आकर्षक व्यक्तित्व उसे अच्छा लग रहा था।

माथुर ने ध्यान से देखा सुखदेव और ललिता में आना जाती थी ललिता भीतर गयी और वापिस लौट कर आयी यह साड़ी आप भाभी को दे दें। आपने इतना किया है आपका बुरा हाल कर जाने दें।

माथुर ने साड़ी ललिता के हाथ में वापिस देकर उसके हाथ का स्पर्श कर लिया ललिता खिल उठी बचपन की छुआ नहीं गयी, आज पति के सामने ही उसने साड़ी वापिस माथुर को पकड़ा दी और दूसरी बार उसके हाथ ही नहीं उसकी कमर भी माथुर के हाथ से स्पर्श कर गयी।

माथुर ने माफी माग कर कहा-भाभी आप का जरूरी हो चलना जब आप अपने हाथ से साड़ी उन्हें पहना दें आप अब तक उनसे मिली भी नहीं मैं क्या कह कर आपकी भेंट उनको दूंगा, क्यों भाई साहब? यही ठीक रहेगा न हां कल तो मेरी समिति की बैठक है आप भी पधारें। परसों मुझे एक गांव में पहुंचना जाना है पहुंच दिन में आऊंगा तब आप जितना चाहें मेरी पत्नि को दीजिए और भाई साहब कल आप पधारें तो आपका भोजन मेरे यहां रहे। पत्नि से भी परिचय हो जाएगा और भाभी आप भी कल ही पधारना चाहें तो आप के साथ पधार जाएं ललिता-नहीं कल तो मेरा भाई आ रहा है मैं अब आप आयेंगे तब ही चलूंगी।

सुखदेव-हां ललिता जी अब आप इनके साथ किसी तरह का संकोच न करें राजनीति में हम लड़ लेंगे लेकिन घर में हमारा साथ कभी नहीं टूटेगा।

ललिता ने कहा-भाई साहब आप के पास तो गाड़ी है, आज हरियाली अमावस्या है चलिए अशोक वाटिका में घूम आएं लो आप भी कपड़े बदल लो हम तीनों चलें।

सुखदेव आर्य ने कहा-भाई साहब आपको देर हो रही है ललिता जी तुमने तो आज पहली बार माथुर साहब से परिचय किया और उन्हें ऐसा कष्ट देने लगी जैसे जन्म से तुम्हारा सम्बन्ध रहा हो, आप जाइए।

सी ५0, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

ललिता—आपने यह मेला पहले कभी देखा है ?

माथुर—नहीं तो।

ललिता ने अपने पति को कहा—देखिए आप जल्दी कपड़े बदल लीजिए एक घंटे में लौट आएंगे लेकिन आप तो ऐसे जिद्दी हैं कि मेले ठेले कभी देखते ही नहीं हैं। सुखदेव हंसा—मुझे मेले ठेले में आनन्द नहीं आता लेकिन मैं आपको क्यों मना करूं। लेकिन भाई साहब आपको देर न हो जाए। रहा मेरा प्रश्न मुझे मेरे मित्र के पिताजी के शोक कार्यक्रम में जाना है आज गरुड़ पुराण का अंतिम पाठ है, आप मुझे माफ करें और ललिता आप इनके साथ जाइए मैं ... बजे तक आऊंगा। हां भाई साहब आप को जल्दी न हो तो भोजन भी यहां ही करें माथुर इस व्यवहार माथुर पर और सुखदेव की निःसंकोचता पर मुग्ध था।

उसने कहा—भाभी, मैं आपका आग्रह कैसे टालूं ... या मुझे भी जाना है लेकिन बहाना बनाना पड़ेगा गाड़ी खराब हो गयी, आप थोड़ा जल्दी कर लें तो मैं मेले में भी हो आऊंगा और अपना अगला कार्यक्रम भी निपटा सकूंगा, चाहे आधे घण्टा लेट होना पड़े, या मुझे 8 बजे पहुंचना है अभी दो घण्टे हैं एक घण्टा मेले में रहकर आवें तो भी मैं जाऊंगा हां भाई साहब आपको आपत्ति न हो तो आप भी चलते।

सुखदेव ने क्षमा मांगी मरण मौत का प्रश्न है और वह भी मेरे निकटतम मित्र के यहां, तो मैं चलता हूं ललिता तुम मेले में हो आना और ऐसो इनको भोजन कराकर ही भेजना, खाली पेट नहीं जाना चाहिए।

ललिता आप ड्राइंग में बैठिए मैं साड़ी पहनकर आ ही रही हूं। सुखदेव चले गए। ललिता ने साड़ी बदली मुंह पर पाउडर लगाया, नया ब्लाउज पहना और मुस्कराती हुई बाहर आयी—चलिए भाई साहब मेले में घूम आते हैं शायद देर न हो। माथुर ने तीक्ष्ण दृष्टि से ललिता को देखा। उसके सौंदर्य से वह अभिभूत था मांसल शरीर, गौर वर्ण बड़ी बड़ी आंखें उभरे उरोज और कसा शरीर खुली बांहें, जैसे उसको निमन्त्रण दे रही थीं, आकर्षित कर रही थीं।

दोनों मुस्कराए और बाहर खड़ी जीप में आकर बैठ गये, आगे की सीट पर ड्राइवर के पास पहले माथुर और बीच वाली जगह पर ललिता।

गाड़ी रवाना हुई तो माथुर ने कहा—मैं आज में हृदय से यह चाहता था कि अब अपना बाकर अलग पकाना क्या लाभ है विरोधी पक्ष तो लड़खड़ा गया है, हमारी पार्टी में अभी 175 सदस्य पहुँच गये हैं, सत्ता में रह तो नाही लाभ—आप विरोध करते रहो कौन सुनता है?

ललिता कसमसायी उसने मुस्कराते हुए कहा—वे बड़े ज़िद्दी हैं, हाँ मेरी मान्यता है कि आप ही उन्हें ठीक कर सकते हैं, मैं तो रोज बहुत कहते थक गयी हूँ, इस बार तो हारा ठीक थी कि वे जीत गए, हमारे मंत्री महोदय उनके साथ थे, अच्छा होता वे गए तो इनको भी मान ले जाते।

माथुर ने कहा—देखो भाभी, अभी भी कोई देर नहीं हो गयी, मैं सोचता हूँ इनको अपने दल में शामिल कर लेंगे, अब रहा कोई पद—मैं समझता हूँ मन्त्री बनने में तो विलम्ब हो गया, और कुछ सोचा जा सकता है।

ललिता—खैर आप देखने मेरी मान्यता है कि आप इन्हें अपने साथ निभा सकते हैं। पहले आप उद्योग मन्त्री जी से बात कर लें खाली विरोध से क्या होगा? चिल्लाते रहो कौन सुनता है, जो काम करता है उसको पूजा जाता है। जो कोई काम नहीं करता है उसे कोई नहा पूछता।

माथुर—डाइवर तुम्हें मालूम है हम अमावस्या के मेले में जा रहे है भाभी बतान। हम सही मार्ग पर हैं या सारंग जा रहे हैं—

ललिता—बस आप दाहिने हाथ की तरफ मोड दें, सामने ही बहुत बड़ा फुलवारी है वहीं मेला लगता है।

और मेले में गाड़ी एक तरफ खड़ी करादी गई और वे दोनों उतर कर मेले मे चले गये—सामने डोलर चल रही थी माथुर ने कहा—डोलर मे घूमगे—

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ललिता ह्मी—चलिए।

और वे दोनो एक ही पालकी म बैठ गए और सारी पालकिया भर गयी और डोलर चलने लगी।

माथुर का हाथ दोनो के बीच में था, उसन हाथ को बाहर निकाला और ललिता की जाघ पर रखा। ललिता काप गई, माथुर न हाथ ऊपर उठाया, डोलर घूम रही थी जोर स माथुर कसमसाया, ललिता के उभरत उरोज उसके हाथ से छू गये। ललिता ने माथुर को देखा और मुस्करा कर कहा - देखिए इतने जोर से डोलर घूम रही है कि मुझे चक्कर आ जाए आप थाम म सरक जाए।

और माथुर कसकर बैठ गया। ललिता ने अपना हाथ माथुर के पीठ की तरफ फैला दिया माथुर का हाथ उसकी जाघ को छू रहा था।

ललिता और पास सरक आयी और आंखें बन्द कर दी—माथुर ने कहा, डर लगता है ?

ललिता—काश! यह पालकी डोलर स अलग होकर जमीन पर फेंक दी जाए तो हम चूर चूर हो जायेंग।

यह सब निराधार है, पालकी नही निकलगी, तुम्हारा वहम है, माथुर मुलायम स्पश पाकर अभिभूत हो रहा था।

डोलर रुकी ललिता ने अपनी गदन माथुर के कन्धे पर झुका दी जसे उस चक्कर आ रहे हैं। उसने अपना दूसरा हाथ फैलाकर ललिता को थाम लिया—डरो मत कुछ नही होगा म जो हू।

और डोलर जब रुकी तो माथुर ने ललिता का हाथ पकड कर नीचे उतारा और पूछा, क्यो अब भी चक्कर आ रहे हैं ? कुछ देर कही ठहर जायें।

सामने जलपान की दुकान है वहा चाय पीलेंगे और ठहर भी जायेंगे।

ललिता ने कहा—ठीक, और अपना हाथ माथुर के हाथ म

दे दिया वे धीरे धीरे पास के जल पान गृह म पहुँचे और दो कुर्सियों पर बठ गये।

माथुर न चाय और मिठाई नमकीन का आदेश दिया।

पानी का गिलास आया, माथुर ने ललिता को पानी पिलाया और पूछा—अब बस हैं ?

हा कुछ ठीक है।

चाय नाश्ता पर कुछ देर बठे रहे, माथुर ने जोर देकर कहा ललिता जी बस अब आप सा०ब को हमारे दल म आ जाना चाहिये— दूर रह कर क्या करेंगे ? आप कोशिश करें मैं तो करूगा ही, यह योग मात्र है कि शुरू में ही हम लड़े भिड़े और एक हो गए, इसमे म मानता हू कि आपका योगदान रहा।

ललिता—प्रधान साहब म भी मात्र सयोग मानती हू, आप कौन म कौन—कभी सपने म भी नही मिले और आज ऐसा लगता है जसे हम ज म जन्मा तर से एक दूसरे को जानते हैं।

माथुर—बस सब प्रभु की कृपा है कब किससे मिलन हो जाय—यह सब प्रभु की देन है हम तो मात्र उसके हाथो कठपुतली भर हैं।

चाय पीकर बाहर आय माथुर न कहा—सामन नावल्टी की दुकान है आप क्या पसन्द करेंगी ?

ललिता—कुछ नही मेले म घूम लें फिर झील के किनारे बठ कर ठडी हवा लेंगे।

नही भाभी, ऐसा कसे होगा हम पहली दफा मेले मे आये हैं, आपको मेरी भेंट स्वीकार करना होगा आप पसन्द करें नही तो मेरी पसन्द चलेगी माथुर न ललिता का हाथ अपन हाथ मे लेकर कहा— चलो देख कोई चीज लेने जसी होगी भी।

और वे सामने दुकान म चले गये—महिलाओं के लिए दुकान थी।

माथुर ने कहा—भाभी ! मैं तो ऐसी ही साडी ले आया अब आप पसन्द करो म सोचता हू अच्छी साडिया हैं।

सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ललिता सामने काउन्टर पर जाकर खडी हुई—उसने सामने लटकी साडी को निकालने के लिए कहा।

साडी देखी–ललिता को पसन्द ग्राई पास म माथुर खडा था–ग्रापने पस द करली तो ग्रब हमारी पस न्द बकार है, क्या कीमत है भाई ?

750) रुपय।

ललिता—750) रुपय बहुत ज्यादा है नही माथुर साहब यह नही लग।

माथुर—भाई इसको तो बाध दो ग्रौर एक साडी वह ग्रलमारी मे है उसे दिखाग्रो, माथुर प्रसन्न था, हा यह मेरी पसन्द है। देखो भाभी ग्रापको पसन्द ग्राती है।

ललिता झाकती रही—वस्तुत बडे सुन्दर बोडर की साडी थी, सामने दुकानदार की तरफ झाकी—

दुकानदार ने कहा—1200) रुपये, सिर्फ एक हजार दो सो।

प्रधान जी ने कहा– दोनों साडिया बाध दो।

बाहर ग्राकर ललिता ने कहा—भाई साहब इतना खच करने की क्या जरूरत है ? नही ग्राप लौटा दें।

माथुर—जी, एक बार लेने पर वापस नही लगा एक ग्रापकी पसन्द एक हमारी, ग्रौर देखिए हम तो सत्ता के साथ हैं धन की क्या कमी ? ग्राप निश्चिन्त रह।

ललिता ने घडी मे टाइम देखा– 7–30 हो रहे हैं, ग्राप साहब 9 बजे से पूर्व नही ग्रायेंगे, चलिए भोजन कर ग्राइये, नही तो वे मुझे बुरा भला कहेंगे।

बाहर ग्राकर दोनो जीप म बैठ गए, ललिता का हाथ माथुर के हाथ म था ग्रौर वे ठन्डी बहार मे मुग्ध घर पहुँचे—ड्राइवर को 5) रुपय दिए कि वह भोजन कर ग्राए ग्रौर दोनो ललिता के घर म गए।

कमरे म पहुँचे, माथुर ने ग्रातुर दृष्टि स ललिता की तरफ देखा—ललिता पास सरक ग्राई, ग्रौर उसका हाथ थाम लिया, जब पलग से उठे तो ललिता ने कहा—भोजन क्या कीजिएगा ?

नहीं उन्न जी अब भोजन करने की रुचि नहीं है, ड्राइवर आ जाए तो मैं चला परसों आवूंगा आपको मेरे घर चलना है।

भाभी नाराज तो नहीं होगी।

माथुर—क्यों होगा ? भला ! परसों हम इन बगल में रह लेंगे उनके यहां दूसरे दिन घर जायेंगे और फिर मैं वापिस आपको छोड़ने आऊंगा तो लाल साहब के डाक बंगले में ठहर लेंगे, सिंचाई विभाग का सर्वोत्तम डाक बंगला है माथुर ने चुस्की ली।

जसी आपकी मर्जी—ललिता ने मुस्कराकर उसका हाथ पकड़ कर कहा।

हां बहन जी—अब आपको भाय जी को हमारे साथ लगाना है मैं सोचता हूं वे आपकी बात कभी नहीं टालेंगे मैं भी कोशिश करूंगा कि कोई न कोई पद मिल जाए नहीं मिला तो क्या? सत्ता के साथ तो रहना होगा–सब सुविधायें उपलब्ध हैं मैं तो मात्र प्रधान हूं मिनिस्टर साहब की कृपा है मन चाहिये धन की कहीं कमी नहीं है।

ललिता—अजी साहब मैं आज ही उन्हें तैयार कर लूंगी हां य साहिया।

माथुर—अभी मत कराइये आप जानते हैं आदमी बड़ा शकालू होता है कहीं उल्टा असर न हो जाए।

ललिता – तो आप ने जाय फिर भेज दीजिए।

नहीं, आप रखिए ड्राइवर आ गया है, मैं चलूं, एक प्याला चाय दे दीजिए।

ललिता स्टोव पर चाय बना लायी माथुर ने चाय पी और हल्का सा चपत ललिता के गालों पर लगा कर वह मुस्कराता हुआ चला गया मैं परसों आवूंगा, आप साहब का काम मत भूलिए, नमस्ते।

— —

महेन्द्र राजधानी में गया, सारा क्षेत्र के अनेक काम हैं, बड़े अधिकारियों के तबादले कराना है कई की तरक्की की चर्चा करना

सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

है लेकिन सारग क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य कई स्थाना के कायकर्त्ता महेन्द्र सिंह से मिलने आ रहे है।

चर्चा जोर स चल पडी है, महेन्द्र सिंह मुख्य मन्त्री एव उप मुख्य मन्त्री दोना का आदमी है।

महे द्र सिंह ने राजधानी मे एक विशाल मकान किराये पर ले रखा है जिसमे लगभग 15 आवास क कमरे हैं सारग नही अन्य स्थानो स भी महे द्र सिंह स मिलन लोग आत ह।

कल प्रभुदेव मह्न दस अध्यापिका के स्थानान्तरण को लेकर आया उसमे दो महिला शिक्षिकाए भी थी।

प्रभुदेव ने मह द्र सिंह से नया परिचय अपन विधायक क द्वारा लिया और वह सीधा महेन्द्र सिंह के पास आ पहुचा प्रभुदेव न कहा– ये सब गरीब अध्यापक हैं अधिकारी ने वर्षों स इनको एक ही जग डाल रखा है, जो अपने घर से दूर हैं। श्रीमती शारदा शर्मा का पति एक जगह है और इनको दूसरी जगह लगा रखा है जबकि जहां इनके पति हैं वहा स्थान रिक्त है और यह है सरला भागव, बडी भली अध्यापिका है। अपने काम से काम इनकी कक्षा का परिणाम इनकी शाला म ही नही क्षत्र भर म सर्वोत्कृष्ट है, बस साहब कोई जेक नहीं है मैं स्वय अध्यापक हू सुना है आप ऐसे आदमियो की मदद करते हैं इसलिए मैं हिम्मत कर आपके पास चला आया, य गरीब हैं।

महेन्द्र सिंह ने प्रभुदेव को पूछा—आप छुट्टी लेकर आये हैं? उनकी आवाज म तेजी थी।

प्रभुदेव – हुजूर! मैं अध्यापक सघ का अध्यक्ष हू, राज्य अध्यापक सघ का–कम गरीब बिना जेक के अध्यापको की जो भी सेवा बन मके करता हू।

महेन्द्र सिंह– आप विधायक स मिल ?

प्रभुदेव—नही सर, वे विपक्षी हैं उनकी बात कौन मानेगा और मै विपक्षी से कैसे बात कर सकता हू मैं तो आपके दल का समथक रहा हू, मरा सघ भी आपका दल मानता है।

महेन्द्र सिंह—अच्छा, आपकी सूची बना लीजिए, कहां से कहां
जाना चाहते हैं। बन में शिक्षा मन्त्री जी से मिल रहा हूं भगवान ने
चाहा तो हो ही जायेंगे।
सब अध्यापकों को बाहर बैठने के लिए कहा और प्रभुदेव को
पास मे बुलाकर कहा—आपने इनसे कोई रकम तो नहीं ली।
अध्यापक प्रभुदेव जोर से हंसा—हुजूर, मैं अध्यापक, भला
अध्यापक अध्यापक का गला काटे सरया का समर्थक बनने के लिए,
मैं साथ चला आया हूं बल्कि यात्रा व्यय भी गांठ से दे रहा हूं।
अच्छा भाई मैं भी यही चाहता हूं जो भी मदद कर सकें करना
चाहिए अब कौन किसको पूछता है महेन्द्रसिंह ने सहज शान्त हो कहा,
आप निश्चित होकर कह दीजिए कि जो शुद्ध (Genuine Case) हैं,
उनके स्थानान्तरण तो कल हो जायेंगे हां तो उन सब को बुला लें।
प्रभुदेव ने उनको अन्दर बुला लिया।
महेन्द्रसिंह ने सोफे पर झुककर कहा—देखिए कोशिश करूंगा,
परसों आप मिलिए मैंने सूची ले ली है कम से कम उन लोगों के
उचित केसेज तो हो ही जाएंगे जहां कठिनाई पड़ेगी उस बारे मे देख
लूंगा।
वे प्रसन्न वापिस चले गये। प्रभुदेव भी उनके साथ ही चला गया।
जाते वक्त हाथ जोड़ कर कह गया कहीं किसी को थोड़ा बहुत लेना
देना पड़े तो ये उसके लिए भी तैयार हैं।
महेन्द्रसिंह ने उस पर ध्यान नहीं दिया और न उत्तर ही दिया।
जाते हुए महिला अध्यापिकाएं एकान्त में कुछ बात करना चाहती थीं
लेकिन प्रभुदेव के कारण बात नहीं कर पायीं।
इस कारण महेन्द्रसिंह ने उनको जाते हुए कहा—आप जो भी
मुझ से अलग से मिलना चाहें मिल सकते हैं हां आप कहीं ठगाना मत।
मेरे तो ऐसा पैसा खाना और अपनी सन्तान का खून पीना है आप
निश्चित रहिए होने के काम करूंगा बिना लाग लगाव के, तो—आप
जाएं।

1984
सी ६० गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

एक विधेयक श्री रामसूर अपने साथियों के साथ आता हुआ नजर आया, महेन्द्रसिंह उठकर दरवाजे तक गया और उनको बैठक में बिठाया, खुशी खुशी उसने पूछा—कहां से पधार रहे हैं ?

श्री रामसूर—बस अपने गांव से ये सब मेरे साथी हैं बड़े भले सज्जन—सबने महेन्द्रसिंह से दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते किया।

तो अब बताइए चाय, काफी क्या—मैं तो अब आधा यहां ही रहता हूं बेचारा दुखी दर्दी आता है उसका काम करवा देता हूं।

श्री रामसूर—वह तो मालूम हो गया, बस जब से विधायक बना हूं तब से घर का सारा काम काज चौपट हो गया है कब किसका काम, कब किसका। महेन्द्रसिंह ने कहा—देखिए यहां भी तांता लगा रहता है, अभी दस अध्यापक आए थे, प्रमुदेव को तो आप जानते हैं शिक्षित संघ का अध्यक्ष बेचारों की उचित बात है, न करें तो कौन करेगा। मंत्री महोदय की कृपा है कि वे कुछ ध्यान देते हैं इसलिए यहां रह रहा हूं, नहीं तो भाई साहब न तो मैं विधायक न अन्य कोई पद ही मेरे पास है, आप जानते हैं डिप्टी चीफ मिनिस्टर मेरे मौसी आए भाई हैं उनका काम सरल करने के लिए ही मैं आया हूं पी ए बी ए क्या काम करेंगे। कोई पहुंच जाए तो डांट डपट—पर भाई साहब आप से मैं कहूं कि अब अपनी जिद् छोड़िए हमारे साथ आ जाएं आपके अनेक विकास कार्य तो होंगे ही, साथ ही किसी की सिफारिश करनी हो तो अधिकारी भी मानेंगे, देखिए अब आपके साथी कितने रह गए हैं, मैं सोचता हूं एक वर्ष भर में राज्य भर में आपके साथियों की संख्या नगण्य हो जाएगी, आप विधायक बने हैं। विधायक से कई आशाएं हैं लोग चाहते हैं किसी को नौकरी दिलाओ, किसी को कर्जा तो किसी को खेत या फिर गांव की विकास योजना पूरी करो। बिना सरकार की दृष्टि के ये सब काम पूरे हो सकते हैं ? जी मैं तो भूल गया, अब आज्ञा दीजिए, मैं क्या सेवा करूं ?

श्री रामसूर—ये मेरे साथी कार्यकर्ता कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाले यह है मोहन बाबू इनका लड़का एम ए हो गया है उसको कहीं नौकरी में लगाना है, बिना जैक के भला नौकरी मिलेगी !

और य हैं सम्पत बाब इन्हें आप जानते हैं उद्योग पति लेकिन मेरे साथी हैं, इसलिए इन पर कई मुकदमे लगा रखे हैं, मुकदमे लड़ें या उद्योग चलाए–मैं कहता हूं कि मैं विधान सभा म प्रश्न उठाऊंगा लेकिन य कहते हैं कि उसस मुकदमे कम उठेंगे, आप से अलग बात भी करनी है और य हैं अध्यापक वृन्द, वस स्थान न्तरण के लिए आए हैं तो आप चलित प्रसंग से बात कर लें।

महेन्द्रसिंह श्रीरामसर और सम्पतराज खतरी तीनों अन्दर गय।

श्रीराम न कहा–भाई इनका काम बडा है जवानी सिफारिश स होने वाला नहीं है जब तक कुछ भेंट पूजा न करो, आपके उद्योग म त्री गृह म त्री भी हैं बस बेचारे पर सारे मुकदमे उठा लें और य बेचारे सब स मुख मोडकर उद्योग को पनपाने न लगें।

महेन्द्रसिंह–मैं बात कर लू ।

श्री रामसुर बात क्या कर लें आप चाहे तो–

सम्पत न अपना बैग खोला–25000/ के नोट निकाले 5000/ रु अलग रखे, यह तो आपके लिए और 25000/ माननीय म त्री महोदय जी को।

अरे भाई साहब यह तो अभी आप अपने पास रखें, आप अगर तैयार हो तो मेरी जरूरत क्या ? आप बस हमारे साथ आने को स्वीकार कर लें न इन रुपयो की जरूरत पडेगी और न मेरी सिफारिश की।

सम्पत जी ने कहा–एम एल ए साहब अब अकेले पडे रहने से क्या लाभ आपको मैं कह रहा था, प्रारम्भ म ही आ गए होते तो अब तक आप म त्री होते बस आज तो म जूर कर लीजिए और ठाकुर साहब यह ना रखिए। मै इनको आज ही रात तयार करता हू कि वे आपके साथ लग जायें।

महेन्द्रसिंह ने मुकदमो की सूची मागी। श्रीराम–यह सूची तयार है।

1984

सी 50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तो मैं आपकी भी आज बात कर लू, आपको चुनाव मे क्या खर्चा पडा ? श्री राम–50000/- रु

महेन्द्रसिंह हंसा–बस लोग 2 लाख, चार लाख की बात करते हैं, साले झूठे हैं।

श्री राम–आपकी दया से मेरा मतदाता से सीधा सम्बन्ध है। ग्रास रूटस म से एक हू गरीबो का साथी, उनका सुख दुख का हिमायती बस यह खर्चा तो मागन दोडने का है या कायकर्त्ताओ का खर्चा है।

महेन्द्रसिंह ने कान म कहा–खर्चों के लिए एक लाख की कह दू। श्रीराम–नही भाई साहब अभी नही मुझे सोच लेने दीजिए।

लोगो की निन्दा जा सामने है कहेगे मैं बिक गया।

महेन्द्रसिंह न मधुर मुस्कराहट और व्यग स कहा–देखिए राण्डें रोती रहेंगी और पाहुन जीमते रहगे, हम हमारा काम करना है, मैंने नही हमारे प्रधान माथुर साहब ने सुखदेव जी आय को अपने साथ ले लिया, आज घोषणा हो चुकी है, यह देखिय अखबार।

श्रीमान् मुझे कुछ सोचने का तो अवसर दीजिए जिन लोगो ने मुझे जीताया है, उनसे तो पूछ लू, वे सब मरे साथ आ जाए तो ज्यादा अच्छा है उनसे सलाह कर लू, फिर तो मैं अकेला नही सारे कायकर्त्ता भी साथ आ जायेग।

महेन्द्रसिह–मुख्य मन्त्री जी का यही कहना है कि ऐस गैर जिम्मेदाराना विरोध के बजाय सब स्वस्थ एक दल क हो जाए तो हमारा राज्य 5 वष मे वह उन्नति करगा जो दूसर प्रा त 25 वष म नही कर पाए, बताइय लोकतान्त्रिक मार्चे और जनतान्त्रिक दल में क्या अन्तर है, उद्देश्य, नियम और काय प्रणाली मे।

श्रीराम–आप ठीक कह रहे हैं बस मैं सब मायियो की बैठक बुला लू। तो एक सप्ताह म तय कर लीजिए, आयन्दा 10 दिन म विधान सभा का सत्र चलने वाला है। सम्पत बाबू न आश्वासन दिया–ठाकुर साहब यह जिम्मा मुझ पर छोडिए हम अपन क्षेत्र का विकास

फरना है राजनतिक दल, अपनी अपनी राग अलाप रहे हैं, यो अब
लोकतांत्रिक मोर्चा है वहा-भूले भटके कहीं हो तो उनमें से हमार
श्रीराम साहब एक हैं हां आप मुक म उठाने की कार्यवाही प्रारम्भ कर
ही दे।

आप चाहेंगे तो क्या नही होंगे ? मुझे मालुम है मुख्य मन्त्री
महोदय आपक नजदीकी रिश्तेदार हैं उनको जीताने म आपका हाथ
रहा है आपकी बात भला टालेंगे रहे मुकदमे बस अदालत म पेंर
विलाई करना पडना है अन्यथा सब खारिज होंगे झूठे मुकदम लगा
रखे हैं कुछ मात्र तकनीकी भर है।

महेन्द्रसिंह—मैं प्रयत्न करूंगा आशा तो है कि मेरी बात नही
टालगे हम एक सप्ताह बाद मिले।

सम्पत बाबू—एक सप्ताह तो बहुत देर हो जाएगी इन दिनों
दस मुकदमो की पेशियां हैं।

महेन्द्रसिंह—मैं कहलवा दूंगा पेशियां बदल जाएंगी।

सम्पत बाबू—ठीक, तो हम चलें रहा काम श्रीराम जी का,
वह मेरा जिम्मा रहा पूरा का पूरा।

सम्पत बाबू और श्रीराम चले गए।

इतने म शारदा शर्मा आयी उसका चेहरा उतरा हुआ था।
वह दरवाजे पर आकर रुक गई।

महेन्द्रसिंह जी न पूछा—आप !

म प्रभुदेव के साथ हाजिर हुई थी, अपन सबादने के लिए।

हां याद आया—मैं कोशिश करूंगा, आपका केस कठिन नही है,
पति पत्नि एक साथ रखन की परम्परा है आप निश्चित रहिए।

शारदा—प्रभुदेव ने मुझ मे 500/ रु लिए हैं आपको देने क
लिए और मुझे आप क पास भेजा है।

महेन्द्रसिंह—अ दर आइए बाहर खड़े खडे भी बात होगी क्या ?
छींटे आना प्रारम्भ हो गया है आप भीज जाए ग।

शारदा अन्दर आ गयी।

महेन्द्रसिंह ने पूछा–बताया अध्यापका से क्या लिया ?

शारदा–आज ही धमणाला मे हरक स 500 500 रुपये लिए हैं मुझे कहा कि मेरा केस कठिन है मैं आपको अलग स अज करू ?

लेकिन एक बात आप से पूछना चाहूगी कि क्या महिला कम-च रियो क लिए –

वह आगे नही बोल सकी, वह रो पडी और मुह फेर कर आखें पूछने लगी।

फिर साहस कर बोली–मुझे आपके पास भेजा है क्या रुपयो के साथ चमडा भी खरीदा जाता है सरला बहन को वह कल भेजगे, मुझे लगता है रकम वह खा जाएगा और आप हमार चम को खरीद लेंग।

महेन्द्रसिह अवाक सा देखता रहा, अच्छा हुआ बहन जी, आपने मुझे आगाह कर दिया मैं न तो अध्यापका से कभी रिश्वत लेता हू और न उनस अन्य लाभ की आशा ही करता हू।

शारदा ने दोनो हाथ जोडकर कहा–मै वर्षों से अपने पति से अलग हू कई प्रभावशाली कायकर्त्ता आए उन्होने भुलावा दिया और साथ ले आय, वहा होटल म ठहरे अपनी अनुचित इच्छा जाहिर की, और उत्तर मना कहा–बस म आपसे किसी तरह की रकम नहीं लू गा यह तो प्राकृतिक है–इस युग मे म क्या ? मुख्य म त्री सब ही करते हैं।

मैंने साहस से काम लिया, होटल से बाहर आ गयी वह मेरे पीछे पीछे आया। शहर म मेरा एक रिश्तेदार था, उसके यहा जाकर रात बितायी आज तो हम दल साथ हैं लेकिन सरला बहन को वह ठग चुका है उसने 500/ र नहीं लिए वह स्वय सिफारिश करेगा, हमारे रुपये भी वह नही पहचावेगा क्योंकि मेरी सबसे बडी सिफारिश मेरा देह है जो वह आपको समर्पित करना चाहता है।

महेन्द्रसिंह हसा नहीं गम्भीर हुआ बहन जी मैं मनचाहा नहीं हू, मैं भी एक साधारण कमजोर प्राणी हू मेरी अपनी दुबलता है, लेकिन

आप जाइए और अपने स्वयं भी उनसे माफ़ी मांग लीजिए। औरों के काम होंगे या नहीं आपका काम सब को छोड़कर कराऊंगा।

शारदा ने महेन्द्रसिंह के चरण छुए उसका मन तरल हो गया, आखें गीली हो गयीं भाई साहब मैं जीवन भर आपकी ऋणी रहूंगी, लेकिन मैं देख रही हूं कार्यकर्त्ता नारी कर्मचारियों को तबादले के लिए साथ लेकर आते हैं और उनके सतीत्व को खरीद करते हैं।

महेन्द्रसिंह—आप निश्चिन्त रहें आपके साथ ऐसा कोई होने वाला नहीं है आप जाए।

इतने में प्रभुदेव आ गया शारदा उठ गयी थी वह दरवाजे तक पहुंच गई थी प्रभुदेव ने कहा—आप जा रही हैं।

वह नहीं बोली।

फिर नमस्ते कर महेन्द्रसिंह से बोला-शारदा जी अपने आप आई मुझे मालुम है वह चरित्रहीन है, शारदा समझती है कि सबको अपने शरीर से प्रसन्न कर लेगी।

महेन्द्रसिंह जी क्रोध में खड़े हो गये उन्होंने आवाज दी, शारदा जी-आप आइए। उत्तर नहीं मिला तो रामधन दरोगा को दौड़ाया-दो मिनट बाद वह लौट आयी।

महेन्द्रसिंह ने प्रभुदेव से कहा-आपने शारदा जी को क्यों भेजा, जब मैने आपसे परसों आने को कहा था।

प्रभुदेव के पसीना आ गया वह हाथ जोड़कर बोला-हुजूर बस सच्च सच्च अर्ज करता हूं यह अपने आप आई।

महेन्द्रसिंह—और तुमने सब से 500)-500) रुपये लिए ?

प्रभुदेव—यह झूठ है सरासर झूठ है।

महेन्द्रसिंह ने कहा—आप जाइये, आपका कोई काम नहीं होगा। या तो जितने रुपये इन अध्यापकों से लिए हैं, मुझे दीजिए या इनको लोटाइए नहीं तो मैं आपको पुलिस के हवाले करूंगा और सरला जी कहां है उनको भी भेज देता।

बोलो शारदा जी, तुमने 500) रुपये और दूसरों ने भी 500) रुपये दिए।

शारदा—हुजूर दिए हैं।

महेन्द्रसिंह—मैं अभी पुलिस को बुलाता हूं। रुपये निकालो और कसम खाओ कि भविष्य में कभी ऐसा घृणित काम नहीं करोगे—
हुजूर उसने बटुआ खोला 5000) रुपये के नोट सामने रखे—यह रकम मैंने हुजूर के लिए ली थी, बिना पैसे काम नहीं चलता और सच यह है हुजूर कि शारदा जी ने स्वयं आपके पास आना सोचा, मैं क्यों रोकता ?

महेन्द्रसिंह ने कहा—यह रकम उठाओ और उसमें से 500) रुपये अलग कर शारदा को दिए। फिर प्रभुदेव को कहा—चलो मुझे तुम से बात करना है और अन्दर के कमरे में ले गए—शारदा को कहा—आप यहां ठहरिए, मैं जरूरी बात कर लूं नहीं तो फिर आगे कार्यवाही करना पड़ेगा।

महेन्द्रसिंह प्रभुदेव को लेकर अन्दर कमरे में गया, उस सोफे पर बिठाया और स्वयं सामने बैठ गया।

देखिए मास्टर जी यहां मैं 2000) रुपये मासिक का मकान लेकर बैठा हूं 4 नौकर हैं जिनका कुल खर्चा 1000) रुपये मासिक है, चाय पानी राग, तो कभी कौन इसके अतिरिक्त उनके मेहमानों को मेरे यहां ठहराते हैं। उनका भोजन व्यय आदि मुझे उठाना पड़ता है। मुझे 10000) रुपये मासिक का व्यय है। सच कहता हूं कल—यों आप पूरे भरोसे से आए आपका काम होगा, हां शारदा कह रही थी कि आपने उसे भेजा कि मैं उसका शरीर भोगूं।

प्रभुदेव—आप नाराज हो गए, ये मास्टरनियां सब ऐसी हैं, इनमें भी कोई चरित्र है मैं क्यों भेजता ? वह स्वयं आयी है अच्छा तो आपका काम करने का प्रयत्न करूंगा, और आप एक हजार अपने लिए रख लीजिए कल ही मैं आपका काम करा सकूं ऐसी कोशिश करूंगा।

3500) रुपये महेन्द्रसिंह जी ने अलमारी में रखे, और प्रभुदेव से बोले, आप जाइए, कल सांझ को मिल लीजिए।

प्रभुदेव नमस्कार कर रवाना हुआ, शारदा उठ कर जाने लगी तो महेन्द्र सिंह ने कहा—ठहरिए जिन लोगों का पता लगाया प्रभुदेव से

उनके सम्बन्ध म म जानकारी ले लू शारदा खडी रही ।
महेन्द्रसिंह ने कहा—बैठिए और पास म जाकर उनके दोनो
कधे पकड कर बिठा दिया फिर घटी बजाई, नौकर आया भोजन म
समय लगेगा दो कप चाय दे दो और दो थाली परोस देना ।
शारदा देवी—नही सर म तो खा लूगी ।
अब कहा खालोगी—9 बज रहे हैं और इतनी रात आप जायेगे
कहा—यहा अलग से कमरा है आप सो जाइए ।
शारदा ने आपत्ति नही की फिर महेन्द्रसिंह ने कहा—देखो
शारदा जी मुझे आपसे पूर्ण सहानुभूति है आपका केस तो सबसे ज्यादा
genuine है, पति पत्नि को एक जगह रखने की परम्परा है उस परम्परा
को कायम रखना मेरा काम है ।
शारदा—सर यही तो म चाहती हू । वर्षों से जूते रगडते बीत
गया कुछ हुआ नहीं तब आपकी सेवा म आना पडा ।
चाय आ गई दोनो ने चाय पीयी, फिर नौकर से पूछा भाई
भोजन मे जल्दी करने की जरूरत नही है बस बाजार से नमकीन
मिठाई ले आवो मिठाई अच्छी लाना ।
शारदा के चहरे पर प्रफुल्लता उतर आयी, उसने कहा—मिठाई
मगवा रहे हैं । इतनी बडी कृपा ?
मैं स्वय रोजाना खाता हू फिर नौकर को कहा—देखो डाईनिंग
टेबुल पर दो गिलास लगा देना, हा शारदा जी आपको तो आपत्ति
नही होगी सिर्फ एक पेक ।
शारदा—नही सर, इसकी जरूरत नही है । यो ही आपकी
कृपा से दबी जा रही हू ।
महेन्द्रसिंह हसा—आपको सौगन्ध तो नही है ?
शारदा—ऐसी कोई बात नही है हम ब्राह्मण नही खत्री हैं,
हमारे यहा पीना मना नही है या मने जीवन मे एक दो बार ही ड्रिंक
लिया है आप अगर आज्ञा दें तो म नही लू ।
महेन्द्रसिंह—यदि आप लेते हैं तो क्या हानि है ? थोडा मन

प्रसन्न हो रहेगा थकान उतर जाएगी ताजगी भी।

शारदा—जैसी श्राज्ञा।

महेन्द्रसिंह—तो चलें टेबुल पर–नमकीन तो शायद घर म है ही श्राप चाहे तो यहा ही मगवा लू लेकिन यहा काम वाले श्राते रहते हैं पीना तो एकान्त म ही ठीक रहता है।

श्रौर महेन्द्रसिंह उठा शारदा भी उठी श्रौर महेन्द्रसिंह न किवाड़ श्रटकाए श्रौर श्रन्दर के कमरे म गया–श्रालमारी से दो बोतलें निकाली, श्राप श्रंग्रेजी शराब पसन्द करेंगी, विस्की या ब्रांडी, या हमारे यहा का सबसे बढ़िया केसर श्रौर गुलाब है।

शारदा ने कहा—जसी श्रापकी श्राज्ञा है मैं जो श्राप बतायेंगे वही ले लूगी।

नही, श्राप श्रपनी पसन्द बतायें।

शारदा—सर मैं किसी शराब के नाम नही जानती उनके साथ तो कभी पीने का काम नही पडा, मेरी बहन के यहा एकाध दफे लिया था।

तो फिर मौसम के श्रनुसार गुलाब ठीक रहेगा, केसर गम होगी।

शारदा ने कोई उत्तर नही दिया, एक प्लेट म पापड श्रौर एक म नमकीन रखा था।

दो गिलासो म शराब डाला—शारदा न कहा–सर मुझे थोडा ही दें, वर्षों स पिया नहीं है।

लीजिए शराब का नशा तो राजा शाही नशा है श्रौर फिर श्रभी श्रापको कही जाना तो नही है, श्राध घण्टा पीयेंगे श्रौर धीरे धीरे, शराब का श्रानन्द ही इसी मे श्राता है। घटक पीलो यह ठीक नही है–श्ररे कौन भागा जा रहा है, टी टेबुल स ड्रिंक टेबुल पर सम्वा चलना चाहिए, एक चुस्की फिर नमकीन फिर बातचीत का दौर फिर चुस्की, धीरे धीरे गुलाबी नशा चढे, पागल तो होना सहज है लेकिन उस पागल पन स क्या होगा ?

शारदा सुन रही थी उसने कोई उत्तर नही दिया वह दोनो कोहनिया टेबुल पर रख कर बैठी थी।

महेन्द्रसिंह ने गिलास उठाई फिर शारदा जी की तरफ की, लीजिए। शारदा न गिलास ली महेन्द्रसिंह न अपनी गिलास उठाई और उसे शारदा की गिलास से छुआ, फिर बोले—पीजिए और उसने स्वय एक घूट ली। नमकीन उठाया। दूसरा तीसरा चौथा दौर चलता रहा।

शारदा ने पीकर गिलास रखी महेन्द्रसिह न कहा—बस अभी तो आखो म ललाई भी नही आई हाथ पैरो म स्फूर्ति भी नही फैली और आपने बन्द कर दिया।

शारदा—सर बस इतना ही आगे नही— मुझे तो नशा आ गया है।

नही, मुझे तो कही नजर नही आता बस एक पग और।

और उन्होने ग्लास मे शराब उढल दिया और अपनी ग्लास भी भरली।

शारदा ने कहा -सर मेरा स्थाना तरण आप यही करा दें तो शहर है, आगे पदोन्नति मे सयोग आयेंगे और अब मुझे भाग्य से आपका सरक्षण मिल गया है तो मुझे लाभ लेना चाहिए।

आपके पतिदेव का भी स्थाना तरण कराना होगा ?

हो सके तो करवा दीजिए नोकरी कर रहे हैं यो वे एक रखेल के साथ रह रहे हैं बस मैं केवल उनकी रखैल स दूर रहन के लिए ही अपना स्थाना तरण करवा रही थी सच्च है सर, नारी कभी शौत को बरदास्त नही कर सकती और सच्च है कि नारी का पर भी तब फिसलता है जब वह अपने पुरुष को पतित होत देखती है। वह जमाना गया जब पति दस नारियो को भोगता था और नारी अपने प्राणपति के पीछे ठोकरें खाकर भी उनके चरणो को सहलाती थी, म पढी लिखी हू, सर कब तक बर्दास्त करती आप तो अब कृपा करें तो यही करवा दें आपकी छत्र छाया रही तो प्रधानाध्यापिका बनने मे क्या कठिनाई होगी ?

६० गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

महेंद्रसिंह—आप ठीक कहती हैं, नारी ने बहुत ताडना सही है। कामी वैश्या गामी पति को मौत से बचाने के लिए सतीत्व को दाव पर लगा दिया और प्रभात सूर्य को अपने सतीत्व के बल से रोका—लेकिन मुझे लगता है यह मात्र कल्पना भर है, मन गढन्त कहानी है, नारी की महानता का निरूपण—

शारदा ने घूंट ली और महेन्द्र सिंह जी के गिलास की तरफ देखा—सर आपकी गिलास तो खाली हो गई, आज्ञा हो तो डालूं—

महेंद्रसिंह हंसा—पहले आपकी गिलास में फिर मेरी ग्लास में—

शारदा—नौकर कब आयेगा ?

बस आता ही होगा।

मैं सोच रही थी 9½ बज रहे हैं भोजन मैं बना लेती। उठना चाहती थी महेंद्रसिंह ने कहा—नहीं, ठहरिए आप क्यों कष्ट करें, नौकर ने सब्जियां बना ली हैं फिर परावठें आते ही डाल देगा—तब तक धीरे धीरे एक पेग और चल जाएगा।

शारदा की आखो मे तरेर थी, उसने कहा—सर, मुझे नशा आ गया है अधिक पीऊंगी तो....

महेंद्रसिंह ने बोतल से उसकी गिलास मे शराब डालना चाहा। शारदा ने अपने हाथ से उसे बन्द कर रखा था महेंद्र सिंह ने बोतल टेबुल पर रखी, अपने हाथ से उसके हाथ को हटा कर फिर शराब उडेली।

शारदा—सर, शराब के नशे म देख कर नौकर कुछ समझ न ले ?

मैं अभी नौकर को भेज देता हू उसके घर जाकर सो लेगा।

आप धीरे धीरे सिप कीजिए और मुझे खाना दीजिए, मैं लेलूं।

शारदा—जरूर सर, हां एक अर्ज करू।

महेंद्रसिंह—कहो।

शारदा—कालेज एज्युकेशन मे एक महत्वपूर्ण पद रिक्त है, यद्यपि मैं अभी हाई स्कूल में हूं। क्या मन्त्री महोदय डेपुटेशन पर हम

पद पर नहीं रख सकते ? यों मैं उन सभी गुणों की अधिकारिणी हूँ, जिनके आधार पर इस पोस्ट पर नियुक्ति हो। और शारदा ने अपना बाया हाथ महेन्द्र सिंह के पाव पर रख दिया।

इतने मे नोकर आ गया। महेन्द्रसिंह ने कहा—भाई जल्दी करो बहुत लेट हो रही है, बहन जी का भाई भी इनको लेने आने वाला है तुम्हें अपने घर जाना है। भोजन भी तो वहीं करोगे।

वह सीधा भोजन गृह मे गया, चुल्हा लगाया, साग गरम की और गूंदे आटे की रोटिया बनाई।

तब तक महेन्द्रसिंह पीता रहा—शारदा ने बन्द कर दिया था जब नोकर थालियां लेकर आया तो बोली—अलग से पानी होगा, ठाकुर साहब के फ्रीज मे तो शराब पड़ा है म उसे कैसे स्पर्श करूं ?

नोकर ने कहा—घड़े का पानी है।

महेन्द्रसिंह न उत्साह बताने के लिए कहा—अच्छा तो एक जगह शराब और पानी रहे तो क्या पानी भी बिगड़ जाएगा ?

खैर भाई, आपके लिए पानी घड़े का ले आवो।

और वह घड़े का पानी ले आया भोजन करने के बाद महेन्द्र सिंह ने फोन घुमाया हलो, कौन शारदा जी के भाई साहब बोल रहे हैं। मने आपको भोजन पर आमन्त्रित किया आप नहीं आए—खैर अब आप आ जायें तो शारदा जी को ले जायें हां तो कब तक आ रहे हैं अच्छा 15–20 मिनट मे—फोन रख दिया। नोकर से कहा—भाई कल सुबह 10–12 महमान आ रहे हैं तुम ठीक आठ बजे आ जाना—मैं बैड टी का आदी नहीं हूं और लेना होगा तो ले लूंगा लेकिन तुम घर से फारिक होकर ही आना।

हुजूर—उसने झुककर प्रणाम किया और वह चला गया-शारदा मन्द मन्द मुस्करा रही थी।

महेन्द्रसिंह ने कीवाड़ बन्द किए और शारदा का हाथ थामा। उसने महेन्द्रसिंह के चेहरे म देखा—सर प्रभुदेव कहीं आ न जाए?

---

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

आ जाने दीजिए मैं कीवाड़ खालूगा ही नहीं। ग्रोर आपने तो अपने रिश्तेदार के यहाँ जाने की बात नहीं थी।

हाँ कहा था।

महेन्द्र सिंह ने उसके कन्धे पर हाथ रखा ग्रोर मुस्कराकर कहा आप ग्रब जो भी काम हो निश्चिन्त होकर चल आएँ यह घर हाजिर है आपकी सेवा करने के लिए। कहीं एक पैसा खर्च न करें।

वे शयन कक्ष में गए। महेन्द्रसिंह ने दूसरा हाथ दूसरे कन्धे पर रखा।

शारदा खड़ी थी सर मुझे यह मालूम होता तो मैं इस मास्टर के साथ ग्राती ही नहीं आप नहीं जानते कल वह मेरे कमरे में चला आया, मैंने ऐसी थप्पड़ लगाई कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ा फिर कहने लगा–महिला का स्थानान्तर तो कम बेचकर होना है मैंने उसे फटकारा, मुझे ऐसा नहीं करना है ग्रोर मैं रात को भागकर ग्राप रिश्तेदार के यहाँ चली गई सरता पर क्या बीता वह जाने प्यार सौदा नहीं है प्रिय मैं आपको प्यार करती हूँ।

शारदा ने ग्राँख बन्द कर ली वह ग्रपनी बाहें फैलाकर महेन्द्र सिंह को बाहु पाश में बाँधने लगी कि महेन्द्रसिंह शारदा के साथ ही पलंग पर लुढ़क गए।

आँख बन्द कर नशे में शारदा कह रही थी प्यार सौदा नहीं है रात गहराती जा रही थी।

□□

मुख्य मंत्री के क्षेत्र के जिले का विधायक श्रवणकुमार ग्रोर प्रधान हनुमान प्रसाद दोनों सत्ताधारियों में काम निकलवाने में बड़े दक्ष हैं मारवाड़ गढ़ की तरफ सीमेंट निर्माण का लाइसेन्स प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार ने केन्द्रीय सरकार को सिफारिश कर दी ग्रोर उद्योग मन्त्री जी ने केन्द्रीय मन्त्री को व्यक्तिगत निवेदन किया कि वह उनके विधान सभा क्षेत्र का विकास है इसलिए शीघ्र पास कीजिए, लेकिन मौजाबाद क्षेत्र का सेठ 8 करोड़ की लागत का विद्युत कण्डक्टर का कारखाना लगाने के लिए ग्रावेदन पत्र दे चुका था उसे केवल

से पडा था कोई सुनवाई नही हो रही थी। श्रवण कुमार के पास पहुचे, श्रवणकुमार का दरबार भी भरा रहता है उसके कमरे के बाहर 100 200 व्यक्ति बराबर रहते हैं, श्रवण कुमार के पास जब मोजाबाद का सेठ केसरीमल पहुचा तो श्रवणकुमार ने कहा–राज्य सरकार उद्योगीकरण के पक्ष मे है, मुझे आश्चर्य है आपका काय क्यों नहीं हुआ ? बडा उद्योग है उद्योग मन्त्री और मुख्य मन्त्री से मिल लें आप को आज्ञा पत्र शीघ्र जारी हो जाएगा उसके बाद लोह सीमेन्ट चद्दर और राज्य से ऋण भी आवश्यक होगा मैं सोचता हू आपने कोई मर्यादित कम्पनी बनाली है उसकी पू जी कितनी है।

सेठ गम्भीर हुआ पू जी तो अभी 10000/- र है, लेकिन हमारी तरफ से 2–4 लाख लगा सकेंगे राज्य से ऋण और अनुदान यदि मिल गया तो मैं एक वर्ष मे कारखाना चालू कर दू गा।

श्रवणकुमार–यद्यपि मुख्य मन्त्री महोदय से आज ही आप के उद्योग के सम्बन्ध मे बात करू गा लेकिन केन्द्र म बडा भयकर काम है जितनी जल्दी करो उतनी ही देरी होती है। आप महेन्द्रसिहजी को जानते हैं उनका केन्द्र मे भी अच्छा दबदबा है, आप चाहो तो मैं मिला दू।

सेठ प्रसन्न हुआ जरूर सर उद्योग के लगाने मे जितनी देर लगेगी उतना ही विकास रुकगा।

श्रवणकुमार सेठ को साथ लकर महेन्द्रसिह के पास पहुचा, और बोला–ठाकुर साहब बस आज अपना परीक्षण है सेठ साहब विकास करना चाहते हैं प्रारम्भिक आदेश और अनुज्ञापत्र के लिए दो साल से भटक रहे हैं वाजिब खच करने के लिऐ तैयार हैं।

सेठ केसरी च दने उदारभाव से कहा– ठाकुर साहब, सब खच ता उद्योग पर है निर्माण मे जितना कम समय लगेगा उतना ही उद्योग पनपेगा आप जानते हैं जीवतराम का नया उद्योग प्रमुख है राज्य सरकार की 51 प्रतिशत पू जी सारा सामान सीमेन्ट कोयला, लोहा आदि उपरत ः, राज्य वित्त निगम से पूरा कर्जा धरती पूजन से पूव उनके हाथ मे आ गया और जीवतराम ने कुल 9 महीने म 6 करोड की लागत

? 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

का कारखाना चलाकर दिखाया राज्य सरकार का उद्योग उपक्रम फेल रहा और जीवतराम सफल, मैं तो मात्र लाईसेंस और उसके बाद वित्त निगम से कर्ज भर चाहता हू।

श्रवण कुमार—बस अब आप निश्चित रहिए महेन्द्र सिंह हमारे उद्योग मन्त्री के भाई हैं, केन्द्र मे भी दबदबा है भाई साहब आप कल यहा से कागजात निकला लें और एक सप्ताह में केन्द्र से सफाई करा दें।

सेठ केसरीचन्द ने अपना बक्स खोला और नोटों के बण्डल श्रवणकुमार के हाथ में दिए।

श्रवणकुमार—बस आप अब निश्चिन्त रहिए एक सप्ताह मे अपना काम हो जाएगा, दिल्ली में पैसे के बिना कागज सरकना नहीं है नहीं तो सेठ साहब आपको एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ता आप विश्वास से काम में जुटे हैं और उसमें सहायता पहुचाना हमारा काम है, अब आप पधार सकते हैं।

सेठ केसरीचन्द चला गया, श्रवणकुमार ने देखा–5000) रु के 10 बण्डल पूरे 50 हजार रुपये थे।

उसने महेन्द्रसिंह के हाथ मे थमा दिए। महेन्द्रसिंह ने कहा—देखिए यह रकम आप रखिए मैं तो आपका अनुचर हू पहले काम हो जाने दीजिए।

श्रवणकुमार—नहीं यहा दिए लिए बिना काम नहीं चलेगा। अभी रखिए फिर देखा जाएगा। हा एक बात है हमारा एस पी बड़ा बदमाश, रिश्वत खोर है उसका थाना तरण करखाना है।

महेन्द्रसिंह—बस यहा ही हो जाएगा लेकिन उस पर सी एम के दस्तखत होते हैं एकाध दिन की देर भले ही लगे।

श्रवणकुमार—ठाकुर साहब अब हमारे सारे काम आपके द्वारा होंगे–हां एक बात अभी और है। हमारे गोसाई भगड़े हैं, वर्षों से चल रहे हैं रेवेन्यू मिनिस्टर आपके मामा साहब हैं।

हां हैं तो, लेकिन वह बड़ा सख्त है। सिफारिश करो तो नाराज होता है रुपये पैसे तो लेना बिल्कुल पसन्द नहीं।

महेन्द्रसिंह ने उत्तर दिया।

श्रवणकुमार—मैंने सुना है उनकी एक बड़ी कमजोरी है, आप करना चाहें सच्च वे स्त्री के पीछे सब सिद्धान्त व नीतियों को भूल जाते हैं।

महेन्द्रसिंह—देखिए मेरा ज्ञान नहीं है और इस काम को भला मैं कैसे कर सकता हूं ? मेरी पत्नी को मालूम पड़े तो मेरा जी खा जाए।

इतने में एक युवती आई और नमस्कार कर खड़ी रही।

महेन्द्रसिंह ने कहा—बहन जी आप बैठिए कहो क्यों हो गई ?

महिला मुस्कराई, दोनों हथेलियों को मलते हुए उसने कहा—देखिए सर वर्षों से ठोकरें खाती फिर रही हूं, मुझे मालूम हुआ कि आप हम जैसे दीनहीन अनाथ अबलाओं का काम करवा देते हैं मैं राज्य सरकार से चार वर्षों से निलम्बित हूं—न अभियोग पत्र मिलता है और न कार्यवाही हो रही है।

आप दयानिधान हैं।

श्रवणकुमार ने बहुत गहरी दृष्टि से महिला की आंखों में झांका और फिर मुस्करा कर कहा—

आपके मत लेकर विधान सभा में गए हैं क्या हमारा इतना भी वक्तव्य नहीं है कि किसी के काम में कोई रोड़ा अटकाता हो तो उसे दूर करें। बताइए आपका किस विभाग में काम है।

महिला ने कहा—सिर मुडाये और ओले पड़े बस सेल्स टेक्स अधिकारी बनी कि 6 माह में मौतिकी के आदेश मिल गए।

श्रवणकुमार ने जोर देकर पूछा—आपका शुभ नाम ? उसने कहा—मेरा नाम दमयन्ती शर्मा है।

श्रवणकुमार—ओह ! पहचाना आप मेरे मित्र की बहन हैं याद पड़ता है आप से कभी मिलने का काम पड़ा है ?

दमयन्ती प्रसन्न हुई ओह ! आप मेरे भाई साहब के मित्र हैं

फिर तो मुझे देवता के दर्शन हो गए आप किसी तरह मेरा काम करवा दें।

दमयन्ती की आयु 24-25 वर्ष की है वह सुन्दर, पुष्ट और हसमुख है।

श्रवणकुमार ने एक बार और उसकी आँखों में घूरा फिर बोला—आपके भाई साहब आए हैं?

दमयन्ती—नहीं सर वे तो नहीं आए।

श्रवणकुमार की दृष्टि को भांपकर दमयन्ती ने अपनी नजरें नीची कर ली अब श्रवणकुमार ने कहा—आप कल सन्ध्या को मेरे यहाँ मिलिए-आप मेरे निवास का पता तो जानती हैं।

दमयन्ती—नहीं सर मुझे ठाकुर साहब का पता बताया, पूछते पूछते यहाँ तक चली आयी हूँ।

श्रवणकुमार—ठाकुर साहब आप इनका काम करवा दें।

महेन्द्रसिंह—नहीं मैं आपके मित्र की बहन हैं अच्छा है यह काम आप ही करवा दें।

श्रवणकुमार—बहन जी मैं आज मन्त्री महोदय से मिल लेता हूँ-आप कल किसी वक्त मिल लीजिए, यह मेरा कार्ड लीजिए—विधायक नगर में 17 नम्बर का मेरा बंगला है आपको ढूंढने में कठिनाई नहीं पड़ेगी।

दमयन्ती—बड़ी दया होगी यों इस निलम्बन में मेरा कहीं दोष नहीं है। मेरे उच्च अधिकारी की गलती मुझ पर थोप दी गई फिर मुसीबत यह है कि फाइल देख कर कोई निर्णय नहीं करता एक बार फाइल देख ले तो

श्रवणकुमार - तो आप कल पधारें मैं सोचता हूँ आपके काम में देरी नहीं होगी और अब जब आप मेरे मित्र की बहन हैं तो मुझ पर दुबारा कर्तव्य है कि मैं उस ठाव करूं।

दमयन्ती ने नमस्ते किया, श्रवणकुमार बार बार उसे देख जा रहा था—दमयन्ती स्तब्धसी कुछ क्षण खड़ी रही और फिर चली गयी।

श्रवणकुमार ने महेन्द्रसिंह को कहा—भाई, आजकल यह अभियोग राजनेताओं पर लगाया जाता है कि वे नारी के सतीत्व को लूट कर उसका कार्य सम्पादन करते हैं नारी का शरीर रिश्वत है। लेकिन कब यह नहीं था बल्कि फौज में तो विष कन्याओं का उपयोग ही ऐसे किया जाता था। आजकल जो महिला नौकरी करती हैं उनके लिए तबादला नक्सरी तरक्की एवं इसी तरह की अन्य समस्यायें उलझी रहती हैं, बेचारी क्या करें ? कोई न कोई पाया ढूंढना पड़ता है न ढूंढें तो चारा नहीं कोई उसकी सहायता नहीं करता और नौकरी से हाथ धोना पड़ता है।

महेन्द्रसिंह—आप ठीक कहते हैं, नारियां विवश हैं काम भी करवा लेती हैं और एक पैसा खर्च नहीं करना पड़ता बल्कि राजनेता उसके पीछे खर्च करता है।

इसी बीच दो दल के कार्यकर्ता आ पहुंचे, उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर दया की भीख मांगी। मलारपुर ग्राम, सहकारी समिति के सचिव और अध्यक्ष हैं। श्रवण कुमार के क्षेत्र के कार्यकर्ता हैं अध्यक्ष राम लाल और सचिव सोहन लाल हैं।

राम लाल ने कहा—जन सेवा क्या करें ? काला मुंह होता है चेक से रुपये लाए सदस्यों को चुका दिये फिर भी हमें जुम्मेदार ठहराया जा रहा है कि हमने रुपये गबन कर लिए।

श्रवणकुमार राम लाल और सोहन लाल को अच्छी तरह जानता था, ये दोनों विरोधी दल के सदस्य थे अब वे जनता दल में शरीक हो गए।

श्रवणकुमार ने विधान सभा में कई बार सहकारी विभाग की भर्त्सना की थी और उसे आड़े हाथों लिया था, साथ ही राम लाल और सोहन लाल को डाकू कहकर पुकारा था, अब दल बदल से स्थिति बदल गई है, इस चुनाव में भी सोहन लाल श्रवण कुमार के साथ आ गया था और उसके चुनाव में डटकर काम किया था। श्रवण कुमार ने गम्भीर होते हुए कहा—सोहन बाबू, मैं सारी स्थिति से परिचित हूं,

जाँच भी हो गयी है और यह पाया गया कि रुपये सदस्यों के पास नहीं पहुंचे बल्कि आपके पास ही रहे—यह हो सकता है कि आपने किसी अन्य अधिकारी को दे दिए हों जो सदस्यों को दे दे लेकिन जो कुछ प्रमाणित है वह स्पष्ट है।

सोहन लाल—एम एल ए साहब, जो कुछ हो गया वह तो हो गया अब क्या करें ? रुपया हमारे पास देने को नहीं है फिर फौजदारी मुकदमा अलग चलेगा। अब रुपयों की व्यवस्था नहीं हो सकती। श्रवण कुमार ने जोर देकर कहा—फौजदारी मुकदमा उठाने का प्रयत्न करूंगा। राम लाल—कल ही हरिपुरा की सहकारी समिति के रुपये माफ हुए, फौजदारी मुकदमा भी उठा है और यही क्या ? राजनेताओं ने यह निर्णय सा ले लिया है कि गत दस वर्ष पुराने सब फौजदारी दीवानी कार्यवाहियां बन्द कर दी जाएं और सहकारी समितियों को पवित्र बना दीजिए कल ही मैं मुख्य मन्त्री जी से मिला था उन्होंने फरमाया कि या तो कार्यकर्ताओं को परेशान करो उन सब वफादार कार्यकर्ताओं को जो खोटे दिनों में दल के साथ रहे या फिर ऐसी सहकारी समितियां भंग कर दी जायें, वसूली बन्द करदी जावे और ऐसी रकम को बट्टे खाते नाम मांड दी जाए और फौजदारी मुकदमें उठा लिए जायें।

श्रवण कुमार—हां ऐसा विवाद चल रहा था, आखिर गत वर्षों से अधिकांश हमारे कार्यकर्ता ही फंसे हुए हैं। मुख्य मन्त्री महोदय ने बड़ा सही कदम उठाया है। मैं सोचता हूं यह जनरल आदेश होंगे और उसमें किसी को विशेष प्रयत्न करने की जरूरत नहीं है।

राम लाल—नहीं सर, करना पड़ेगा क्योंकि हमारा मुकदमा दस वर्ष के अन्दर का है, जब दस वर्ष पुराने मुकदमों को समाप्त किया जा रहा है तो मैं सोचता हूं अब तक के गबन के सब मुकदमे उठा लें और रुपयों को बट्टे खाते नाम मांड दें और भविष्य में चेतावनी दे दें कि जो भी इस धन के साथ खिलवाड़ करेगा उसे न्यूनतम 10 वर्ष की सजा होगी मुख्य मन्त्री महोदय बता रहे थे कि ऐसे 500 मुकदमे हैं और 10 करोड़ से ज्यादा रुपये इनमें फंसे हुए हैं, यह तो हो ही गया

कि दस वष से पुराने मुकदमो को समाप्त कर दिया जाए इन दस वर्षों मे 200 से ज्यादा मुकदमे नही होंगे और एक करोड़ रुपय से ज्यादा नही होंगे।

श्रवणकुमार—यह नीति का प्रश्न है मैं मुख्य मन्त्रीजी से बात करूंगा आपके जिम्मे कितना रुपया निकलता है ?

रामलाल—मेरे जिम्मे 2 25 लाख और सारे लाख क जिम्मे 1 50 लाख गलती तो हो गई अच्छा नही है लेकिन राज्य क्या देश भर मे जो हो रहा है उसे देखते हुए यह तो राजी म नीग के बराबर भी नही है। आपको मालम है म क्या अर्ज करू सिंचाई विभाग म एक पैसे का काम नही होता और लाखो रुपए खर्च खाते नाम माडकर उठा लिया जाता है सिंचाई विभाग के इन्जीनियर तो कहते हैं कि उनके यहा ऐसा विरला ही व्यक्ति होगा जिस पर निलम्बन का आदेश न हो चलते रहेंगे, राज्य तक आकर मुकदमे समाप्त कर देंगे, महुद्रपुर म सडक का नाम निशान नही व पूरे 1300000) रु उठा लिए गए कायवाही चलेगी, नाप तौल होगे कमिशन बठेगा और जो चीज सामने आयेगी वह सच्चाई के अलावा और कोई होगी।

श्रवणकुमार—म सदव विरोध मे रहा मुझे लगता है कि भ्रष्टाचार हमारे राष्ट्र को बीमार कर देगा हमारी राष्ट्रीयता खत्म हो जाएगी और हम विश्व म कही खड होने लायक नही रहेंगे फिर वह हसा—भाई साहब अब तो आपके साथ आ गए हैं। हमारी नजरिया मे अन्तर आ गया है म मदद करूंगा और जो कुछ कर सकूंगा करूंगा।

सामने सरपच प्यारेलाल नजर आये, यह श्रवणकुमार के अपने आदमी हैं और सदव से दोनो साथ रहे हैं। नमस्कार कर बोले—सब जगह दिया लेकर तलाश की कही नही मिले आखिर मे पता लगा कि आप यहा हैं जरूरी काम है कुछ बात कर लू तो तसल्ली हो।

श्रवण कुमार हसा—ऐसी क्या बात है ?

सरपच प्यारे लाल ने कहा—अलग से बात करेंगे।

श्रवणकुमार—नही, अलग से बात करने की आवश्यकता नहीं, सब अपने ही हैं आप डरिये नहीं।

प्यारे लाल—अकाल मे काम कराया था। उसके अलावा विकास में राम सागर तालाब पर मिट्टी डाली गई थी, साला बी डी ओ नाराज था और आप जानते हैं उस वक्त के एम एल ए साहब विरोधी थे, उन्होंने जाच शुरू कर दी, नाप तोल हो गया, मजदूरों के बयान हो गए। उनका कहना है कि उन्होंने राम सागर पर काम ही नही किया—मैं पूछता हू किस ने काम किया जिस काम हेतु तालाब पर काम हुआ, सब जगह फर्जी हाजरिया भरी गई और रुपये खा गए। मैं विरोधी था सो मुकदमा कायम कर दिया अब तो आप कृपा करो नही तो कहीं का नही रहूगा।

श्रवणकुमार—अरे सरपच साहब, मैं आपके लिए कल ही आदेश ले चुका हूं। मुकदमा उठा लिया गया, सब कार्यवाही बन्द है। आप चिन्ता छोड़िये अजी ऐसे मुकदमे लगें तो राजनीति में काम करने वाले नही मिलेंगे केवल मन्त्रीगण रह जायेंगे, अरे हम नहीं तो मन्त्री गण कहां से आयेंगे चाहे हमारे मुख्य मन्त्री बडे चतुर हैं वे मिलनसार हैं। अपने दल के लोगों के प्रति तो बडे उदार हैं। एक बार किसी को देख लिया दुबारा मिला तो पहचान लेंगे और फौरन उसका काम हो जाएगा—चाहे वह विरोध पक्ष का ही हो, वे जानते हैं कि सत्ता जब तक हाथ मे है तब तक विरोधी पक्ष का सदस्य भी हमारे साथ हो सकता है लोकतन्त्र में प्रतिरोध नहीं होना चाहिये, बदले की भावना से जो चलेगा वह ज्यादा ठीक नहीं हो सकता।

सरपच प्यारे लाल—मुख्य मन्त्री बड़े उदार चता विनम्रशील हैं सत्ता का उन्हें मान नही है वे आज भी वैसे ही हैं जब सत्ता विहीन थे। हां, आपने आदेश में लिखा साधुवाद लेकिन क्या जिनके मुकदमे उठाये गये उनको सहकारी विभाग या विकास काम मे भविष्य में भाग न लेने की चेतावनी दे दी गयी है?

श्रवणकुमार—नहीं यह गलत है क्या किसी का मौलिक

प्रधिकार छीना जा सकता है ? सहकारी सस्था का स"स्य या पचायत का सरपच होना आपका अधिकार है और जब तक यह अधिकार रहेगा कोई किसी काय से च्युत नही किया जा सकता। हा, ठाकुर साहब माफ करना मैं सरपच साहब के मुकदमे म उलझ गया लेकिन यह समस्या तो आपके यहा भी होगी।

महेद्रसिह—देखिए जनाब, सरपच के जिम्म बडे बड खर्चे हैं, चुनाव होना है तो 10 हजार का खर्चा और उसके बाद मे गाव म सरकारी अधिकारी, जन प्रतिनिधि कोई आता है तो आवभगत का सारा व्यय बेचारा सरपच ही तो उठाता है, विधायक को वेतन मिलता है प्रधान को भी मासिक भत्ते वगरा मिलते हैं सरपच को क्या मिलता है ? खर्चे न करे तो दु ख, करे तो कहा से लाए अपन बूते पर क्या किया जा सकता है ? इसका अथ यह नही है कि विकास काय का पैसा सब हडप कर जाए आटे म नमक जितना खाए तो क्या बुरा है ?

सरपच प्यारे लाल – ठाकुर साहब, म क्या अज करू ? चुनाव इस वष बहुत महगे हुए मेरे प्रतिपक्षी ने 50000) रुपये खच किए घर का धनी है। उसके मुकाबले मुझे तो 15000) रुपये ही खच करना पडा और यह सही है कि आवभगत नही करो तो आप जमे दूसरे नही। कोई अफसर आयगा तो सरपच के यहा, कोई जननेता आयेगा तो सरपच के यहां, आज कल विद्यार्थी आ रहे हैं वे भी सरपच के माथे पर। क्या करें क्या सरपचो को आतिथ्य के लिए माहवारी भत्ता नही हो सकता ? हम विवश होकर थोडी बहुत इधर उधर करें तो गबन, माफ करना एम एल ए साहब। आपके चुनाव म तो लाख से ज्यादा खर्चा हुआ वह कहा स आया ? खर, जब आदेश हो ही गया तो फिर कोई बात नही है। मुकदमा चलाते क्यों लगते नतीजा टाय टाय फिस लेकिन बेकार की तवालत तो उठानी पडती। मने न हाजरी भरी न मस्टरोल पर दस्तखत किए न बिल पर ही दस्तखत किए, उप सरपच ने किए। म हजार बार कह चुका हू कि मने कुछ नही किया लेकिन आखिर रुपये तो मेरी माफत आये और चुकारा हुआ, उप सरपच

साहब कह रहे थे कि सब हाजरियों का फर्जी चुकारा हुआ तो वह भी रुपय मे दो आना खर साहब आपका भला हो जो बच गया। वकील का कहना था कि बस यह कहन से हमारा पिण्ड छूट जायेगा कि हमने सारा रुपया उप सरपच साहब को दे दिया। लेकिन उसे सजा हो या मुझ, म नही चाहता कि मर फेलो के लिए उप सरपच का सजा हो।

श्रवण कुमार— चुनाव का आधार ही रुपया है खर्चा आवश्यक है, हम विवश होकर कुछ न कुछ करना पडता है। म त्रीगण तो बडे सेठों से ले आते हैं और स्वय के खर्चे के अतिरिक्त अपने साथियो मे बाट देत हैं लेकिन पच, सरपच क खर्चे का कौन इन्तजाम करे। मन मुख्य म त्री जी को कहा कि वे पचायत चुनाव म भी पसे की व्यवस्था करें वे करना चाहते हैं और अब जब भी चुनाव होगे सरपचो क माफत पचायत को रुपये देंगे।

महेन्द्रसिंह—आपके लोकतन्त्र की कील ही सरपच है विधायक या समद का चुनाव हो अपनी अपनी पचायत मे सारा भार सरपच को सौंपा जाता है उनको भूल कर कोई नही चल सकता।

श्रवण कुमार— तो मैं चलता हू कल मिलेंगे, नमस्ते।

——

श्रवण कुमार के यहां दूसरी साझ या दमयन्ती पहुच गयी, श्रवण कुमार न भी बडा बगला ले रखा था जो राजकीय या और [illegible]यायती किराए पर उस मिला हुवा था।

श्रवण कुमार कहीं गया हुवा था बगल पर कई व्यक्ति बैठ थ, एकाध महिला भी थी, बाहर लान पर सब क साथ दमयन्ती भी जा बैठी, उपस्थित व्यक्तियो म कुछ परमिट लन वाल थ कुछ को सेवा मक्ति के विरुद्ध कायवाही करना था तो कुछ को अपने कमजोर बच्चे को भर्ती करवाना था लेकिन लगभग 30–40 व्यक्ति बैठे थे।

दमयन्ती एक महिला के पास कुर्सी पर बैठ गई थोडी दर मौन रहे लेकिन आखिर दमयन्ती ने साहस कर पूछा–आपका परिचय ?

उस महिला ने उदास दृष्टि स दमयन्ती को देखा–और निराश

होकर बोली–उम समयाग्रस्त एक नारी, यही मेरी जान पहचान है और अगर कुछ न होता तो यहा आती ही क्यो ?

दमयन्ती हसना चाहती थी लेकिन नही हस सकी, इस युवा नारी ने जसे अनेकों अनुभव ले लिए है और इसी कारण उसकी आयु से अधिक वह 35 वर्ष की लगती है, दमयन्ती न साहस कर पूछा—क्षमा करना मैं किसी के जीवन की उलझी गलियो मे जाना नहीं चाहती मात्र परिचय भर करना चाहती थी अभी पता न कितनी देर ठहरना पड तब बैठ बठे समय काटने के लिए आपसे चर्चा करने की रुचि लगी लेकिन आपके उत्तर से ऐसा लगा कि मैंने आपके पके फोडे को छू लिया।

महिला ने अपनी कुर्सी को पास खीचा और सदय होकर बोली–बहन ! माफ करना कभी कभी मनुष्य बिना बात कटु बनने को विवश होता है, आपने परिचय चाहा और मन अपने दुखडों को लेकर यह बताना चाहा कि जसे यातनाओ का महल मुझ पर ही टूटा है नारी हू कुछ समस्यायें तो नारी होने के कारण है कुछ समस्या अपने आप बनती है और बिगडती जाती है जिनको हम प्रयत्न कर भुलाने का प्रयत्न करते है। खैर फिर भी भूल भुलावे का परिचय दे रही हू, ऐसा परिचय जिससे कोई व्यक्ति प चाना नही जाता - हस कर दमयन्ती का हाथ हाथ मे लेकर बोली —आप देख रही हैं हमारे पूजा के स्थान यह राज भवन बन गए है फिर चाहे वह राष्ट्रपति का हो मन्त्री का हो या विधायक का। नहीं मैंने सुना है अनेकों कार्यकर्ता दलाल बनकर अपना देवालय खोल रहे है समस्यायें है और समस्याओ का निराकरण के लिए ये देवालय है जहा काम और नारी शरीर से खिलवाड की जाती है और आपकी माग म देव पूरी करते हैं। बहन जी, मैं एक अध्यापिका हू, ब्राह्मण कुल म ज म लिया है मेरा नाम कामायनी है लेकिन यह परिचय भी क्या लाभ देगा क्या याद रखेगी ? आज याद कल भूल जाएंगी, मेरी समस्या ही मेरा परिचय है—समस्या जो मेरे पति ने खडी की है उनको विश्वास है कि मेरा कई पुरुषों से सम्बन्ध है

, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

श्रोर उसने मुझे छोड़ दिया श्रोर नई शादी करली मुझ से 25000) रुपये का दहेज मिला तो अब 50 हजार लिए हैं। महिला विद्यालय में नौकरी करती थी पति की चारित्रिक शिकायत पर मुझे निलम्बित कर दिया है, मैं बच्चियों को पढ़ाने योग्य नहीं हूं मेरी उपस्थिति बच्चियों के चरित्र को नष्ट करेगी, को सबूत नहीं कोई नहीं कहता केवल वे कहते हैं। मने अपना केस पुटअप किया पूरा वर्ष निकल गया न कार्यवाही ही होती है श्रोर न निलम्बन ही हटता है। विधायक महोदय ने जब यह बात सुनी तो उनको भी विश्वास हो गया कि मेरे चरित्र में कहीं न कहीं दोष है श्रोर वे या तो मेरे केस को लम्बा कर रहे हैं या फिर अटकाये रखना चाहते हैं ताकि मैं बराबर आती रहूं। फिर उदास उन्निग्न होकर बोली—बहन माफ करना मैं बड़ी लम्बी हो गयी हूं लेकिन महीने में तीन चार बार इनको हाजरी देनी पड़ती है, श्रोर वह मात्र हाजरी ही नहीं शरीर को भी सौंपना पड़ता है क्या करुं ?

मुझे इससे आपस घृणा हो गयी है वैश्या तो हूं ही, लेकिन सचिवालय के चक्कर काटो तो शायद 10 वर्ष भी नहीं निपटे विधायक महोदय के आश्वासन पर चल रही हूं। बहन ! अब तो लगता है वे पूरे प्रयत्नशील हैं जल्दी ही कुछ न कुछ आदेश होगा, पर मैं बड़ी ताकत नारी के अंग में है श्रोर वह अंग देकर अपना काम करा लेती है।

दमयन्ती बड़े आश्चर्य से सारी कहानी सुन रही थी। उसने कहा—फिर भी साल भर से चक्कर लगा रही हो ! क्या सम्बन्ध टूटने का भय है क्या तुम्हारा काम हो जाए तो फिर इनसे नहीं मिलोगी ?

कामायनी—सच यह है कि वे मुझे चाहने लगे हैं श्रोर यही भय उनको सम्पान करा रहा है।

दमयन्ती—यदि प्यार हो गया तो तुम इनसे ही शादी क्यों नहीं कर लेती ?

कामायनी—कैसे विवाह करूं ? पहले से विधायक जी के एक पत्नी श्रोर एक पासवान है तीसरी मैं हूं। धर्म का आवरण कब तक

चलेगा–मैने उनको अन्तिम चेतावनी दे दी है कि आज काम नही तो फिर मै नौकरी से इस्तीफा दे दूंगी।

इतने में विधायक श्रवण कुमार आ गया सब उठ खडे हुए। आते ही बोले–माफ करना एक आवश्यक बैठक थी, उसमे व्यस्त हो गया आपको प्रतीक्षा करनी पडी और कामायनी जी आप को इस्तीफा देने की आवश्यकता नही आपका निलम्बन निरस्त हो गया है आप नौकरी पर जाएं यह रहा आपका आदेश। आप कल ही नौकरी पर जाएं, बकाया के लिए कल प्रयत्न करूंगा।

सब पास सरक आए और उनको घेर कर खडे हो गए। किसी ने कहा–मै ठहरू या जाऊ किसी ने कहा कल तो आदेश हो जाएगा, किसी ने कहा–देर हो तो जाऊं फिर आप जब आज्ञा दें आजाऊं।

विधायक महोदय–आप सब सुबह 8 बज आजाए, मै जो भी प्रयत्न कर सकता हू करूंगा। कुछ के आदेश हो गये उनकी प्रतिलिपि कल मिलेगी हां बहन सरला आपकी पदोन्नति के आदेश हो गए हैं यह लीजिये और प्रेम चन्द जी आपका आदेश भी हो गया है अभियोग से आपको मुक्त कर दिया है बधाई।

प्रेमचन्द–मै आपका ऋणी हू यह जो कृपा की उसको भुलाया नही जा सकता।

हां कामायनी जी मुझे सबसे बडी प्रसन्नता तो आपके लिए है, आपके आदेश हो गए हैं तो कल ले जाए–मै जाना भूल ही गया मुझे दुख है कि आपको काफी इन्तजार करना पडा लेकिन आप जानती हैं, यह सरकार जिस तरह चल रही है उसस देरी निश्चित है। कोई पीछे न पडे तो कागज नही सरकता और बहन जी माफ करना–आपका नाम भूल ही गया।

उसने हताश होकर कहा–दमयन्ती।

हां दमयन्ती बहन जी, आपसे कुछ विशेष तथ्य लेना है आप जानती है आपकी स्थायी नियुक्ति नही है–सचिव महोदय अड गये कि इतने थोडे समय मे जब ये गल्तियां है तो आगे क्या आशा की जा

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सरला हसी—देखिए न मेरे पास न चम है न दाम ही, मुझ पर तो उन्होंने बड़ी कृपा की है इसे कैसे भूलूं मैंने एक बार 100) रु देने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने लेने से इंकार कर दिया और कलावती बहन ! तुम देखो, मुझ में कोई आकर्षण है क्या लेगा मुझ से ?

दमयन्ती—मैं अभी जाऊं या कल सुबह।

लेकिन वे बहुत व्यस्त हैं सुबह नहीं मिले तो बाद में ले आऊंगा, टैक्सी कर दूं आप कोई चलना चाहता।

नहीं आप जाइए।

और दमयन्ती टक्सी कर रवाना हुई और 7 मिनट में धर्मशाला से अपना ब्रीफ केस लेकर लौट आई।

विधायक लान पर बैठा चाय पी रहा था, उसने कहा चाय।

दमयन्ती ने धन्यवाद दिया फिर भी एक कप बनाकर उसको दिया और उसने लेने से इंकार नहीं किया।

चाय पीते पीते बात चल रही थी, विधायक महोदय कह रहे थे व्यक्तिगत समस्याएं बहुत हैं, उनका भी राहत मिलनी चाहिए सच्च यह है कि सार्वजनिक समस्या उलझी रह जाती है और व्यक्तिगत समस्या अपना विकृत रूप लेकर हमारे सामने खड़ी हो जाती है, तब वह सामूहिक जसी हो जाती है।

दमयन्ती ने प्याला टेबिल पर रखते हुए कहा—कुमार साहब, आप ठीक कहते हैं व्यक्ति का स्वार्थ ही सामाजिक रूप धरता है और तब व्यर्थ की परेशानियां बनती हैं एक गांव में एक शिक्षक अपने वेतन में प्रसन्न नहीं है, ग्राम सेवक तबादिला चाहता है और पटवारी मकान के अभाव में भटक रहा है समस्याएं व्यक्तिगत हो गई लेकिन तीनों ग्राम के प्रमुख स्तम्भ हैं और उनकी निराशा वस्तुतः गांव को जला देती है इसलिए सार्वजनिक समस्या का हल भी हो लेकिन व्यक्तिगत समस्याएं खड़ी रही तो ज्यादा विस्फोटक हो सकती हैं क्योंकि वे ही व्यक्ति उन समस्याओं का फलाव कर देते हैं और यदि इनका हल नहीं होगा तो गांव उन बाढ़ों में डूब जाएगा।

50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

श्रवणकुमार ने अपने हाथ कुर्सी के पीछे सिर के नीचे रखते हुए कहा–आप यहां ठहरी हैं भोजन किया या नहीं ?

दमयन्ती–ठहरी तो धर्मशाला में हूं और भोजन अभी होटल में कर लूंगी।

श्रवणकुमार ने आवाज दी–बुद्ध, देखो दो थाली लगाना, सब्जी क्या बनाई है ?

सुरई आलू, गाल, टमाटर।

और मीठा फीका है घर में।

सब है सर।

दमयन्ती भयभीत हुई–नहीं सर, मेरे लिए थाली न लगाए, मैंने होटल में आर्डर दे दिया है, पैसे तो लेगा ही।

श्रवणकुमार—अभी आपके पेपर देखूंगा, देर हो जाएगी भूख हो रहना हो तो बात अलग है घड़ी की तरफ देखकर बोला–9 बजे हैं, 10 बजे से पूर्व आप फारीग नहीं होंगे।

दमयन्ती ने सादर कहा—सर यह कष्ट न करें आपके यहां रात दिन लोग आते ही रहते हैं।

श्रवणकुमार—यह सार्वजनिक जीवन है कल मेरे क्षेत्र से 75 व्यक्ति आए थे बगीचे में सोने की जगह भी नहीं थी सामीयाना लगाया वह अभी भी खड़ा है क्योंकि कल भी 50 के करीब लोग आएंगे गांव में जाता हूं आतिथ्य से सराबोर हो जाता हूं हर व्यक्ति अपने यहां ले जाता है तो मैंने सोचा साथ लिए हैं–अब वे मेरे पास आए–और होटल में भोजन करें ऊ यह क्या होगा हां आप का यहां आने का काम पड़े तो फिर वहां ठहरने का या भोजन का प्रश्न ही नहीं उठेगा, आप नहीं खा रही हैं तो मैं खाऊंगा भला ? दमयन्ती–नहीं सर बात यह नहीं है आप शहर में हैं हम या अन्य गांवों में रहते हैं आप व्यस्त हैं, हम निठल्ले हम से क्या है व सब लोग जो आपके मतदाता हैं आप से काम लेते हैं, और मतदाता बस एक दिन मत देने जाता है।

श्रवणकुमार साइए अपने कागजात लाए है आफिस में उनका औपरा बना लू।

एक लिफाफा दमयन्ती ने उसे थमा दिया वे उठकर आफिस मे गए–सरसरी निगाह से सबको देख कर बोले, अब आप मुझे नोट करवा दें।

जन्म दिन—1 अगस्त, 1958

मैट्रिक का परिणाम—प्रथम श्रेणी 87 प्रतिशत

हायर सेकण्डरी—प्रथम श्रेणी बोर्ड भर मे प्रथम।

वाह—किसकी ताकत है जो आपको सेवा मुक्त करे और यदि किसी ने बेवकूफी की तो यह राज्य के लिए अहित कर देगा।

बी ए प्रथम श्रेणी

लोक सेवा आयोग म प्रथम।

वाह अब भी कोई बेवकूफ होगा जो तुम्हे निकालेगा? ऐसे कितने कर्मचारी है जिनका परिणाम इतना उज्ज्वल है? मैं प्रात ही इनकी फोटो कापियां निकलवा लेता हू प्रभु न चाहा तो कल ही आदेश हो जाए गे, लेकिन मुझे आश्चर्य है, 6 माह मे आपने किन गलतियों को किया कि आप जैसे उज्जवल और बुद्धिमान व्यक्ति को नौकरी से निलम्बन कर दिया।

दमयन्ती के चेहरे पर उदासी छा गई, उसने कहा जो रिकार्ड पर है, वह सत्य नही है और जो वास्तविक कारण है वह मैं जानती हू या मेरा अधिकारी जिसने निलम्बन का आदेश दिया या चपरासी। सर नारी की अनेक कठिनाईयां हैं वह कुछ बोले तो लोग उसे दोष देते हैं, जब पुरुष दोष मुक्त ही है और ऐसी साहसी लडकियो का निर्वाह दुर्लभ हो जाता है और न बोले तो पुरुष स्वीकृति मानते हैं।

अवरणकुमार ने दमयन्ती को सामने जलती ट्यूब लाइट के प्रकाश मे देखा। वह उहापोह म था कि दमयन्ती ने कहा–आप जानते हैं मेरा यहां आना मेरे पिताजी को अच्छा नही लगा पढा तो दी लेकिन उन्हें क्षण क्षण चिन्ता है कि मैं कहा ठहरू गी और वह व्यक्ति यदि भला नही हुआ तो मुझ से क्या आशा करेगा?

श्रवणकुमार—आप ठीक कहते हैं हम इस कमरे मे बैठे जो बातें कर रहे हैं, व बातें कही बुरी नहीं है, साधारण सी हैं, लेकिन बाहर जाने वाला कहेगा हम प्रम की बातें कर रहे है।

दमयन्ती— मैं इसी कारण डर रही थी, स्त्री का शील ही तो सब कुछ है, वह गया कि सब कुछ गया।

श्रवणकुमार ताव मे आ गया—माफ करना आप पढी लिखी महिला हैं राज्य सेवा म हैं कई पुरुषो से एकान्त या सार्वजनिक स्थल पर मिलने का काम पडेगा, इन थोथी चर्चाओ मे आप पड गईं तो अपने कार्यालय मे काम नही कर पाओगी, घर की चोरी का पता लगाने के लिए क्या क्या नही करना पडता? आप प्रगतिशील उन्नत नहीं बनेंगे तो फिर आप गांव की गुडिया से क्या आशा करेंगे कि वह पुरुष के साथ उठकर बात करने म साहस का परिचय दे? माफ करना दकियानूसी काल अब पसरा गया है, अब तो तरल-सरल शील नारी का गुण रहा है जरा बताइए दौरे पर गये, किसी गाव म पहुचे जीप खराब हो गई, एक ही कमरे म आपको अपने अधिनस्थो के साथ रहना पडेगा, सूर्योदय पर गाव वाले कानाफूसी करें आपके चरित्र पर कीचड उठाए, क्या आप दुबारा दौरे पर जाना छोड देंगी?

पुलिस मे महिला अधिकारियों की क्या हालत होती है? शील पति नाम के पुरुष के प्रति, समर्पण और किसी दूसरे पुरुष के प्रति, मन म काम का उत्पन्न होना—ये जटिल समस्यायें हैं। इनका जो रूप रामायण मे था वह आज नही रहा म सोचता हू आप हमारे भक्त जनो को बुरा लगेगा, लेकिन सीता को कोई छीन कर ले गया। घेरे से स्वयम् बाहर आई जो हो वह अशोक वाटिका म रही मैं उनके सम्बन्ध म क्या नहीं करता लेकिन क्या अग्नि परीक्षा के बाद भी राम की शक का समाधान हो पाया? अग्नि नगी ते नारी [illegible] इन बातो को ताड देना चाहिए। वह नौकरी कर रही है और फिर भी किसी के ठुकराने चरणो म पडी है, मैं इस धम नहीं मानता—यह हमारे सामाजिक दोष का फल है कि हम

नारी को हेय समझते हैं। पुरुष सौ स्थानों पर रोता फिरे, और नारी का नूने नटके पर बाहर पड़ गया तो वह दुश्चरित्र–मुझे आप दम्भी कह सकती हैं एक बार मेरी पत्नी न जिदद की कि वह बम्बई जाना चाहती है मेरा एक मित्र बम्बई जा रहा था– मेरे मन म भी अनेक शकाए उठी मेरा मित्र और पत्नि होटल म एक कमर म ठहरेंगे, 24 घट साथ रहेगे, शील भग वह भी अवश्य होगा मने एक बार इन्कार किया –वह नाराज हुई आप क्यो जाने हैं म नही बोलती–आप अपने निकटतम मित्र का विश्वास नही करते।

दमयन्ता—उसने ठीक किया दुनिया को कहना हो वह कहती रहे क्या फक पडता है अगर भाभी के मन मे आपके मित्र के प्रति आकषण जागा होगा तो वह सहज है केवल आपका एकाधिकार ही बीच मे आता है वह नही तो जो आप हैं वह भाभी है इसमे पाप पुण्य का कोई प्रश्न ही नही रहता मात्र सामाजिक धारणाओं को धक्का भर है कल य धारणा बदल जायेगी तो यह भी बदल जाएगा।

श्रवणकुमार जी मेरे मन म यही पीड़ा थी वह भाप गयी उसका मुँह सूजा नहीं तब मैन कहा, आप जाएं शील जबरदस्ती का विषय नही है लेकिन वह नही गयी और कहने लगी–आप राम की आडिसी को भूल गए, रामायण आपके मस्तिष्क म बठी है और वही हमारे आचरण की कील है मै नहीं जाऊगी, और जाऊगी तो क्या करूगी आप जनते है उनसे प्यार उनको समपण और उनको मेरा शरीर दूगी।

दमयन्ती बड आश्चय से सुन रही था–एक ही श ब्द बोली–फिर ?

श्रवणकुमार—फिर क्या होना है, बम्बई न गई लेकिन एक बार मै मेरा मित्र और पत्नि साथ साथ बम्बई गए और मैंने झूठा बहाना बनाया और अकेला चला आया, पत्नि को कहा, कि मेरे निकटतम मित्र बड़े बीमार हैं, तुम मित्र के साथ बम्बई देखकर आ जाना पत्नि ने गहरी दृष्टि से मुझे देखा और मैं चला आया। श्रवण कुमार–बार से हसा–न मैंने शका की और न विश्वास ही किया

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मैन उसे सहज ने लिया, जब वह लौट कर आई तो, मै स्टेशन लेने गया, तो वह बडी प्रसन्न थी घर आकर मुझ से लिपट गयी, मैं नहीं जानता उसको खुशी मेरे विश्वास ने पैदा की मेरे मित्र के सहयोग ने, लेकिन सच्च यह है कि हमारा विश्वास बना रहा चाहे फिर वह कुछ भी करे हम क्या चिन्ता करें ? हेलन दो बच्चो की मा बनी उसके पूर्व पति ने उसको अभूतपूर्व स्वागत मे पाया, यह मात्र हमारी विकृतियो का परिणाम है हम पवित्रता का न्नावा करें यह गलत है, देखिये पुरुष स्त्री सम्बन्ध सहज है, मेले मे पुरुष स्त्री आपस म टकरा जाए तो, स्त्री का शील भग हो गया प्यार वासना से परे है, टट्टी जाने की रुचि जाग सकती है, लेकिन किसी को गलबलिया डालन की हाजत तो तब ही होगी जब शरीर के साथ आपके मनों का भी समन्वय हो और सच्च कहू तो यह भी कह सकता हू, कि टट्टी जाने के लिये लोटा पानी बठने उठने हाथ से सफाई करने की आवश्यकता पडती है। काम पूर्ति मे शरीर का सयोग जो मात्र भौतिक नही मानसिक भी है, सर यह विषय बडा गम्भीर है पाप पुण्य की परिभाषा से परे–

श्रवण कुमार ने लिफाफा टेबुल के ड्रावर म रखा, नोकर को आवाज दी–भोजन तैयार है ?

सर अभी फुल्के उतार रहा हू, सब्जी तैयार है।

तुम आओ आलमारी स ड्रिंक निकाल दो और फ्रीज से ठडा सोडा।

नौकर एक बोतल और दो गिलास, और दो ठडे सोडे रख गया।

रूपवती ने कहा—क्षमा करें मैन आज तक नही छुआ, मैं शायद नही ले सकू गी।

श्रवणकुमार, उठा फ्रीज म से बीयर की बोतल उठा लाया लीजिये यह शराब नही 5 प्रतिशत अलकोहल भर है विदेशों मे तो पानी के स्थान पर पीया जाता है और मै ड्रिंक लू तो आपको आपत्ति तो नहा है ?

दमयन्ती—नहीं आप लीजिये मैं बीयर भी नहीं लेती तो अच्छा था आप आज्ञा देते हैं तो ले लेती हू, मुझे मालूम है बीयर बाहर तो शराब नहीं मानी जाती।

श्रवणकुमार ने शराब पी दमयन्ती ने बीयर की गिलास भरी, और घूट म पी गई श्रवण कुमार ने एक गिलास और भरी, लीजिए और पानी की तरह मत पीजिये मात्र सिप कीजिए, 5 प्रतिशत में नशा तो नहीं है बस थोडा ठंडा मन को शीतल करेगा, विचारो को स्वस्थ और ऐसा लगेगा जैसे आप तेज घोडे पर दोडे जा रहे हैं।

दमयन्ती—देखू आज, आप कह रहे हैं तो स्वस्थ विचार आए तो।

इतने म थालियां आ गई दोनो ने भोजन किया। नौकर ने कहा—सर मेरा साला आया है, आज्ञा हो तो जाऊ।

हां जाओ, सुबह जल्दी आ जाना।

भोजन कर मुह धोया, दमयन्ती के पैर लडखडाए—उसने कहा, सर अब टैक्सी मिलेगी?

आप आज्ञा दें तो मगवा दू लेकिन (नौकर गया म टैक्सी से छोड आता हू।

सर कुछ नशा तो आया ही है, यहा व्यवस्था हो तो म नहीं जाऊ।

श्रवणकुमार प्रसन्न हुआ—व्यवस्था क्यो पूरा इतजाम है, पलग है बिस्तर है पखा है वातानुकूलित कमरा है।

दमयन्ती सोफे पर बैठ गई।

श्रवणकुमार ने कहा—क्षमा करना कोई आपत्ति न हो तो मेरे कमरे में बिस्तर लगा दू। वातानुकूलित केवल एक ही कमरा है।

दमयन्ती—नहीं आप कष्ट नही करेंगे, म जा हू बस मुझे बता दीजिये म बिस्तर लगा दूगी।

वह सोफे से उठने लगी लेकिन एसा लगा जैसे गिर पडेगी, उठते हुए उसने हाथ से सोफे को पकडा, श्रवण कुमार पास म सरक

ग्राया बीआ-बियर का ऐसा नशा ! ग्राप मेरा हाथ थाम लीजिए, चलिए मैं ग्रापको सुला देता हूं, फिर दरवाजा बन्द कर दू, ग्रौर ग्रपना बिस्तर लगा लूंगा।

दमयन्ती आँखें मल रही थी उसने ग्रपना हाथ श्रवण कुमार के हाथ में देने से इन्कार नहीं किया, उसने डगमगाती दमयन्ती को दोनों हाथों से पकड़ कर ग्रपने पलंग पर लेटा दिया ग्रौर बाहर जा कर कीवाड बन्द कर ग्राया।

फिर नया बिस्तर निकाला, पड़ोस में लगे पलंग पर डाला।

दमयन्ती उठ खड़ी हुई—वाह यह काम ग्राप कर रहे हैं, मैं जो हूं।

ग्राप बठिए वह उठी उसने श्रवण कुमार का हाथ थामा, बस ग्राप ग्रब बिस्तर नहीं करेंगे मैं कर लूंगी, वह उठी नहीं, पलंग पर ही रहा ग्रौर दूसरा हाथ बढ़ाकर श्रवण कुमार को खींच लिया।

वह उसके साथ ही सो गया, दूसरा बिस्तर खुला ही पड़ा रहा, दमयन्ती कह रही थी, सर, ग्राप हैं कि मेरा निजस्थान ग्रादेश समाप्त होगा, जरूर समाप्त होगा।

☐

सेठ हरिश्चन्द्र यूरोप ग्रमेरिका की यात्रा कर लौटा तो ग्रपने साथ उद्योग मन्त्री महोदय, मुख्य मन्त्री ग्रौर महेन्द्रसिंह के लिए भी भेंटें लाया।

महेन्द्रसिंह को एक हाथ बनाई घड़ी दी व कहा—ठाकुर साहब बिल्कुल नयी निकली है यों कहिए जापान के बाजार में ग्रभी ग्राई ग्रौर यो कहूं तो दोष नहीं होगा कि उसका मैं ही पहला ग्राहक था।

महेन्द्रसिंह—सेठ साहब ग्रापने व्यर्थ ही कष्ट किया।

सेठ हंसा—सर भारतवर्ष में यह पहली घड़ी है-इसकी उपयोगिता में विश्व के सब स्टेशन ग्रा जाएंगे, एक ग्रौर विशेषता है, इसमें विश्व के किसी भाग में चले जाइए ग्रपने ग्राप घड़ी उस भाग का

समय दिखा देगी कहते है शू य म घडी काम नही करती, यह सब जगह काम करती है। उसन दूसरा उपहार एक हार क रूप म दिया, यह भाभी जी को पसन्द आएगा एसी जडाई और गढाई विश्व मे अ यत्र दुलभ है।

हा मैं म त्री महोदय के लिए भी एक बडा उपहार लाया हू, सागर हीरो से जडा हुआ—कहते है जमन ने इसका सबस पहले निर्माण किया और बताया यह जाता है कि 400 वष पूव वहा की महारानी के समय इसी तरह का हार बना था वह हार तो गायब हो गया उसका चित्र भर रह गया उस चित्र के आधार पर ही यह बनाया गया है म त्री महोदय के यहा भट कर आवू, जनानी तो यही होगी ?

जी यही है लेकिन सेठ साहब इतने कीमती उपहारो की क्या जरूरत थी ?

यो ही हम रात दिन आपको कष्ट देते रहते हैं 5 सितारा होटल म म त्री महोदय क मेहमान, उनकी सुख सुविधा कार आदि और सब जगह जहा जाए आपका आतिथ्य। सच्च सेठ साहब, म त्री महोदय फरमा रहे थे कि ऐसे अच्छे व्यक्ति के लिए हम वह सब करना चाहिए जो कर सकते हैं, उनका कहना था कि जो योजना केन्द्र से म जूर होवे वे स्वय लेकर आए गे।

सेठ हरिश्चन्द्र—कमाना हमारा काम है, उद्योग पनपाना आपका, ताकि श्रमिको को वेतन मिले उत्पत्ति बढ और देश से गरीबी दूर हो। हा एक बात कहना भूल ही गया दो योजनाए हैं एक तरल अभ्रक का ऊ चे मेस का पाउडर तयार करना अब तक भारतवष म नही है दूसरा मेरे यहा प्रयोग हुआ है बडा सफल चूने के भटटे का वज्ञानिक रूपान्तर, उसक बाद उसम अ य मिश्रण तयार कर सीमेन्ट का निर्माण—सीमेन्ट की कोई तुलना नही, उसके मुकाबले मे और कीमत म आधा भी नही। मैने नमूना बना लिया है जमनी म उसका परीक्षण भी करा लिया है दोनो कारखानो की लागत 2 अरब के करीब होगी।

महेन्द्रसिंह चौंका—ओह ! सच्च सेठ साहब, हमारे यहाँ के उद्योगपति नए क्षेत्र मे नही जाते, जिनिंग फैक्टरी के आगे स्पिनिंग और उसके आगे कपड़ा निर्माण, इस अब बहुत ही कम कारखाने लग रहे हैं उसके खतरे को कोई उठाना नही चाहता। आपकी योजना मैं समझता हू हमारा राज्य सबसे अग्रणी बनकर लगाएगा।

हां म अपने लिए 10 लाख की नये मोडल की मोटर लाया हू, यह भी भारत मे पहली कार है।

महेन्द्रसिंह—देखिए मिनिस्टर महोदय शायद भेंट लें नापसन्द न करें।

सेठ हंसा—मै कब उन्हे भेंट करू गा, भाभी जी देखत ही मोहित हो जाएगी, क्या मेरा इतना भी अधिकार नहीं, जो विदेश से लौटू और भाभी साब्दिवा के लिए एक छोटी नगण्य वस्तु ले आवू ।

महेन्द्रसिंह—म समय मांग लू अभी व्यस्त हुए तो आपको व्यर्थ म इन्तजार करना होगा अभी 4½ बजे हैं सचिवालय तो आज गए नही हैं, लेकिन घर पर मिलने वालो का ताता जो होगा।

सेठ हरिश्च द्र—हां बात कर लीजिए ठाकुर साहब मैं भी वर्षों से उद्योग मे लगा हू अब तक 30 उद्योग लगा चुका हू और कितने कितने मिनिस्टरों को देखा है, सच्च कहू ऐसे सज्जन उदार चेता व्यक्ति मैंने पहले नही देखे। इन्द्रसिंह जी तो जसे साधु हैं, न किसी से नाराज, न किसी से खुश लेकिन हर बार खुश पर मुस्कान रहती है। मैं ही नही सोचता, हर आदमी सोचता है कि उसका कोई कागज इन मिनिस्टर साहब की टेबल पर एक दिन से ज्यादा नहीं रहता, फिर बताइए ऐसा कौन महान् हो। फिर अपने यहा से निकलते ही बाद मे द्र से भी शीघ्र पत्थर निकलवा देते है, उद्योग में आदेश देने मे वे देरी नही करते। उनका मानना है कि उद्योग के टीथिंग काल मे जितनी दर होगी, उतना ही उद्योग की क्षमताओं मे अभाव आता जाएगा।

महेन्द्रसिंह हसा—आप ठीक कह रहे हैं। भारत के सेठ आए स्पिनिंग मिल का लाइसेंस लेकर कर्ज, सीमेन्ट चद्दर सब एक दिन मे

लेकर चले गए, अब वे सीमेन्ट का कारखाना लगा रहे हैं, यहां से सिफारिश कर दी और एक सहायक सचिव को केन्द्र में भेज दिया कि वे बिना विलम्ब किए वहा से आदेश प्राप्त कर लें सीमेन्ट के लिए कज 15 दिन म मिल जाएगा और सब आवश्यक सामग्री तो वे जब चाह मिला दग- । तो म फोन कर लू ।

हां साहब से बात करा दो।

सेठ हरिश्चन्द्र जी सेवा म आना चाहते हैं, मुझे उनसे बात करवा दो।

सेठ-हा सर आठ बजे बगले उपस्थित हो जाऊंगा, यही समय ठीक रहेगा।

सेठ ने महेन्द्रसिंह से कहा-8 बजे बगले मे पहुचना है, आप चाहो तो 7½ बजे मैं यहा आ जाऊ या सीधा बगले।

मैं पहुच जाऊंगा, आप कष्ट न करें। महेन्द्रसिंह ने उत्तर दिया और नौकर को आवाज दी आइए चाय वाय नहीं लेंगे।

सेठ हरिश्चन्द्र-आप क्षमा करें फिर कभी पी लूगा या तो जो पीता हू वह आपकी है 2 3 घण्टे दफ्तर का काम कर लूगा।

हा दो बोतल फ्रांस से लाया हू बडी कीमती हैं, पुरानी अगूरी शराब नशे म आपको स्वर्ग की यात्रा-एक आप रख एक मन्त्री महोदय के लिए।

महेन्द्रसिंह-क्यो कष्ट कर रहे हैं आप तो बडे खर्चीले हैं।

सेठ साहब-सम्बन्ध बना लिया तो आप व्यर्थ का शिष्टाचार न करे, हमारा कुल व्यय तो आप पर चल रहा है और फिर रात दिन हर तरह से मांग करते रहते हैं।

सेठ-अच्छा तो मैं ठीक आठ बजे बगले पहुच जाऊंगा, धन्यवाद। उसने दोनो हाथो को जोडकर नमस्कार किया और गाडी मे जा बैठा।

गाडी रवाना हुई तो महेन्द्रसिंह ने घडी को निकाल कर देखा, कई सूक्ष्म बटन लगे थे जो अलग-अलग काम के लिए थ, फिर अपने

आप ही बोल पड़ा—बस तरक्की तो जापान कर रहा है युद्ध में ध्वस्त हो गया और अब विश्व में अग्रणी है, न समाजवाद की बांग, न पूंजीवाद का मुखौटा न सामन्त और न जनतन्त्र, वहां की जनता ने काम करना सीखा है, उनकी दक्षता से सब वाद असफल हो रहे हैं।

इतने में मोहनसिंह व रघु चमार आते दिखाई दिए—महेन्द्रसिंह ने भेंटों को अलमारी में रखा और बड़ा प्रसन्न होकर बोला—आप आखिर आ गए और कौन है ?

गाव के दस बीस व्यक्ति हैं।

वे कहां हैं ?

मैं धर्मशाला मे ठहराकर आया हूं।

महेन्द्रसिंह—नहीं यह अच्छा नहीं किया, मन्त्री महोदय नाराज होंगे, कौनसी धर्मशाला में मैं फोन कर देता हूं अभी मेरे यहां ठहर जाएंगे काम में तो देर होगी नहीं, कल वापिस भेज देंगे।

रामदेव धर्मशाला में—

हां मैनेजर साहब! सारंग क्षेत्र के कुछ व्यक्ति आपके यहां आकर ठहरे हैं उनमें देवीदत्त से बात करा दीजिए।

हां, भाई आप सबको लेकर मेरे यहां आ जाओ मैं भी तो अकेला हूं—फिर इतना बड़ा मकान किसके लिए ले रखा है ?

देवीदत्त—अब उतर गए सो उतर गए—अरे ठाकुर साहब यहां ठहरें वहां ठहरें क्या अन्तर है आखिर हम गावाई काम लेकर आए हैं कुछ व्यक्तिगत भी, मन्त्री साहब से कब मिलना ?

'मैं अभी बात करता हूं और आपको यहां आ रहा हूं।' 'और आप का हमारे लिए मिलने का क्या समय ?' 'चौबीस घण्टे।' 'बस मैं आ ही रहा हूं आप तब तक चाय पीकर तैयार रहिए, धन्यवाद !'

भाई साहब, रघु भाई आप चाय लीजिएगा। वे बोले नहीं, चाय पीयी और वे धर्मशाला के लिए चल पड़े।

धर्मशाला पर पहुंचे तो गांव के लगभग 20 व्यक्ति वहां उप स्थित थ स्वयं उद्योग एवं गृह मन्त्री के गांव में डाका पड़ा था, 4 डाकू

आए और गाव को लूट कर ले गए पुलिस म सूचना दी। कोई काय नही नही हुई, पुलिस ने जीपें भेजी आई जी पी, एस पी, डा एस पी और विशेष कई पुलिस दस्ते आए।

जाते ही मदनसिंह बोला—हमारी तो नाक कट गयी हम गाव का काम करवाते हैं लेकिन हमारा नहीं, क्या इस पतेरसी के लिए भी किसी को कुछ देना लेना पडेगा म म श्री महोदय को धन्यवाद देता हू कि उन्होने राज्य की तरफ से जो भी मदद हो सकती थी दी, 50000 रु का इनाम घोषित कर दिया।

इतने मे सेठ सोहनलाल बोला—हमने ता नामजद इत्तला की है चारा डाकू हमारे जाने पहचाने थ पोरया भाख्या हीमन्या और जमाल ये चारो नामी डाकू बन गये हैं वे पकड मे क्या है पुलिस उनकी पकड मे है जमाल्या का भाई रहीमा कह रहा था कि डाकूओ की तरफ स एक लाख रुपया पुलिस के यहा पहुच गया है, का सदबुल को क्या मिला ? दुजनसिंह ने पोरया को गिरफ्तार कर थाने म पेश किया, लेकिन उसे छोड दिया—न उसकी तलाशी ली और न जेवर बरामद करने की कोशिश की, पुलिस हमारी रक्षा करती है वही भक्षण प्रारम्भ कर दे तो कहा अमल होगा।

रघु चमार—ठाकुर साहब, मुझ गरीब के घर मे क्या मिलेगा, 110/ रु थे व भी ले गए।

रामू सुनार—मेरा ता सब कुछ लुट गया।

रोशन लाल—कहते है डाकू ब्राह्मण को नही छेडत, लेकिन मेरी तो चूप चूप तक ले गए।

सबने अपने अपने दुखडे कहे। यह डकैती राज्य की सबसे बडी डकैती थी, जो पिछले 30 वर्षों मे नही हुई। एक डकैती हुई थी, उसका पता लग गया था अभियुक्त गिरफ्तार हो गय थ, चू कि डाकुओ के नेता को यह विश्वास हो गया था कि उसके साथियो ने युवतियो क साथ बलात्कार किया इसलिए उसने सारा जेवर न्यायालय म पश कर दिया। वह डकती 15–20 लाख रुपये की थी, आतक इतना था कि डकती के

बाद भी 10–20 दिन तक रात मे लोग घरो मे नही सो पाए थे छोटी सी आवाज होने पर चिल्ला पडते–चोर चोर इसका पता न लगना राज्य पर कलक है राज्य मे यह चर्चा जोर पकडती जा रही है कि पुलिस ने डाकुओ से रिश्वत खाली है ।

महेन्द्रसिह ने गाव वालो को आश्वासन दिया उसने कहा–भाई मैं ही नहीं मुख्य मन्त्री महोदय तक ने इसको प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है यही नही, दूसरे राज्यो और केन्द्रीय पुलिस से भी बडे बडे अधिकारियों को लगाया गया है राज्य सरकार कोई कोर कसर नही छोडेगी इस काम मे हमे किसी तरह की चिन्ता करने की जरूरत नही है गाव का डाका घर का डाका है । मन्त्री महोदय के घर का, वे गृह मन्त्री भी हैं लेकिन कभी-कभी यह होता है कि लाख कोशिश करने पर भी पता नही लग पाता । रहा प्रश्न पुलिस द्वारा रिश्वत खाने का सो किस अधिकारी की हिम्मत होगी जो गृह मन्त्री के यहां डाका पडे और उसके अपराधियों को बचाने के लिए रिश्वत खा जाए ।

रामू सुनार–भाई साहब सब बदल गया है, अब अफसर अफसर नही, कहते हैं अफसर को मौतिल्ली से बचने के लिए–बडों ने पूरे दो लाख लिए हैं अफसर जितना बडा होगा, रकम भी उतनी ही बडी होगी, अब आप बताइए यह रकम कहां से लाएगा रिश्वत का दंगा रिश्वत खाकर उतारा जाएगा खर साहब हम इसस कोई मतलब नहीं, हमारे तो डाका पडा, गाव उजड गया, बेचारे सेठ रामधन का तो सत्यानाश हो गया । दूसरे दिन खाने की व्यवस्था भी गांव वालों को करनी पडी, अब कहां रुपया, कहां मिल । लेकिन आपके पास इसके लिए नही आए बडे डाके पड रहे हैं, खूब जमकर खा रहे हैं, किसी को शम नही है, चपरासी सहना पटवारी, इन्स्पेक्टर जमीन का नाप-ताल थोडा टेढ़ा किया कि रिश्वत खाकर ठीक कर दिया, हर पटवारी का गांव वालों स माहवारी अलग धन्धा है कान्सटेबल रात को गश्त देता है, वह किसी को जगा देता है और चोरी पर पकड कर ले जाता है और रिश्वत खाकर छोड देता है, फिर आदमी की गैर हाजरी म दूसरा

आए और गाव को लूट कर ले गए, पुलिस म सूचना दी। कोई काय वाही नहीं हुई पुलिस ने जीपें भेजी आई जी पी, एस पी, डा एस पी और विशेष कई पुलिस दस्त आए।

जाते ही मन्नसिह बाला—हमारी तो नाक कट गयी, हम गाव का काम करवाते हैं लेकिन हमारा नहीं क्या इस पतेरसी के लिए भी किसी को कुछ देना लेना पडेगा मैं म त्री महोदय को धन्यवाद देता हू कि उन्होंने राज्य की तरफ से जो भी मदद हो सकती थी की, 50000 रु का इनाम घोषित कर दिया।

इतने मे सेठ सोहनलाल बोला—हमने तो नामजद इत्तला की है चारो डाकू हमारे जाने पहचाने थे पोरया भोल्या हीमन्या और जमाल ये चारों नामी डाकू बन गये हैं वे पकड म क्या है पुलिस उनकी पकड मे है जमाल्या का भाई रहीना कह रहा था कि डाकूओ की तरफ से एक लाख रुपया पुलिस के यहा पहुच गया है का सटेवुल को क्या मिला ? दुजनसिह ने पोरया को गिरफ्तार कर थाने म पेश किया लेकिन उसे छोड दिया—न उसकी तलाशी ली और न जेवर बरामद करने की कौशिश की, पुलिस हमारी रक्षा करती है, वही भक्षण प्रारम्भ कर दे तो कहा अमल होगा।

रघु चमार—ठाकुर साहब, मुझ गरीब के घर मे क्या मिलेगा, 110/ रु थे वे भी ले गए।

रामू सुनार—मेरा ता सब कुछ लुट गया।

रोशन लाल—कहते है डाकू ब्राह्मण का नही छेडते, लेकिन मेरी तो चुप चुप दक ले गए।

सबने अपने अपने दुखडे कहे। यह डकैती राज्य की सबसे बडा डकती थी जा पिछले 30 वर्षों म नही हुई। एक डकती हुई थी उसका पता लग गया था अभियुक्त गिरफ्तार हो गय थ चू कि डाकुओ के नेता को यह विश्वास हो गया था, कि उसके साथियो न युवतियो के साथ बलात्कार किया, इसलिए उसने सारा जेवर न्यायालय म पेश कर दिया। वह डकैती 15–20 लाख रुपये की थी आतक इतना था कि डकती के

50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

बाद भी 10–20 दिन तक रात मे लोग घरो म न्हो सो पाए थे, छोटी सी आवाज होने पर चिल्ला पडते–चोर चोर, इसका पता न लगना राज्य पर कलक है, राज्य मे यह चर्चा जोर पकडती जा रही है कि पुलिस ने डाकुओ से रिश्वत खाली है।

महेन्द्रसिह ने गाव वालो को आश्वासन दिया, उसन कहा– भाई मैं ही नही मुख्य मन्त्री महोदय तक ने इसको प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है यही नही, दूसरे राज्यो और केन्द्रीय पुलिस से भी बडे बडे अधिकारियों को लगाया गया है, राज्य सरकार कोई और कसर नही छोडेगी इस काम मे हमे किसी तरह की चिन्ता करन की जरूरत नही है गाव का डाका घर का डाका है। मन्त्री महोदय के घर का, वे गृह मन्त्री भी हैं लेकिन कभी कभी यह होता है कि लाख कोशिश करने पर भी पता नही लग पाता। रहा प्रश्न पुलिस द्वारा रिश्वत खाने का सो किस अधिकारी की हिम्मत होगी जो गृह मन्त्री के यहा डाका पडे और उसके अपराधियो को बचाने के लिए रिश्वत खा जाए।

रामू सुनार–भाई साहब सब बदल गया है, अब अफसर अफसर नही कहते हैं अफसर नी मौतिल्ली से बचने के लिए–बडों ने पूरे दो लाख लिए हैं, अफसर जितना बडा होगा, रकम भी उतनी ही बडी होगी अब आप बताइए यह रकम कहा से लाएगा, रिश्वत का पैसा रिश्वत खाकर उतारा जाएगा खर साहब हम इससे कोई मतलब नही हमारे तो डाका पडा गाव उजड गया, बेचारे सेठ रामधन का तो सत्यानाश हो गया। दूसरे दिन खान की व्यवस्था भी गाव वालो को करनी पडी, अब कहा रुपया कहा मिल। लेकिन आपके पास इसके लिए नही आए बडे डाके पड रहे हैं, खूब जमकर खा रहे हैं, किसी को शम नही है चपरासी, सहना पटवारी, इन्सपेक्टर जमीन का नाप तोल बाका टेढा किया कि रिश्वत खाकर ठीक कर दिया, हर पटवारी का गाव वालो स माहवारी अलग ध धा है कान्सटेबुल रात को गस्त देता है वह किसी को जगा देता है और 'चौकी पर पकड कर ले जाता है और रिश्वत खाकर छोड देता है फिर आदमी को गर हाजरी मे दूसरा

सिपाही पहुंच जाता है डरा धमका कर जवान लड़कियों के साथ बलात्कार करता है। प्रेमचन्द रूपचंद को आप जानते हैं इत्लाह की गाय हैं अपने रास्ते आते और जाते हैं उनसे एक सिपाही रिश्वत लेता है दूसरा उनकी घरवालियों को भोगता है। डर यह बताते हैं कि डाकुओं से उनके घर को बचा लिया नहीं तो डाकू हो लूट कर ले जाते। ठाकुर साहब इतना बड़ा अन्याय कैसे बरदाश्त कर फिर गाव–गृह मन्त्री का गांव जो ठहरा किसी को भरोसा नहीं हो सकता लेकिन यह दैनिक घटना हो रही है आपने गांव क्या छोड़ा वापिस गांव में पधारना तक नहीं हो पाया। यहां गांव के भले के लिए विराजे है और गांव में आग लग रही है, सारा जलकर नष्ट हो जाएगा, आप जो भी कर सकें करिए सुनते हैं आपके हुक्म में मन्त्री महोदय के हुक्म के बराबर चलते हैं।

मोहनसिंह–चलिए मन्त्री महोदय से मिलें, आपका घाव बहुत गहरा है उसका शल्य तो वे ही करेंगे, मैं क्या कर पाऊंगा, पट्टी बांधने से काम नहीं चलेगा और यह अकेले आपका रोग नहीं स्वयं मन्त्री महोदय का रोग है।

मन्त्री महोदय इतने भावुक हैं कि वे अस्तीफा दे बैठें कि गांव की डकैती उनके घर की डकैती है लेकिन मुख्य मन्त्री ने स्वीकार नहीं किया हम बहुत पीछे पड़े लेकिन वे नहीं माने हमारा क्या ज़ोर ? आपको भी निवेदन है कि गांव वाले ही अपना दर्द रखें कहीं ऐसा न हो कि हम भावना में बह जाएं और वे अस्तीफा दे बैठें आप नहीं जानते इस डकैती का पता नहीं लगने से उन पर क्या बात रही होगी ? रही एस पी द्वारा रिश्वत खाने की, उसे आज आप न कहें गांवाई शिकायत करें चपरासी, चौकीदार सिपाही पटवारी इन्सपेक्टर। आज हमारा राज्य है, यों कहूं तो गलती नहीं होगी कि वे ही वास्तव में मुख्य मन्त्री हैं। सब काम इन पर छोड़ रखा है आप इन्हें जानते हैं साधारण सी बात भी उन पर बहुत बुरा असर करती है।

50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर–470003

रोशनलाल–हम जानते है इसलिए हम पहले आपके पास आए, आप पटवारी सिपाही चौकीदार, इसपेक्टर का तबादला करवा दें ऐसी जगह फेंकें कि उनको सबक मिले और आने वाला हिम्मत नही कर सके यो सारा गाव जानता है कि इन दुकडलो को कुछ न कुछ न दो तो य झूठे मुकदमे बनाकर रिश्वत खाए, यह नही चलेगा।

रघु चमार–हुजूर, दो साल पहले जमीन मुझे मिली 15 बीघा पर मेरा खसरा करा दिया गया, इस साल पटवारी नापने आया हाकं चौर कर जमीन तैयार की कि इस साल कहता है कि जमीन जो एलोट हुई वह नही मैन दूसरी जमीन पर कब्जा कर लिया 200 रु लेने के लिए तब पीछा छोडा।

खेमा कुमार–मुझ से 100/ रु लिए बस डर बताकर न मुकदमा न कोई दरखास्त। मालो का सत्यानाश होगा खून मे कीड पडेंगे। तडफ तडफ कर मरेंगे गरीब की हाय बहुत बुरी होती है।

तो टाइम हो गया हम चले म त्री महोदय के कई कार्यक्रम हैं हमे अब एक मिनट की देर भी नही करनी चाहिए।

वे सब रवाना हुए और मन्त्री महोदय के बगले पर पहुचे मन्त्री महोदय दफ्तर छोडकर बाहर आये और पाण्डाल मे सबको बिठाकर बैठ। दोनो कुहनिया कुर्सी के हत्थे पर रखकर बोले-इ के सम्बन्ध म आप न कहें तो ठीक मैं जो भी कर सक गा कर रहा हू बस दुःख है कि कुछ पता नही लग रहा है आपकी और शिकायतें हो तो

रघु चमार ने पटवारी की शिकायत की खेमा कुमार ने भी पटवारी इन्सपेक्टर की शिकायत की, कुछ आदमियो ने तहसीलदार की शिकायत की। ठाकुर मूलसिंह ताव मे आ गया–मैने सुना है कि आपके दल के लोग 2000/ रु माहवार ले रहे है और उसको छूट दे रखी है कि वह जो चाहे खाए मैं भी अब आपके दल के बाहर नही रहा कोई रहा ही नही है सब दल बदल गए मैं भी, लेकिन यह लूट पाट डकती, रिश्वत, भ्रष्टाचार नही रोका गया तो एक नही अनेको दल मिलेंगे और उनका विद्रोह दावानल जसा फूट पडेगा। कौन बूझा

यगा उस दावानल को वह तो दौड़ती फुन्कती आग है, हम सब एक हो गए तो क्या हो गया ? कल रघु चमार खड़ा होगा परसों खेमा सुमार कमरू रेगर और एक दिन यह सब। इनके व्यक्तिगत दद न रह कर सामूहिक दद बन जाएंगे। आपने अच्छा जानकर दूसरे दल को समाप्त कर अपने म मिलाया लेकिन उससे लाभ की जगह हानि हुई है। सच्च कहने मे गुरेज करूगा तो नुकसान हम ही उठाना पड़ेगा, आपके म त्री बनने के बाद और दूसरे दल की समाप्ति होने के बाद कुछ भी तो नही बचा है।

महेन्द्रसिंह–डाका म त्री महोदय क म त्री बनने के बाद पडा हो या पटवारी चपरासी वगरा ने रिश्वत बाद मे लेना शुरू की हो, यह बात नही है रिश्वत तो चली आ रही है और डाका अब भी घटना है।

म त्री महोदय–देखिए आप ठीक कहते हैं, डाका पडा, मैं आपका म त्री और प्रतिनिधि रहा मैं अपनी जिम्मेदारी से नही बचना चाहता, रहा रिश्वत का प्रश्न चाहे वह पहले स चालू हो मेरे मन्त्री बनने के बाद बन्द होना चाहिए, नही हुई यह लाछन मुझ पर ही लगना चाहिए। राज्य बडा है लगभग 2000 गाव है और मेरा गाव लुटता रहे मैं बगले मे ऐश करू और मेरा गाव उजडता रहे लेकिन क्या किया जाए, रिश्वत खोर कमचारियों का तबादला आज ही कर देता हू रहा डाका इसकी पतेरसी मे कोई कसर उठा कर नही रखी।

ठाकुर मूलसिंह हसा–कुछ आगे बोलना चाहता था लेकिन साथियो ने नहो बोलने दिया।

फिर भी मूलसिंह ने कहा मैं अलग से आप से बात करना चाहूगा मैं खुशी स आप म आया हू और आप के साथ रहूगा लेकिन जो बात मुझे आपके कान मे पहुचाना है वह चाहूगा कि आप सुनें अन्यथा भ्रष्टाचार हमारे राज्य की नतिकता को खोखला कर देगा। मैं इनके साथ आया हू इनसे अलग नही और इनसे हट कर आप पर किसी तरह का लाछन नहीं लगाऊगा लेकिन भ्रष्टाचार पनपा और बढा है उसके कारण भी हम ही हैं और बदनाम आप हो रहे हैं वह मैं

नहीं चाहता। मुझे मालूम है आप इस्तीफा दे चुके हैं और मौका आया तो आगे भी कदम उठाएंगे लेकिन भ्रष्टाचार को दूर नहीं कर पाए और आप शासन से अलग हो गए तो लाभ क्या ?

मंत्री महोदय–लीजिए चाय नाश्ता लीजिए और भाई दो चाय अलग मेरे दफ्तर में भेज देना मैं इनसे बात कर रहा।

महेन्द्रसिंह मोहनसिंह रोशनलाल को अच्छा नहीं लगा साथ रहकर दुष्प्रान्त लेकिन मंत्री स्वयं चाहते थे तो कौन रोके।

मूलसिंह मंत्री महोदय के साथ दफ्तर में गया और बोला–मैं आपके दल के साथ रहूंगा दूसरा पक्ष भी दूध का धुला नहीं है सच यह है कि सारे कुवे में भाग पड गयी है। महेन्द्रसिंह जी आपके भाई हैं उन्होंने तहसीलदार थानेदार ओवर सियर से माहवारी बांध रखा है सब मिलाकर दस हजार रुपये महीने यहां रह रहे हैं उसका सारा बोझ ये उठाते हैं मैं तो सुन रहा हूं कि ये स्त्री कर्मचारियों से पैसा भी लेते हैं और व्यभिचार भी करते हैं और उनका काम आपके माफत होता है। क्षमा चाहता हूं मैं कुछ खरी खरी कह गया।

मन्त्री महोदय–मेरे पास आप पहले व्यक्ति हैं जो शिकायत कर रहे हैं, मैं उन्हें रोकने का प्रयत्न करूंगा आप ठीक कह रहे हैं इनसे रिश्वत लेंगे तो ये अधिकारी अपने से नीचे वालों से दुगुना लेंगे। आप को मुझ तक आने की खुली छूट है, आपको कभी कोई शिकायत हो, मैं नहीं चाहता भ्रष्टाचार बढे हमारे साथी ही उसमें सहायक हों और हम हाथ पर हाथ धरे बैठ रहें इनसे मैं बात करलूं यदि ऐसा करते हैं तो मैं चाहूंगा कि वे रुकें, यह उनकी बदनामी नहीं मेरी बदनामी है। डाके सम्बन्ध में आपका क्या कहना है ?

मूलसिंह—रहीम को आप जानते हैं, वह कहता है कि एस पी ने उसके भाई से एक लाख रुपया लिया है, दिन दहाड़े डाका पड़ा है, लोग डाकुओं को पहचानते हैं।

मन्त्री महोदय—लीजिए चाय पीजिए ठंडी हो रही है हां एक बात है मैंने पुलिस डायरियां देखी हैं उसमें डाकुओं को किसी ने नाम

पद नहीं किया बल्कि सब गवाहान का यह कहना है कि वे नहीं जानते।

मूलसिंह—आप इनसे पूछ लीजिए आप जब मौके पर आए थे तो डाकुओं का आतंक इतना था कि लोग महिने भर तो नहीं पाए, डाकू उनके पास यमदूत बन गए रहीम का भाई डाकू था, एक बार आप रहीम को बुला कर पूछ लीजिए।

मैं कहता हूं, डकैती का पता लग गया तो फिर आपकी शान में तो चांद लग जायेंगे, दुख है कि लोकतन्त्र साथियों पर चलता है और साथी लोग सही सूचना नहीं दे या या कहे कि डाकू से हम मिले हैं, लोगों का कहना है कि मुख्य मन्त्री ने एस पी के विरुद्ध कई आरोप थे वे निलम्बित थे उनसे दो लाख रुपय लिए हैं वे भला इन रुपयों को कहां से निकालेंगे ?

मन्त्री महोदय—मैं आपका अहसानमन्द हूं कि आपने मुझे जगा दिया मन्त्री पद तो आज है कल नहीं नागरिक बन कर तो सारी जिन्दगी जीना है। मैं नहीं चाहता कि भ्रष्टाचार पनपता रहे कुछ तबादिले, तरक्की सिफारिश से हो सकते हैं लेकिन जो बात आपने बताई उससे तो लगता है कि हम पूरे भ्रष्टाचार में लिप्त हैं तो चलिए बाहर मैं मात्र डकैती और एस पी के सम्बन्ध में बात करूंगा। महेन्द्र सिंह जी को फिर बुलाकर उनके रिश्वत की बात का पता लगाऊंगा, मैं आपको एक विश्वास दिलाता हूं कि मैं इसको दूर नहीं कर पाया तो मैं स्वयं दूर हो जाऊंगा।

मूलसिंह—एक बात और आपने दल बदला उसमें दो लाख लिए यह आम चर्चा है।

इन्द्रसिंह—यह गलत है, सर्वथा गलत है मन्त्रीत्व अवश्य पाया है मैं सोचता हूं कि मन्त्री पद से मुझे कुछ सुविधायें अवश्य मिल रही हैं, लेकिन उसके साथ अपने क्षेत्र का विकास भी कर सकता हूं।

मूलसिंह—मैंने मात्र चर्चा का जिक्र किया है मैं क्या जानूं यह भी चर्चा है कि एस पी के निलम्बन का आदेश रद्द हुआ उसमें दो लाख

40 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

रुपये मुख्य म त्री ने लिए । आप उप मुख्य म त्री और गृह विभाग आपके पास हैं इन चर्चाओ ने ऐसा गरम वातावरण बना दिया कि एस पी इसका बदला ले रहा है, उन रुपयो को आपसे ही वसूल रहा है, महोदय–इतनी घोषणायें इनाम की आपने की विभिन्न राज्यो से विशेष पुलिस अधिकारी आए यही नही लोग डाकुओ को पहचान गए, पुलिस ने इसे इन्कार कर दिया जैसे उनके सामने बयान ही नहीं हुए– महोदय ! मैने उन डाकुओ को देखा है गाव वाले शुरू के दिन से ही डाकुओ के नाम ब ा रहे है फिर भी पुलिस उनको गिरफ्तार नही करती तो क्या राज है ? इन्द्रसिह–म जब आया तब भी गाव वालो ने नाम लिया था ?

मूलसिह–जी लिया था, आप भूल गये हाग एफ आई आर म उनका नाम है वह मैने लिखो है ये डाकू पडोसी गाव के हैं मै उनको पहचानता हू–मैने साहस किया कि बन्दूक चला दी वे छूट भागे अ यथा कोई घर बाकी नही रहता, जिन घरों मे डाकू गए उनकी युवतियो को छेडा ऐसी उछ खलता कभी देखने को नहीं मिली ।

इन्द्रसिह—तो चलें, बस एक निवेदन है आप ऐसी कोई चर्चा हो तो मुझे अवश्य बता दें मै भ्रष्टाचार का जड मूल से मिटा देना चाहता हू यह नही मिटी तो राष्ट्र मिट जायेगा ।

मूलसिह —जो भी चर्चा आएगी उसकी छानबीन करू गा, और फिर आप तक पहुचाऊ गा आप थानेदार ओवरसियर, तहसीलदार से महेन्द्रसिह जी का मासिक भत्ता ब द करवादें फिर पटवारी चौकीदार जमादार को रिश्वत खाने से टोकिए अ यथा कुछ भी नही होगा। और मै तो कहूगा कि हमारे म त्रीगण ईमानदार रहे तो भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा, चुनाव मे खर्चे क नाम पर आप तिजोरिया भरते हो और छोटे कर्मचारिया को रोका तो वे नही रुकग । देखिए प्रयोग है, यो भ्रष्टाचार न कल मिटा है और न आज मिटने वाला है लेकिन आप अकेले ईमानदार रह तो फिर कोई कारण नहीं है कि भ्रष्टाचार रहे ।

दौरे का कायक्रम रखा गया उद्योग व गृह म त्री इन्द्रसिह जी के

गाव म ही आए तो मोरगद्दार को फूल मालाओं से लाद दिया गया, लेकिन यह सत्कार करने वाली पचायत थी, सारा व्यय उसने किया। जय इन्द्रसिंह की जय जय देवदूत की जय, जय मन्त्री महोदय की जय जय जयकार के नारों से सारा वातावरण गूज उठा। गाव मे वही छटा थी हर घर के बाहर महिलायें फूल मालायें, आरती, नारियल और कुछ लेकर खड़ी थी मन्त्री महोदय ने चुनाव के बाद भाषण मे भ्रष्टाचार की समाप्ति की घोषणा की थी, दुबारा उनको बोलने नहीं दिया, इस वक्त जो घोषणायें का गयी वे इस प्रकार थीं

हमारे माननीय नेता हमारे मन्त्री, हमारे क्षेत्र के प्रतिनिधि हमारे बीच आ रहे हैं। उन्होंने वचन दिया कि वे हमारे यहा रामराज्य स्थापित करेंगे दूध का दूध और पानी का पानी करेंगे भ्रष्टाचार को निर्मूल करेंगे भाई भतीजावाद समाप्त करेंगे।

सार्वजनिक स्थान पर ग्राम जनता की बैठक म माल्यार्पण के बाद सबसे पूर्व महेन्द्रसिंह ने अपना भाषण प्रारम्भ किया।

'हमे प्रसन्नता है कि हमारे माननीय मन्त्री महोदय हमारे बीच है इन्होंने कसम खाई है कि ये ऐसे कदम उठा रहे हैं जिनसे दूरगामी परिणाम सामने आयेंगे। जनता मे से किसी भी व्यक्ति की शिकायत पर पूरा ध्यान दिया जाएगा और उसे निपटाया जाएगा भ्रष्टाचार का उन्मूलन करेंगे।' जनता में से आवाज आई—भ्रष्टाचार फैलाने का फैसला ले रहे हैं या उसे कायम रखने का नया तौर तरीका अपनाया जा रहा है। लोगों म कई उठ खड़े हुए, बीच मे ग। बोलिए जो बोल रहा है उसमे व्यवधान उत्पन्न नहीं करें। गाव मे दो मिलस बनना प्रारम्भ हो गया है बाध की योजना का सर्वेक्षण हो चुका है। हम मन्त्री महोदय का सुन लें उसके बाद जो प्रश्न रहेंगे व पूछने का अपना लोकतान्त्रिक अधिकार है।

लेकिन इस भाषण के साथ ही कई बोलने लग, किसी का कोई शब्द सुनाई नहीं द रहा था, मन्त्री महोदय उठे महेन्द्रसिंह जी को कहा गया कि वे बैठ।

50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मोग पत्र बिना पढे दे दिया गया ।

मन्त्री महोदय उठ दोनो हाथ जोडे और सब तरफ मुस्कराकर भाषण प्रारम्भ किया—भाईयो आपकी शिकायतें हैं और उनकी भनक मेरे कान तक भी आई है हमारा लोकतन्त्र मे विश्वास है आप मौन रहें, मैं वादा करता हू कि सब की शिकायतें सुनू गा और जो दोषी पाया जाएगा उसको दण्डित किया जाएगा ।

बन्धुओ ! मैं आप मे से ही एक हू । इस गाव मे पैदा हुआ, इसी धूल मे खेला, इसी गाव की मिट्टी से मेरा शरीर बना है । आपकी शिकायत हो और मैं न सुनू तो कौन सुनेगा, आखिर कुल मिलाकर 200 से अधिक विधायक हैं जिसमे केवल 15 मन्त्री है । यह सौभाग्य है कि आपके क्षेत्र का एक मन्त्री मैं भी हू । जो विकास के काय आपके यहा इतने थोडे समय म हुए हैं, आप सारे क्षेत्र का सर्वेक्षण कर लें कहीं भी इतना काम नही हुआ और सच यह है कि जो काम करता है उस पर लांछन भी लगता है । आप मेरी बात सुन लें व ठण्डे दिमाग से सोचे ।

मेरे विरुद्ध यह अभियोग है कि मैंने 2 लाख रुपये दल बदल के लिए लिए हैं आपमे से कोई सामने आए और म उसको यह काम सौंपता हू कि वह जाच करे और मुझे दोषी पाये तो हाथ पकड कर मन्त्री पद से हटा दें । इसी प्रकार हमारे दल के अ य सदस्यो पर भी आरोप आ रहे हैं, मै सोचता हू इन आरोपो की जाँच होने दीजिए । मुझ मुख्य मन्त्री जी ने उप मुख्य मन्त्री बनाया बहुत आवश्यक विषय उद्योग गृह म त्रालय सौंपा है यही क्या राज्य का सारा काम मुझ दे रखा है क्या आप विश्वास करेंगे कि मुझ म त्री भी बनाया और रुपये भी दिए, लेकिन मै इन बातों पर ज्यादा क्या कहू , मुझे सबसे बडा आश्चय है कि मेरे ही गाव मे मुझ नकार जा रहा है जबकि मेरे म त्री बनने से विकास के अनेक काम प्रारम्भ किए गए हैं, पचायत को अनुदान, सबसे ज्यादा आपकी पचायत को मिला है जब कि मेरी अपनी पचायतें कुल 42 हैं । क्या वे मुझे नही पूछेंगी कि म अपने गाव के

प्रति ही इतना उन्तार क्यों है ? दोष राज्य के दूसरे लोगों का है कम से कम मुझको यह पूरा आप से तो यह आशा करता है कि आप मेरी बात सुने बिना ही मुझ दण्डित न कर दो म सच्च झूठ की बात नही कहता यह जाच का विषय है और यह कहू कि हमार दल के साथियों क कारण ही मैंने इतने विकास के काय प्रारम्भ किए है।

श्रोताओं म स एक उठ खडा हुआ —आपके मिल खोलने स लोगो को क्या लाभ होगा ? केवल सेठ प्रानी तिजारिया भरेंगे।

मन्त्री महोदय ने हाथ स उनको इशारा किया कि वह बैठे फिर बोले-मेरी बात सुन लीजिए जो सजा आप तजवीज करते हैं वह मैं भोगने को तैयार हू यह इस्तीफा लिखा हुआ तयार है आप मे स कोई आ जाए और मेरी बात से सन्तुष्ट न हो तो यह इस्तीफा, मुख्य म त्री जी को पहुचा दें।

आपको शायद नही मालूम विधान सभा म इस बार मुझ पर जो आरोप लगाए गए व विरोधी पक्ष के द्वारा ही नही अपने ही दल के नेता द्वारा लगाए गए हैं कि मैं सारग क्षेत्र के लिए अपने पद का दुरुपयोग कर रहा हू दल की बैठक म मुझे सेंसर किया गया और मुझे हटाने की मांग की गई मन्त्री पद भला किसको अच्छा नही लगता, मैं इनकार नही करता कि मुझे सारे राज्य का विकास करना है सारग का विकास कर तो अन्य क्षेत्रो को भी पिछडा नही रहने दू।

लोग शान्त हो गए। 'मैं एक बात आपको बताऊगा कि एक भला आदमी खडा हुआ और बोला मै आपका प्रतिनिधि हू, इसमा मैंने कोई अच्छा काम किया तो उसक लिए बधाई दें बुरा काम किया तो मुझ हाथ पकडकर खीच लीजिए नतीजा क्या हुआ सब श्रोताओ ने एक स्वर से उस आदमी को बधाई दी दूसरे प्रश्न क उत्तर मे क्या मिला ? सब ने कहा, तुम को कुर्सी छोड देनी चाहिए, जो विकास के काम हुए वे सब पक्षपातपूर्ण हैं भाई भतीजे-वाद को पनपा रहे हैं, एक आदमी को लाभ देने म सब को लाभ नहीं मिलता, फिर उस आदमी पर पत्थर अण्डे क्यूत फेंकी गई क्यो ?'

जो अच्छे काम का देखते है वे ही उन अच्छे कामो के अन्दर उभरी खामिया भी देखेंगे और अच्छा काम अनैतिक बन जाएगा बताइए सेठ रामधन मेरा क्या लगता है ?

मेरा भाई भतीजा नही है ये सामने बैठे हैं आप इन्हें पूछ लीजिए उन्होंने मुझे कोई रिश्वत दी है। बांध बनाया जा रहा है तीन चौथाई भाग को पानी मिलेगा जिनको नहीं मिलेगा उनका सदैव शिकायत रहेगी कि ऐसे बाध से क्या लाभ ? उसमे भ्रष्टाचार देखेंगे, रिश्वत खोरी का आरोप ढूढेंगे। काम हुआ, रुपये लगे, लेकिन जिनको आरोप लगाना है वे अवश्य कहेंगे—रुपया जितना खर्च बताया जा रहा है उसमे वे आधे से अधिक खा गये जो लगे उसका लाभ भी अधिक नही मिलेगा क्योंकि घटिया माल लगा है जो जल्दी टूटेगा आप ठीक कह रहे है मैं इसको इन्कार नहीं करता मेरा मिस्त्री इन्जीनियस को रोकना सम्भव नही है वे ईमानदारी से काम न करें तो राज्य सरकार का तरीका बडा लम्बा है उनको हटाओ तो उनको काली सूची मे लाओ फिर नया टेण्डर निकालो, बस मैं भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए ही आप से सहयोग चाहता हूं ताकि मजबूत बाध बधे, 10 वर्ष में तैयार होना है तो 5 वर्ष मे बन जाए जिससे आपके खेत लहलहा जाए।

जनता से मैं आशा करता हूं कि वे राज्य सरकार को विकास के काम बने पूरे हो अच्छे हो इसमे सहयोग दें, आप तकनीकि व्यक्तियों की शिकायत लाए, मैं उन पर कार्यवाही करूंगा, लेकिन दोषी पाए गए तो सजा दूंगा, ठेका केन्सल करूंगा अमानत रकम जब्त करूंगा।

मूलसिंह—और ओवरसियर आपके कार्यकर्ताओं की पूर्ति कैसे करेंगे ? हर कार्यकर्ता अपना घर भर रहा है, राज्य का कोई व्यक्ति धनी नही है घर डूब रहे हैं हमारे स्वार्थों से, और हम जनता के हकों के मुह बन्द करें, अपना हक ज्यादा करें।

सरदारसिंह विपक्षी उठा—थानेदार, तहसीलदार, जनता को लूटेगा नही तो आपके कार्यकर्ताओं को क्या देंगे वे भूखे मरेंगे।

चन्द्रविह—'आज जनता मे जो अपनी शिकायतें करना चाहते है वे आज लिखित मे आज मुझे दे दे डाक बंगले पर मैं कार्यकर्ताओ से बात करना चाहूगा और आपकी शिकायतो का निपटारा करूगा, जो काम यहाँ हो सकते है उनको यही निपटा दूंगा जिनका निर्णय सचिवालय मे होना है मैं साथ ले जाऊगा लेकिन मैं यह कहना चाहता हू कि भ्रष्टाचार उन्मूलन साधारण नहीं है मैं सत्ता मे हू सत्ता का उपयोग या प्रयोग पक्षपात रिश्वत भाई भतीजा वाद से करू तो एक ही काम होगा कि मैं भ्रष्टाचार करने वाला बनू गा और आप भ्रष्टाचार के प्रेरणा देने वाले। इसलिए भ्रष्टाचार तब मिटेगा जब आप सहयोग करें आप पक्षपात नहीं कराएंगे अनाधिकार काम को भी करने के लिए नही कहेगे, माफ करें यह प्रयोग है और मैं आपके सामने प्रतीज्ञा करना चाहूगा कि आप मुझे सफल होने के लिए अवसर दें, मैं आज विदा लेता हू लेकिन जल्दी ही आपकी सेवा मे नए निर्देश लेने आवूगा कार्यकर्ता मेरे साथ डाक बगले चलगे।' मीटिंग बरखास्त हुई लोगो मे मिश्रित भावनाएं थीं कुछ कह रहे थे फर्जी मन्त्री बातें करता है और चोरी करने में अव्वल भ्रष्टाचार का अड्डा बना रखा है और फिर हमे दोषी ठहराएगा कि हम पक्षपात कराते हैं रिश्वत देते है सीधा जब काम नही होता है तो हमे अन्य रास्ते खोजने पडते हैं रिश्वत कौन पसन्द करता है पक्षपात कौन कराना पसन्द करता है? जब आपका काम किसी जायज तरीके से न हो तो अनुचित मार्ग अपनाना पडता है।

मन्त्री महोदय और वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डाक बगले चले गए जहां तहसीलदार थानेदार कलक्टर एव अन्य अधिकारियो को उन सम्बन्धी पत्र देकर कहा अब हम कार्यकर्ताओ से बात कर लें।

डाक बगले के हाल मे जाकर जम लगभग 40 कार्यकर्त्ता थे, चाय आई पीयी जब ताजगी आई तो प्रसन्न मन्त्री महोदय ने कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित किया। हमें अब नया मार्ग अपनाना है। जहां

कम से कम भ्रष्टाचार हो और इसके लिए म आपसे माग दर्शन चाहता हू।

मूलसिंह उठा—म श्रीमान् आपको बता चुका हू कि हमारे बीच म वरिष्ठ नेता बठे हैं, वे थानेदार ओवरसियर तहसीलदार स मासिक चौथ वसूल करते है वह भी साधारण नही दो हजार से पांच हजार तक। शायद वे मजूर न करें लेकिन मैं आपको बता देना चाहता हू कि आपके इरादे नेक हैं तो निश्चित रूप से सब रास्ते साफ करना होगा, बिना सफाई के कुछ नही होगा आपने सहकारी विभाग के डाकू कार्य-कर्त्ताओं को पूर्ण माफी दे दी और फिर उनको खाने के लिए अवसर प्रदान किए आपको मालूम होगा आज पुलिस मे काई रिपोट दज कराने जाता है तो उसको पसे देना पडता है, अन्यथा रिपोट दज नहीं होगी, चपरासी अधिकारियों स मिलने का पैसा लेता है अहलकार कागज की नकल देने के लिए 10)–10) रु तक लेते हैं सहकारी समितियां भ्रष्टाचार के अड्डे बनी हुई हैं बक से सचिव सदस्यो के नाम स रुपय लाता है और फर्जी निशानियां कर खा जाता है पुराने पापी छूट गए उनका डर गायब हो गया वे नए रूप से खाने लगे हैं मालूम है 5 वष नही, आयन्दा 5 वष भी हमारा राज्य होगा और जब पाप फूटेगा तो आपके उत्तराधिकारी म त्री फिर सबको माफ कर देंगे, देश दिवालिया हो जाएगा, गरीबी मिटने के स्थान पर बढती जाएगी।

महेन्द्रसिंह को क्रोध आ गया, उसने बीच मे ही टोक कर कहा—आपका इशारा शायद मेरी तरफ है, म न थानेदार से लेता हू, न तह-सीलदार से आप जानते हैं राजधानी मे रहना पडता है सावजनिक काय निकालने के लिए उसके लिए खर्चा चाहिए आप अमीर हो सकते हैं लेकिन म तो गरीब हू, इसलिए इस काम के लिए खर्चा कहा स लाऊ, लाग आते हैं, उनको ठहराता हू भोजन की व्यवस्था करता हू, यह सब कहा से आएगा ?

मूलसिंह—तब फिर भ्रष्टाचार नही रुक पाएगा, जनहित के कामों के लिए दलालों की आवश्यकता नहीं है। मैं म त्री महोदय, आपसे

राजधानी म 100
कहना चाहू गा कि ग्रार ये बिचोलिया समाप्त करें, काम करा देते है
से ग्रधिक बिचोलिए हो रह हैं जो पैसा लेते हैं ग्रौर रहने की क्या
ग्रौर यही भ्रष्टाचार है। महे द्रसिह जी को राजधानी मे अपना खर्चा
ग्रावश्यकता है क्या उमी पैमा से ये ग्रपना पेट नही भरते देखू भला
नही चन ते मने तो सुना है कि ग्रनेक मूल्यवान भटें ग्राई हैं त्रष्टा
य भेट ग्रापको ही क्यो मिनती है हमे क्यो नही ? म त्री महोदय काम करना
चार को रोकना हो तो दलालो को ब द करे सिफारिश से गरुड के
छोडें ग्राज राज्य पर भारी भार डाल कर तबादिले हो रहे हैं दलाल ने
ग्र यापक का एक माह मे तीन जगह तबादिला हुग्रा एक ग्रपने
उसका स्थानान्तरण गरुड करवाया दूसरा दलाल ग्राया वह गरुड मे
ध्यवहारी शिक्षक से 1000/ रुपये लेकर उसका स्थाना तरण ग्रध्या
करवाया ग्रौर गरुड वाले शिक्षक का स्थानान्तरण ग्र यत्र इसी फिर गरुड
पक ने जोरदार दलाल को पकडा उसे 2000/ रुपये दिए उसका
ग्रा गया, म त्री महोदय ग्रपन साथियों की बातो मे ग्राने से पूर्व ग्रौर
पूरा रूप देख में स्वरूप कुमारी का स्थाना तरण 500/ रुपये
उसका शरीर लेकर करवाया गया।

कायकर्ता स्तब्ध सुनते रहे।

एक ग्रोर पण्डित देवव्रत उठा—म त्री महोदय क्षमा चाहता हू,
लेकिन एक बात कहू गा कि ग्राप वास्तव मे भ्रष्टाचार मिटाना चाहते
हैं तो हर बात के नियम बना ले ग्रौर उन नियमो के ग्रधीन जो ग्राते हैं
वही काय करें जब ये काम नही होते तो लोगो को शका होती है। म
लम्बी चौडी दलीलें नही देता ग्राप ग्रभी ग्रकाल राहत काय पर एक
ग्रादमी को भेज दीजिए 10 मजदूर काम कर रहे हैं 50 की हाजरी
है, हर मजदूर को रखने के लिए 5/ रुपय ले रहे हैं ग्रभी जनता मे
समझ का ग्रभाव है ग्राज भी वह यह समझते हैं कि ग्राप ग्रकाल राहत
काय खोल रहे हैं वह दयादान है राज्य का कर्त्तव्य नही है इसलिए
चुनाव होगा तो वे ग्राप दयावान लोगो को वोट देंगे, ग्राप कहेंगे म
ग्रापके दल म शरीक मन से नहीं हुग्रा लेकिन हकीकत यह है कि ग्राज

कहां भ्रष्टाचार नही है, चारो ओर व्याप्त है और अगर यह नही मिटा तो हमारा जीवन अस्तव्यस्त हो जाएगा, कानून व्यवस्था समाप्त हो जाएगी, किसी की भी सुरक्षा का प्रश्न ही नहीं रहेगा इसलिए म क्षमा चाहते हुए कहू गा कि आप इन हरकतो को बन्द करें, नही तो फिर यह राष्ट्र समाप्त हो जाएगा।

इन्द्रसिंह शान्त सुन रहे थे, फिर उठे, ताकि अन्य न बोलें–म तो इतना कहूगा कि आपकी शिकायतो म वजन है उनकी जाच होनी चाहिए यदि चीजें इसी तरह चलती रही तो–आप ठीक कहते हैं हमारा जीना हराम हो जाएगा आज माला पहनते हैं, कल गल मे साप लटकेंगे कौन किस वक्त ग्रास न कर जाए, मैं एक सेल की स्थापना करता हू जो शीघ्र ही ऐसी शिकायतो की जाच करेगी।

मूलसिंह—आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन भाषण बहुत हो चुक हैं अब तो काम होना चाहिए। आम धारणा हो गई है कि भ्रष्टाचार के बिना कोई काम नही होना रुपया हो शिफारिस हो रिश्तेदारी हो या फिर नारी का शरीर क्षमा करना, आपने आज मीटिंग बुलाई है हमारी बातें सुनने के लिए तो फिर जवाब दीजिए आपके साले का लडका ततीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुआ, और वह अधिकारी बन गया, मेरा भाई प्रथम श्रेणी मे आया उसको नियुक्ति तक नही मिली।

मोहनलाल महेन्द्रसिंह जी की शिफारिश पर जन सेवा आयोग द्वारा चयनित होकर राजपत्रित अधिकारी हो गया और हमारे भाई का भतीजा बिना शिफारिश के नौकरी के लिये ठोकरें खाता फिर रहा है आप इन गल्तियो को दुहराए नही, हो गई, वो हो गई लेकिन गुण की कद्र जब बन्द हो जाएगी तो पैसा बोलेगा, पक्षपात चिल्लाएगा और इनकी आवाज बन्द कमरे की दीवारो को फाडकर निकल जाएगी–आप सब महान हैं उस महानता के पीछे कितन पापो को छुपाकर रखेंगे।

इतने म एक रेगर सुखा आ गया वह रो रहा था–वह दोनों हाथ जोडकर कहने लगा, हुजूर इन्सपेक्टर ऋण वसूली के लिए उसकी

औरत को ले गया है उसक शरीर का मोल तोल करगा हुजूर बचा
लीजिये। हम गरीब हैं बडी तारीफ सुनी है मेरी औरत को बचा लें।
ऋण की वसूली तो ब ' है ? इन्द्रसिह ने कहा—
रोशन लाल—लेकिन वसूली के नाम पर इ पपकर रुपया
लेकर वसूली रोक रहा है शरीर के दाम पर वसूली को स्थगित करता
है इतना अन्याय कही नही हो रहा है। हुजूर के गाव म गीमा खटीक
की बहु की गले की हसली खालकर ले गया। और गुरुजी के
खण्डहर मे उसकी इज्जत लूट ली। जब हुजूर के गाव म यह हो रहा है
तो क्या पता और जगह क्या हो रहा होगा ? आर के ही क्षेत्र म पुलिस
वाल किसी व्यक्ति को बुला लेते हैं डण्डा बनात है और रुपया खा कर
चले जाते हैं न कोई मुकदमा न कोई सूचना हो।
हुजूर इसी तरह चलता रहा तो आय दा चुनाव मे जनता हम
वोट नही देगी।
मूलसिह—अरे इसस चौगुनी करे फिर भी आपको मत
मिलेगा किसी की ताकत है तो मुकाबला करे लेकिन इतिहास कभी
माफ नही करेगा पुलिस विद्रोह पर उतर आ रही है फौज भी यदि
विद्रोह कर बैठी तो फिर कहाँ हमारा स्थान है, पडोस के देशो
मे देखिये फौज राज कर रही है और जनता की आवाज ब द पडी है
लोकत त्र कभी आएगा ही नही एक मिलटरी सरकार की स्थापना पर
दूसरा आएगा बोलना ब द विद्रोह करना ब द जस रोटी के टुकडे ही
हमारा सब कुछ है वे अभिमान करते हैं कि मिलीटरी राज्य मे लोग
ज्यादा सुखी है हमारे यहा लोकत त्र कितने भोग रहे हैं। उन गरीबो
के मत तो हमारा रक्षक है लेकिन हम क्या कर रहे हैं ?
उनके घर बनाओ तो हम खा जाए खेत बनाओ तो हम डकार
जाए उनकी सुविधाओ का लाभ हम ले रहे हैं और वे गरीब उसी
तरह पल रहे हैं, आज बडे नेता बडे से लाखो खा रहा है, छोटा नेता
छोटो म खा रहा है।

कैशुराम ने कहा—भाई ऐसा राज तो न पहले आया न फिर आएगा आपा धापी, लूट खसोट भाई भतीजा वाद, इस तरह कभी नही चला—नौकरी करो तो रिश्वत दो या शरीर से सम्बध स्थापित करो या आप अधिकार पूर्ण व्यक्ति के सम्बन्धी हों।

म शाराम कण्ठ मे ही हसा—यार तुम भी ज्यादती करत हो तो फिर पीछे नही रहते, रामराज्य हम चाहते थ, क्या सुख था रामराज्य मे आम जनता मे तो यही सब चला, मर्यादा पुरुषोत्तम राम न सीता को घर से निकाल दिया, अन्याय-अत्याचार आज से अधिक ही था, *पर स्त्री गमन चल रहा था, नारी के शरीर का व्यापार था,* रक्षक दल भक्षक हो गया था—फिर कहते हैं—आज का राज अच्छा नही अजी राज कभी अच्छा नही रहा, अलबत्ता आज जो राज की कहानी है, राज तो चलेगा वही शाम, दाम, दण्ड, भेद से।

खेत राम हसा—तुम राम राज्य से इस राज का मुकाबला *करते हो खूब, आज नौकरी प्राप्त करने के लिए शरीर को बेचना* पडता है इन अधिकारियो के अपना शरीर स्पश करना होता है, तब जाकर काम होता है, यह समपण ही नही इसके आगे भी, रुपये लुटाने होते हैं, यह राम राज्य मे नही था।

केशु राम—आपने सुना—अध्यापिकायें अपना सतीत्व बेचकर तबादिला कराती हैं अपने गाव की मास्टरनी को आप जानत हैं कह रही थी, आज तो शरीर वेचकर काम होता है बोलो उससे सुनना चाहते हैं मैं बुलाऊ उसको—बेचारी का पति 500 मील दूर वह यहा बैठी अपने कर्मों को रो रही है।

खेत राम—आज हर बात के नियम बने हैं नियम के अनुसार राज्य चल रहा है नही तो अदालत के द्वार आपके लिए खुले है, जिससे आप सरकार को विवश कर सकते हो। नित्यानन्द हसा—किसको विवश कर सकते हो और वह कौन है जो विवश करेगा और उसका प्रयोग कौन करेगा, अदालतें तो केवल अमीर लोगो के लिए बनी है सविधान क अधिकार भी उनके लिए सुरक्षित ह मालूम है देश भर

मे 1 करोड मुकदमे बिना फैसलो के पडे है उस भील को पूछो जिसकी जमीन जमीदार ने छीन ली उसे कौन याय दिलाएगा और कब याय मिलगा ?

खेत राम ने टोका— उसके लिए सरकार न मुफ्त कानूनी सलाहकार मुकर्रिर किए है सेठ या जमीदार को बडा वकील मिल गया तो राज्य ऐसे गरीब के लिए भी अच्छा वकाल बनाएगी।

निरयानन्द—तुम किसकी बात कर रहे हो ? कागजो मे लिखी आदेश कोट की या जो कुछ हो रहा है ? अरे गग राम बताओ अपनी बात—उसे क्या मिला—कानूनी मुफ्त राय से उसका क्या लाभ हुआ ?

गगाराम—मेरा खेत ठाकुर साहब ने कब्जा कर लिया—दस वष से मुकदमा लड रहे हू 4-4 महीन की पशी बदलती है, जमीदार साहब का वकील कार म बैठकर आता है और मेरा मुफ्तिया सरकारी वकील माफ करना लगता है—ठाकुर साहब न खरीद लिया है मैं तो अस्तीफा दे रहा हू अदालत जाते जात थक गया हू जब पशी पडती है तब तीन दिन गुल जाते हैं और मेर खर्चे के लिए स्टाम्प टिकट टाइप लिखाई के मुशी 10–12 रुपये ले लेता है आपको मालूम है अब तक मुशी मुझ से 500) रु ऊपर ले चुका है गरीब के लिए याय नहीं हम जैसे गरीबो को याय देने के लिए नियम परीपाटि सब बदलना होगा आप चाहो एक तरफ पैसे वाला हो व एक तरफ यह गगा भील, तो होगा साहब याय ?

जनु मीणा—मेरी जमीन जायदात छिन गई ठाकुर ने अपने आप म आदेश ले लिए 15 वष से आशा लगाए बैठा हू लेकिन ठाकुर साहब फिर जीत गए रुपया खच हुआ और मेरी जमीन भी गई सुनता हू छापर उपजे लापर खाये बाप दादो न स ी कहा है—हम हाथ जोडे हाजरी म खडे रहें और ठाकुर साहब को अदालत मे भी बैठन के लिए कुर्सी मिलती है क्या करें ? वह हसा—मैं कुर्सी पर बैठ जाऊ तो डण्ड मिलें हाथ पकडकर बाहर फेंके बराबरी कहा करें ? मिनिस्टर साहब पधारते हैं ठाकुर साहब बिरादरी म बैठते हैं और हम खुली नगी जमीन

(, ")
9 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

पर–उनकी वाणी सुनते रहते हैं, गरीबी मिटाने की और अकाल राहत काम चले तो दिन भर मिट्टी खोदें हमारे वेतन मे ठाकुर साहब का हिस्सा मेर मिस्त्री का, ओवरसियर इसपक्टर सब उनने रखे हुए। आपने सुना है 200 आदमियो की एक माह तक फर्जी चलती रही, झूठे अगूठे लगाकर ठाकुर साहब ने पसे उठा लिए, वे सरपच जो ठहरे, मुर्करिर करने का काम है बताओ हमारे गाव मे कोई सडक बनी ? 50 हजार रुपये ले गए सुनते ह इसमे सहकारी अफसर का भी हाथ है, सच्च यह है कि हमारे गाव वाला ने शिकायत की पहले तो कोई सुनवाई ही नही हुई, जब गाँव म हो हल्ला हुआ तो कायवाही शुरू की, नतीजा क्या निकला कोई गबन नही हुआ बर्षात आई मिट्टी बह गई यह ताम्बा का टका कब तक चलेगा।

निरवान द–अब क्या हो रहा है ? कोई किसी को नही मानता बस य गरीब गुर ले या दलाल इकट्ठे हो जात ह, जब म त्री महादय आते हैं। अरे मुझे याद है जब आजादी मिली तो म त्री देवताओ की तरह पूजे जाते थ और आज असुरो की तरह दखे जात ह बस नफरत जब फूटेगी तब कौन रोकेगा आज सम्मन तामील कराने आता है, वह दोनो तरफ स पैस खाता है जिसने सम्मन निकलवाया उससे ता लेता ही है और जब मुदायलेह के पास जाता ह तो बस लिख दता ह मुदाह्लेह नही मिला–पास क गाव गया ह बस महिन गए, और वह 2) रु उसस ले लेता हैं।

म कुर्सी के रुपये जमा कराने गया तो जमा करने क 50)रु मागे। सरकार की बताई रकम भी लने वाला नहीं–सच्च यह है कि आज ईमानदारी का दिवाला निकल गया है, दफ्तर म जावें तो कमचारी सीट पर नही मिलगा चाय के लिए जाता है और एक घण्टे म लौटकर आता है फिर पेशाब करन और वहा से आकर गप्प ठ कना प्रारम्भ कर देता है। तुम्हे मालूम है अफसरो ने काम के आकार बना कर रखे हैं लकिन कोई उतना क्या उसस आधा काम भी नही करता भाई साहब मुझ लगता है अनुशासनहीनता इस कदर बढी हुई है कि

अनुशासन जैसी कोई नीति नहीं रही, अनुशासनहीनता ही अनुशासन बन गई है मैं ज्योतिषी नहीं हू न दावा करता हू, न मैं देवता हू कि भावी माग दिखा सकता हू लेकिन वतमान हालात को रोका नहीं गया तो हम गुलामो की कौम हो जाएँगी—पाकिस्तान मे जनता न अपने प्रतिनिधियो मे विश्वास खो दिया है और व फौजी हुकूमत को पसन्द करने लगे हैं, हम बिखरते जा रहे हैं, हमारी नैतिकता भ्रष्ट हो गयी है आज मैं कहू कि हमारे नेता भ्रष्ट हैं मैं क्या ईमानदार हू, ईमानदारी ढूढे नहीं मिलती।

इतने में स्थानीय प्रधान भी आ पहुचा और मुस्कराकर प्रणाम कर बोला आपकी कोई माग हो तो।

गगाराम खडा हुआ—हमारी माग ! आपकी प्रधानी बरकरार रहे क्या माग हो सकती है और आप थैले को लटका कर साल छ महीने मे भटक आते हैं क्या मागें आपके कोने मे पडी हैं क्या एक माग की पूर्ति भी हो सकी जो नयी माग मागें भाई साहब, गग बाध का क्या हुआ ? औषधालय खोलने की बात आप कई बार कर चुके हो, वह कहा अटक गया ? सडक का वादा देते देते आप थक गए हैं, मन्त्री महोदय भी कह चुके हैं लेकिन क्या हुआ ?

प्रधान शर्माया लकिन साहस कर बोला—आपकी मागें पूरी नहीं हुइ, आज आप माग करते हो छ माह म वह सर्वेक्षण के लिए जाती है, फिर विभागीय स्वीकृति वित्त विभाग का ठप्पा और योजना विभाग की छाप, जो मैने आपसे वादे किए वे कागज चल रहे हैं और मैं सोचता हू आयन्दा वष औषधालय खोला जाएगा, सडक का काम भी प्रारम्भ होगा और सबसे ज्यादा आवश्यक माग बाध बनने की सो उस पर तीस लाख स्वीकार हो गए हैं, मैं लम्बी बात नहीं कहता, आयन्दा माह म काम प्रारम्भ हो जाएगा।

नित्यानन्द—भाई साहब कह रहे हैं तो मानलो और तहसीलदार का ट्रान्सफर नहीं हुआ, आप स्वयम मानते हैं कि वह डाकू है कोई काम बिना पैसे लिए नहीं करता कागज की नकल बिना रिश्वत नहीं

देना आप बताओ हम क्या करें ? बार बार भी शिकायत करें नतीजा क्या ? भई साहब पटवारी का तबादिला तक नहीं हुआ आप जानते हैं वह कहता फिरता है कि आप का हाथ उसके सिर पर है और इसके लिए वह आपको 1000)रु मासिक देता है।

प्रधान साहब की आंखो में खून सा उतर आया—देखिए नित्या नन्द जी मैं भी सुनते सुनते थक गया हू, आपने कभी देखा कि उसने मुझे एक पैसा भी दिया ? रहा तबादिले का सवाल, कई अडचनें आती हैं मेरी तरफ से तबादिला कराने की रेवेन्यू मिनिस्टर साहब के पास शिकायतें पडी हैं सच यह है कि आप भी अपना काम पैसे देकर करवाते हैं भ्रष्टाचार आप पनपा रहे हैं और दोष मुझे दे रहे हैं।

नित्यानन्द ने हंसकर उत्तर दिया—आप बुरा मान गए बताइए तो आज हर प्रधान के सम्बन्ध में यही चर्चा है वह तहसीलदार थानेदार ओवरसियर से माहवारी खाता है खाए या न खाए रिश्वत के कोई गवाह होते है ? क्या देने वाला और क्या लेने वाला कहेगा ? लेकिन पटवारी तो कहता है कि उसने सबको बांध रखा है फिर तीन वर्षों से शिकायतें कर रहे है तबादिला नहीं हो रहा है तो क्या सोचें ? खैर छोडिये हम भी उसे पैसे देते हैं यह हम कबूल करते है आप बताओ पटवारी तो गाव का ठाकुर है उसको पैसे नहीं दे तो काम न हो आपको करानी की कहेंगे वापिस छः महीने में आपकी शक्ल दिखेगी, हो गया काम—अच्छा है पैसे देकर काम हो तो जाता है।

गयाराम—भाई साहब आप तो हमारे प्रतिनिधि ठहरे क्यो भाई साहब पूरे 150 गाव तो होंगे आपके क्षेत्र में—आप दूसरे गाव को पूछ लीजिए, जब तक आदमी जिन्दा है शिकायतें तो रहेगी और हम तो आपके कार्यकर्ता हैं बात जैसी थी कह दी क्या फर्क पडता है ? चुनाव एक वर्ष में आयेंगे, बेचारे मतदाता किस को वोट दें आपके विरोधी को अभी वह तो चार वर्ष में एक बार भी नहीं आया आप निश्चिन्त रहें, यह गांव तो आपको छोडकर जाएगा ही नहीं बात थी वह बता दी काम करना आपका काम है, हो न हो आप के हाथ में सा है नहीं।

नित्यानन्द ने कहा—आप चाय तो लीजिए, उसने होटल वाले को आवाज दी। लाला भाई चाय बढ़िया पीते ही जोश आ जाए, हमारे विधायक महोदय के लिए। हां, भाई साहब हम तो सदैव आपकी और दल की स्तुति वन्दन, करते रहेंगे, लेकिन आम जनता मे हमारी साख नही है भला हो उन गरीबों का जिनका हम कुछ नही कर सके फिर भी हर बार हम ही मत देते हैं और हम जीतते है। बताओ जेतु भाई आज सरकारी अफसर जनप्रतिनिधि का क्या साख रह गयी है? सब भ्रष्ट हैं हम नही कहते सब भ्रष्ट हैं लेकिन जब सारे कुवे मे भाग पडी है तो कौन बोराएगा? नही सुनते है रजिस्ट्री कलर्क महीने के 20) हजार कमाता है उसका मकान देखो तो आप देखते रह जाओ, अरे डिस्पेच क्लर्क 20–30–40) रुपये रोज लाता है। परसो मैं मंडेपुर गया था वहा मेरा रिश्तेदार ओवरसियर है उसका रहन सहन किसी मिनिस्टर स कम नही है। वह कहता है कि खुद खाता है, विधायक को खिलाता है और हर महीने मिनिस्टर साहब की भक्ति करता है।

प्रधान चिढ़ा—मुझे लगता है आप पर विपक्षी दलों का प्रभाव हो गया है। मिनिस्टर हर महीने रिश्वत ले यह सम्भव नही है और उसने भी चुनाव के नाम पर–10 लाख एकत्रित किए 1 लाख खुद के चुनाव खर्चे, बकाया 2 लाख अपने साथी विधायकों म बांट देता है, और 7 लाख अपनी बीवी को देता है-मुझे कौन देगा मैं तो विपक्षी हू। मैं सच्च क्यो नही कहू रिश्वत तो ऊपर से आ रही है। वहा भ्रष्टा चार सदाचार हो गया है खर छोडिये लेकिन आप का रिश्तेदार ओवरसियर झूठा है, कोई मिनिस्टर ऐसा नही है कि वह छोटी छोटी रकम ले लेता हो, बडे साहस स चुनाव खर्चे के नाम पर—वह तो आवश्यक है अन्यथा चुनाव कैसे लडे जीप, पट्रोल छपाई, पंपलेट भोजन आदि—इसलिए उस सीमा तक ही भ्रष्टाचार रहे और नीचे न उतरे तो भी बुरा नही है वह सत्यानाश नही करेगा, बशर्ते कि मिनिस्टर उतना ले जितना चुनाव के लिए आवश्यक है।

आपको विश्वास हो न हो हा मैं एक भूतपूर्व डिप्टी मिनिस्टर

पी डब्ल्यू डी को जानता हू जो ओवरसियर का जेब टटोलता था। अकाल के काम का भुगतान करने वाला ओवरसियर से 4000) रुपये छीन लिए ओवरसियर डरने लगे तो उनको बुलाकर कहता कुछ पसे है वह इ कार करता तो फिर कहता, मोटर मे पैट्रोल भराकर ले आओ, भागते चोर की लगोटी सही अब ऐसा नही करत। भ्रष्टाचार इस सीमा तक फल गया है कि उसका प्रभाव चौगुणा हो गया है और कई मन गढ त कहानिया गढी जा रही हैं, यही क्या ये कहानिया चोर भ्रष्ट कर्मचारी के लिए दान भी तो हैं व, कुछ नही खाता दूसरे माग करते हैं इसलिए उनको देता है।

नित्यानन्द—हा, आप ठीक कह रह ह हो रहा है वह हो रहा है जब आग लगे तो लपटो से कौन बचेगा और जब भ्रष्टाचार चलता है तो समस्त वायु दूषित हो जाती है इसमे कोई माई का लाल ही बच सकता है। आप जानते हैं अब्दुल गनी को ऐसा ईमानदार थानेदार नही देखा किसी ने यहा चाय तक नही पीता लेकिन नतीजा क्या हुआ, हर महीने तबादिला क्योंकि अफसर को चौथ नही दता था और अन्त म लेन हाजिर कर दिया जहा स वह रिटायर हुआ। छोडिय साहब हम ईमानदार रहे बस यही एक रास्ता है, दूसरे क्या करते हैं, उनका बखान ब द करें हम ता आपके साथ ह सदव साथ रहगे, सुख मे व दु ख मे आप पधारें, बस जा चर्चा है वह बताई माफ करना। □

महेन्द्र सिंह के आग्रह पर एक महिला अध्यापिका शिक्षा म त्री के यहा गई उसन खूब रोया अपने कष्ट बताए उसके सास ससुर अन्धे हैं उसका पति अपाहिज है और वह राज्य कर्मचारी है उसका तबादला वष म चार बार होता है 3 माह भी वह कही टिक कर नही रह पाती।

मिनिस्टर महोदय ने कहा – तुम कहा रहना चाहती हो ?

मेरे अपाहिज पति और सास ससुर के पास, ताकि मैं उनकी सेवा कर सकू।

तुमने आवेदन पत्र द रखा है ?

जी हुजुर ! हर साल दे रही हूं, लेकिन मेरी पीडा किसी को नही पसीज सकी। इंसपक्टर, डिप्टी डाइरेक्टर, डाइरेक्टर के यहाँ चक्कर लगा आई सब एक ही आश्वासन देते हैं — विचाराधीन है हम देख लेंगे लेकिन देखते 2 चार वर्ष बीत गए राज्य ने परम्परा बना रखी है कि पति पत्नि को एक ही जगह जहां तक सम्भव हो, रखा जाए मेरे सुसराल के स्कूल से एक महिला मेरी जगह जाने का तैयार है दोनों की आपसी अर्जी भी है हुजुर मेरे माग कि मुझे राहत नहीं मिली।

मिनिस्टर ने एक बार और शिक्षिका के चेहरे मे झांका अभी वह 25 भी पार नही कर पायी है, सौंदय और सौष्ठव वैसा ही है जैसा कुमारी का।

फिर बोले — मै आज ही आदेश भेजता हू कि आपका तबादला शीघ्र ही सम्पूर कर दिया जाए। शिक्षिका उद्विग्न हुई–सर मै हुजूर के पास आ रही हू, यह डिप्टी डाइरेक्टर को मालूम है यह आदेश पहुचेगा उससे पूर्व वह एक अन्य अध्यापिका का तबादला कर देंगे और मुझे अपने गांव नहीं जाने देंगे।

मन्त्री महोदय शायद क्रोध कर उठते लकिन महिला के सौंदर्य ने उन्हे अभीभूत कर दिया था वह बोले — आप निश्चित रहिए मेरा आदेश वे मानने के लिए बाध्य होंगे कोई दूसरा परिवतन कर भी देंगे तो भी आपका तबादला सम्पुर अवश्य होगा। वह स्थाईमी हो गयी हुजूर वे पुरुष ठहरे यदि मैं अपना ईमान उनको बेच देती तो कभी का स्थानान्तरण हो गया होता वह मैं नही कर सकी। मैंने 500) रुपये देना चाहा लेकिन वे अड़ हे मैं घृणा स भर गयी, कहा जाती डाइरेक्टर के पास गयी, वहा भी मुझे सध्या को घर बुलाया गया मन मार कर गयी लेकिन मेरे भाग्य म वहा भी इज्जत का सौदा था वे कहने लगे देखिए–आपका सौन्दर्य अक्षुण्ण और आवश्यक है मैं रिश्वत नहीं लेता कभी नही ली लेकिन क्या प्यार करना भी बुरा है आप

अक्षरा (कविता मन्च 1984)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय सागर—470003

देखा तो ऐसा लगा जैसे जन्म जन्मान्तर से आपके साथ प्यार चला रहा है, यह मात्र सयोग है कि आपको वही सयोग खींच लाया ।

मैं उठी लेकिन नही उठ पायी वे खडे खडे हो गये और वा नौकरी में रहना हो तो ! लेकिन मैं ज्यादती नहीं करूंगा, मुझे प्यार चाहिये आपके विरोध से मुझे क्या मिलेगा ? मात्र शरीर। आप जा पूरी तरह सोच लीजिए आपके मन में प्यार जगे तो आइए, नही मैं समझूंगा मैंने आपको समझने में गलती की । बताइए हुजूर क्या करूं ? मैं उठ कर आ गयी बस अंतिम स्थल को पहुँच गई हू, लेकि दोनो अधिकारी चिढे हुए है इस आशा से एक दिन पूर्व का आदेश बा पर मुझे मना कर देंगे ।

मिनिस्टर साहब का क्रोध आ गया—आप एक बार और इन्तज कर लीजिए । मैं देखता हू कि कौन मेरे आदेश को टालता है, कल ए अध्यापिका आयी थी उसका स्थाना तरण कल ही हो गया । मैं सीधा क कर उसकी सूचना दे सकता हू लेकिन रोज रोज उनके काम मे दख देना उचित नही है, बस एक दिन की देरी जरूर होगी वे परसों आ एक दिन ठहरना पडा, आदेश की प्रतिलिपि उनके हाथ मे थमा दी मैं इन अधिकारियो को भला कैसे छूट दूं, उनका भी यही कहना मैं अभी फोन करता हू कल दुपहर तक तबादला की खबर आ जाए और उसके साथ आदेश भी हस्तदस्त मंगा लेता हू, मैं नही चाहत अधिकारीगण आपकी इज्जत लेकर आपका काम कर । मन्त्री महोद ने घंटी बजाई—चपरासी आया, देखो कल सुशीला जी आए थे तबाद के लिए, वह हैं या चले गए ।

चपरासी ने गर्दन झुका कर कहा—हुजूर एक बाई बाहर जरू बैठी है ।

उसे अन्दर भेज दो । सुशीला आई वह प्रसन्न थी—हुजूर आदेश मिल गया, बस धन्यवाद देने के लिए रुक गयी । मैं आजीवन आपकी कृपा को भूल नहीं सकती, पूरे 7 वर्ष से मेरा काम हुआ है, दो म भी महोदयो से पहले मिल चुकी हू लेकिन कुछ भी लाभ नही हुआ, हुजूर

की कृपा से आदेश मिल गया है, उसने फिर मुस्करा कर सलाम किया। फिर हँस कर बोली—बहन सरला क्या?

बस तबादले के लिए।

सुशीला—हुजूर इसके ससुर साहब अपाहिज हैं पति भी विकलांग।

मन्त्री महोदय ने सरला से कहा—कल तक इंतजार करो, मैं दफ्तर चलता हूँ आप कहाँ ठहरी हैं मेरे पास अतिथि गृह है, आप चाहे तो वहाँ ठहर जाइये।

सरला अभिभूत हो गयी हुजूर धर्मशाला में रुकी हूँ यहाँ कोई कष्ट नहीं है।

मन्त्री महोदय उठे जैसी तुम्हारी मर्जी—शाम को पूछ लेना कि आदेश हुआ या नहीं।

हुजूर।

मन्त्री महोदय सचिवालय चले गये पीछे रह गयी सरला और सुशीला।

सरला ने कहा—आप कहाँ ठहरी हैं?

यहाँ मन्त्री महोदय के बंगले के अतिथि गृह में—सुशीला प्रसन्न थी।

सरला ने उसका हाथ पकड़ा अच्छा हुआ हम सही स्थान पर पहुँचे जहाँ जाओ वहीं नारी से उसका शरीर माँगा जाता है।

सुशीला ने कहा—चलो अतिथि गृह में वहीं बात करेंगे भाग्य से तुम्हारा मिलन हो गया पूरे 3 वर्ष बाद।

हाँ बहन, क्या करें? मैंने 16 वर्ष में ही 18 बताकर नौकरी प्रारम्भ की अब 23 वाँ चल रहा है। 7 वर्ष पति से अलग अकेली रही सुना है नया विवाह कर चुके या करने की तैयारी में हैं सरला उदास थी।

सुशीला चलते चलते बोली—तुमने चाय पीयी?

नहीं तो पूरे 4 घंटे से घूमती घूमती आई हूँ। स्त्री रही किसी चाय की दुकान पर पहुँचा तो फब्तियाँ कसते हैं और अकेली स्त्री को

देखकर कई सहानुभूति जताने वाले मिल जायगे ऐसा ही एक मित्र मुझे यहा छोड गया यद्यपि उसने मुझे चाय नाश्ते का आग्रह किया, लेकिन मै नही चाहती कि उसके साथ किसी होटल मे बठकर चाय पीऊ अजनबी पुरुष बडा भयावह होता है ।

तुम ठीक कह रही हो–मिनिस्टर साहब बडे कृपालु है मैं चार दिन से ठहरी हू आज आदेश हाथ म आया धमशाला मे तीन दिन से ज्यादा नही ठहरने देते हुजूर ने फरमाया मैं चली आयी–चाय, भोजन, नाश्ता सब यहा ही करती हू नहीं तो आस पास कही चाय नहीं मिलती अतिथि गृह भी ठीक ठाक है । पलग है कुर्सी टेबुल नहान घर सब सुविधा है चाय वक्त पर आती है भोजन भी बस दो बज रहे हैं मै अभी चाय मगवाती हू तुम भी अतिथि गृह देख लो ।

चलो ।

वे साथ साथ अतिथि गृह गए वहा एक नौकर बठा था, सुशीला न कहा–भाई चाय, नमकीन, डबल रोटी जो कुछ तैयार हो ले आवो मुझे फिर 4 बजे वाली गाडी पकडना है ।

वह नौकर उठा–चुटकी बजाई बस अभी लाया ।

सुशीला न सरला को पूछा–धर्मशाला म क्या सामान है ? यह नौकर बडा भला है चाबी दना सामान ले आएगा, तुझे जाने की आवश्यकता नही ।

सरला ने एक बार अतिथि गृह को देखा–काफी बडा कमरा था, दो खाट लग थ । सफेद चद्दर गद्दा डनलप का और तकिया भी, ओढने के लिए स्वत चददर और कम्बल भी था वह उठी, स्नान घर देखा–साफ सुथरा, साबुन, सम्पो, तल रखा था टायल का फस साफ सुथरा देखकर मोहित हो गयी और कहा–बहन तुम कहती हो तो यहा आजाऊ । सुशीला–क्या हानि है खर्चा भी नही लगेगा, यहा के नौकर चाकर समझा हम म त्री महोदय के बहुत निकट के हैं दुनिया म इस दिखावे से भी कई काम हो जाते हैं ।

सरला अनिश्चित सी लगी–देख लू गी, तुम तो जा रही हो मैं

अकेली रह जाऊंगी। सुशीला-और धर्मशाला मे रेखली ही क्या, वहां भी अकेली और यहां भी, अकेली को देखकर कितने आदमी घूरते हैं ? तुमने देखा होगा-वहां से यह कमरा, भला कोई पूछने वाला नहीं है।

हां ठीक कहती हो, इतने मे चाय नमकीन सेंडविच मिठाई आ गई।

दोनो ने बैठकर चाय पीयी नाश्ता किया, सरला सुबह से भूखी थी।

उसने कहा- बहन तुम किस की सिफारिश से आई ? यहां तो सारी सुविधा है आने वाले महमान बनकर रहो।

सुशीला हंसी-किस की सिफारिश लाती, मैं अपनी सिफारिश स्वयम हूं मैंने सुना शिक्षा मन्त्री बड़े कृपालु हैं, चली आई, तुम किस की सिफारिश से आई हो ?

किसी की नहीं अलबत्ता मिनिस्टर साहब का मिलने वाला एक व्यक्ति मिल गया उसने चिट्ठी लिख दी मैं चली आई, इससे पूर्व दो मन्त्रियो के द्वार पर दस्तक दे चुका हूं, कोई लाभ नहीं हुआ, बैठकर पूरी बात भी सुनी।

सरला ने कहा-यह मन्त्री महोदय बड़े सज्जन लगे, पूरी बात सुनी सहानुभूति दर्शायी लगता है अब काम भी हो जाएगा।

सुशीला-अवश्य हो जाएगा लेकिन

सरला चौंकी-लेकिन क्या ?

सुशीला ने कहा-वही जो नारी को सबसे ज्यादा प्यारी है, लेकिन बहुत-कुछ जगह हमे कुछ कुर्बानी करना पड़ती है।

सरला- लेकिन कुर्बानी क्या ?

सरला का भाव देखकर सुशीला थोड़ी सहज हुई। भगवान भी बिना भेंट के राजी नहीं होते, और सच बताओ, किसी भीड़ में फस जाओ तो चारों तरफ से पुरुष हमारे शरीर को छेड़ते रहते हैं और हम विवश उसे बरदाश्त करते हैं उस भीड़ में कोई किसी का सहायक नहीं होता और हम सब बरदाश्त करती जाती हैं मैं रेल के

म अकेला हू यह राजनीति यह मन्त्री पद, सब व्यय, बिना साथी जीवन कैसे चले, आपका काम कर दिया है, एकाध दिन मे संदेश पहुंच जाएगा।

और मैं उनकी बात सुनती रही मेरे पास कोई उत्तर नहीं था।

मन्त्री महोदय की आखें गीली हुई कहा जब मैं 25 वर्ष का था मेरी पत्नि चल बसी अभी 31 वां वर्ष चल रहा है मां बाप बचपन में ही छोड गए एक अनाथ बच्चे का जीवन बिताता रहा हू भाग्य कि यह मन्त्री पद मिल गया मैं किसी से न रिश्वत लेता हू और न और कोई लालच या प्रलोभन बस यही कहने के लिए बुलाया था, आप जाना चाहें तो जा सकती हैं आप अन्यथा न समझें।

मैं सोचती हू मन्त्री महोदय बड़े उदास लगे, उनका भावुक मन फूट पडा। बहन वे न किसी से कुछ मांग करते हैं और न कोई प्रलोभन देते हैं बस हम विवश हैं कि ऐसे पुरुष को क्या कहें एक बात सत्ताधारी से हमारा अवसर आया उस अवसर का लाभ सदैव मिलता रहे यह तो और सही मत है कि इस युग मे कोई न कोई जरिया चाहिए कि आप ईमानदारी से अपना काम करवाएं।

मेरा समय हुआ जा रहा है मुझे कुछ नहीं कहना है और न मन्त्री महोदय तुम से कोई मांग करेंगे वे काम करते हैं और सबका व्यय उठाते हैं मैं सोचती हू वे पुरुष का काम भी उचित रूप से करते हैं बड़ा सहानुभूति पूर्वक सुनते है और परम्परा और नियमों से उनका जो लाभ मिलता है वह देते हैं उनके और कोई खर्च नहीं है इसलिए अतिथि गृह हो उनका सब खर्चा है नौकरी की बंगला की बस भोजन चाय कपड़े का खर्च करते हैं और फिर भी तुमको ऐसा लगे कि तुम्हें झुकना नहीं है, वे कभी झुकाने का प्रयत्न नहीं करेंगे, पता नहीं क्यों मैं इस अतिथिगृह में आकर ठहरी मुझ से पूर्व कोई नारी नहीं ठहरी, यह चपरासी कहता है कि आप इनकी सम्बन्धी हो, मैं क्या कहूंगी एक ही उत्तर था, हां मैं मौसी मायी बहिन हू।

सरला उहापोह में थी-नहीं बहन मैं यह नहीं कहूंगी जो

अर्वाचीन (कविता संग्रह 1994)
नोरमदर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

आज तक नही कर पायी, मै धमशाला जाती हू, वही रहू गी कल सुबह आकर पूछ लू गी।

सुशीला – जसी तुम्हारी मर्जी, वे छ वजे दौरे पर जा रहे हैं वापिस दो वजे तक आए या शाम तक कुछ कहा नही जा सकता यहा ठहरने मे कोई हानि नही है, वे तुम पर आक्रमण नहीं करेंगे न बलात्कार का प्रयत्न हो। तुम देखा वे बडे सज्जन हैं, मै जीवन मे कभी कही नही झुकी, और न झुकना उचित ही है, मैं तीन दिन उनक साथ रात्रि के सूने प्रहरों म रही, बातचीत करती रही, वे बठे बातें करते रहे मैं उठकर आयी तो कभी इकार नही किया, बस कल ही मैं झुक गयी, क्यो ? उनका प्यार मुझे झुका गया उनका एकाकीपन मुझ लुभा गया। सरला – अरे कोई नौकर मुझ पूछेगा तो क्या कहूगी ? बताना कि तुम उनकी बहन लगती हो सुशीला ने कहा।

लेकिन मै झूठ क्यो बोलू ?

इसलिए कि दुनिया कुछ और सोचती है तुम बिना सम्बन्ध के यहा क्यो आई ? क्यों इसमे ठहरी ? आखिर कोई न कोई आधार चाहिए और सच्च यह है कि प्रत्येक नारी पुरुष की बहिन है पावनतम सम्बन्ध।

यह तो ठीक है।

सुशीला–तो म चलू, गाडी का वक्त हो रहा है। सरला–तो मैं भी धमशाला जाती हू शायद स्टेशन के पास ही तो मेरी धमशाला है।

सुशीला ने नौकर को कहा–भाई स्टेशन का रिक्शा मगा लेना और वे दोनो बठ कर स्टेशन चल पडी सुशीला को गाडी मे बिठाकर वह धमशाला की तरफ बढी कि एक पुरुष आया बहन जी, माफ करना आप समपुर रहती हैं।

जी आप ?

मैं पडोस के गाव सम्बलपुर का वासी हू आप यहा कैसे आए, कहा ठहरे हैं ?

सरला इस सम्बोधन का सुनकर हतप्रभ थी, लेकिन सम्बलपुर

म उसके मौसा रहा थ, अक्सर वह सम्बलपुर जाया करती थी। मम्बल पुर समपुर से 2 मील दूर ही था। 'म तब दने क सिलसले म आई हू और अपने मामा क यहा ठहरगी हू।' "ह व्यक्ति जोर से हस —आपका नाम तो मोनी धमशाला के रजिस्टर मे दज है सरला गोस्वामी तो आप ही हैं।

म भी उसी धमशाला के कमरा न 12 मे ठहरा हू आपका कमरा न 14 है।

सरला—माफ करना आपका शुभ नाम।

वह व्यक्ति बोला—नही माफ करने की काई बात नहो है हर स्त्री अपात व्यक्ति को अपना पता नही बताती आपने अपराध नही किया, मेरा नाम बलदेव गोस्वामी है आपके मौसा का साला हू।

अच्छा ?

जी।

अब कहा जा रहे हैं ?

मेरे मामा के यहा जाना है भोजन वहीं करूगी। बलदेव जोर से हसा-आप झूठ बोल रही हैं इतना परिचय पाने के बाद शायद इस झूठ की जरूरत नही थी, आपत्ति न हो तो आइए नाश्ता करलें।

सरला ने चुटकी ली नाश्ता तो सुबह होता है, अभी तो ब्यालू का समय है, वह म घर बुरी मरी सखी क साथ उसी को छोड़ने तो स्टेशन आई हू। बलदेव न नया प्रस्ताव रखा—चलिए घूम आए यहा क दर्शनीय स्थल देख आए 6।। बजे सिनेमा लग रहा है वह देखते कहते हैं भ्रष्टाचार पर अपने ढग का पहला चित्र है, इस चित्र को देखने के बाद सत्ताधारियों मे खलबली मच गई।

सरला—अच्छा चलिए दो घण्टे घूम आए फिर सिनेमा की तय कर लेंगे।

वे रिक्शा कर रवाना हुए सामने नेताओं का समाधि स्थल था, जहा लम्बे लम्बे स्तूप बने थे उसके पास ही एक युगल प्रेम की समाधि थी कहते हैं प्रेमी प्रेमिका के पीछे यहीं ही मरा जब प्रेमिका को मालूम हुआ तो उसने आकर लकड़िया एकत्रित की और शव के साथ

मध्यान्ह (कविता संग्रह 1934)
गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जलने लगी तो गांव वालो ने बचा लिया, उसके बाद वह पत्थर से सिर फोडकर मर गयी।

बलदेव सारी कहानी बता रहा था और सरला सुनती जा रही थी। बलदेव कह रहा था–समाज ने नर नारी के आपसी सम्बन्धो को कभी नही समझा, उस पर अनेको प्रतिबंध लगाए उनको मिलने नहो दिया गया। जबकि वह मिलन सम्पूर्ण नैसर्गिक है प्रकृति की पुकार है, उसे कौन रोके। एक पुरुष एक स्त्री को चाहे और स्त्री भी पुरुष को तो कोई बंधन उन्हें नही बाध सकता लेकिन हमारे समाज ने बाध रखा है, उसके विरुद्ध बहुत बडा विद्रोह चल रहा है। उसी विद्रोह की स्मृति मे प्रेमी की यह समाधि बनाई गई है। वह बताते हुए वह बार बार सरला के शरीर को स्पर्श करता जा रहा था। बलदेव खुबसूरत व्यक्ति है उसका लम्बा चौडा सीना बडी बडी आखें, गौर वर्ण बडा आकर्षक लग रहा था, वह ध्यानपूर्वक सुन रही थी, समाधि के सामने दोनो खडे थे।

बलदेव कह रहा था–समाज ने एक दिन इनको रोका, नही मिलने दिया वे प्राण छोड चुके आज वही समाज उनकी पूजा करता है उस असफल प्रेमी की, लोग हजारो की संख्या मे आते हैं फूल चढाते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें भी ऐसा समर्पण मिले, प्रेमी प्रेमिका के पीछे पागल हो और प्रेमिका अपना समर्पण देकर सब कुछ लुटाने को तैयार हो। लोकलाज और जी, बताइए दो युगल मिलते हैं तो कौनसा पाप है, वस प्राकृतिक मार्ग है, छुट्टी जाने की, अब सिर्फ दो व्यक्तियो के मिलन का प्रश्न यदि दोनो तैयार हो दोनो एक दूसरे को चाहते हो और दोनो एक दूसरे को अच्छे लगते हो तो

सरला स्तब्ध सुन रही थी, उसके पास कोई जवाब नही था यद्यपि एक शंका उसे मथे दे रही थी पुरुष समाज मे क्या नारी का यह दोष पुरुष पति रूप मे क्षमा कर सकेगा ? लेकिन वह उसकी जबान पर नही आ रहा था।

वह तन्मय थी बलदेव का शारीरिक आकर्षण उसे मन्त्र मुग्ध किए था। रिक्शा में जब साथ साथ बैठे तो बलदेव का व्यवहार उसे अच्छा लगा था वह दूर तक हट कर बैठा था ताकि उसका शरीर उसके शरीर से कहीं स्पर्श न करे और सरला को पता नहीं यह क्यों अच्छा नहीं लग रहा था।

वहां समाधि पर जब वह बार बार उसका स्पर्श कर रहा था तब वह चाहती थी कि वह अधिक बार अपनी अंगुली से उसे स्पर्श करे, समाधि की ओर देखते देखते जब वह बलदेव की तरफ झांकती थी तो वह उसकी तरफ देखती रह जाती थी और [illegible] कहती प्रेमी को प्रेमिका से क्यों नहीं मिलने दिया ?

क्योंकि प्रेमिका विवाहित थी–प्रथम प्रेमी से हुआ ब्याह पति से।

वह कहना चाहती थी प्रमिका त्यागी थी वह विवाह कर पति को त्याग दे रही थी प्रेमी को चाहकर लेकिन कुछ कह नहीं सकी।

बस यह कहकर मौन हो गई–बेचारा को कठिन अभिग्रह में उलझना पड़ा। 'जी आप ठीक कहती हैं यह द्वन्द्व क्यों आए ? क्या बुराई हो रही है ?"

पुरुष 100 स्थानों पर रोता फिरे वहां प्रेम के गीत गाए जाएं और स्त्री किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध करले मात्र बोल चाल या गहराई हो तो भी वह त्याज्य है आश्चर्य तो यह है कि हमारा समाज इस प्यार को सम्मान नहीं करता लेकिन फिर भी यह समाधि स्थल बना क्यों ? इसलिए तो कि–यह प्रश्न है जिसने अपनाया वह समाज से निरस्कृत हुआ लेकिन भावी पीढ़ी इस अमर प्रेम की पूजा करे।

मरता चौकी–आप क्या कह रहे हैं ? क्या बनमाला पाढ़ी आज इस युगल के लिए भावी बन गयी इस आदर करती है ? क्या यह सही है कि प्रेमी विवाहित था।

जो लिखा लेख पर तो यहां लिखा है समाज ने आड़ तिरछे मार तोड़ लिए प्रेम की पूजा करली, लेकिन विवाह बाद उस प्रेम

अग्राह्य कहा–पता नहीं क्यों ? लेकिन जो कुछ शिलालेख पर
केत है उससे स्पष्ट है कि यह अमरप्रेम की गाथा है और भविष्य के
ए पूजा का विषय है। बहुत देर खड़े खड़े वे उस समाधि को देखते
फिर देखा सन्ध्या होने जा रही है, ठंड प्रारम्भ हो गयी है नवम्बर
प्रथम सप्ताह था वे जब ग्राटो रिक्शा मे बैठे तो बलदेव न याद
गाया–सरला जी बचपन म आप आती थी तब मैं आप और आपका
मेरा भाई राम आँख मिचोनी खेलते थे। एक की आख मीच दी
ती दो खाट के पीछे छुप जाते। उसने मुड़कर बलदेव की तरफ
ा फिर गहरी तन्द्रा मे खो गयी।

स्मृति कौंध गयी, वही आकर्षक चेहरा, नहीं उससे ज्यादा
र्षक चेहरा आज बलदेव का, जब बलदेव आखें बन्द कर आता
तब पलग की ओट म वे लम्बे समय तक आपस म चिपक कर पडे
ते सरला की आयु उस समय 12 वर्ष की थी और बलदेव की आयु
के लगभग। सरला को बलदेव का स्पर्श अच्छा लगता था उसका
ई राम आखें ब द कर आता तो वह फौरन पकडली जाती राम
ला कलूटा था और उसकी शक्ल मे सरला को नफरत थी।

वह चौंकी गाल पर बलदेव का स्पर्श बहुत ही सुखकर लगता
जस वह इसी तरह पडा रहे राम तब दूसरे खाट के पीछे रहता
बलदेव को भी सरला के साथ इतना अच्छा लगता था, वे बचपन
दिन थे।

इस स्मृति कौंध के साथ साथ वह चौंकी और कम्पकपी हुई,
न सहज अपना हाथ बलदेव के हाथ पर रखा फिर घबराकर उठा
ा और कहा माफ करना। 'क्यों क्या बात हुई ?'' बलदेव उसकी
ा से व्यथित था।

नहीं–बस यही समझ म नहीं आ रहा है कि यह समाधि क्यों
ई ? राधा कृष्ण की प्रेम कहानी क्यो चली ? जिस समाज मे स्त्री
पुरुष के सम्बन्ध म सोच भी नहीं सकती, पतिव्रत और सतीत्व
ना कठोर है कि वह किसी तरह की छूट स्वीकार नही करता।

बलदेव मुस्कराया, वही बात तो मैं कह रहा था, हमारी भारतीय संस्कृति म अजीब विरोधाभास है वह हमारे वक्तव्य के दोनों पहलुओं को समान दृष्टि से देखता है जहा सतीत्व के गीत गाए गए वहा पूरे जोर से कहा गया कि सतीत्व स्वपन मे भी पर पुरुष की तरफ आकर्षित नही हो सकता। पर उसके विपरीत बाद मे हम राधा को पूजते हैं यह अबूझा है भगवान कृष्ण मानव थे और राधा भी मानव, अतिन्द्रीय प्यार की कोई बात नही कही जा सकती अलबत्ता यह कह सकते हैं कि उनका प्यार भौतिकता को लाघ चुका था।

सरला सुन रही थी, ध्यान से सुन रही थी लेकिन वह कुछ भी समझ नही पा रही थी यह द्वैत नही विवाहित नारी के लिए पति ही सब कुछ है एक मात्र पुरुष बकाया सब पुरुष स्वप्न म भी नहीं आना चाहिए।

सामने धमशाला आ गई थी विद्युत रोशनी हो गयी थी, सूर्यास्त के बाद का हल्का प्रकाश शेष था।

बलदेव ने कहा—भोजन तो किसी होटल मे करलें।

सरला ने कोई आपत्ति नही की—बलदेव न आटोरिक्शा नो कहा, मोती महल म चल दो।

और वे मोतीमहल म दाखिल हुए।

साथ बैठकर भोजन किया सरला बार-2 बलदेव के आकर्षक चेहरे म झाक रही थी। सुदर सुडौल, मासल, दमकता हुआ चहरा। वह उद्विग्न थी वह उठकर म त्री महोदय क बगले से क्यो आ गई, और यहा बचपन का सम्मोहन जगाने वाला यह बलदव। नही वह गलती कर रही है।

बलदेव नमक पास ही कुर्सी पर बैठा एक थाली मगवाई गयी। यह बाला—सरला जी आपत्ति न हो तो भोजन एक ही थाली म करलें।

सरला क मुह स निकला – जसी तुम्हारी मर्जी – फिर बोली – भाई साहब भाजन दा क पस देगा फिर दो क्यो नही ?

बलदेव ने सरला के द्वन्द से झूमते चेहरे मे देखा – पैसा गौण है गो के दे देंगे, आप प्रारम्भ करिए और दोनो ने एक ही थाली म भोजन किया। बार बार उसका हाथ बलदेव के हाथ से छू जाता, एक विद्युत तरग उनको हिला जाती, और पलग के पीछे आख मिचौनी का स्पर्श वह अनुभव करती।

भोजन कर वे धमशाला आए, सरला ने अपना कमरा खोला सामान बटोरा और बलदेव से बोली – मै मामा के यहा चलती हू क्षमा करना।

कल यही रुकेंगी ?

नही कल वापिस चली जाऊ गी, परसा स्कूल में हाजरी देना है।

बलदेव – अच्छा होता लेकिन नही आप जाइए।

और सरला चौंकी – क्या कहा आपने ? हा मुझे जाना चाहिए और उसने रिक्शा किया और मन्त्री महोदय के बगले पर गयी।

नौकर को बुलाया – कमरा खोल दो साहब से पूछ लिया था उनकी आज्ञा से ही ठहर रही हू वे मेरे भाई साहब हैं।

नौकर हसा – हां मेम साहब, यहा जो आती हैं सब उनकी बहनें हैं, कोई मामी जात, कोई मौसी जात कोई चचेरी, कोई भुवा जी की।

सरला न इस गिनती पर ध्यान नही दिया नौकर से पूछा – भोजन कर लिया है साहब आ गए।

नौकर ने कहा – नही आए बस आने ही वाले हैं एक घ टे के अन्दर अन्दर।

उसने आराम कुर्सी पर बैठकर छत को देखा–क्या दखा ? नही म त्री महोदय का आकषक व्यक्तित्व है, मनमोहक है सोचती हू उनस अधिक नही होंगे, उसका मन हुआ कि वह पूछे भाभीजी नही आए, लेकिन सुशीला से मालूम हो गया था कि वह इस ससार मे नही है।

टेबुल पर पडे अखबार को उठाया उसक शीषक को पढ गई, एक पढा, भूला, दूसरा भी और तीसरा भी, मस्तिष्क म यथा व्यस्त

था क्या हानि है ? इतने बडे व्यक्तित्व से सम्बन्ध होगा, भाग्य की बात है नौकरी करना है, आज नहीं तो कल तबादला होगा, फिर भागना पडेगा लेकिन क्या करें ?

वह उठी बाथरूम मे गयी, चहरा दमक रहा था, वह खुद जसे अपने आप पर मोहित थी पूर्ण नारी का सौंदर्य, लेकिन नहा लें, नहीं तो हाथ मुह धोलें।

कपडे बदल लें मन्त्री महोदय शायद बुलाएँ तो दिन भर के कपडो से उनके सामने जाना अच्छा नही रहेगा – साडी की तरफ देखा सल पड रहे थे नही यह ठीक नही, सुबह आई तो नहा धोकर आयी थी आखिर बहुत दूर घूम आई, साडी पोलका निकाला देखा बाथरूम मे टावल पडा है, कन्घी भी है उसने कमरे के कीवाड बन्द किये गरम पानी से मुँह धोया हाथ धोए कुहनी तक, फिर पोछ कर साडी बन्ली पोलका भी और कन्घी उठाई बालो को खोला कन्घी की और वापिस ठीक किए फिर आयने मे देखा, स्फूर्ति से वह स्वयम दग रह गयी उसके अग अग म नवीनता भर गयी ओह उसका सौंदय खुल गया दमक उठा। बाथरूम बन्द कर साडी सिमेट कर पेटी मे रखी और फिर आराम कुर्सी पर वठ गई।

नौकर आया – बाई साहब भोजन ले आवू शायद साहब को देर लगे।

सन्ता ने कहा नहीं साहब कब तक आ जाते हैं ?

कम यही 8॥ – 9 बजे, अगर नही आते तो कौन आ जाता है।

उसने घडी देखी – 8॥ बज रहे हैं।

फिर वह दोनो हाथो की अगुलिया को बांध कर वठ गई।

यह क्या महाठी, उसे नहाना नही चाहिए यह बलदेव भी कसा मिला आज, बचपन की आँख मिचौनी ही क्यों ? विवाह के 6 माह पूव वह फिर मिला, और ठाकुर साहब के सण्डहर किले में वे साथ भाग गए कसा लुभावना था उसका व्यक्तित्व ? वह इन्कार नहीं कर पायी आज भी वह उसक व्यक्तित्व से अभीभूत थी, नहीं उसे नहीं

सोचना चाहिए – हो गया सो हो गया आखिर अब ये यादें क्यो आए ?

इतने मे गाडी का हार्न बजा, और म त्री महोदय उतर कर अपने कमरे मे आए।

नौकर दौड कर गया – चाय हाजिर कर ।

नही भोजन लू गा हा सरला बहन आई है क्या उनको चाय भोजन के लिए पूछा ?

हाँ पूछा, वे कुछ नही ले रही है अतिथिगृह मे बैठी हैं।

अच्छा तुम जाकर उनसे कह दो उनका तबादला आज सीधे यहा से ही हो गया सिर्फ आदेश डिप्टी डाइरक्टर के यहा से कल निकल जाए गे।

जी हुजूर।

सरला सुन रही थी वह प्रसन्न थी उसे लगा मुझे नौकर से कहला रहे हैं बुला क्यो नही लेते ?

नौकर ने आकर सूचना दी।

सरला ने कहा – साहब क्या कर रहे हैं ?

बस बाथरूम गए हैं भोजन तैयार है आते ही लेगे, डाइनिंग रूम मे, मन पहले से प्लेट लगा दी है।

इतने म आवाज आयी – पन्ना इधर आना तो।

पन्ना गया और वापिस लौट कर आया – बाई साहब आपको भोजन पर याद कर रहे ह।

सरला – लेकिन मैं चल रही हू।

और वह नौकर के साथ साथ डाइनिंग रूम म गयी, जहा म त्री महोदय पहले स बठे थे।

सरला ने नमस्ते किया और कुछ कहे उससे पूर्व मन्त्री महोदय ने कहा – आज हमने यहा से आदेश जारी कर दिया है चपरासी के साथ अधिकारी को भेज दिया है क्योकि आदेश वहा से प्रचलित होंगे।

सरला द्रवित हो बोली – बड़ी कृपा की।

मंत्री महोदय – बैठो कृपा की क्या बात है? राज्य ने नियम एवं परम्पराएं बना रखी हैं उनका पालन करता हूं उसमे मैं मित्र, शत्रु, सम्बन्धी विरोधी पुरुष, स्त्री का भेद नहीं करता, सबको समान रूप से लाभ मिलना चाहिए। वह मैं देता हूं। आप आए परम्परा है कि पति पत्नि जहां तक सम्भव है एक ही स्थान पर रखे जाएं आज दफ्तर में नहे इ गर का एक शिक्षक आया, कोई सिफारिश नहीं थी वह अपनी पत्नि के स्कूल मे जाना चाहता था मैंने आपके लिए आदेश भेजा उसके लिए भी भेजा।

सरला गदगद थी, वह मन्त्री महोदय को बड़े सम्मान से सुन रही थी।

कल सुशीलाजी आई – वह मेरे भाई की सिफारिश लेकर आयी थी, उसकी साली थी उसके लिए आज ही आदेश दिया था, मैंने उसे बताया कि मेरे लिए किसी सिफारिश की जरूरत नहीं – पत्ना दो थालिया ले आवो।

सरला ने हाथ जोड़ कर कहा – फिर भी मुझे 4 वर्ष से न्याय नहीं मिला आज तो जो नियम के अनुसार चलते हैं वे भी कृपा करते हैं।

मंत्री महोदय – मैं राजकीय मामलों में कृपा नहीं करता सत्ता तो पानी का बुलबुला है आज है और कल नहीं। जब वह मेरे पास नहीं होगी तब कौन आएगा नियम से परे मैं उस व्यक्ति की कठिनाई को देखता हूं और जो कुछ बने करता हूं।

थालियां आ गई। खाना प्रारम्भ किया मन्त्री महोदय ने सरला की थाली में पड़ी चपाती को देखा फिर हाथ लगाया वह ठंडी लगी।

नौकर तो नौकर ही है, मेरे गरम चपाती और आप को ठंडी उसने अपनी गरम चपाती सरला की थाली मे रखी और उसकी चपाती का हिस्सा अपनी थाली में।

तुम खाओ मै अभी कहता हू, दोना को गरम चपाती दे।

सरला न झूठी होने का आपत्ति नही की वह खाती गई म त्री महोदय की थाली की चपाती का उठकर एक तरफ प्लेट म रखा।

इतने मे नौकर आ गया। म त्री महोदय न कहा–तुम मेहमानो के लिए चि ता नहीं करते भेदभाव बरतते हो उनके लिए भी गरम चपाती लाओ।

हुजूर दोनो चपाती ताजा बनी थी।

अच्छा फल ले आओ और मिठाई है।

सर नहीं है।

म त्री महोदय उदास हुए घर मे स्त्री न होने से महमानो की खातिर भी बराबर नही होती नौकर को क्या चिन्ता कि महमान आए तो उनकी थाली म मीठा परोसा जाना चाहिए।

सरला–सर मैं धमशाला चली गई थी वहा सामान लेने, तो वही भोजन कर लिया। मन्त्री–मैं सबका आफर करता हू, कि शहर मे जो काम लेकर आए वे अतिथि गृह का उपयोग करें,यहा ठहरने की सुविधा मुश्किल स मिल पाती है मेरे पास दो कमरे हैं इसके अतिक्ति बगले म 6–7 कमरे हैं मै कहा तक पसरू गा 8–10 महमान आए तब तक तो सुविधा से सबको अतिथि सत्कार देता हू कल रात को इसी कमरे मे दो महिलाए थी, एक कल सुबह चली गई।

सरला को लगा कि सुशीला झूठ बोल रही थी उसने इसी सम्बन्ध मे पूछना चाहा, लेकिन नही पूछ सकी।

भोजन कर वे शयन कक्ष मे गये, म त्री महादय ने कहा–माफ करना दिन भर काम करना पडता है, थकान हो जाती है, आपको आपत्ति न हो तो मै लेट जाऊ।

सरला–नही भला क्या आपत्ति हो सकती है ?

म त्री महोदय न कहा–नही चलिए बठक मे वही बठेंगे।

वे बैठक के कमरे मे गए–सरला सामने बैठ गई।

म त्री–आपने बी ए किया है ? सरला–सर

श्रौर बी एड भी ?

जी सर।

श्रभी किस श्रेणी म हो ?

तीसरी मे।

बी एड के बाद दूसरी श्रेणी म श्रा जाना चाहिए–शिक्षकों को यू ही बहुत कम वेतन मिलता है मै उनके वेतन को रिवाइज करा रहा हू।

धन्यवाद मैं क्या निवेदन करू ?

नही तुम्हे इसकी श्रावश्यकता नही है, म कल डाइरेक्टर से बात कर तीसरी श्रेणी मे जो बी एड पास है उन सबको दूसरी श्रेणी मे लाने का श्रादेश देता हू।

श्राप श्रकेली का ता नही कर सकते?

सरला मन्त्री महोदय की उदारता श्रौर नीति से श्रभिभूत थी।

वह भी तीसरी श्रेणी मे ही है, वह भी बी एड है।

मैं भेदभाव नही बरतता, हमारा काम उचित न्याय करना है, वह मैं करने के लिए कटिबद्ध हू।

मन्त्री महोदय ने सरला के चेहरे म झांका, वह शरमा गयी, उसने श्राखें नीची करली।

मन्त्री महोदय ने कहा – श्राइए मैं थोडा सिर टेक लेता हू, दिन भर के श्राफिस काम से श्राख ऊची करने की फुरसत नहीं मिलती।

सरला कुछ भी नही कह सकी, वह उनके पीछे पीछे शयन कक्ष म चली गई।

माफ करना–सिर दर्द कर रहा है।

सर, श्राप कहो तो मैं सिर दबा दू।

लीजिए उस श्रलमारी म श्रमृताजन पडा है वह ले लीजिए श्रौर सरला ने श्रमृताजन मला श्रौर हल्के-हल्के सिर दबाने लगी।

मन्त्री महोदय ने उदास स्वर म कहा–दो वर्ष हो गए पत्नि चल

बसी स्त्री क बिना घर सूना–हा आप जब भी कोई काम हो निसकोंच चले आइए।

सरला सिर दबा रही थी उसका कोमल स्पश उसे अच्छा लग रहा था।

सरला कह रही थी आपकी कृपा बनी रही तो–हां म यह बताना भूल गयी कि मेरे पति विकलाग है।

म त्री महोदय चौंके, तो उनको तो साधिकार पदोन्नति मिल जाएगी, विकलांग का प्रमाण पत्र है ?

है सर।

तो उनका आदेश तो अलग से द दूगा।

सरला–आपकी कृपा है।

नौकर कीवाड ब द रहा था लगभग 11 बज रहे थ।

सरला यह कहने का साहस नहीं कर सकी कि वह अपने कमरे मे जाए।

म त्री महोदय ने कहा– आप थक गयी होगी, और उ होंने उसका हाथ अलग करना चाहा।

सरला–नहा सर, इसम थकान कैसी, आप आराम करे आपको नींद आएगी तब मैं चली जाऊगी, हा, अपना कमरा ब द कर आऊ फिर जब आपको नीद लगेगी मैं अपने कमरे मे चली जाऊगी।

वह उठी, अपना कमरा बन्द किया और वापिस लोटी, शयन कक्ष का कीवाड खुला था।

मन्त्री महोदय ने कहा–देखो इसे भी बन्द कर दो, ठडी हवा आ रही है और अलमारी से शाल ले लो।

लेकिन अब शायद जरूरत नहीं है, आप आराम करें।

सरला–सर, दबाने से सिर दद हल्का होता है। आपको नीद आ जाए।

मन्त्री महोदय–मैं अनेको रातें जागते 2 बिताता हू, नौकर सिर मलते हैं, लेकिन ऐसे जैसे हथोडे पटक रहे हैं, आप जिस ढंग से सिर दबा रही हैं मालूम नहीं होता कि आप सिर दबा रही हैं, या सिर दर्द

हल्का पड़ा है।

वह उठी अलमारी खोलकर शाल निकाली और अपने शरीर पर डाला और रजाई को खोलकर मन्त्री महोदय को कण्ठ तक ढक दिया।

ओह सरला जी आप तो बड़ा कष्ट कर रही हैं।

नहीं सर यह भी कोई कष्ट है आपको थोड़ी सुविधा मिले तो मेरे कष्ट का क्या ? मन्त्री महोदय—मैं बड़ा अभागा रहा हूं, और सच यह है कि मेरी पत्नि—भी इसी तरह रोज मेरे सिर को मला करती थी, इतनी ही आहिस्ता 2 जितना आप कर रही हैं मैं उनके हाथ का स्पर्श कभी भूला नहीं हूं आज उनके चले जाने के बाद वह स्पर्श अनुभव कर रहा हूं—लेकिन आप यह कष्ट क्या करें ?

सरला— इतनी कृपा कर के भी आप बार 2 कष्ट का नाम ले रहे हैं यह तो मेरा सौभाग्य है कि आज आप के दर्शन कर सकी, लगता है मुझे दो वर्ष पूर्व ही आपकी सेवा में आ जाना चाहिए था।

बस सरलाजी पत्नि का देहान्त भी यही हुआ था, वे अन्तिम क्षणों में कह रही थी कि मैं नया विवाह कर लूं, लेकिन मैंने उस जैसी महिला आज तक नहीं देखी जिसके साथ विवाह करूं ?

सरला ने सिर की मालिश करते 2 कहा — सर छाती और पीठ मे तो दर्द नहीं है, सिर दर्द होता है तब पीठ और छाती में दर्द भी होता है। मन्त्री—लेकिन नहीं अब आपको कष्ट नहीं दूंगा।

सरला — अब मुझे अधिकार से कहने दीजिए कि आप को नींद नहीं आएगी तब तक मैं दबाती रहूंगी यह सौभाग्य किसको मिलता है, और अब मैं नहीं कहती कि आप कृपा ने की, लगता है आप मेरे सम्बन्धी हैं और आप की सेवा करना मेरा धर्म है।

उसने कुर्ते के बटन खोले, और छाती पर मालिश करने लगी।

मन्त्री महोदय का रोम 2 कांप रहा था — उसने सरला का हाथ पकड़ा — यदि आपने अधिकार का नाम लिया तो मैं भी उसी अधिकार का काम में क्यों नहीं लूं ?

[illegible]

वह उठ बठा उसके हाथो को दोनो हाथो मे थाम और फिर अपना मुह सरला के मुँह के पास ले गया।

हाथो को पसारा और सरला लुढक पडी।

म त्री महोन्य के होठ सरला के होठ को चूम रहे थे वे आपस म इतन गहर स्पश म थे ज़ि ह्वा भी जैसे उसम प्रवेश नही कर पा रही थी।

स्त्री और पुरुष का यह मिलन बडा लुभावना था जब अहसान से दबी नारी आत्म समपण कर रही थी और उ ही अहसानो से दब कर वह अधिकार से म त्री महोदय से वह लेना च हती थी जो सत्ता धारी होने की क्षमता रखता है।

क्या सरला इस घडी भी सोच पा रही थी कि वह आज दुपहर से पूव जिस सतीत्व को लेकर चल रही है वह सतीत्व मात्र प्रवचन है, मात्र दम्भ है इस क्षण वह अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रही थी और उसमे पाप की लेस मात्र भी अनुभूति नही थी। □□

सेठ रामधन ऋण का आदेश प्राप्त करने के लिए वित्त निगम के अध्यक्ष सोमेश्वर के दफ्तर म गया, रामधन का सोमेश्वर से गहरा सम्ब ध है। जब कपडे का मिल लगाना चाहा तो सोमेश्वर ने पूरी सहायता की थी रामधन न सोमेश्वर की पत्नि के लिए भेंट स्वरूप लगभग 50 हजार की भेंटें दी थी सोमेश्वर ने इन्कार किया लेकिन रामधन ने कहा – बम्बई गया तो चीजे पस द आ गयी तो दो चीजें लाया एक भाभी के लिए एक घर के लिए।

सोमेश्वर ने तब मौन रहना ही उचित समझा। आज भी आदेश लेने वह ऋण लिपिक के पास सीधा गया था उसने कहा था 2500000) का ऋण है 1000) रुपये दीजिए।

सेठ रामधन वहां से सीधा सोमेश्वर के कमरे म गया, जब सोमेश्वर से सम्ब ध ह तो लिपिक, कार्यालय अधीक्षक या चपरासी को क्यो दे ? उसन आकर कहा – सर ऋण का चेक दिला दिया जाए।

सोमश्वर न घन्टी बजाई, चपरासी को कहा – मोहन बाबू को बुलाओ।

मोहन लिपिक है और चैक पुस्तक उसी के पास रहती है उसने कहा – सर ऋण का आदेश ढूंढ लूं ।

हां सेठ साहब सन्ध्या की गाडी से वापिस जा रहे हैं आज ही चैक दे देना ।

अभी आया सर । मोहन यह कहकर वापिस चला गया, थोडी देर में मोहन वापिस आया – सर ढूंढा तो आदेश नही मिला, प्रमचन्द कहीं बाहर गया है शायद सचिवालय, आदेश उसी के पास है ।

सोमेश्वर ने उसे जाने का इशारा किया वह सिर झुका कर सेठ रामधन की तरफ व्यग से भाव कर चला गया ।

सोमेश्वर ने कहा – आप कल ले लीजिए क्या करें आदेश के बिना चैक तयार नही हो सकता ।

सेठ रामधन ने कहा–कल सही और वह उठ कर चला गया ।

मिल का अतिथि गृह था जो 2000) रु मासिक किराए पर ले रखा था । मिल की तरफ से ही चौकीदार, नोकर, रसोईया थ, कार भी मिल का ही थी, जहा सेठ साहब या उनके कोई प्रतिनिधि या रिश्तेदार आते, ठहरते भोजन का व्यय अतिथि गृह सत्कार के नाम पडता था ।

सेठ वित्त निगम मे सीधे अतिथि गृह मे आय, सोफे पर सिर टेक कर घण्टी बजाई, नोकर आया और उसको चा-चाय बनाओ।

फिर टेलीफोन उठाया वित्त निगम के प्रबन्धक निदेशक से मिला दो फिर हमे और बात मे लीन हो गए। राज्य सरकार उद्योग को लगाने में खूब दे रही है ऋण की जिम्मेदारी किसी व्यक्ति विशेष की नहीं उद्योग की सम्पत्ति पर है। अनुदान 15 प्रतिशत, वह रकम तो अभी लेना है, ऋण का चैक लेने पर पूरे डेढ लाख खत्म हो गये लेकिन जो बिल बनाए वे 4 लाख से अधिक के या भवन निर्माण म डेढा पूर 15 लाख लेकिन जब यह अधिकारी लेते हैं तो मै लवार क्यों नहीं लेंगे ? जरूर लेंगे मुझे पहले ही दे देना चाहिए था, प्रत्यक्ष से रिश्ता

कद काम आयेगा, खैर कल मिल जाएगा इतने म टेलीफोन की घण्टी बजी– सेठ साहब ! हा मैं बोल रहा हू-रामधन। सेवामे आया था आप सचिवालय पधार गए, आज यदि सुविधा हो तो भोजन मेरे साथ, थोडी चर्चा भी हो जाएगी और इ सुवलेशन का नया कारखाना, उस योजना पर भी विचार हो जाएगा।

हा सर अवश्य ! मै तो आपका दास हू, चली आना, और मैं होटल म व्यवस्था क्यो करू ? अतिथि गृह का बेरा बडा सिद्धहस्त रसोईया है फिर मेरे जिले के भोज की विशेष व्यवस्था करा रहा हू। ठीक, धन्यवाद, बडी कृपा होगी, हा ठीक 8½ बज। हा सर कोई महिला मित्र तो नही है ? आज्ञा हो तो शोभना को निमन्त्रण दे दू यो मेरा कभी साबका नही पडता लेकिन सुनता हू बहुत मजी हुई महिला है। यस सर मेरे यहा 6 कमरा का अतिथि गृह है, छ ही कमरे वातानु कूलित, बस नौकरो के अलावा और कोई नही है।

नही सर, शोभना को बुलाना ही ठीक है दो मही–मैं क्षमा चाहता हू हसते हुए सर अब तो कब्र से पैर लटकाए बैठा हू थैंक यू सर। याद आया दिसम्बर म जिस निजी सचिव को आपक कमरे मे छोड आया था वही शोभना है–मुझे बताया कि आपके उससे गहरे सम्बन्ध हैं।

टेलीफोन रखा, फिर बटन दबाया शोभना जी से मिला दो। घण्टी आई आप सध्या को मेरे यहा निमन्त्रित हैं, अवश्य पधारें।

श्रीवास्तव साहब को आप जानती हैं वे पधार रहे हैं, बस या ही–

लेकिन क्या ? आज तो मैं वादा कर चुकी हू। हा वह मुझे मालूम है 2000) चार हजार, यह प्रश्न गौण है। आप दूसरा कार्यक्रम रद्द कर दें, ठीक 8 बजे आप टैक्सी से आ जायें उन्ही की आना स मैं कष्ट दे रहा हू।

टेलीफोन रखा मैनेजर को आदेश दिया, रसोईये को कहो कि जो सामान चाहे, आप से मगवा ले और बढिया से बढिया बना लेना।

क्या बताऊ ?

अपने जिले की विशेष प्लेटम–बस साहब कह दें कि ऐसी व्यवस्था कही नहीं मिली और मैनेजर साहब 2 बोतलें ऊ ची से ऊ ची, अग्रेजी शराब की आप जानते हैं शराब ब द होगी मिलती तो है ही।

हां सर व्यवस्था कर लू गा।

अच्छा

मैनेजर साहब इमुनेशन सम्ब धी फाइल यहां रख दें। श्रीवास्तव साहब यहां आ रहे है आज यहा ही विस्तार से बात कर लू गा और हा बाजार म 20 हजार तक के प ते को कोई कम्पनी हो तो अभी दे जाना।

सर अभी आया।

मैनेजर चला गया।

सेठ रामधन फिर अकेला रह गया वह फिर विचार त द्रा म लीन हो गया–मेरा क्या सब उद्योग क माथे, राज्य के बडे बडे अधिकारी–वह हसा लेकिन मैं क्यो सोचू ? काम तो करना है, कोई किस से राजी–शोभना को दो की जगह चार हजार दू गा बस उसे प्रसन्न कर लू गा तो श्रीवास्तव स जब चाह आदेश मिल जायगा। मुझे पहले मालूम होता तो मैं चेयरमैन साहब के साथ श्रीवास्तव साहब से भी सम्बन्ध बना लेता पर एक बार शोभना स किया फिर नहीं बेचारा अकेला विधुर है स्त्री भी तो चाहिए अभी क्या उम्र है 35 भी नहीं हा ।

मुझे क्या है नहीं बाबा नहीं लेकिन क्या बुरा है ? किसी अच्छी बयस्क नारी स सम्बन्ध हो जाए तो–

चाय आ गई नौकर बोला सर चाय तैयार है।

रामधन–मैनेजर साहब आए ?

नौकर–हा सर,

सेठ–सी ए साहब को बुला लो।

/

गौतमदर भारत प्रि टिंग प्रेस सागर—470003

पी ए आयी–देखा सुन्दर स्वस्थ लडकी है, उमर अभी चढाव पर है।

देखो कल का मेरा कार्यक्रम क्या है ?

हा सर, मुख्य मन्त्री से मिलना सुबह 11 बजे उद्योग मन्त्री से 1 बजे 2 बजे रेवे यु मिनिस्टर साहब

सेठ ने पी ए की तरफ देखा यह लो 500) रु हमारी तरफ से तुम्हारे भाईयो को दे देना, कल आप माग रही थी, मैं ध्यान मे था सुन नही सका, बस और चाहिये तो माग लेना, शम मत करना।

सर – आप की कृपा है, भाई राजकीय सेवा की परीक्षा मे बैठ रहा है फीस के देना है अच्छी जगह आ गया तो मा की आखो से आसू पोंछ सकू गी।

क्यो आसू पोचने की क्या बात है ?

सर मेरे पिता जी मिल के मनेजर थे, 5000) रुपये मासिक था अचानक दुघटनाग्रस्त हो गए उनका उसी स्थान पर देहान्त हो गया, बस हम दो भाई बहन हैं, म कमाती हू तो घर चल रहा है नही तो भूखे मरत।

उसका स्वर गीला था।

सेठ ने एक बार और उसकी तरफ देखा – फिर सीधे बैठकर बोले – मुझे पहले क्या नही कहा – तुम्हारे वेतन से घर कैसे चलता होगा – यह 500) रुपये तो वेतन खात नही तुम्हारे भाई को हमारी तरफ से। और जेब मे से एक हजार के नोट निकालकर यह लो अपनी मा को दे देना।

पी ए अनुग्रहित थी उसका रोम रोम सठ साहब के प्रति ऋणी था, नही सर, इतनी बडी रकम की जरूरत नही।

सेठ रामधन–बैठो चाय ले लो और देखो तुम अपने भाई के लिए एक सूट बनवालो और अपने लिए भी साडी ले लो रोज रोज एक साडी ही पहनती हो, रखो मैं एक बार दे चुका–बस मेरी तरफ से तुम्हारी मा को भेंट, यानी वह मेरी भाभी ही तो है।

सेठ ने दयाद्र होकर कहा—सुदर्शना जी, एक दफे अमीरी भोगने पर जब प्रकृति के हाथों गरीबी आती है तब बहुत पीड़ा होती है, यदि तुम्हारे पिता जी साधारण व्यक्ति होते तो इतना दुःख नहीं होता, इसके बाद तुम्हारा जीवन कहा ? तुम्हारे पिता जी 5000) रु माहवार खर्च करते थे और अब मात्र 600) रु मासिक।

सुदर्शना ने कहा—सब विधि विधान है, पूरे डेढ़ वर्ष तक हम कैसे रहे प्रभु जानता है मैं पढ़ती थी, माँ सिलाई कर हमारा गुजर करती थी बस आपने कृपा कर मुझे नौकरी दे दी तो मैं कुटुम्ब का सहारा बन गयी भाई बी ए कर चुका, विश्वविद्यालय में प्रथम रहा, प्रभु ने चाहा तो वह राजकीय सेवा में आ जाएगा।

सेठ रामधन—तुमने चाय नहीं पीयी, और देखो यह सब बातें तुम्हें मुझे पहले कहना चाहिये था और यदि वह राजकीय सेवा में न आ पाए बहुत बड़े बुद्धिमान लड़के भी रह जाते हैं, सिफारिश और रिश्वत तो हमारे जीवन का अंग बन गयी, गुणवत्ता का कौन पूछता है? तब मैं तुम्हारे भाई को इम्पोर्टर कम्पनी का काम सौंप दूंगा, थोड़ा काम पकड़ा मैनेजर बना दूंगा।

सुदर्शना मौन रही, उसने चाय की घूंट ली और एक ही घूंट में समाप्त कर दी शायद ठंडी हो गयी थी।

नोट टेबुल पर पड़े थे सेठ रामधन ने उसको सुदर्शना के हाथ में दे दिया सुदर्शना ने अब आना कानी नहीं की फिर उठी, सर 5 बज रहे हैं आज्ञा हो तो जाऊं आज 5 बजे मेरे मौसे का बारवां है, हम तीनों को जाना है।

ओह तुम कहां रहती हो ?

विश्वगंज में।

तुम गाड़ी ले जाओ नहीं तो पहुंच नहीं पाओगी, 5 तो यहीं बज रहे हैं।

घंटी बजाई, ड्राइवर आया, देखो बी ए साहब को इनके

घर जाकर इनकी माता जी के साथ मौसा के घर छोड़ माना ।

ड्राईवर ने सिर झुका कर स्वीकार किया ।

हाँ सुदशना जी, अपनी माता जी को मेरा नमस्ते कहिए, मुझे दुख है कि मैं आप स जानकारी नहीं ले पाया, जिस व्यक्ति स निजी सचिव का काम लेना हो, उसको काम चलाऊ नही मानना चाहिए उसके सुख दुख को जानकर सहायक होना चाहिए । निजी सचिव घर का भेदू रहता है, खर अब आप मुझ से कोई कष्ट न छुपाए ।

सुदशना– सर मैं चलू, ॰ ॰की कृपा के लिए धन्यवाद, आप मेरे पिता मैं आपकी बच्ची ।

सेठ बेबात हसा–यह तो है ही ।

सुदशना गयी सेठ रामधन हसा–पिता कहकर वह कौन सीमाए बाधना चाहती है ? ओह खैर मैं क्यो सोचू, अनाथ के लिए इसके सिवाय और क्या है ?

रामधन ने नौकर को बुलाया–मैनेजर साहब नही आए।

नही, सर !

सुदशना के चले जाने के बाद, रामधन ने घटी बजाई, नौकर आया–भाई एक चाय और मसाले की ।

गदन झुका कर नौकर चला गया।

वह शू य म झांकने लगा, मस्तिष्क मे विचार उठ रहे थे वह मिल मालिक, दूसरे बडे कारखाने का स्वामी, सरकारी पसा सुविधायें अनेक क्या बाकी है ? लेकिन सुदशना बुरी नहीं है आज उसे पहली बार शोभना के साथ सुदशना याद आई, शोभना बडी नोक झोक वाली है, वह हजारो कमा रही है जवान यार ढूढती है। मैं क्यो उसकी कामना करू ? सुदशना गरीब मा बाप की बेटी है, पसो से खरीदी जा सकती है, क्या वह कर इकार करेगी, लेकिन मेरे मन मे विचार आया ही क्यो ?

सम्पदा ने नशा चढ़ा दिया मैं साठ पार कर चुका, सुदशना 25 भी नहीं पार कर पाई होगी, बेचारी गाय, लेकिन सुदशना और

शोभना मे क्या अन्तर है ? एक बनकर रहती है दूसरी साधारण, बस एक ही तो अंतर है बाकी दिखने मे सुन्दरता-खर-मैं क्या सोचूं ?

6 बज रहे हैं।

रामधन उठा गरम पानी से नहाया, भोजन बनना प्रारम्भ हो गया था मैनेजर कार लेकर आ गया था।

फिर मैनेजर ने कहा-आप अभी हवाई जहाज से बम्बई चले जायें। अभी 5½ बज रहे है 8 बजे सिड्यूल टाइम है फोन कर लीजिए जगह तो मिल जाएगी, इन्सुलेशन की मशीनो का शीघ्र आदेश दे दो विश्वास ने आना ताकि बाकी ऋण शीघ्र मिल सके। अब मैं एक दिन की भी देर करना नहीं चाहता और मैनेजर साहब आप नये उद्योग पति की रुचि को जानते हो साला अनुभवहीन। कहते हैं वर्ष मे मिल चला दिया तो नाम हो गया मैं 6 महीने मे इन्सूलेशन फक्टरी को चला दूंगा।

राज का रुपया, सीमेंट लोहा कोयला तार बिजली और पानी और उसके साथ मशीन भी तब खड़ी करने मे क्या देर लगती है। ऐर तो सेठ चिमन लाल को नहीं जिसको लोहा सीमेन्ट और ऋण नहीं मिला। लगता है रामश्वर खत्री ने उद्योग विभाग के अधिकारियो को पटा लिया है-मैं अब पीछे क्यो रहूं ? हाँ-सेक्शन आफीसर श्री कपूर किस मिट्टी का बना है प्रभु जाने। कोई प्रलोभन उसको झुका नहीं सकता किसी ने उसकी टेबुल पर 10000) रु रख दिए तो उसने भ्रष्टाचार विरोधी विभाग को सौंप दिया।

बताइय मैनेजर साहब यह कपूर न तो कागज को रोकता है और न जल्दबाजी ही करता लेकिन उसको खुश करना होगा बताइय आप पर सम्मत है ?

क्यों नहीं? मैं अपना हथियार काम में लूंगा। ऐसा हथियार जिसने विश्वामित्र की हजारों वर्ष की तपस्या को नष्ट कर दिया तो यह कपूर

किस खेत की मूली है ? आना हो तो कल ही उपाय प्रारम्भ कर दू ।

नही मिस्टर शर्मा हमे तो अन्य अधिकारियो को वश मे करना है दाम स हो या चाम से बस ऋण लोहा, सीमेन्ट, मशीनरी समय स मिल जाए । जमीन तो कलक्टर देता है वहा मुश्किल नही पडेगी ।

शर्मा ने कहा—चुटकी बजाते आपकी सेवा म हाजिर कर दूँ दाम और चाम से कौन नही झुकता सही यह है कि एक आकर्षक युवा नारी तो रख लीजिए, वह सिद्धहस्त हो और व्यर्थ के सतीत्व का गर्व न करे ।

शर्मा की तरफ रामधन ने देखा—क्यो सुन्शना कमी रहेगी ? शर्मा ने मुह मोडकर कहा—नही सर उसम किसी तरह का सलीका नही है न गुण, न सौन्दर्य फिर उस को अपन पर अभिमान ।

तुम्हें कम मालूम ?

शर्मा-सर आदमी की पहचान जो है फिर कौन आकर्षण है उसम ?

तब क्या शोभना 5000) रुपये मासिक वेतन पर तैयार हो जायेगी ?

नही सर वह न्यूनतम 1000) रुपय रोज कमा लेती है 10 दिन तो दवयूफो को छकाती है और बकाया 20 दिन म वह बहुत बडी रकम इकट्ठा कर लेती है आप चिन्ता छोडिये कल ही मैं विज्ञापन देता हू, निजी सचिव के लिए । वेतन 1000) रु मासिक वम उस तैयार करना होगा म सोचता हू 100 म 90 तयार रहती है । खाना पीना कपडा और अधिक दनिक भत्त पर वह 100) रु रोज से ज्यादा नही होगा ।

सेठ ने कहा—ठीक इस वक्त हम खओ क नाक क चूना लगाना है । 6 महीन म इ सूलशन फक्ट्री चालू करना है काम फटाफट हो जाए और रही सुन्शना की बात, अनाथ है घर का सारा खर्चा वही चलाती है, और हम देत क्या हैं, 600) रु तो तुम एक और मगा लो लेकिन निजी सचिव के नाम स नही, बिजिनश एक्जीक्युटिव के नाम पर हा तो साहब आन वाले है तुम शोभना को आने का फोन करदो वह टेक्सी म आ जायगी ।

फोन मिलाया, कौन शोभना जी, आप अब आ जाए, 8 बजे भोजन प्रारम्भ हो जाएगा बहुत जल्दी होगी, नहीं साहब आ ही रहे हैं, अच्छा, धन्यवाद। सेठ साहब से कहा—वह आ ही रही है।

फिर सेठ जी विचार मे पड गए, यह मैनेजर बडा मक्कार लगता है सुन्दरता जैसी सुशील लडकी को बदतमीज बनाता है, खुद खाने की हामी यो ही राजी हो जाती ? पसे खच करता तो और क्या वह सुन्दर नहीं है ? उसकी आत्मा का दोष है गोरा रग, भरी जवानी नाक नक्शा मे क्या कमी है ? अपनी अपनी पसन्द ! म प्रताप को कसे विदा दू और म 60 पार कर चुका, मुझे कौन पसन्द करेगा। इतने म मैनेजिंग डाइरेक्टर साहब आ गए। अभी उम्र ढली नहीं है, खुशबू से महक रह है। सेठ साहब न अभिवादन किया। वे बोले—सेठ साहब आज यह मिजवानी क्या ? सेठ ने हाथ जोडकर कहा—मिजवानी क्या है ? घर पर हैं कहीं होटल मे नहीं, आपका पधारना कब हुआ ?

इतने म शोभना आ गई, तितली सी फुर्तीली, लेकिन मासल उभरे उरोज और बडी 2 आखें ठिगना नहीं, मध्यम कद, वह मुस्करा रही थी आयु 20–22 के लगभग होगी। श्री वास्तव साहब, सेठ जी न बुलाया तो आ गई, यो म किसी का निमन्त्रण स्वीकार नहीं करती।

सेठ जी ने घण्टी लगायी नौकर आया—टेबुल पर बोतलें लगा दो दो गिलास नमकीन सोडा।

श्री वास्तव और आप।

सेठ रामधन—सर मैंने आज तक नहीं छुआ।

श्रीवास्तव—अब आप बडे उद्योगपति हैं शोभना की सगत में बठ कर अछूते रहेंगे ?

नहीं सर म आपके साथ बैठता हू अच्छा सर बीयर ले लूगा। शराब बरदाश्त नहीं कर पाऊगा और सर बम्बई गया था।

क्या मालाब, सर सर पधारिए।

वे तीनो ड्रिंक के लिए बैठे, सेठ ने बीयर ली और दोनो ने शराब, फिर भाजन करने बैठे।

शोभना सेठ जी को अलग ले गयी पूरे 5 हजार जो और उसने 5000) के नोट थमा दिए।

भोजन किया, सेठ अपने शयन कक्ष मे गया और शोभना का हाथ पकडकर श्रीवास्तव अलग कमरे मे। हाथ झिडकते हुए शोभना ने कहा–म बाजारू नही हू, मेरी इज्जत है मैं बडो मे घूमती हू मेरी इज्जत इतनी सस्ती नही है।

श्रीवास्तव ने हाथ छोड दिया फिर कहा–माफ करना आइए और शोभना उनके साथ साथ कमरे मे गयी।

सेठ अपने कमर मे सोच रहा था–ठीक ही तो है मैं कल बडा उद्योगपति–पूर 30 करोड क उद्योग–किमन लगाए हैं, कभी कभी तो पीना होगा ही और ऋण अनुदान और न ही फक्ट्री के लिए सारा सामान–सीमेण्ट लोहा चद्दर आदि लकिन मैं क्यो कहू सुबह जाएगे तब हार पकडा दू गा–मैनेजर सब कुछ करता रहेगा।

कल सुशना आएगी उसे अपने कमरे म बुला लू गा पैसे से क्या नहीं खरीदा जाता–बेचारी गरीब अनाथ है।

1500)रु ले लिए, क्या एतराज करेगी, लकिन प्रारम्भ कैसे करू गा और डाट दिया तो, नही एक हजार कल और फिर बाद प्रारम्भ करू गा हाथ बढाऊ गा अचानक और माफी माग कर दुबारा हा, यह ठीक रहेगा वह मुस्करा गया। □

मुख्य मन्त्री के निवास स्थान पर अनौपचारिक म त्री मण्डल और सगठन के विशेष अधिकारियो की बठक बुलाई गयी। कार्यक्रम कुछ भी नही किया गया था लकिन दल के अन्दर और बाहर एक ही चर्चा थी, कि सब जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है राज्य मन्त्री हरिश्चन्द्र एक मात्र ईमानदार हैं और अधिकारियो म कई होगे लेकिन जिसका नाम सामने आया है वह डाक्टर महेश प्रकाश हैं वह प्रान्तीय सेवा का कर्मचारी है लेकिन उसका गुप्त प्रतिवेदन खराब कर दिया गया है और

आगे कहीं भी उन्नत वेतन प्रणाली म उसका स्थान नहीं आ रहा है। यही क्यों सचिवालय मे दो क्लर्क निगम म सक्शन अधिकारी तो शुद्ध ईमानदार है, एक यानदार है–इन सबकी तरक्की रुक गई है। उन पर उल्टे मुकदमे लगाए जा रहे हैं जो भ्रष्टाचार म लिप्त हैं उनका सम्मान बढ रहा है।

इस पर विशेष विवेचना की आवश्यकता है साथ मे जनता म यह विश्वास फल जाए कि म त्री मण्डल व कतिपय दलाल दूकान खोलकर बठे ह और उनक कहने क आधार पर ही म त्रीगण उनके अनुकूल आदेश दत हैं इसमे कहीं सच्चाई नहीं है केवल विपक्ष का निराश आरोप है।

मुख्य म त्री न कहा–व धुआं आप चचाए सुन रहे हैं हम हमारे कारनामे ठीक करना चाहिए हमारी जडे बाल की रत म हैं हल्की सी करनामी हमे राज्यसत्ता से च्युत कर सकती है लेकिन म नहीं मानता कि हमन भ्रष्टाचार का पनपन दिया और सदाचारी का दण्डित किया है मेरी मा यता है कि यह सब विपक्ष का आरोप है जिसम नाम मात्र की भी सच्चाई नहीं ह।

म एक एक कर आपक पास उनके आरोप रख रहा हू ये सब मैन अखबारों मे प्रकाशित सवाद मेरे पास आए प्रतिवेदन या गुप्तचर विभाग द्वारा प्रेषित पत्रों म पढे हैं।

वे हस सबसे पहल मैं अपन पर लग आरोपों को गिनाता हू –

(1) मैन सेठ हरिराम को उद्योग का लाइसेन्स दने के लिए 50 लाख रुपय रिश्वत क लिए हैं।

(2) नगर परिषद मे अनाधिकार भवन निर्माण मे स्वायत्त शासन म त्री के द्वारा *40 लाख* रुपये लिए हैं।

(3) अ य उद्योगपतियों से जो पसा लिया वह लगभग 4 करोड का है।

(4) म भाइ भतीजे वाद पनपा रहा हू।

अरघान (कविता संग्रह 1984)
सी 50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

(5) हमारे साथी म न्त्री हरिश्चन्द्र जी को उनकी ईमानदारी के लिए दण्डित कर मन्त्री मण्डल से निकाल रहा हू।

(6) जो भी अधिकारी ईमानदार हैं, उनको मैं दण्डित कर नौकरी स निलम्बित या मुक्त करा रहा हूँ ताकि म किसी ईमानदार अधिकारी या मन्त्री को अपने राज्य म नहीं रहने दू और फिर निडर होकर भ्रष्टाचार के दावानल को भडकाता रहू।

म उन सब अलग अलग शिकायतो पर नही आवू गा जो विभिन्न मन्त्रियो एव उच्च अधिकारियो के विरुद्ध लगाई गयी है क्योंकि वे इतनी अधिक हैं कि उन पर विचार करना प्रारम्भ करें तो महिनो निर्णय नही कर पायेंगे य शिकायतें भाई भतिजा वाद श्रमिको के काम पर लगाने के लिए मासिक वसूली शक्कर की काला बजारी एव खरीदी म घाटाला से सम्बन्ध रखती हैं।

मैं आपको विश्वास दिलाना चाहू गा कि मने किसी भी सेठ धनिक या अन्य से एक पैसा भी रिश्वत नही लिया और न किसी से सौदा किया। अध्यक्ष महोदय साक्षी हैं कि जब भी पार्टी के लिए रकम की आवश्यकता पडती है तब सीधी अध्यक्ष महोदय के यहा पहुच जाती है न कभी मौदा किया और न किसी काम करने की एवज ऐसा चन्दा लिया।

यह सब विपक्ष की बौखलाहट है, उन्हे मालम है कि वे तो अब कभी शासन मे आ ही नही सकते, एक बार मिलि सरकार म विभिन्न दलो क म त्री वन और भ्रष्टाचार फलाया बस उसी को कसौटी मानकर हम पर लाछन लगा रहे है मुझे मालूम है हमारे राज्य म त्री हरिश्चन्द्र जी ही नही अन्य सब साथी पक्के ईमानदार हैं हमको इनक झूठे प्रचार का पर्दाफास करना चाहिए। अन्यथा गोइबलस के कथनानुसार झूठ को दुहराओ वह सच्च बन जाता है हम उनके मोहिम को सफल नही होने देंगे।

दल का सचिव सतीश उठ खडा हुआ—माननीय अध्यक्ष, मुझे आज्ञा दें तो मैं कुछ खरी खरी बातें कहना चाहता हूं यह हमारी अन्दरूनी बैठक है इसमें जो भी कार्यवाही होगी उस पर किसी तरह की अनुशासनहीनता की कार्यवाही नहीं होगी।

अध्यक्ष ने कहा—भाई मुख्य मंत्री कई बातें कह चुके हैं, फिर भी आप कुछ कहना चाहते हैं तो मैं भला आपको क्यों रोकूं ?

सतीश 25 वर्ष का होगा वह अपने व्यवहार में कभी मीठा नहीं रहा, सदैव कडुवाहट बिखेर कर आगे बढ़ता है, उसने कहना शुरू किया—माननीय अध्यक्ष नेता महोदय एवं मंत्रीगण, मुझे गलत न समझा जाए लेकिन मौन रहना तो हमारे दल का अहित करना। आज हमारे सम्बन्ध में जो अभियोग लगाए जा रहे हैं वे इतने निंदनीय एवं भूमिल हैं कि उनका मुंह पर आना ही अश्लीलता एवं असभ्यता है, भ्रष्टाचार का कोई तरीका बाकी नहीं है जो काम में नहीं लिया जा रहा है।

यह हम पर आरोप है मैं नहीं कहता सब आरोप सही हों लेकिन मैं स्वयं परिचित हूं, ऐसे तथ्य हैं जो मुझे मेरे विश्वस्त साथियों द्वारा दिये गये हैं उनको मैं सही मानता हूं, ऐसे व्यक्ति हमारे दल के हिमायती हैं और वे झूठा आरोप कभी नहीं लगाएंगे।

मुख्य मंत्री महोदय, मुझे मालूम है संगठन को चलाना पडता है पंचायत के चुनाव से लेकर संसद का चुनाव भी बिना पैसे के नहीं लडा जा सकता और वह माननीय मन्त्री महोदय ही इकट्ठा करते हैं, यही नहीं आज चाय पीऊंगा वह भी इसी ली हुई रकम में से होगी लेकिन फिर भी क्या हम उस भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार नहीं हैं जो आज दावानल सा फलता जा रहा है मुझे नहीं मालूम हमारे साथी हरिश्चन्द्र ईमानदार क्यों कहलाए, थानेदार मुहम्मद खां का हर माह तबादला क्या होता है क्या गृह मंत्री ने कभी जांच की ? विभागीय क्लर्क जिनकी ईमानदारी को चुनौती नहीं दी जा सकती, वे निलम्बित क्यों हैं क्या मुख्य मंत्री महोदय ने उन अधिकारियों को ऐसी जगह डाल रखा है जहां वे जनता का कोई भला नहीं कर सकते और

उस जनपद का कवि हूं (कविता संग्रह 1981
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
रसायन, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

विभागीय सचिव या अधिकारी वे हैं जिनकी ईमानदारी एव सच्चाई शकास्प्रद है।

क्या म त्री महोदय ने कभी यह जानने का प्रयत्न किया कि अत्यन्त आवश्यक पत्र भी उनके विभाग से महीनो नही निकलते, जब तक उनको निकालन का प्रयत्न नही किया जाए। क्या म त्री महोदय के यहा अतिथियो की भीड़ नही लगी रहती, उनका दैनिक खच कहा से आता है ?

और सबसे बडी शिकायत तो यह है कि पैसे की जगह नारी की मोहिनी ने यह स्थान ले लिया है मुझे मालूम है कई अधिकारी एव युवा म त्रीगण महिलाओ से काम क्रीडा कर उनका काम कर देते हैं।

सब मौन सुन रहे थे, किसी ने बीच म प्रतिवाद करने का प्रयत्न नही किया वह कह रहा था — मैं उन व्यक्तियो के नाम गिनाऊ जो दलाली की दुकानें चला रहे हैं और उसम म त्रीगण का साझा है। मुझे एक महिला मिली जो रोकर कह रही थी कि उसका शीलव्रत भी भग किया गया लेकिन उसका तबादिला नही हुआ, क्योकि जिस स्थान पर तबादिला होना था वहाँ पहले से ही एक अन्य महिला का तबादला हो चुका था जो उससे ज्यादा स्वस्थ, युवा और सुन्दरी थी, तब निराश महिला को कहा गया कि वह प्रतीक्षा करे, नाम लिया गया मुख्य म त्रीजी के आदेश का। खैर पहले मैं मुख्य म त्रीजी के भाषण का उत्तर दूगा।

सेठ हरिरामजी से मुख्य म त्री ने जो रकम ली वह पार्टी के व्यय और चुनाव क लिए ली गई, इसमे कोई आपत्ति नही, पार्टी चलाने के लिए भी पैसा चाहिए और चुनाव के लिए भी, लेकिन पार्टी मे कुल 12 लाख जमा हुए जबकि सेठ ने 60 लाख रुपये दिए 48 लाख रुपये कहाँ गए ? आपने विधायको को कितना रुपया दिया क्या 48 लाख ही वितरण कर दिए ? और अच्छा होता लाइसेन्स दिलाने के लिए यह रिश्वत नही ली जाती।

भूमि वितरण की कहानी कभी छिपेगी हो नहीं राज्य को

करोडों की गानी हुई है मुख्य मन्त्री एव स्वायत्त शासन म त्री दोनों ने कितना रुपया लिया वे जाने ।

भाई भतीजावाद पनपाने की कहानी तो अब सहज हो गयी है मुख्य मन्त्री ने अपने सम्बन्धियों को उच्च स्थान पर बिठा दिया है जिससे अधिकारीगण क्षुब्ध हैं प्रशासन ढीला पड गया है वे काम नहीं कर पा रहे हैं।

मैं कहना चाहता हूँ कि हरिश्चन्द्रजी बड ईमानदार हैं और म ज त है और यदि भोजन किसी मित्र के यहां करते हैं तो उस दिन का भत्ता नहीं उठाते किसी का काम करते हैं तो एक पैसा नहीं लेते उनके पास जो विभाग थे जिनको अच्छे कहे जाते हैं चूंकि उनमें पैसा कमाने का साधन है उनसे छीन गये और उनको अर्थहीन विभाग सौंप गए उनसे दो बार इस्तीफा मांग लिया मुख्य मन्त्री ने अध्यक्ष महोदय ने बीच बचाव न किया होता तो वे कभी के मन्त्री पद से मुक्त हो जाते । ईमानदारी की जहां कीमत नहीं होती बेईमानी सिर चढ कर बोलती है ।

मुख्य मन्त्री जी इसको आप अनुशासनहीनता कहिए या मेरा कड़ा विरोध म अध्यक्ष महोदय को सूची प्रस्तुत कर रहा हूं इन अधिकारियों की ईमानदारी निर्विवाद है लेकिन चूंकि ये हमारी बेईमानी में साथ नहीं देते इसलिए उनको निलम्बित रखा जा रहा है ।

मैं कहना चाहूंगा चपरासी क्लर्क विभागीय अधिकारियों, मन्त्री विधायक – यदि समय रहते नहीं बदले तो जनता का लोकतन्त्र से विश्वास उठ जाएगा भ्रष्टाचार क्रांति की जनक है तब या तो उलट पुलट होगी या फिर फौजी शासन ।

कई मन्त्री उठ खड़े हुए – अध्यक्ष महोदय, सचिव महोदय के अभियोग निराधार हैं हमने किसी से कभी किसी काम का एक पैसा नहीं लिया – ये हम पर निराधार आरोप हैं, या तो सतीश बाबू इनको सिद्ध करें या फिर अध्यक्ष महोदय इनको झूठे आरोप लगाने के लिए दण्डित करें व सचिव पद से मुक्त करें। अध्यक्ष महोदय मौन बैठे थे।

उस जनपद का कवि हूँ (कविता संग्रह 1981
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
नगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सतीश फिर उठ खडा हुआ –यह मेरी आवाज नही है, यह आम आदमी की आवाज है। समाज मे जितनी अपराधवृत्ति पनप रही है राज्यादेश की अवहेलना करने की रुचि दृढ रही है उसके मूल मे एक ही भावना है कि आज राज्य का कोई काम बिना रिश्वत नही होता। यही नही राज्य के रुपये जमा कराना हो तो उसमे भी लेखा कार पैसे लेता है इसी प्रकार इ जीनियर ठेकेदारो से पैसे लेते है और विभागीय क्लर्क इ जीनियरो से हिस्सा ही नही बल्कि — उनके बिल बनाने के भी पैसे लेते हैं। सचिवालय मे प्रवेश पत्र बनाना है, वह रुपया प्रति व्यक्ति लेता है। विभाग मे प्रवेश करने का चपरासी 1) रुपया वसूलता है क्लर्क से कोई काम करवाना हो तो वह 10) रुपये से कम नही लेता और बडे अधिकारी भी लूटकर खा रहे है। हम और हमारे साथी ईमानदारी का भाषण देते है भ्रष्टाचार निवारण की कसम लेते है लेकिन सब भ्रष्टाचार मे लिप्त है।

मैं सब इसलिए कह रहा हू कि हम इसी तरह भ्रष्टाचार मे लिप्त रहे तो वह दिन दूर नही जब हम राजनेताओ के गले काटे जायेंगे और हिंसावृत्ति फैल जाएगी।

अनुशासनहीनता बढ जायेगी राज्य के नियमो का कोई पालन नही करेगा–और वह दौर प्रारम्भ हो गया है शिक्षित वर्ग निराश है हर स्तर पर परीक्षा के दौर से गुजरना पडता है मेडिकल मे भर्ती के लिए पी एम टी से गुजरना पडता है और उसके बाद डाक्टर बन जाता है तो नौकरी के लिए साक्षात्कार से गुजरना पडता है फिर पदोन्नति के प्रत्येक अवसर इसी तरह परीक्षा के द्वारा मिलते है और इन सब परीक्षा मे गुण की कोई कद्र नही केवल सिफारिश चाहिये।

अध्यक्ष महोदय! कुछ तो नियमों की खामियां हैं कुछ हमारा दोष है। हम ऐसी जटिल गुत्थी मे उलझ गए हैं कि उससे बाहर निकलने का कोई मार्ग नही है। जहा व्यक्ति का यह भरोसा हो जाता है कि वह गुण के आधार पर राज्य के कोई अधिकार प्राप्त नही कर सकता तो फिर भ्रष्ट तरीके अपनाने पडते है। आप सब परिचित हैं

इन सब हथकण्डों से, बस अध्यक्ष महोदय, मैं यह चेतावनी देना चाहता हूं कि यही क्रम चालू रहा तो फिर प्रशासन समाप्त हो जायेगा और फिर आगे क्या होगा उसे मैं न कहूं तो अच्छा है वक्त रहते हम नहीं चेते तो हम तो समाप्त होंगे ही हमारा राष्ट्र भी रसातल को जायेगा।

मंत्रीगण के नथूने फैल रहे थे—मुख्य मन्त्री मुंह नीचा किए बैठे थे और सतीश बोलता चला जा रहा था। उसने कहा—अध्यक्ष महोदय ईमानदार मात खा रहा है बेईमान गुलछर्रे उड़ा रहा है।

मुझे मुहम्मद खां थानेदार की दयनीय शक्ल नजर आ रही है, उसका हर दो महीने में तबादला होता था और फिर लैन हाजिर, और उसके बाद निलम्बन।

वह खरा आदमी था कभी किसी से पैसा लेना तो दूर दौरे पर जाता तो रोटी साथ ले जाता था किसी के घर पर भोजन नहीं करता था।

शिक्षा मंत्री उठे—मुझ पर यह अभियोग लगाया गया है कि मैं रिश्वत भी लेता हूं और महिला शिक्षिकाओं को भोगता भी हूं, अध्यक्ष महोदय, यह बहुत बड़ा आरोप है और दोनों निराधार हैं, हां मैंने दो शिक्षिकाओं के स्थानान्तरण के आदेश दिए हैं वे रोना राज्य की परम्परा निभाने के लिए किए थे।

पति पत्नि दोनों को एक स्थान पर रखा और इस मे कहीं पक्ष पात नहीं था। न रिश्वत थी और न महिलाओं के साथ अनुचित संबंध किया गया बल्कि ये दोनों महिलायें पूरे 4–4 साल से अनेक द्वार खट खटाती रही हैं। यदि परम्पराओं का निर्वाह करना मेरी त्रुटी है तो मैं इसे स्वीकार करता हूं और उसके पीछे जो भी कारण मुझ पर थोप जायें मैं उनकी क्या सफाई दे सकता हूं। हां रहा रिश्वत का प्रश्न—यह सर्वथा निराधार है, स्थानान्तरण में निम्न अधिकारियों में रिश्वत का बोल बाला था उसे मैंने समाप्त किया है गुण दोषों के आधार पर स्थानान्तरण किए हैं, किसी को दण्डित करने या सुविधा देने के लिए नहीं।

/

उस जनपद की ... बता ... 1981
अरण्यान (कविता संग्रह 1984)
... सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मैं सतीश जी से एक निवेदन करना चाहूंगा कि यदि उनके पास मेरी शिकायत हुई तो उससे मुझे परिचित कराते, यदि मैं उनको सन्तुष्ट नही करता तो फिर जैसा उचित समझते करते। मैं मुख्य मन्त्री महोदय से निवेदन करूंगा कि इस बात की जाच करली जाय और अगर मैं अपराधी सिद्ध होऊ तो मैं अपना अस्तीफा जो इसी वक्त दे रहा हू वे मन्जूर कर लें। सगठन के इस दायित्व से मैं इन्कार नही करता कि वह हमे पटरी पर रखें लेकिन इस कठिन जिम्मेदारी से भी वे नही बच सकते कि हमारे सही कदमो का स्वागत करें। जो काम करता है उसमे खामियां निकालना सहज है।

उद्योग मन्त्री ने खडे होकर एक क्रूर दृष्टि सचिव की तरफ डाली—मुख्य मन्त्री महोदय, मुझे कुछ भी नही कहना है ये अभियोग सब आप पर हैं और आप ही जिम्मेदार ठहरते हैं। यदि प्रशासन भ्रष्ट है तो मुख्य मन्त्री का दोष, इसलिए मैं अपना बचाव नही करूंगा क्योंकि उद्योग म रियायत देना मेरा काम नही है वह मन्त्रीमण्डल का निर्णय है उसी निर्णय के अनुसार उद्योगपतियों को लाइसेन्स दिए जाते हैं इसलिए मैं सचिव महोदय की स्पष्टवादिता के लिए तो बधाई देना हू लेकिन वे सुनी सुनाई बातो पर अपने ही दल को बदनाम कर रहे हैं।

भ्रष्टाचार को कोई आश्रय देना नही चाहता हमने हमारी सम्पत्ति का ब्यौरा मुख्य मन्त्री को दे रखा है वर्ष भर बाद हमारी सम्पत्ति को कुतवालें, यदि हमारी सम्पत्ति बढ गई तो हमे दण्डित करें।

खनिज मन्त्री उठ खडे हुए—यद्यपि मुझ पर कोई सीधा आरोप नहा है लेकिन जसा मन्य मन्त्री महोदयो ने अपने पर लगे आरोपो को गिनाया, मैं भी गिनाना चाहूंगा।

(1) खानों के पटटे देने में पक्षपात बरता गया।

(2) खनन करने वालो से रिश्वत ली गई।

(3) अनुचित अधाधिकार खनन करने वालों का मन छाड दिया और राज्य को 3½ करोड का नुकसान हुआ, म उसमे 25 लाख खा गया।

आरोप सख्या 1 बिल्कुल मोघम है और वह निराधार है नियम बने हैं उनके अनुकूल ही पटटे दिए गए हैं। आरोप नम्बर 2 भी मोघम है म यही कहना चाहूगा कि एक पसा भी किसी से रिश्वत नही ली गई।

आरोप नम्बर 3 के आधार पर यह सही है कि दण्डनीय रकम वसूली क आदेश का स्थगित किया गया—उससे राजकीय कोष का हानि हुई ह लेकिन मर प्रतिकूल निणय के बाद भी म त्री मण्डल न निणय लिया और दण्डनीय रकम छोडी गई, इसम मुझे किसी तरह की रकम नही दी गई देते भी क्यो ? मेरा प्रतिवेदन स्पष्ट है।

मुख्य म त्री आसन म उठे—मुझ पर जो आरोप लगाये गये हैं उनका विवरण म दे चुका हू। पार्टी का खर्चा लगभग 10 हजार रु महीने का है चुनाव आते हैं तब पार्टी के नुमाई दो को रकम देनी पडती है इसक अलावा मैने कभी एक पैसा भी मेरे अग नही लगाया—लेकिन म इसस मुक्ति नहा पाना चाहता पार्टी के साथी लोग ही जब शका करते हैं तब विपक्षी गाली निकाले तो क्या कर सकता हू इसलिए मैं अध्यक्ष महोदय से पुरजोर प्रार्थना करूगा कि वे इसकी पूर्णतया जाच करलें तब तक मैं उद्योग म त्री महोदय स निवदन करूगा कि वे पार्टी को खर्चे की जितनी जरूरत पड द।

मैं अपनी जिम्मदारी स नही बचना चाहता। आपने विश्वास कर मुझे यह पद सौपा है इस पद की गरिमा बनी रह यह आप भी चाहेंगे और म भी। मेरे तौर तरीके ऐस हो जिससे पार्टी की छवि धूमिल होती हो तो मैं चाहूगा मैं स्वय इस पद से अलग हट जाऊ, मैं उच्च कमान क सामन सारे तथ्य रख दू गा और इजाजत मागूगा कि मुझे पद मुक्त कर द पार्टी के साथियों का विश्वास ही खो दिया तो मैं मुख्य म त्री कम रह सकता हू ?

उसे अनिश्चय का बहू बता सग्रह 1981
धरपाल (कविता सग्रह 1984)
रनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मैं एक ही आश्वासन देना चाहता हू कि मैने कभी किसी से रिश्वत नही ली–हा यह जाच का विषय अवश्य है कि हमारे कर्मचारी अधिकारी खुले आम लूट मचा रहे हैं यह भी नही मानता हू कि ईमानदार कर्मचारी को तग किया जा रहा है, मै स्वय मुहम्मद खां थानेदार के मुकदमे से वाकिफ हू वह उच्च अधिकारियो को मासिक चौथ नही देता था। वह स्वय कठोर ईमानदार था तो दे कहा से ?

उसका हर साल तबादिला हुआ है और आखिर मे निलम्बन किया गया है। ऐसे दूसरे कर्मचारियो के मामने भी मेरे पास आए हैं जिन से ईमानदारी को धक्का लगा है। थानेदार का मैने बहाल कर दिया है कि उसका स्थानान्तरण मेरी आज्ञा के बिना नही किया जाय लेकिन इस आदेश के पहुचने से पूर्व ही थानेदार को नौकरी से हटा दिया गया है मै अपने साथियो से निवेदन करूगा कि ऐसे उदाहरण सामने आए तो वे उन्हे शीघ्रातिशीघ्र ठीक कर दे ताकि राज्य के प्रति लोगो का विश्वास बढे मैं सतीश बाबू को धन्यवाद दूगा कि उन्होने पार्टी की प्रतिष्ठा के लिए हमारे तथाकथित अवगुणो पर प्रकाश डाला–उन्होने जो कहा वह जनता मे प्रचलित तो है ही इसलिए मै मन्त्री मण्डल के साथियो से कहूगा कि इसे आगाही मानकर ऐसा कदम उठाए जिससे किसी प्रकार की शका की गुजाइश न रहे।

माननीय मुख्य मन्त्री एव अन्य मन्त्रीगण एव सगठन के साथीगण ! मैं आरोप सुनता आ रहा हू जो शासन करते है उनके विरुद्ध आरोप लगते है पक्षपात हो या न हो आपको निर्णय करना पडेगा कि किसी एक को आप रियायत दो वह एक एक कोई भी हो सकता है लेकिन पक्षपात का आरोप तो होगा ही।

मैने लम्बी-लम्बी तकरीरे सुनी, मुख्य मन्त्री एव अन्य मन्त्रीगण के उत्तर भी। आरोप निराधार हो सकते हैं, उनमे सच्चाई भी हो सकती है, मै इस पर कोई टिप्पणी नही करना चाहता लेकिन चुनाव के लिए खर्चा चाहिए पार्टी को चलाने के लिए भी यह सब चन्दे से तो आएगा नही किसी न किसी सेठ से लिया जाएगा और सेठ देता है तो कुछ रियायत भी चाहता है लेकिन ये सब बातें विवादास्पद हैं।

पैसा आता है बिना सौदे के आता है आप बिना पक्षपात किसी को सही रूप में रियायत दो और आपके उचित खर्चे के लिए वह आपको बिना सौदा किए धन दे तो मैं नहीं सोचता वह रिश्वत है और जो इसे रिश्वत मानते हैं मैं उनसे कहूंगा कि वे जितना जल्दी हो पार्टी से अलग हो जाएं आज की बैठक का खर्चा 2 हजार से कम नहीं है वह कहाँ से आया ? अब मैं सबसे प्रार्थना करूंगा कि आज कि बात हम तक सीमित रहे बाहर न जाए अन्यथा हमारी छवि धूमिल होगी माननीय सदस्यों द्वारा जो पार्टी का ध्यान आकर्षित किया गया उसके लिए मैं धन्यवाद देता हूं। पार्टी की छवि बनी रहे यही हमारा ध्येय है ।

□

महेन्द्रसिंह—चार व्यक्तियों को लेकर आवश्यक वस्तु वितरण मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र के पास पहुंचा तो हरिश्चन्द्र फाइलें निकालने में संलग्न था उसने महेन्द्रसिंह से क्षमा मांगते हुए बैठने के लिए कहा फिर उसके चारों साथियों की तरफ देखा और फिर फाइलें पढ़ने में लग गया। आधा घन्टा बीत गया तो महेन्द्रसिंह ने कहा—आज्ञा हो तो फिर आऊं ?

हरिश्चन्द्र—अच्छा है आप कल मिलें ! बहुत जरूरी काम हो तो आप फरमाइए।

महेन्द्रसिंह—है तो जरूरी काम, देखिए ये चारों मेरे क्षेत्र के नहीं हैं अलग अलग क्षेत्र के हैं, ये हैं सज्जनप्रसाद मोखमपुरा के सरपंच यह है अपने दल के कार्यकर्ता ब्लाक के अध्यक्ष और ये तो वितरक हैं शक्कर आदि के।

चारों ने हाथ जोड़कर मन्त्री महोदय से नमस्कार किया और दया की याचना करते हुए बोले—सर विरोधीगण ने हम झूठे मुकद्मे लगा कर फंसा दिया।

महेन्द्रसिंह ने कहा—यद्यपि सब अलग हैं लेकिन मुकदमा रसद विभाग से सम्बन्ध रखता है और मूलतः शक्कर वितरण में घोटाले से सम्बन्धित है। सरपंच साहब पर 100 बोरी शहर में ले जाकर बेचने का

उस जनपद का (संग्रह 1981)
प्रस्थान (कविता संग्रह 1984)
. . सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

अपराध है सचिव महोन्य पर 80 बोरी का काला बाजार करने का और ये दो वितरक हैं जिन पर चार चार माह के शक्कर के काट का घोटाला है। अक्सर सब अपने कार्यकर्ताओं के विरुद्ध है वे विरोधी कार्यकर्ता का वितरक मुकर्रिर करना चाहते हैं।

हरिश्चन्द्र–आप क्या चाहते हैं ?

महेन्द्रसिंह–मुकदमा उठने चाहिए अन्यथा हमारे दल का नाम लेने वाला कोई नहीं मिलेगा।

हरिश्चन्द्र–आप आवेदन पत्र दे दीजिए मैं जांच फिर से करा लेता हू, और मेरे भरोसे के उच्च अधिकारी को भेज देता हू।

महेन्द्रसिंह–अधिकारी अधिकारी सब एक हैं कमिश्नर तक कार्यवाही हो गयी है वे भी यही मानते हैं, अब फौजदारी मुकदमा लगाया जा रहा है लाइसेन्स तो जप्त हो ही गए हैं।

हरिश्चन्द्र–तो बिना सबूत के कार्यवाही हो गयी है ?

महेन्द्रसिंह–जनाब, होना तो यही है उनसे सब जगह पैसे मांगे गए कमिश्नर तक ने दे देते तो आप तक आने की जरूरत नही पड़ती, ये चारों आवेदन पत्र तैयार हैं बस आयन्दा महीने का कोटा इनको मार्फत वितरण नहीं हुआ तो हमारे कार्यकर्ता की पीठ उठ जाएगी।

हरिश्चन्द्र–आप कल तक ठहरिए, मैं आज ही कमिश्नर को फोन कर मिसलें मगा लू और उनको देखने के बाद ही आदेश दे पाऊंगा–आप जानते हैं मेरी भी सीमाए हैं, ऐसा प्रावधान है और उसकी पालना न करू तो सारी व्यवस्था ठप्प हो जाएगी।

महेन्द्रसिंह–आप मन्त्री हैं और आप चाहें तो काले का गोरा कर सकते हैं लेकिन वह मैं नहीं चाहता। मन तो करता है कि जहां भ्रष्टाचार, पक्षपात और भाई भतीजे वाद का बोलबाला है वहां न्याय की सीमाएं गायब हो जाती हैं सिद्धान्तिक मर्यादाएं मिट जाती हैं, खैर मैं आप तक आ गया हू एक आशा तो रखूंगा कि आप न्याय दे पाएं, यदि नहीं दे पाए तो फिर इस पृथ्वी पर प्रेत नाचेंगे। मनुष्य का

जीना दूभर हो जाएगा सुरक्षा की कोई जिम्मेदारी नहीं रहेगी, बताइए मैं वापस कब आऊं ?

हरिश्चन्द्र—बस एक सप्ताह के अन्दर ही अन्दर ही, आयन्दा शनिवार को और प्रभू ने चाहा तो उस दिन मैं कोशिश करूंगा कि न्याय की प्रतिष्ठा हो।

महेन्द्रसिंह व्यंग की हंसी हंसा—तो शनिवार—और वह चलता बना—गांव में पहुंचा तो फिर पता लगा कि शक्कर की बोरियां मंत्री महोदय के बताने पर पहुंच गया और फर्जी निशानियां लगाकर वितरण बताया गया। । कोरी सरपंच ने, एक दुकान दार ने, और एक रसद विभाग के अधिकारी ने बांट खाया गेहूं का भी यही हाल रहा—अच्छा गेहूं बंट गया और लाल ज्वार का वितरण कर दिया गया।

महेन्द्रसिंह ने गांव वालों को इकट्ठा किया और कहा—जितनी ज्वार मिली है उस गांव के चौपाल पर डाल दीजिए मैं अभी मन्त्री महोदय को बताता हूं।

दूसरे दिन दीवान साहब आए सड़ी गली ज्वार को देखकर मंत्री महोदय स्तब्ध रह। सरपंच वितरण इंसपेक्टर को बुलाया और क्रोध में आकर कहा—यह वितरण किया है ?

वितरक ने रजिस्टर खोलकर बताया कि ज्वार वितरण हुई ही नहीं, गेहूं वितरण हुआ है।

महेन्द्रसिंह—क्रोध में भभक उठा—अरे कल मेरे सामने ज्वार बांटी जा रही थी—मैं कैसे विश्वास करूं आपकी या अपनी आंखों से

गांव वाले बठे थ, सब स्तब्ध कोई बोल नहीं रहा था, मूल सिंह ने उठकर कहा—बताइए सच्च क्या है ? आपको ज्वार बांटी गई या गेहूं।

सब एक दूसरे की तरफ झांकने लगे—कोई जवाब देते नहीं दिखाई दिया।

महेन्द्रसिंह ने कहा—आप सब मौन हैं भय से या सच्चाई से ? इतने में ह्रदयन रैगर उठा—मैं कहता हूं ज्वार बांटी गई थी मैं ही नहीं सारा गांव मेरा सामने ले रहा था।

उस बिनपेर का काव (कविता संग्रह 1981)
अरधान (कविता संग्रह 1984)
न, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

इंसपेक्टर साहब बोले आप तो राज के नौकर हैं ?

इंसपेक्टर सटपटा गया—म तो था ही नही।

गाव वाले चिल्लाए यह झूठ है यह य खुद बटान म थे, जब राज ने हमारे लिए गेहू भेजा तो जानवरो को खिलान की ज्वार क्यो बाटी गई ?

एक आदमी न कहा—सब की मिली भगत है, इंसपेक्टर महाजन से मिल गया है आप हर घर की तलाशी ले लें सब के यहा आपको ज्वार मिलेगी एक माह का बटा हुआ गेहू फिर कहा गया ? दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा, कौन सच्चा कौन झूठा पता लग जाएगा।

महेंद्रसिंह — सारे कुए मे भाग पडी है म त्री के यहाँ शादी म गेहू गया—शक्कर भी वहीं गई शेर के जबाडे कौन पकडे ? सब चोर हैं तो फिर चोर का पता कौन लगाएगा।

शनिवार मे अभी दो दिन बाकी है।

वह पडौस के गाव म गया वहा भी शक्कर वितरण नही की गई गहू की जगह ज्वार बाटी गयी।

मनोहर लाल के यहा चोरी हो गई थी, चार दिन से वह पुलिस थाने म बैठा था लेकिन रिपोर्ट दज नही हुई।

मनोहर लाल ने कहा — म लुट गया घर मे चुप चुप चोरी चली गयी, मरे पास अब कुछ नही बचा — म चोरो को पहचानता हू इसी गाव के सोहनीया, भौम्या और रामा हैं, माल भी अभी नहीं बिका होगा आप दज कर कायवाही शुरू करें तो माल मिल जाएगा।

मूल सिंह न थानेदार से पूछा — आप इनकी रिपोर्ट दज क्यो नही कर रहे हैं ?

एक रिपोर्ट हमारे पास पहले से दज हो गयी है कि सोहन के यहा चोरी हो गयी उसकी शका भी मनोहर लाल पर है।

तुम्हे क्या नुकसान है अगर यह भी दज कर लो, सच्चाई सामने आ जाएगी।

थानेदार ने कुर्सी पर झूलते हुए कहा — आप कौन हैं ? अपना रास्ता लीजिए।

नेता मूल सिंह की है। उसने थानेदार, तहसीलदार इन्सपेक्टर, के यहा जनता को भडका कर धावा बोला, पर उनके घर से कुछ नही निकला।

म श्री मण्डल मिला उसने विद्रोहियो के साथ सख्ती से व्यवहार करने का निर्णय लिया। राज्य कमजोर हाथो मे नही टिक सकता हुकुमत पर खौफ नही आना चाहिए।

इसके साथ सारे गाव मे पुलिस ने कार्यवाही प्रारम्भ की, घर घर की तलाशी ली गई। कही शराब की खाली बोतलें मिली कही अफीम का टुकडा तो कही शराब निकालने का य त्र।

सब को अलग अलग बिठाकर मारपीट की गई उनको कुक्कडे बनाए गए, पीठ पर मन मन का पत्थर रखा टट्टी के द्वार म लकडी ठोसी गई घर की महिलाओ को बुलाया उनके रिश्तेदार और पतियो के सम्मुख बलात्कार किया गया।

फिर बीच बचाव हुआ गाव के लोगो से 2000) रुपये रिश्वत ली गई शराब की बोतलें फेंकी गइ शराब बनाने के य त्र को छिपाया गया और सारे गाव के विरुद्ध रिश्वत खाकर अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

मूल सिंह जब यह शिकायत लेकर पहुचा तो म त्री महोदय ने फाइल खोलकर बताया कि कही भी वितरण मे गडबडी नही हुई, और जो अफवाह फैली है वह गलत है। सभी शिकायत अपनी जगह रही। लोगो म निराशा व्याप्त गयी जो न्याय लेने के गए थे वह न्याय तो उनको नही मिला उसके स्थान पर दड मिला घर की स्त्रियो के साथ बलात्कार रिश्वत खोरी और मारपीट जम कर युग फिर स आ गया हो।

महेन्द्रसिंह ने मन्त्री से मिलकर आदेश लिए कि मूल सिंह विद्रोह फैला रहा है। इसलिए उसका आतक निस्तन किया जाए। महेन्द्रसिंह न इनसे 80 हजार रुपये वसूल किए थे। महेन्द्रसिंह पार्टी का कार्यकर्ता है। क्या उसके रहने विरोधी दल को महत्व

तबादले हो रहे हैं सरकार से काम निकालने के लिए पैसे बटोरे जा रहे हैं, उद्योग लगाना हो तो उस तरह की बडी रिश्वत चलती है। नये नये प्रकरण बन रहे है राज्य के उपक्रम घाटे मे चल रहे हैं और उन्ही उपक्रमो को नये उद्यमियो को देकर राज्य अधिकारी रिश्वत खा रहे है। राज्य ने कमाया, विभाग की कीर्ति गाई जा रही है और मुनाफे मे से बडा हिस्सा स्वयम् उद्यमी हडप जाता है बकाया अधिकारी बाट खाते हैं तथा बचा हुआ हिस्से के अनुसार बाँट लिया जाता है।

वह चाहे महेन्द्रसिंह हो, इन्द्रसिंह हो सुजानमल हो या रामधन सब राज्य को दूह रहे हैं और अधिक से अधिक सकते या काले बाजारी से कमा खा रहे हैं। भूले भटके ईमानदार रह जाए तो उसका टिकना मुश्किल हो जाता है। कल ही एक किस्सा अखबारो मे आया था ईमानदार अधिकारी को इसलिए निलम्बित कर दिया कि उसने मन्त्री महोदय के अनुचित व अनियमित आदेश की पालना करने से इन्कार कर दिया था। कई ईमानदार धर्मभीरु अधिकारी 12–12 वर्ष से निलम्बित मे सड रहे हैं उनके विरुद्ध न दण्डित करने की कार्यवाही होती है न छोडने की।

राज्य के प्रति घृणा बढती जा रही है नियम के अनुसार कोई चलने को तैयार नही हैं परिस्थितियां इतनी विपरीत हो गई कि उनको मानते हुए सब गुणो का लोप होता जा रहा है दुर्जन सज्जन गिने जा रहे है।

सहकारी समितियां भ्रष्टाचार के अड्डे बन रही हैं। सचिव, अधिकारी रुपया फर्जी दस्तखत कर उठाते है स्वयम् रख लेते है अरबो रुपये वसूली के योग्य नही रहे समय आते मुकदमे उठ जाते हैं और वे ही भ्रष्टाचारी कर्मचारी उच्चपद पर आसीन होते है उनकी आरती उतारी जाती है उनकी पूजा की जाती है।

कोई विभाग नही जहां भ्रष्टाचार का बोल बाला न हो, आज ऐसे मुकदमे चल रहे हैं जिनमे भ्रष्ट अपराधी छूटा हुआ है और उन पर मुकदमा लगाया जा रहा है जिनका भ्रष्टाचार मे कोई हाथ नही होता

एक व्यक्ति उठा–आपके शिक्षा मन्त्री जी शिक्षिकाओं का अपने हरम में रखकर उनका तबादला, तरक्की करते हैं, तीन के नाम गिना सकता हूं।

मुख्य मन्त्री ने उसकी आवाज नहीं सुनी वे बोलते रहे–राज्य का काम बड़ी शान्ति से चल रहा है कहीं भी रुकावट नहीं है कतिपय व्यक्ति हो सकते हैं जिन्होंने भ्रष्टाचार किया हो मैं दावे से कहता हूं कि मन्त्री मण्डल सचिव महोदय एवं अधिकारीगण ने कहीं भी भ्रष्टाचार नहीं किया मैं शिक्षा मन्त्री पर लगे आरोप का उत्तर क्या दूं, उनमें से एक उनकी मौसी बहन है एक भतीजी है लेकिन आपको अधिकार है कि आप जो चाहो सो कहो अब मैं कुछ आंकड़े आपके सामने रख रहा हूं जो इस बात के सबूत हैं कि राज्य का चहुंमुखी विकास मेरे शासन काल में हुआ

12 बड़े उद्योग लगे जिनमें लगभग 2 अरब की पूंजी का नियोजन हुआ है 42 मध्यम लगे है जिनमें 50 करोड़ रुपए लगे, लगभग 400 लघु उद्योगों का पंजीकरण हुआ है। आप राज्य के किसी कोने में चले जाइये आपको उद्योग ही उद्योग नजर आएंगे।

मैंने जब शासन सम्भाला राज्य में 6 विश्वविद्यालय 4 कालेज 110 उ माध्यमिक विद्यालय थे मैं प्राथमिक विद्यालयों के आंकड़े नहीं दूंगा, घर-2, गांव 2 में प्राथमिक विद्यालय चल रहे हैं और इन दो वर्षों में 10 नए कालेज खोले गए जिसमें 2 इंजीनियरिंग कालेज और 6 पोलीटेक्निक संस्थान हैं।

अस्पताल जहां 25 हजार की बस्ती पर एक था आज 10 हजार पर एक औषधालय खुला है इन दो वर्षों में दान दाताओं ने काफी अच्छे भवन बनाए हैं मैं उनको बधाई देता हूं राज्य के साधन सीमित हैं। और दानवीरों के बल पर ही संस्थाएं चल सकती हैं।

मेरे पूर्व 48 हजार एकड़ भूमि सींचित थी। इन दो वर्षों में मध्यम एवं लघु सिंचाई योजनाएं चालू कर एक लाख दस हजार एकड़ भूमि पर पानी पहुंचाया। हर गांव में चले जाइए धरती लह-लहा रही है। कुटीर उद्योगों से गांव में सम्पन्नता का संचार हुआ है सड़क

निर्माण मे राज्य अ य राज्यो की तुलना मे सबसे आगे रहा है प्रत्येक तहसील मुख्य स जुड गई है ।

इन दो वर्षों म 75 प्रतिशत गावो का विद्युतिकरण किया गया, जहा कुव स सिचाई थी, उन गावो को बिजली की प्राथमिकता दी गई।

म ने से कह सकता हू कि इन दो वर्षों म सहकारी बंको के द्वारा जो ऋण वितरण किया गया वह आज तक कभी नही हुआ, गावो म पक्के मकानो की सख्या बढ़ी है हर सिर को छप्पर दिया गया है और उसके निर्माण क लिए रुपया भी लगा है। कुछ बन ह, कुछ बनाए जा रहे हैं इतन विशाल पमान पर विकास काय प्रारम्भ होता ह बडा लाखो व्यक्ति काम करते हैं उनमे कुछ भ्रष्टाचार कर सकते हैं, आप कुछ न करिए कोई आपको कुछ नही कहगा, काम होगा वहा लोग उसमे भलाई क साथ बुराई भी देखेंग ।

हा म यह भी सुन रहा हू कि दलालो की सख्या बढती जा रही ह । ये दलाल हमने पदा नही किए जनता मे स ही बन ह । हमारे पास व निस्वाथ सेवा के नाम पर गरीब दीन व्यक्तियो की सहायता क लिए आते हैं यदि उन्होने कुछ रकम ली है तो मैं इसकी व्यवस्था करू गा कि कोइ किसी से दलाली लेकर काय न कराए। मैंने विज्ञापना द्वारा यह सूचना कराई ह कि जिसे काम कराना हो वे सीधे आए—मुझे आप एक व्यक्ति का नाम गिनाओ जो सीधा मेरे पास या मरे साथी के पास नही पहुच पाया व किसी न किसी का सहारा लेना पडा । तरक्की क नियम बन ह किसी की अनुचित तरक्की हो गई हो तो जिन पर उनका विपरीत प्रभाव पडता ह वे चुनौती देत ह रहा तबादिला—मैं इन्कार नही करता कि प्रारम्भिक दो माह मे कुछ तबादले हुए ह उसके बाद तबादलो पर रोक लगा दी गई है। केवल मई जून म तबादले किए जाते ह ।

मैं आप को बधाई देता हू कि आपने आवाज उठाई, लोकतन्त्र म यह आवाज ही कारगर होता ह और आज मुझे अपने सब साथियो के साथ आपके सामन आने का मौका मिला और भविष्य मे मैंने स्वय

उस जनपद का कवि हू (कविता सग्रह 1981)
अरमान (कविता स ग्रह 1934)
, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

यह नियम बना लिया है कि हर तीसरे महीने मे अपने साथियो के साथ आपके सामने आऊं मेरी बात आप से कहूं और आप की बात मैं सुनूं ।

यो मैंने नियम बना रखा है कि जो व्यक्ति राजधानी मे काम लेकर आते है और यदि उनका तीन दिन में काम नही होता तो सचिव उन्हे मेरे पास रखते हैं और मैं तत्काल उसका निपटारा करने की कोशिश करता हू । दो व्यक्तियो का झगडा मेरा विषय नही वह अदालत का है और मैंने अदालतो को आदेश दे दिए हैं कि न्याय देने मे न देरी करें न पक्षपात हो । न्याय शीघ्र सस्ता और निष्पक्ष रहा तो राज्य की निष्पक्षता पर किसी तरह आच नही आ सकती अन्त मे मैं आप से यही निवेदन करता हू कि जो चलता है वह गिरता है जो चलता ही नहीं वह क्या गिरेगा ? आप को अधिकार है कि आप मेरा मार्ग दर्शन करते रहे मेरी और मेरे साथियो की त्रुटियां बताते रहें ताकि हम उन त्रुटियो को न दोहराएं और भविष्य मे अधिक अच्छा काम कर सकें।

तालियो की गडगडाहट व बीच बीच मे नारे आए—मुख्य मन्त्री जिन्दाबाद । इसके बाद उद्योग मन्त्री ने अपने सक्षिप्त भाषण मे कहा-बन्धुओ राज्य का विकास हमारा जिम्मा है खेती और उद्योग ही केवल राज्य को समृद्धशाली बना सकते हैं । उन सब उद्योगो की नामावली मैं नहीं पेश करूगा लेकिन आपको यह जरूर कहूगा कि कुल उद्योगो में इस समय लगभग 2 लाख श्रमिक काम कर रहे है इसमे एक बात और ध्यान मे रखी गई कि उद्योग बडे शहरो मे न लगें, छोटे गावो मे लगें ताकि आबादी की नई समस्या उत्पन्न न हो, उसके साथ अनेक समस्यायें अभी है सफाई, सडकें, परिवहन, जिनको हम भूलते जा रहे है और तेजी से शहरो को बढाते जा रहे है। जहा झुग्गी झोपडी की नई समस्यायें उभर आ रही है, भाग्य से हमारा राज्य इनसे बचा है ।

शिक्षा मन्त्री-मुझ पर कुछ आरोप हैं, उनका उत्तर तो दिया जा चुका है, मैं इसी को फिर विस्तार के साथ नहीं कहूगा । एक बात

अवश्य तय करली कि शिक्षकों के तबादिले नई जून मे हाग और जहा तक सम्भव हो उनको उनकी तहसील-जिले से दूर नहीं हटाया जाएगा।

कोई बीच म बोला—गाव से नहीं, चाम मे तबादले। म त्री महोदय ने कहा—यदि आप को इस पर विश्वास है तो म उसे तोड़ना नहीं चाहूगा और न इसका उत्तर ही ढूढ पाऊगा यह ऐसी बात है जिसे गाली कहते हैं मैं गाली का उत्तर क्या दू ?

मूलसिंह—माना हा तो मैं कुछ बोलू ।

सयोजक महोदय न इसी बीच बठक समाप्त करने की घोषणा कर दी मुख्य म त्री ने महेन्द्रसिंह को अपने पास बुलाया और अपनी गाडी मे साथ बिठा कर ले गए जनता म अनेक चर्चाए चल रही थी—मुख्य म त्री विकास की बात कर भ्रष्टाचार को पी गए।

दूसरे ने कहा—हम सब बवकूफ बने रहे किसी की हिम्मत नहीं पडी कि चुनौती देत।

तीसरे ने कहा—अ खिर मुख्य म त्री ठहरा हम सबको बवकूफ बनाकर चला गया। साहन लाल वर्मा न कहा—शिक्षा म त्री भूठ बोल गए कौन उसकी बहिन है पासवान रख रखी है तबादले स पहले शिक्षा म त्री उसे जानते भी नहीं थ चाम को पाकर वे परिचित हुए साला भडवा कहीं का—इसको राज्य से निकालना चाहिए, रिश्वत खाकर खुद भ्रष्ट होगा चाम खरीद कर सारे समाज को भ्रष्ट करेगा।

एक उचक्का—अब बोलने से क्या लाभ ? जब मुख्य म त्री ने भाषण समाप्त किया तो सबने जिन्दाबाद के नारे लगाए चला गया तो गाली निकाल रहे हैं।

एक नागरिक ने कहा देखिए जनाब जो वे कह उनके पास आंकडे हैं और आंकडो से जो कहना है वह सही मालूम होता है लेकिन आप भ्रष्टाचार के आराप लगाओ तो क्या कहोगे—4 करोड 10 करोड 10 अरब और आपके पास कोई सबूत नहीं है। राज्य शक्तिशाली है उसके पास आकडे हैं और भ्रष्टाचार भी वही करते हैं, देना वह है जिसे

उस अनपढ का बहू (कथा संग्रह 1981)
अरमान (कविता संग्रह 1984)
नगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

काम कराना होता है कारखाना लगते हैं उसम म भी लाखों खाते हैं व्यापार के परिमिट मिलने मे हजारों और रसद की बिक्री मे हजारों सब का हिस्सा बंधा हुआ है सब मिलकर खाते हैं न भेद है और न दुराव ही।

एक धोती कुर्ते म खड़ा सब सुन रहा था अरे आवडो की जरूरत है पैसे वहा से आते हैं खुद खर्च करते है विधायक बनने म लाखो खर्च होते है। अपनी अपनी आवाज के अनुसार पैसे इकट्ठे करते हैं और उसका वापस खजाना लेते हैं। सीधे मुख कौन बात करता है, इसीलिए सत्ताधारी लाखो खर्च करता है और सत्ता हीन सकडो से आगे नही बढ सकता।

एक बोला–लेकिन वोट खरीदे नही जाते।

दूसरा बोला–यह झूठ है जहा 70 प्रतिशत अनपढ हो वहा चाहे नकद देकर आप वोट न खरीदें, राहत पर काम करने वाला को सत्तापक्ष पकड कर ले जाता है। कानून से छुट्टी होती लेकिन यह बरगलाया जाता है कि आप को वेतन बिना काम मिलेगा, तुम वोट दे, आओ यह खरीदी तो होनी है कराया पैसे देकर खरीदी नहीं की जा सकती लेकिन चुनाव का खर्चा इतना भारी होता है कि सत्ता पक्ष सिवाय किसी का भरोसा नही होता कि वह जीत जाए, सत्तापक्ष से यदि जनता नाराज हो जाए तो विपक्ष जीत जाता है।

लेकिन आजकल जो आपाधापी चल रही है वह इतनी भयकर है कि वह किसी प्रकार समाप्त न की गई तो हमारा सत्यानाश हो जाएगा हम बिखर जाएगे एक सज्जन ने छडी हिलाते हुए कहा।

एक सिगरेट की फूक खीचकर बोला–देखिए, राज करते हैं, शासन उनके हाथ म है, पृथ्वी का कोई सुख ऐसा नही जो उनको उपलब्ध न हो ये चाहे तो सोने के महल बनालें य चाहे गगन चुम्बी अट्टालिकाओ मे रह बस भाषण देते हैं तब य नेता बन जाते हैं वरना तो वे ऐसे प्राणी हैं जो इस पृथ्वी पर नही चलते जिनका मार्ग अलग व जिनकी दिशा अलग है।

एक आदमी बड़े जोर से चिल्लाया–माला कराड़ा को "वार गया और हमारे बीच ईमानदार बनकर चला गया, मेरा बस चले तो मैं इन सब मन्त्रियों को खड़ा कर एक साथ गोली मार कर समाप्त कर दूं ढोंगी व्यभिचारी। सारे डाक बंगले वेश्यालय बन रहे हैं सब विश्राम गृह इनके पापों का पुण्याचरण हो गए, जहां इनको हर बुरा काम करने की छूट है।

धीरे धीरे लोग बिखर गए रात के 11 बज रहे थे, चारों तरफ से कुत्ते भौंक रहे थे, पास की गली से किसी के रुदन की आवाज आ रही थी लेकिन कोई उधर नहीं गया □

महेन्द्रसिंह ने जब अखबार खोला तो मुख पृष्ठ पर एक सनसनी खेज खबर थी सूर्यास्त से पूर्व–जब दो जोड़े घूमने के लिए निकले आम सड़क पर आदमियों का आवागमन था, सैकड़ों आदमी इधर उधर जा रहे थे 2 गाड़ियां आईं और उन्होंने दोनों महिलाओं को पकड़ कर गाड़ी में डाल कर रवाना हुए–सब स्तब्ध देखते रह गए, आतंक छा गया–सड़क, गली घर सब जगह यह खबर बिजली की तरह फैल गई सिनेमा घर बन्द हो गए लोग जहां जगह मिली वहीं छिप गए और धीरे धीरे अपने घरों की तरफ रवाना हुए–पुलिस देखती रह गई।

मुख्य मन्त्री के पास जब खबर पहुंची तो वह फौरन मौके पर पहुंचे, लेकिन उससे क्या लाभ था उड़ाकू तो खामोश हो गए थे दोनों आदमियों की छाती में छुरे भोंके हुए थे उनका बयान होने से पूर्व ही अस्पताल ले जाते वक्त वे मर चुके थे।

पता लगा कि दोनों व्यक्ति सम्भ्रान्त कुटुम्ब के थे और वहीं के रहने वाले थे।

महेन्द्रसिंह ने मुख्य मन्त्री की दिलचस्पी को मात्र एक ढकोसला माना हालात ऐसे हो गए हैं कि कहीं भी खैर नहीं है। महेन्द्रसिंह की बहन जब अपने सुसराल से ट्रेन से आ रही थी तब डाकुओं ने मिल कर उसका लूटा ही नहीं उसको उठाकर भी ले गए और 4 दिन बाद

का हूं (कविता संग्रह 1981)
अरचना (कविता संग्रह 1984)
, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

छोडा । बडी अजीब परिस्थिति थी । उसकी बहन भगकर महे द्रसिंह क पास आयी । महे द्रसिंह का जसे लकवा मार गया हो वह मात्र दलाल है आज लाली कर क्या पाएगा,उसकी बहन का सवस्व लुट गया । ट्रेन की इस डकती मे लगभग 100 कुटुम्ब लूट गए, लाखो का माल और अनेको नारियो का शील भग किया गया ।

जब महे द्रसिंह डकती के स्थान पर पहु चा तो वह दग रह गया, किसी का हाथ कटा था किसी का पर किसी की आखें फटी हुई थी सामान बिखरा पडा था, वह म त्री महोदय के साथ सबसे पूव घटना स्थल पर पहुँचा था । एक तरफ उसकी बहन की लाश पडी कराह रही थी, गत वष उसकी शादी हुई थी, उसके पति अमेरिका गए हैं इसलिए अपने पीयर जा रही थी ।

दासी ने बताया कि डाकुओ ने उसका जेवर छीना सामान लूटा और प्रथम श्रेणी महिला विभाग मे वह अकेली थी नीचे नौकरानी सो रही थी आते ही डाकुओ ने उनकी बहन के साथ जबरदस्ती की फिर नगी की और बलात्कार किया ।

उद्योग म त्री भी उनके साथ थे, सारी कहानी सुनकर महे द्र सिंह का खून खौल आया कि स्टेशन पर खबर मिली कि उनकी लडकी को उठाकर ले गए । महे द्रसिंह न दात भीच कर कहा – अब हमारे कुकम हम ही खा रहे ह । वे सीधे अपने घर गए । गत वष उनकी बच्ची का विवाह हुआ था इस वष नौकरो के साथ वह कार स पीयर लौट रही थी ।

नौकर जो घर लौट कर आए उन्होने घटना का वणन किया वह इस प्रकार है – ठाकुर महे द्रसिंह जी की लडकी की इज्जत राष्ट्र की इज्जत है क्योकि स्वयम महे द्रसिंह जी ने राष्ट्र की इज्जत गिरवी रखी रिश्वत लेकर दलाली की, महिला अध्यापिकाओ का शील भग कर उनके तबादले किए । एक डाकू तो मूछो पर ताव देकर कह रहा था कह देना अपने स्वामी को – मेरी पत्नि की इज्जत ली और उसका काम भी नही हुआ, वह घर लौट कर आयी और सब स्वीकार किया

और रात को शयन कक्ष मे फांसी लगाकर आत्म हत्या करली और जो स्त्रिया राजी हो गइ और जिनका काम हो गया वे दलाल बन गयी, च म को लेकर सहायता की गई उसका तो अब कोई प्रतिकार नही हो सकेगा लेकिन लाखो रुपये रिश्वत के लिए है उनको लौटा दो अन्यथा आप का घर उजड़ जाएगा जिसके जिम्मेदार आप स्वयम होंगे, एक सप्ताह तक आपकी बेटी की इज्जत पर किसी प्रकार हाथ नही डाला जाएगा आप सार्वजनिक रूप से रिश्वत के रुपये नही लौटाएंगे जिन महिलाओ का शील भग किया है उसे स्वीकार नही करेंगे तब तक आपकी पुत्री आपके पास नही पहुंचेगी, हम किसी प्रकार नारी के साथ ज्यादती नही करेंगे लेकिन जो आपाधापी फैल रही है और उसके मूल प्रेरक आप है वह तब तक चलती रहेगी जब तक आप जैसे दलाल मौन रहकर इसे बढावा देते रहेंगे आपकी स्वीकृति राष्ट्र को बचा सकेगी, राष्ट्र जो आज भ्रष्ट हो गया है उसको पवित्र करने का एक ही अमोघ उपाय है कि आप उस दानव सार्वजनिक रूप से स्वीकृत करें।

महेन्द्रसिंह को जब यह सूचना दी गई तो वह धक्क रह गया। क्या उसमे साहस है कि वह सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर सके ? वह धम्म से बैठ गया — पाप किये है और उन्ही पापो का फल जनता उसे दे रही है।

वह मुख्य मन्त्री के पास गया अपनी बात कही तो मुख्य मन्त्री ने आश्वासन दिया कि उसे स्वीकृति करने की आवश्यकता नही पड़ेगी उससे पूर्व व उसकी पुत्री के अपहरणकर्ताओ को गिरफ्तार कर लेंगे और उसकी पुत्री की इज्जत बचा लेंगे।

महेन्द्रसिंह — लेकिन । वह आगे नही बोल पाया उसके कण्ठ रुद्ध हो गए। मुख्य मन्त्री ने अत्यावश्यक मन्त्री मण्डल की बैठक बुलाई, उसमे सचिव कमिश्नर और पुलिस आई जी पी भी बुलाए गए।

मुख्य मन्त्री ने जो कहा वह सर्वथा असत्य था, उनका यह दावा आधारहीन था कि मन्त्रीगण पवित्र हैं और दलाली नही चल रही है और जो काम हो रहा है वह नियमानुसार हो रहा है।

अनपढ़ का कोष है (कविता संग्रह 1981)
अवधान (कविता संग्रह 1984)
, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

अन्य मन्त्रियों ने भी इसे स्वीकार किया लेकिन गृह राज्य मन्त्री रामेश्वर लाल ने कहा कि आज कोई काम बिना रिश्वत या सिफारिश के नहीं होता। प्रत्येक नागरिक के साथ हमारे दल के कार्यकर्ता रहते हैं वे उनसे रिश्वत खाते है और हमारे सामने नियम के नाम पर काम कराने का उपदेश देते हैं या फिर दल की मजबूती के लिए काम को महत्त्व देते हैं इसलिए इन दलालों को सर्वथा बन्द कर देना चाहिए।

राज्य मन्त्री स्वायत्त शासन ने कहा—जी मुझे मालूम है कि राज्य में भ्रष्टाचार का बोलबाला है बिना भ्रष्टाचार के कोई काम नहीं होता, मैंने अपने यहां ऐसे दलालों के द्वार बन्द कर दिये है और अपने कार्यालय के बाहर एक सूचना पट्ट लगा दिया है कि जनता के आदमी सीधे उन तक पहुंचे लेकिन मेरे पास खनिज विभाग था वह छीन लिया गया आज स्वायत्त शासन विभाग की स्थिति यह है कि जिसकी मर्जी चाहे वह वहां अवध निर्माण कर रहा है कर्मचारियों की जेबें भरदी जाती है और हमें वोट की कीमत चुकानी पड़ती है। यदि यही व्यवस्था रही तो हम आगामी न चुनाव में आ सकेंगे और न भ्रष्टाचार को समाप्त कर सकेंगे यदि नियमों के अनुसार हम चलें तो हमें राज्य से कोई उखाड नहीं सकता लेकिन मैं इन्तजार कर रहा हूं कि मुझे भी मन्त्री मण्डल से निकाला जाएगा जिसकी मेरी तैयारी है आज मैं मुख्य मन्त्री जी को चेतावनी देना चाहता हूं कि यदि वर्तमान स्थिति चलती रही तो हम कहीं के नहीं रहेंगे और राष्ट्र के भविष्य के लिए हमारी जिम्मेदारी रहेगी हम राष्ट्र को डुबो रहे हैं हम इस देश के वासी हैं और हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम राष्ट्र को मजबूत पैरों पर खड़ा करें इतिहास कभी माफ नहीं करेगा जब सत्ता व्यक्तिगत बन गयी तब राष्ट्र का भविष्य अन्धकार में लीन हो गया। इससे पूर्व कि मैं मन्त्री मण्डल से निकाला जाऊं मैं अस्तीफा पेश कर रहा हूं।

मुख्य मन्त्री का चेहरा गम्भीर हुआ। वे वापिस अपनी बात कहने के लिए विवश हुए—स्वायत्त शासन मन्त्री सच्चे हो सकते हैं लेकिन

अब तक उनकी मौन उनको जिम्मेदारी से मुक्त नहीं कर सकती आप जानते है खनिज विभाग उनसे क्यों लिया गया, इनके काल में जो आपा धापी हुई रिश्वत का बोलबाला हुआ, उससे विवश होकर मैंने उनसे यह विभाग छीना है, अपना दोष कबूल न कर वे हम पर थोप रहे हैं, म म श्री म ान्यस निवेदन कर रहा हू, कि एक बार फिर मांच और फिर अपना अस्तीफा द। शिक्षा म त्री—सर मुझे मालूम है सेठ रामकृष्ण को खनिज का ठका दिया उसमे पूरे 2 लाख रुपये खर्च हुए हैं चूंकि सेठ रामकृष्ण मर ही चुके है व मौजूदा म त्री महोदय के पास गए हैं, उनको जो ठेका दिया गया उस पर जाच हो चुकी है और जाच का नतीजा मुख्य म त्री जी की अलमारी म है। दोष लगाना सहज है कबूल करना बड़ा कठिन है।

मुख्य म त्री ने अपने निजी सचिव को बाबा दी और फायल लाने के लिए कहा। सब आयुक्त अधिकारीगण स्तब्ध थ म त्री मण्डल की आपसी छीटा कसी से उनका आनन्द आ रहा था उद्योग एवं खनिज आयुक्त भी इस काण्ड का दोषी है और उन्हें अपने पद से हटाकर रेवे मु बाड म तबादला किया गया है मुख्य म त्री अधिकारियों के चेहरे पर भावों को पढ रहे थे उन्होंने विषय बदला—जो न्याय कसौटी हो रही है, डाके पड रहे हैं स्त्रियों की इज्जत ली जा रही है और उसका बड़ा प्रमाण महेन्द्रसिंह जी हैं उनको दलाल बताकर यह किया गया है क्या सच है उससे हमे कुछ लेना देना नहीं है उस पर मैं अलग से कार्यवाही कराऊंगा और इनाम को अलग करूंगा लेकिन इस वक्त जो लड़की फसी है उसे बचाना है पुलिस आयुक्त अपनी सारी शक्ति लगाकर अपराधियों को पकड आज की बैठक समाप्त करता हूं निजी सचिव फायल लेकर आया उसे मुख्य म त्री जी ने आदेश दिया कि वह उसे रख दें।

और जब अधिकारी चले गए, तो शिक्षा म त्री जी और उद्योग म त्री जी से सलाह कर उसी सांझ म त्रीमण्डल की बैठक बुलाली और स्वायत्त शासन म त्री से कहा, कि वे दूसरों पर अभियोग लगाए, उसस

पूव अपने अभियोग पर एक दृष्टि डाल लेते। मैं इस वक्त मैं अस्तीफा मंजूर नहीं कर रहा हूं उनको मौका दे रहा हूं कि आज मंत्री मण्डल की गुप्त बठक बुला रहा हूं, उसमे खनिज विभाग के घोटालो की रिपोट वे देख लें, और फिर अपना निर्णय लें, मुझे अधिकार है कि अभी अस्तीफा मंजूर कर लू, लेकिन मैं किसी मंत्री को निकालने के पक्ष में नहीं हूं फिर भी वे अपने आप को निर्दोष सिद्ध करना चाहें तो यह उनका हक है खैर अभी मैं बठक समाप्त करता हूं सध्या को 7 बजे मंत्री मण्डल कक्ष में बैठक होगी।

स्वायत्त शासन मंत्री कुछ बोलना चाहते थे लेकिन नहीं बोले वे चुप चाप उठकर चले गए अस्तीफा मुख्य मंत्री के पास रहा।

स्वायत्त शासन मंत्री बाहर आए, और सीधे अपने बगले पर पहुचे, अपने पक्ष के सभी साथियों को बुलाया और बोले—आज खनिज विभाग की रिपोट मुख्य मंत्री पेश कर रहे थे लेकिन अभी पेश नहीं की, आज साफ बठक में पेश करेंगे।

उस रिपोट पर मेरा विषय उछाला गया—वह चर्चा का विषय था लेकिन मैं इस पर विश्वास नहीं कर सका सब जानते हैं कि खनिज पट्टा धारियो से 20 लाख रुपये लिए गए उसमें एक लाख सेठ रामेश्वर लाल का भी है जो शिक्षा मंत्री के क्षेत्र का है वे 20 लाख रुपये मुख्य मंत्री के पास हैं इसके लिए मुझे अपराधी बनाया जा रहा है मैं इसी अपराध को नहीं उठा सकूं गा। मंत्री मण्डल टूटे या रहे यदि मुख्य मंत्री उससे बचना चाहे तो कम से कम यह दोष मुझ पर न डालें मैंने आज तक किसी पट्टाधारियो के यहा भोजन नहीं किया उनकी भेंट स्वीकार नहीं की मुख्य मंत्री जी के आदेश से चुनाव के लिए चन्दे के नाम पर इकट्ठा किया गया और वह सारी रकम मुख्य मंत्री को सौंप दी।

इस वक्त स्वायत्त शासन मंत्री के निवास पर लगभग 90 विधायक थे जिनको मन्त्री महोदय की ईमानदारी पर यकीन था।

कृष्णस्वरूप ने कहा—जब आप पर दोष मण्ड रहे हैं तब आप किसी को न बख्शें मुख्य मंत्री इसमें बच नहीं सकते।

सोहन लाल—सच्च यह है कि मैन आपको पहले से बता दिया था कि आप यह रकम इकटठी करने का जिम्मा अपने पर न लें रुपये आपने इकट्ठे किए है और उसके बाद वे सब रुपये आपने किसको दिए उसके लिए केवल आप जानते हैं।

मन्त्री महोदय—लेकिन नियमों को भगकर जो पट्टे दिए गए उसके लिए नियमों को तोड फोड किया गया और उसकी स्वीकृति मन्त्री मण्डल से ली गई है इसलिए अकेले मुझे जिम्मेदार नही ठहरा सकते लेकिन प्रश्न इससे अधिक उलझा हुआ है मेरे विरुद्ध रिपोट का हवाला देकर निकाला जाएगा तब क्या मैं इसको मौन स्वीकार करलू यदि मौन मौन स्वीकार नहीं करूंगा तो पार्टी टूटगी मन्त्री मडल भी भग हो सकता है और शायद मध्यावधि चुनाव भी हो।

जितने विधायक थे वे सब कोई उत्तर नहीं दे सके, अभी 2½ वष चुनाव के बाकी है चुनाव होने पर पार्टी की उम्मेदवारी भी नही मिलेगी और चुनाव क पक्ष की व्यवस्था भी नहीं हो सकेगी, इसलिए इस स्थति को समझते हुए महेन्द्र भूषण ने अपने विचार रख, हमे शांति स इस पर विचार करना चाहिए भ्रष्टाचार समाप्त तो न राम राज्य म हुआ और न कभी होगा और लोकत त्र म जब तक चुनाव चलेंगे तब तक यह भ्रष्टाचार चलता रहेगा।

सोहन लाल—लेकिन क्या हमारे मन्त्री पर यह आरोप हम बर्दाश्त करलें और सारा मन्त्री मण्डल अपने आपको निर्दोष सिद्ध करले। पार्टी को बचाने का सब का जिम्मा है। मुख्य मन्त्री तो इसकी गारटी है और जब वह गारन्टी ही टूट जाए तो फिर कौन बचा पाएगा, क्या निर्बल को सबैव पीसा जाएगा, क्या मुख्य मन्त्री अपनी जिम्मेदारी से बरी हो जाएगा यदि यह सच्चाई सामने आती है तो जनता म पार्टी की छवि का क्या होगा, और क्या हम ही उस पर कुर्बानी दें और मुख्य मन्त्री नही।

स्वर्णसिंह—देखिए आज सध्या को मुख्य मन्त्री क्या कदम उठाते हैं रुपया उनके पास है आपके पास नही जिस दिन खनिज विभाग

जनपद का कोलाहल (कविता सग्रह 1951)
(कविता सग्रह 1974)
, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

प्राप से छीना गया उसी दिन मुझे विश्वास हो गया, कि मुख्य म त्री इस सब की जिम्मेदारी प्रापके सिर पर डालना चाहता है। विधान सभा म कितनी भी तकरीरें हो जाए क्या मुख्य म त्री उसकी जाच के लिए बाध्य है, रात दिन तरह तरह के प्रारोप लगाते हैं मुख्य म त्री पर ' इसी सत्र मे प्रारोप लगा कि उ होने 4 करोड रुपय रिश्वत क लिए हैं, प्रब तक जितने मुख्य म त्री हुए वे यदि 5 वष तक रह गए तो 20 करोड के धनी हो गये नही, हम यह बरदास्त नही करेंगे कि प्रापकी प्रतिष्ठा दाव पर लगाई जाए यह नही हा सक्ता हमारी जिम्मेदारी सीमित है, हमसे ज्यादा बडी जिम्मेदारी मुख्य म त्री की है।

सु दरलाल जो प्रब तक मौन बठा था प्रचानक स्वय चौंका–यह सब क्या हो रहा है, मैं कहता हू कि जाच प्रायोग बिठाकर प्रापको पदच्युत करना ही पार्टी की छवि को धूमिल करना है मैं उसी दिन कह रहा था, प्राप प्रस्तीफा द दीजिए प्रौर इस भ्रष्टाचार का भण्डा फोड करें लेकिन प्राप मौन रह, प्रापक साथी मौन रहे जिसका नतीजा प्रापक सामने है। मह द्रसिंह उद्योग म त्री का दलाल ह–क्या हम नही जानत कि मह द्रसिंह पर जब प्राच प्राई तो सारा म त्री मण्डल हिल उठा, मह द्रसिंह ने जो पाप किए, उसका फल उसे भोगना पडगा, उसको बचाने के लिए हमार पर वार हम बरदास्त नही करेंगे क्या सुशीला दवी प्रध्यापिका शिक्षा म त्री जी का बहन ह मन पता लगाया उनका कि दूर या नजदीक म भी कोई नही है।

मुख्य म त्री बडे रसिक निकले वे प्रायु से साठ से प्रधिक हैं, सठ प्रौर उद्योगपतियो स रुपया प्रलग लत है प्रौर उनको जवान खूब सूरत सु दरिया उनकी रातो को बहलान के लिए भजी जाती हैं, राज्य के प्रायुक्त प्रथम श्रेणी के सचिव सब तरह क भ्रष्टाचार म लिप्त हैं प्राज जब म त्री मण्डल की बैठक हो ता प्राप इन पापो का पर्दाफास प्रवश्य करें प्राप कह सकते हैं, कि रामधन सठ को उद्योग का लाइस स दन म सुश्री सलमा का कितना योग है यह लीजिए एक ही पलक पर मुख्य म त्री बडा ढोगी है, सिद्धान्तो का पुतला है ढोगी कही का। बगुला भक्त

जब अवसर आए तो ठूस बन जाता है शराब वह पीता है रण्डी बाजी करता है, सत्ता हाथ मे है, इसलिए सुन्दरिया उसके भुरिया भर शरीर से चिपकती रहती है, पता नही कौन रसायन खाता है कि वासना मे वह जवानो को मात करता है, स्वय मख्य मन्त्री बना शिक्षा मन्त्री और उद्योग मन्त्री विरोधी दल से दल बदलवा कर बनाए और यह स्थिति आई कि कोई विरोधी रहे ही नही।

सारे देश मे असन्तोष की आग भडक रही है केवल यही राज्य ऐसा है जहा सब शान्ति से चल रहा है उसका एक मात्र कारण है सारे मन्त्रियो और विधायको को भ्रष्टाचार की छूट दे रखी है।

आप निश्चिन्त रहिए, वे आपका बाल तक बाका नही कर सकते, जाच आयोग की रिपोट आलमारी की शोभा बढायगी और आप को पुर खनिज मन्त्री बना देग। इस बठक से थोडी देर पूर्व चले जाइए और मुख्य मन्त्री को अपनी कमजोरियो का भान करा दीजिए साथ का यह चित्र भी लेते जाइये।

यही नही, मेरे पास कई चित्र हैं। सुन्दर बाई का, विजया लक्ष्मी का और मोहिनी का प्यार कह दीजिए- मेरे साथी मुझे इन चित्रो को प्रकाशन के लिए विवश कर रहे हैं मुख्य मन्त्री के पास इतनी शक्ति और सामथ्य नही कि वह आपके हाथ लगा सके, कल फिर जा चाहे विषय ले लीजिए।

राज्य मन्त्री को सलाह पसन्द आई।

मोहन लाल ने कहा—यदि वे राजी न हो तो दस दिन बाद विधान सभा आ रही है। हमारे 20 सदस्य विरोधियो मे मिल जाए तो मन्त्री मण्डल टूट जायेगा नया मन्त्री मण्डल बनाने के लिए सौदे बाजी होगी हमारे पास 30 सदस्य हैं और हमारा दल सबसे बडा दल है जिसको हमारा दल मुख्य मन्त्री बनाना चाहेगा वह मुख्य मन्त्री भी बनगा आप यह भी उन्हे बता दीजिए स्वय भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन दे रहा है और दोष मढ रहा है आप पर। मैं पूछता हू 20 लाख रुपये नगरपालिका के चुनाव मे खच हो जायेंगे मुख्य मन्त्री ने रुपये अपने पास रख छोड़े है। किसको क्या दिया आप से पूछेगा? इसी तरह उद्योग

म त्री द्वारा भी 30 लाख इकटठे किए गए है अन्य विभागो से भी। भाई साहब आप बिल्कुल भय मत लाए वह रिपोर्ट का डर तो वतादे नगरपालिका चुनाव म कम से कम 40 लाख रुपय बता देंगे लोगो का तो मत है कि मुख्य म त्री 1 करोड बन लगे।

स्वायत्त शासन म त्री—मै आपके भरोसे पर हू मेरी शक्ति आपकी शक्ति है अर्थात् म मन्त्री बना तो केवल इसलिए कि 30 विधायको न मुझ म विश्वास प्रकट किया था, म यह बता देना चाहता हू कि खनिज विभाग से चुनाव क लिए 20 लाख एकत्रित किए और व 20 लाख मैने मुख्य म त्री को दे दिए मै चाहता तो कम स कम 15 लाख रुपय अपने पास रोक लेता 5 लाख भी उनको देता लेकिन प्रारम्भ से मैने आप सब को विश्वास मे रखा, किस किस स कितने रुपय लिए वह सब आपकी निगाह म है मैने आज तक रिश्वत नही ली और न भविष्य मे लेने की सोच रहा हू लेकिन जिस ढग म आज मन्त्र मन्त्री न अधिकारियो क सामने व्यवहार किया वह मेरी प्रतिष्ठा को धक्का है, मैं उसे बरदाश्त नही कर पाऊ गा— वह मेरे अणु अणु म चुभ रहा है—माम कर जब मुख्य म त्री जानता है कि रुपया चुनाव के लिए लिए और वह रकम सब उनके पास है मुझ अब तक यह बताते रहे हैं कि जाच मात्र एक बहाना है उसका नतीजा भी क्या कुछ भी गडबडी नही हुई फिर यह सब क्या हो गया ? म त्री मण्डल की बठक म यह प्रश्न उठाते मैं सोचता हू कोई बुरा नही होता लेकिन अधिकारियो के सामने मुझे लज्जित किया और यह बताने का प्रयत्न किया कि मुख्य मन्त्री की मर्जी के विरुद्ध केवल मैने ही यह रकम वसूल की है जब कार्यवाही प्रारम्भ की तो मझ बताया कि मात्र एक ढको सला है और आज उस जाच आयोग को मुझ पर थोपना चाहते है मुझ स जब खनिज विभाग छीना गया तब भी मझे कहा गया कि विधान सभा का उठा हुआ प्रश्न है इसलिए उसे शान्त करना है यद्यपि कोई चीज सिद्ध नही हुई, बन्धुओ आज मुझ निर्णय करना है मेरे लिए हा नही आप सब के लिए राजनीति को आधारशिला क लिए राज

नीति का महल किस नींव पर ढाला जाए, व धुआँ । मैं आपकी आज्ञा पालन कर रहा हू और इसी कारण बठक म जा रहा हू अन्यथा यह देखिए मुख्य म त्री के निजी सचिव की रसीद जिसम 20 लाख रुपय उन तक पहुचे हैं।

मैं इस बैठक से पूर्व मुख्य म त्री से मिलू गा जरूर लेकिन खनिज विभाग छीन कर मेरा अपमान किया, वह भूला था कि आज अधिकारियो की बैठक म जाच रिपोट मगवा कर फिर उसे वापिस ब द कर दिया है इस कदम से मै बिल्कुल नगा हो गया हू अब तक मुझे यह बताया गया कि मैं रिपोट क अनुसार निर्दोष हू लेकिन इस अधूरी कायवाही से मुझ दोषी ठहरा दिया गया अब मेरे सामने आत्म समपण करू या सारे म त्री मण्डल को नगा करू, दोनों के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है मैं पूणतया आप की शक्ति और सहायता पर टिका हू।

महेन्द्रभूषण स नहीं रहा गया—लोग कहते हैं कि आपने मुख्य म त्री क अनुसार और रिपोट क तथ्यो के आधार पर 20 लाख नहीं 50 लाख वसूल किए हैं और उसम से 30 लाख रुपये रख लिए।

राज्य मन्त्री ने क्रोध बताते हुए कहा—यह सवथा गलत है मैने एक पसा भी नहीं रखा जिन व्यक्तियो से रुपया वसूल किया उन्ह पूछ लिया जाए उनकी जोड अगर 20 लाख आए तो

सब ने कहा—इस बार दबना नहीं चाहिये मुख्य मन्त्री से मुकाबले के लिए तयार रहना चाहिए हमारा ग्रुप प्रबल हो जाए तो मुख्य म त्री का अस्तीफा देना पडे, विपक्ष अपनी सरकार बना ले।

साहनलाल—भाई साहब कौन म त्री है जो रिश्वत नहीं ले रहा है ? सिचाई म त्री न कभी मुख्य म त्री की चिन्ता की, उनको पूछे बिना नाम रुपय हडप लिए उनका लडका बहुत बडा व्यापारी बन गया है राजधानी क सबसे महग बाजार मे दुकान ली है जिसकी पगडी कम स कम 10 लाख रुपय होगी दुकान म जो सामान है वह कम से कम 20 लाख का है। तीस लाख कहा स आए, दोष देना अलग बात

अनपढ का कानून (कविता सग्रह 1981)
(कविता सग्रह 1954)
, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

है पवित्र रहना अलग। कोई मन्त्री दावा कर सकता है कि वह ईमानदार है हमारे उद्योगपति मुख्य म त्री को लाखो की भेंट देत है कभी हीरो का हार तो कभी सोने के जेवर—कहते है सिमे ट कारखाने वाला बच्चु भाई अकेला 20 लाख रुपय देकर आया है, आप निश्चित रहिए, म पूरा पता लगा लू गा और अब समझौते की जरूरत नहीं है। आप जानते हैं, हमारी वतमान पार्टी कई दलो से दल बदल कर बनी है, तास के पत्तो जमी बिखर जाएगी, आपने गलती की आपको रुपये न्ही लेने चाहिए, नया चुनाव आने वाला है उसका व्यय कहा से लाएगे, आप का देकर कोरे रहे सरकार टूगी तो मुख्य म त्री का क्या बिगडेगा ? उनके पास साधन हैं वे आराम से सब सदस्या को एक चुनाव लडा सकत हैं और उसम बहुमत आ गया या दल बदलुओ को खरीद कर बहुमत बना लिया तो वे ही मुख्य म त्री बनेंगे हम पूरी तरह विचार कर आगे का कदम उठाना चाहिए।

महिला विधायक चन्द्रा न मौन तोडी–म त्री महोदय आप विश्वास रखें वे किसी प्रकार आपको नही निकाल सकत आप मिलन जाएँ उससे पूव मैं मिल आती हू आपको नही मालूम है उनक कमजोर रि दुओ म पूरी तरह परिचित हू 60 पार कर चुका है लेकिन अब भी 25 वष का ज्वान बनता है मेरी जैसी उनकी पातिया होगी लेकिन छोडिए मरे पास उनकी हीनता क चित्रो का भडार है आप जानत ह ो वार मैं अपनी चप्पलो का प्रयोग कर चुकी हू यही नही कितन दलाल ह जो उनकी पूर्ति करते ह या विधुर ह और अकसर अपनी पत्नि का भ्रम व रोता रहता है, लेकिन लगता है वह राक्षस है देव न्ही दानव है।

मोहन लाल–म अभी निकलता हू हमारे साथ 60 विधायक ह मैं कई और साथ लेकर चल गा, आज ही 5 नए साथी हो जाएग आप निश्चित रहिए और सच्च यह है कि आपन सारे रुपय मुख्य म त्री को सौंप दिए पैसा हाथ मे होता तो राजनीति सरल होती नए चुनाव उसी ठाठ से लड सकत अब यह ग्रू मट हम म से तोडने की कोशिश करेगा,

इसलिए म चा ता हूं कि हम इस वक्त मौन रहना चाहिए राजधानी म जो प्रवर निमाण राय ए ह उनसे आप चाह एक करोड़ रुपया वसूल कर सकत म खनिज विभ ग इ क सामने कुछ न ी है आप अभी अपन प वो न छोड़ हम सब आपके साथ ह चड्ढा वहन गजी ह ह प्रापका इस्तीफा ले आएगी अभी 2 बज ह हमारी मीटिंग की कि ा को खबर न ी होनी चाहिए और जिन साथियो न बैठक में भाग लिया उनको अपन होटल का भी देना चाहिए।

राज्य म त्री—आप जैस साथियो के बूत पर असम्भव से असम्भव काम किया जा सकता है मैं वा दा करता हूं कि आ की आज्ञा के बिना कोई काम न ी करू गा आज जल्द बाजी मे इस्तीफा दे दिया।

मह द्र भूपण—लेकिन क्या मुख्य म त्री यह हौसला रखते हैं कि आपका इस्तीफा म जूर करल और वह मुख्यमत्री रह जाएं जब हमारा दल उनके साथ गया तब भी मन आपसे कहा था कि एक राज्य म त्री की माग कम होगी हम अनुपात स तीन म त्रियो की माग करना चाहिए और म सोचता ह कि वक्त आ गया है, जब मुख्य म त्री को तीन म त्री बनाना पड़गा आप के निष्कासन का प्रश्न तो रहता ही नही मुख्य म त्री और उनके साथी इस को जानते हैं और हमारी शक्ति को भी वे कई बार कह चुके है कि हमारा दल जिस मजबूती से उनका साथ दे रहा है उतना और कोई नही लेकिन हम पीछे रह गए अब मुख्य म त्री जी ने हम को मौका अवसर दिया अब उसका लाभ हम लेना ह। पूरे तीन म त्री चन्द्र कला ला ल ही ली जाएगी उसको कोई रोक नही सकता हमारे राज्य म त्री पूरे म त्री होग और एक राज्य म त्री और लेना होगा। आज य मुख्य म त्री ह कल हम म स कोई मुख्य म त्री बन सकता है भाई साहब कल सुबह तक मुझ दीजिए आपको वरिष्ठ म त्री पद न मिला तो म महे द्रभूपण का नाम बदल दूगा।

दीपसिंह को मौन अच्छा नही लगा वह अन्दर ही अन्दर घुट रहा था उसने जोश म आकर कहा—भाईयो वर्तमान कठिनाई को पार करल और कल हम आग क मार्गों पर चलें।

मनवर का क व हू वर्ग मदर 1951
(वर्तिका मदह 1934)
गर सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तो अभी हम विदा होते है म त्री महोदय शायद 8 बजे तक लौट आए गे हम सब आठ बजे यहा ही मिलें।

च द्रा सीधी मुख्य म त्री की बठक मे चली गई न चपरासी ने रोका और न उसने सूचना दी मुख्य म त्री मुख्य सचिव से सलाह कर रह थे चन्द्रा को आते देख चौंके, उ होने घ टी बजाई लेकिन च द्रा के हावभाव देखकर चपरासी को कुछ नही कहा।

चन्द्रा ने कहा – आज म त्री मण्डल की दलगत नीतियो पर बठक होने जा रही है, मैं उसी के लिए आपसे मिलने आई हू समय थोडा रह गया है इसलिए न मने स्लिप भे ी और न चपरासी का कहा कि आप तक सूचना पहु चा द चपरासी इ कार हो गया उसका कोई दोष नही। दोष है तो मरा इसलिए हम पहले बात करलें मुख्य सचिव महोदय आप क्षमा करें आपके काय म बाधा डाली लेकिन इससे ज्यादा बडा काम लेकर आई हू।

मुख्य म त्री न मुख्य सचिव को कहा–एक घ टे बाद मिल नही में आपको बुला लू गा, आप अभी जाए।

मुख्य सचिव चला गया तब वे चन्द्रा से बोले, आज दुपहर भी मैंन अधिकारियो से परामश किया सारे म त्री मण्डल की उपस्थिति म और उस वक्त स्वायत्त शासन मन्त्री का प्रश्न आ गया हमारे दल के वरिष्ठ नेता महेन्द्रसिह की बहन और लडकी को उठा ले गए हैं – यह राज्य पर कलक है खर पहले आप से बात करू गा, चपरासी को कहा कि वह चाय ल आए।

च द्रा ने सीधा प्रश्न पूछा – क्या स्वयात्त शासन मन्त्री को अलग करन को सोच रहे हैं ?

नही उन्होंने ही स्वेच्छा से अस्तीफा दिया है।

च द्रा – वह मुझे मालूम है खनिज विभाग उनसे छीना गया, क्यो ? जो रकम उन्होंन इकटठी की वह पार्टी के लिए है और आपके आदेश से इकटठी हुई और मैं सोचती हू वह रकम भी आप के पास है

मुख्य मन्त्री – आप क्या कहना चाहती हैं मैं किसी भी अवस्था में उनको अलग नहीं करना चाहता, आपने खनिज घोटाले की रिपोर्ट देखी होगी तो पता लगता कि इसमें किस तरह मन्त्री महोदय दोषी हैं।

लेकिन आप ने उस रिपोर्ट के सम्बन्ध में मन्त्री महोदय को कुछ दिन पूर्व यह कहा था कि रिपोर्ट में कुछ भी नहीं है।

मुझे उस रिपोर्ट को गुप्त रखना है इसलिए खनिज विभाग तो लिया लेकिन उन्हें मन्त्री मण्डल से नहीं निकाला।

चन्द्रा – और उनके निकालने से यदि मन्त्री मण्डल टूटा तो उसका जिम्मेदार होंगे आप।

मुख्य मन्त्री – आप यह दोष मुझ पर क्यों मढ़ रही हैं ?

चन्द्रा ने व्यंग से हंसते हुए कहा–इसलिए कि आप दल के नेता हैं और हम उस दल के सदस्य सामूहिक जिम्मेदारी का सिद्धान्त भी तो है नगरपालिकाओं के चुनाव के नाम इतनी बड़ी रकम इकट्ठी कर आप भ्रष्टाचार को पनपा रहे हैं, एक साथी को फांस कर आप स्वयं उस फंदे से बचना चाहते हैं। मैं यह बताने आई हूं कि इसके परिणाम बड़े भयंकर होंगे। जिस साथी को आपने चन्दा इकट्ठा करने के लिए कहा उसने आपकी आज्ञा का पालन किया उसका फल उसे भोगना हो रहा है। तो खैर छोड़िये विपक्षी व हमारे दल में केवल 20 का अन्तर है और हमारा ग्रुप 30 सदस्या का है। नए चुनाव मन्त्री मण्डल भंग–सोच लीजिए फिर वे सब कारनामे जो आपके इर्द गिर्द लिपटे पड़े हैं उनका पर्दाफाश देखिए। इसे पहचानते हैं एक नहीं ऐसी कई घटनायें हैं। विवश होकर प्रकाश में लाना होगा। तब फिर–आज मन्त्री मण्डल की गुप्त बैठक में कुछ निर्णय लें उससे पूर्व उनके परिणामों पर गौर कर लीजिए।

मुख्य मन्त्री–तो आप डर बताने आयी हैं जैसे सारे दोषों का भागी मैं ही हूं।

चन्द्रा उठी–बस परिणामों पर गौर कर लें यही बताने आई

का हूं, । ।म्बर 1981)
(कविता संग्रह 1984)
, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

हू। आपने दल बदलुओं को लेकर नई सरकार बनाना चाहा वह बन गई आपने सब को बागडोर सौंप दी लेकिन अब भी उस डोर का एक सिरा हमारे हाथ में है।

वह हंसी—आप क्या डरे आपके पास सत्ता है, सम्पदा है पुलिस है, जिसे चाहे पीस सकते हैं, विचार कर लीजिए पूरी तरह से फिर भी यह पायें कि आप स्वायत्त शासन मन्त्री को अलग करना चाहते हैं तो करें मैं तो यह बताने आई हूं कि इनको पूरा दर्जा दें पूरे मन्त्री और वही खनिज विभाग वापस दें, नहीं तो फिर जैसा आपको अच्छा लगे करें। आपके राज्य में कितने दल्लाल काम कर रहे हैं। महेन्द्रसिंह की बहन और बेटी को यों ही नहीं उठाया गया—महेन्द्रसिंह आपके चाहेता हैं और उन्होंने कितनी विवश नारियों के सतीत्व से खेला है आप नहीं जानते तो आपको मुख्य मन्त्री रहने का अधिकार नहीं। अकेला महेन्द्र ही नहीं अनेकों महेन्द्रसिंह हो गये हैं। आज तो लगता है जैसे शासन चल ही नहीं रहा है आपका राज्य नहीं दलालों का राज्य है। बिना रिश्वत किसी का काम नहीं होता आप आपको से कब तक बहलाते रहेंगे।

मुख्य मन्त्री ने डरते हुए कहा—आप आई हैं तो चाय तो लीजिए, यही बात तो मैं आपसे कहने जा रहा था लेकिन आपने तो अनेकों ऐसी बातें कह दी कि मैं कटघरे में खड़ा कर दिया गया और केवल आरोपों का उत्तर भर दूं—मेरा भी कुछ कहना है खैर ठहरिये आपकी पूरी बात नहीं सुनूंगा तो फिर किसकी सुनूंगा आप भी उस व्यवस्था के अंग हैं।

चन्द्रा नरम पड़ी—वापिस बैठी।

मुख्य मन्त्री ने स्वयं प्याली में चाय डाली बिस्कुट की प्लेट हाथ में लेकर चन्द्रा के आगे की और चाय का कप दिया फिर बोले—चन्द्रा जी आप तो जैसे लड़ाई करने आए थे क्या रास्ते में किसी ने आपको नाराज कर दिया कि आप मुझसे लड़ बैठीं आप जानती हैं मैं मुख्य मन्त्री हूं तो माननीय सदस्यों के सम्बल पर और मैं यह भी

जानता हू कि हमारे यहा कइ लोग दलाली कर रहे हैं मह शर्मा जी भी उनम से एक हैं खैर छोडिय, चुनाव म हमे हर तरह का सहयोग लेना पडता है और चुनाव जीतने पर जब म त्री मण्डल का निर्माण हो जाता है तो कई लोग स्वय का और अपने मित्रो का नाम लेकर आते है वे पसे लेते हैं दलाली करते हैं-यह कहना तो कठिन है लेकिन आप ही बताईए आपके क्षेत्र की समस्त समस्या तो आप नही जानती आपके पास भी कायकर्ता आते है व सब कायकर्ता नि स्वाथ सेवा का दावा करते हैं। उनमे से कुछ होते भी है लेकिन पशेवर दलाल और नि स्वाथ कायकर्ता मे अ तर ढूढना बडा कठिन है, खर छोडिये, आप आदेश दीजिए क्या करना है ? मुझे म त्री मण्डल मे शीघ्र ही हेर फेर करना है कुछ को निकालना है कुछ नयो को लेना है। इसी प्रकार उनके विभागो म भी बदली लाना होगा पार्टी की छवि क लिए। और स्वायत्त शासन म त्री को निकालना होता तो कभी से निकाल देता, आखिर सब पुण्यात्मा हो यह तो आप भी नही मानते लेकिन हम ऐसा शासन देना है जो वस्तुत पवित्र न हो दिखने म भी हो। और इसी पर चर्चा करने क लिए आज ग्रुप बैठक बुलाई थी।

एक सप्ताह बाद विधायको की बठक बुलाऊ गा मुझे आपकी योग्यताओ पर पूरा विश्वास है और उसका लाभ जनता को मिले यही तो हम चाहते हैं।

श्री शर्मा को क्या मैं नही जानता उ होने मेरे कहने स पसे इकट्ठे किए। लेकिन रिपोट म 40 लाख इकट्ठ का सबूत है। खर छोडिए बात बढ़ती है तो वह चौगुणा रूप ले लेती है। मुझे आपके ग्रुप को पूरा प्रतिनिधित्व देना है मैं कई बार आपसे इस सम्बन्ध म चर्चा कर चुका हू पर ग्रुप जब तय नही करता तो मैं विवश हो जाता हू लकिन इस बार यह परिस्थिति नही आयेगी मैं अपने आप विचार कर तय करू गा फिर ग्रुपो म विचार विमश-आपकी क्षमताओ को भूल कर क्या मैं चल सकता ह।

यह न जी इस रवया बदलना पडेगा या फिर शासन से हाथ

घोना पड़ेगा। जनता हमारे पापो को कब तक माफ करती रहेगी मैं तो सोच रहा था कि चुनाव के लिए भी चन्दा इकट्ठा करें यदि हमारी सेवायें जनता को आकर्षित नही कर सकती तो हमे खर्च कर चुनाव मे जीतने का कोई आनन्द नहीं है।

चन्द्रा—मुस्करा रही थी मुख्य मन्त्री के बदले हुए स्वरूप को देख कर वह मन ही मन मुग्ध थी उसने कहा—मुख्य मन्त्री साहब अब भी हम नहीं चेते तो हम राष्ट्र को ले डूबेंगे भ्रष्टाचार राष्ट्र को पगु बना देता है अनुशासनहीनता फलती जाती है एक दिन यह आ सकता है कि राज्य का भय जाता रहे या उसका प्रारम्भ तो हम देख ही रहे है नियमो को बलाए ताक रख कर जनता मनमानी करती है। राजाओ के राज्य मे हुकुमत का कद्र कम न पड़े यह ध्यान रखा जाता था वह तरीका था चार अधिकारी को प्रश्रय देना और जनता की आवाज दबा देना। सच्च अधिकारी को माना जाता था। जनता झूठ—केवल इसलिए कि शासन के प्रति भय बना रहे आज हम प्यार और सम्मान की रक्षा करनी है। राज्य के प्रति हमारे चुने हुए प्रतिनिधियो के प्रति सम्मान वह हम रख पाए।

मुख्य मन्त्री—वह तो तुमने सच्च कहा हमने वह सम्मान और प्यार तो नही पाया बल्कि राज्य के प्रति विद्रोह होता है तो हम अधिकारियो को प्रश्रय देते हैं उनकी बात सच्च मानते हैं फल यह होता है कि अनियमितताये बढ़ती जा रही है और जनता के प्रतिनिधि वस्तुत प्यार और सम्मान के अधिकारी नहीं रहे अच्छा हुआ आज हम इस पर मनन करें और जनता के प्यार को पाने का प्रयास करें उनके सुख दुख के भागीदार बन कर मानव गुणो मे उच्चतर सिद्ध हो कर—हम बता दें कि जिस महान उद्देश्य को लेकर उन्होने हमे मत दिया उस उद्देश्य की पूर्ति मे समर्पण कर दें—उस मार्ग पर चल पड़ें जहा राम राज्य का प्रारम्भ होता है मैं नहीं मानता रामराज्य कोई महान उद्देश्य पूर्ण शासन था लेकिन उसकी एक कल्पना है, अनुभूति है और हम अब उसे पा सकें उस ओर आगे बढ सकें और वस्तुत इस काय मे

हम समर्पित हो गए तो फिर चुनाव मे व्यय की आवश्यकता ही नही है, जनता ने अपनी सारी सम्पदा हमारे हाथ म सौंप रखी है और सब भौतिक सुखों का प्रावधान है क्या हम उनके प्रति अपने कर्त्तव्य को निभा पाएगे बहन ? तुम ठीक मौके पर आई, मैं सोचता हू आज मैं इस परिवतन को नही अपना सका तो मैं कसम खाता हू कि एक वष म म स्वयम इस पद से अलग ही जाऊ गा आप भी तो यही चाह रही है और यही उद्देश्य लेकर मेरे पास आई है – अगर हम मन्त्री डाकुओं की तरह व्यवहार करते हैं मात्र भाषण मे हमारी क्रियाए सब राक्षसो की है तो सच मानिए म निराश हो जाऊ गा लेकिन मुझे आप जस स हृमिक व्यक्तियो पर भरोसा है। आज सध्या की अत्यावश्यक म त्री मण्डल की गुप्त बैठक मे हम कुछ तय करें और यह तय है कि आज ऐसा कोई कदम नही उठाए गे जिसस हम अपनी प्रतिज्ञा के प्रारम्भिक सत्र पर ही लुढ़क जाए – हाँ एक सप्ताह म मैं बठक बुलाऊ गा समस्त दल विधायको की और उसम अपना अस्तीफा सबस पहल रखू गा – उसके बाद सच्चे प्रतिनिधित्व का जो स्वाग भरते है उस वास्तव म नही ला सके और यह ढकोसला चलता रहे तो क्या लाभ – बहन तुमने मेरे मन के पट खोल दिए है आप अपने साथियो को नए उद्देश्य के लिए तैयार करें सुख सुविधा सब चाहते हैं लेकिन उसकी सीमायें हैं घर-वाहन नौकर भोजन कपडे – और कुछ ? तब फिर सीमाए नही रहगी। आप जानती हैं अब तक जा 5 वष मुख्य म त्री रह गया वह 20 25 करोड रुपया कमा गया है मैं इसको वसूल गा निकलू गा जब अपना पूरा कच्चा ब्यौरा जनता को दू गा कि मैने उनकी दी हुई सुविधाओ के अतिरिक्त क्या कमाया है ?

चन्द्रा ध्यान से सुन रही थी, क्या मुख्य म त्री इतन पाखण्डी हो गए कि सब पर पर्दा डाल कर पवित्रता का बाना पहन कर जनता के सामने आ रहे हैं या वस्तुत उनको पीडा का दश मता गया है और वे नए मुक्ति माग नहा – स ग्राम माग पर चल पड़े हैं। उसने मुस्कराते हुए कहा – वर्मा साहब मैं तो अपने पिण्डरा बोवस म

अनपढ़ का बहू बया दू० 1981
(कविता संग्रह 1984)
दर सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

गालियो का बोझा लेकर आयी थी, लेकिन अब गालियाँ किस को दू आप बदल रहे हैं प्रभु मुझे शक्ति दे कि मै भी बदलू और आपकी अनुगामी बनू – आप ने एक बार मन्त्री पद देने का मौका दिया था पैन ही इन्कार किया था लेकिन आज जब त्याग के माग पर चलने की बात कर रहे हैं तो निश्चित रूप मे मैं आपकी सहपाठी या अनुगामी बनूगी । और इस महान यज्ञ मे अपना भी योगदान देने से नही चूकूगी – मुझे अविश्वास का कोई कारण नही है, आप पर पूरा भरोसा है। प्रभु हमारा माग प्रशस्त करे और हम एक आदर्श राज्य की स्थापना कर सकें । □

सध्या को मन्त्री मण्डल की बैठक प्रारम्भ हुई, उसमे एक अत्यन्त आवश्यक विषय ताजा घटना के कारण जुड गया – जिसकी चीफ मिनिस्टर पुलिस अधिकारियो से लम्बी चर्चा कर चुके थे।

आज प्रात काल सोहनपुरे मे एक डाका पडा जिसमे लगभग 50 लाख का माल लटा गया । डकतो म उद्योग म त्री का भाई भी था जो गिरफ्तार कर लिया गया यद्यपि माल कुछ नही मिला और उद्योग मन्त्री के भाई अजीत सिह की तरफ से यह दलील दी गई कि डकत का पीछा कर रहा था पुलिस न उसको ही डाकू मान कर गिरफ्तार कर लिया।

उद्योग म त्री का भाई अजीत सिह राजधानी मे एक विशाल कोठी म रह रहा था, उसका काम राज से लोगो का काम निकलवाना था उसमें विशेषतया उद्योग विभाग का काम होता था, और अपने भाई से उद्योगो के लिए विशेष सुविधाए दिलवाता था और इसके लिए अपना पारिश्रमिक लेता था । अनुमान है कि वह माहवारी एक लाख रुपया कमा लेता था ।

आज जब डाके म उसकी गिरफ्त पाई गई तो म त्री मण्डल मे एक आरोप उद्योग मन्त्री पर लागू किया गया उद्योग म त्री और मुख्य मन्त्री के असन्तुष्ट मन्त्रियों न आक्रमण किया ।

सिचाई मन्त्री – सबसे आगे था, उसने कहा हमारी छवि

चपरासी और क्लर्क व रिश्वत का दोषी है–मेरा मित्र मुझे बता रहा था कि कोई विभाग ऐसा नहीं है जहा काम पैसे से नहीं होता।

बन्धुओ ! मै तो थक गया हू मैं किसको दोष दू दोषी तो मै स्वय हू। यह अस्तीफा प आप लोगो को द रहा हू और आपको अधिकार देता हू कि आप इस के लिए निर्णय लें–आपके निर्णय के बाद म एक सप्ताह के भीतर विधायक दल की बैठक बुलाऊ गा और उसके निर्णय से चलू गा।

मैने जिस काय को लेकर यह बठक बुलाई वह काय कारण गौण हो गए अब तो सत्ता के अस्तित्व का प्रश्न है जनता मे हमारे प्रति दुर्भावनायें अधिकतम होती जा रही हैं, अजीतसिंह की गिरफ्तारी पर आपने बी बी सी सुनी होगी। कल सुबह क हमारे पत्रो को देख लेने के बाद हम क्या कह पायेंग म नहीं जानता उद्योग म त्री मेरे ही क्यो हम सब के निकटतम साथी है म नहीं चाहता किसी प्रकार उन पर अविश्वास करू। अजीतसिंह जी ईमानदार हैं लेकिन भाई जी पी से मरी बात हुई वे नहीं मानते हैं और मुझ से निर्देश चाहते हैं कि म उनको कहू कि वे डाक नहीं डाकुओ का पीछा कर रहे थे– म इस काम क लिए उद्योग म त्री से कहूगा कि वे भाई जी पी से बात कर लें जिस गाव को लूटा गया उन्होंने अजीतसिंह को पहचान लिया, वे उनके गाव को लूटने मे भागीदार थे। खैर, उद्योग मन्त्री अपनी राय बताए, उनको अपने भाई पर विश्वास है।

म त्री मण्डल के अन्य सदस्यों म आपसी कानाफूसी हुई–कोई बोला नहीं।

स्वायत्त शासन मन्त्री ने कहा–आज की बठक तो मेरे विरुद्ध खनिज जाँच आयोग के प्रतिवेदन के लिए बुलाई गयी है म उनके लिए तैयार होकर आया हू । सर अगर मन्त्री मण्डल ही डाकुओ का गिरोह हो जाए तो राज्य के प्रति आस्था घटगी ? इसलिए कम स कम मेरा अस्तीफा तो मजूर कर लिया जाए, मै इस निन्दा को नहीं सुन सकता। अधिकारियो म आम चर्चा है कि मैं तो अपराधी हू हो और मैन 50

आप सब ही कभी दल के कायकर्ता या सम्बंधियो को मदद नही देते रहे हैं, और अब उनको बचाने मे भी नही–यदि हमारे रिश्तेदार को अधिकारी हमारे सम्ब धी मानकर मदद करते हैं तो उनका मैं स्थायी निर्देश निकलवा देता हूँ कि कोई अधिकारी नियमो के विरुद्ध काय न करे और म त्री महोदयो के सम्बंधियो को अनुचित लाभ न दे या कही नियमो के विरुद्ध वरिष्ठता भी दे दी या किसी तरह का अनुचित लाभ भी दे दिया तो अधिकारी स्वय दोषी होगा। हम नही चाहते कि किसी प्रकार जनता मे यह भावना फले कि यह राज कुछ लोगो का राज है न कि चुने हुए प्रतिनिधियों का हम किसी प्रकार यह बरदास्त नही कर सकते कि कोई हम पर कीचड उछाले। आशय है स्वायत्त शासन म त्री मेरे त्याग पत्र पर विचार होने तक अपनी बात नही उठायेंगे, वे मुझे क्षमा करेंगे कि मेरे कारण आपका अपमानित किया जा रहा है लेकिन मेरी भावना उनको अपमानित करने की नही है और उनको अपमानित करता हूँ तो मैं स्वय अपमानित होता हू मेरे साथी दोषी है तो क्या मैं पवित्र माना जाऊ गा ? सब म त्रीगण ने खुशी की लहर मे इसे स्वीकार किया स्वय स्वायत्त शासन म त्री भी मौन हो गए।

आई जी पी का फोन आया मुख्य मन्त्री ने कहा–हा ठीक है जैसा स्थिति हो वसा कीजिए हाँ मैं समझ गया मुझे मालूम है ये सब राजनैतिक कदमो से सम्बंधित हैं लेकिन हम अब राजनतिक प्रश्नो को हल करने के लिए राज्य की सहायता नही लेंगे।

मुख्य मन्त्री ने फोन रख दिया, और बोले (वे उन्ह प कमी हो रहे थ) एक घटना और हो गयी स्वय विधायक न डकैतो को आश्रय दे रखा है और आज उनके निवास मे चार डाकुओ को पकडा है मुझे पूछते हैं मैं उनकी गिरफ्तारी कहा बताऊ।

विधायक महोदय सोमनाथ हैं, हमारे ही दल के वरिष्ठ सदस्यो में मैं सोच रहा था उनको मन्त्री मण्डल म लू नही लिया और अब तथ्यो को तोड-फोड करने का मैं अधिकारियो को सलाह कैसे देता ?

कमाता है, म माननीय मुख्य म त्री जी और अपने साथियो से क्षमा चाहूगा लेकिन जो चीज सीधी की जा सकती है उसे हम नही कर पा रह हैं और यह नौकरशाही की गुत्थी है जिसे उन्होने सुलझाया है अपने पक्ष में न कि जनता के पक्ष मे।

कई समस्याय हैं जो तुरन्त परिवतन और परावतन चाहती है हम उसके लिए तैयार नही हैं। मैं माननीय मुख्य म त्री जी को निवेदन करूगा कि अभी तो वे अस्तीफा वापिस ले, उनका अस्तीफे का अथ होगा राज्य का भग होना, जिससे हम भी नही रहेंगे।

वह हमर-मर, हम स्वर्ग म हैं एक दम नरक मे मत फैंकिए, सारी सुख सुविधाओ से महरूम मत कीजिए हम यह भोग कर भी जनहित म लग जायें तो सुख सुविधायें हमारे लिए भार नही बनेंगी- सामन्ती शाही मे राजाओ को परमेश्वर माना जाता रहा है उनको स्वग की सारी सुविधायें हमने दी। कई नरेश एसे हुए हैं जिनकी पूजा जाता है, क्योंकि वे ईमानदार थ याय प्रिय थे। जहागीर की घण्टी दिल्ली म बजती थी व दक्षिण मे सुनाई दती थी, लेकिन जहागीर याय का प्रतीक हो गया। राम के राज्य मे चोर, डाकू नही थे क्या? रावण जैसा प्रतिद्वन्द्वी था, युधिष्ठर जसा धर्मा मा थ तो एक अगुल जमीन न देने वाले कौरव भी थे।

मुझे याद है बचपन म हमारे गाव का जागीरदार 16 हजार की वार्षिक आय, छोटा सा जागीरदार हर प्रात अपने गोखडे पर आता और सावजनिक समस्याओ को हल करता था। वह देवता की तरह पूजा जाता था मैं एक दिन उनके सम्मान मे जब वे बाजार म गुजर रहे थे नही उठा उ होने कुछ नही कहा हमारे भाइयो न ही मुझे सबक सिखा दिया। ऐस सज्जन न्याय प्रिय प्रजा पालक का सम्मान नही होगा तो फिर गन्हो को नमन करेगे ?

इसलिए राज्य न नियम बनाकर वे हो सुविधाए हम दी है आलीशान बगले, कारें, नौकर बाग बगीचा और हमरी रोटी कपडे के अलावा सारा व्यय और हम दानवीर भो बना दिया 5000)

रुपय वाषिक हम जिसे चाहे अनुगृहित कर सकते हैं। मैं कहू गा – हमें सु रना चाहिए हमे वस्तुत जन सेवक हो जाना चाहिए। मुख्य म त्रीजी को मैं अपना इस्तीफा देता हू, वे अपने मन लायक ईमानदार सज्जन और जन सेवकों की टोली चुनलें और जनहित म राज्य चलाए।

मख्य म त्री के चेहरे पर उदासी उभर आयी उन्होंने दोनों कुहनिया को टेबुल पर रखकर हाथों को गूथा और फिर अम्बासी ली – और कुछ कहना है मैं सोचना हू, हमे हमारे मन की आलोचना करना चाहिए दिन भर के कर्मों को याद करना चाहिए और जो बुरे हैं उन्हें हमे छोडना चाहिए, नही तो एक दिन वे हमे छोड देंगे, और हम मात उनक लिए तरसते रहेंगे सर, जो घटनाए घट रही है उसस कुछ भी उज्ज्वल भविष्य के दर्शन नही होते – हम उज्ज्व रसातल पर पहुच गए हैं, रिश्वत हम खाते हैं व वे सब काम करते हैं जो राज्य को डुबोने है यदि अ कुश नही लगा पाए तो – खैर हम फिर मिल रहे हैं आप यहा ही रहें बाहर जाए तो मुझस पूछलें, हालात इतनी तेजी से बदल रहे हैं कि वह समय दूर नहीं जब हमारे आवासो को बम्बाड करदें। हम न राज्य के प्रतिनिधि है और न जनता के, नौकर शाही कम से कम राज्य के प्रतिनिधि बनने का दावा करते है और राज्य के नियम टूटते हैं तो उसका दोष हमारे माथ मथते हैं।

हम चेतना होगा मैं पचायत राज्य म त्री का शुक्र गुजार हू कि उन्होंने मुझे साहस दिया एक बार फिर हम अग्नि परीक्षा से गुजर जाए अपने पापो और विकृतियों की आहुति देकर समाप्त करदें– मैं सुन रहा हू हम राज्याधिकारी जिम्म सबका समावेश है, नारी सरोर का भाग कर उनका काम करते हैं। शील भग बहुत बडा अपराध है लेकिन राज्य के लिए हुए साधनों स हम वरागी नही बने, विलासी बन गए है हमारे पास क्या नहीं है – सम्पत्ति है, साधन है और हर व्यक्ति की समस्याए हल करने की शक्ति और यही शक्ति हमें वेश्या गामी बनाती है मैं किस को दोष दू ? आज चारा थार यह चर्चाएं हैं

कि अधिकाश म त्री, अधिकारी, एव हमारे कायकर्ता उनके चर्मे का सौदा करते हैं। एक विधायक महोदय मुझे कह रहा था कि राजाओं के राज मे पैसा चलता था और आज पैस के साथ चम भी चल रहा हैं।

खैर ? मैं क्या कहू ? जो बुराईया हम म घर कर गयी है उन्हें दूर फैंकना होगा, हमारे घर के बाहर और हमारे द्वार इतन बन्द करना होगा कि हम फिर कही भी हा उनस बचे रहे।

आज मिले किसी काम के लिए नयी 2 समस्य ए हमारे सामने मुह बाए खडी हैं और हम से अपनी समस्याओ का सुलझाने का माग पूछ रही है।

हमे हमारे दल की छवि कायम रखनी है।

स्वायत्त शासन म त्री उठे कुछ बोलना चाहते थे लेकिन पास म बैठ दूसरे मन्त्रियो ने उनको नही बोलन दिया।

बस इतना कह पाए – मुझे कुछ भी बुरा नही कहना है हमारे पापों पर प्रायश्चित्त और भविष्य मे वे पाप न करन की प्रतिज्ञा या फिर हम अलग हो जाए, हमारे काम सिर पर चढ कर बोल रहे ह।

सावजनिक निर्माण मन्त्री–सर, निविदाए भ्रष्टाचार के पनपने का क्षेत्र है, क्या हम विभाग से काम लेकर भ्रष्टाचार के सबस बड अड्डे को दूर नही कर सकते ? मैंने सारी योजनाए आपके पास भेजी हैं।

म मानता हू कि कम से कम 20 प्रतिशत तो रिश्वत मे जाता है फिर ठेकेदार मिश्रण कर कमाता है और जो काम बनते हैं वे घटिया किस्म के होत हैं मैं अभिमान स कहता हू कि मन कभी किसी ठेकेदार से एक पैसा भी नही लिया, और न लेने की कसम खाता हू।

मुख्य मन्त्री ने कहा–अच्छा है हम कुछ कम न र पाए लेकिन आपके अभियन्ता कनिष्ठ सहायक भी कम से कम 2 लाख रुपये ठेकदारो से बटोर लेते हैं, मेरी आखो आग एक सहायक अभियन्ता बगला बना रहा है उसकी लागत कम से कम 5 लाख होगी उस अभियन्ता

ने अभी 2 वर्ष पूर्व राजकीय सेवा प्रारम्भ की है एक नहीं अनेक मार्ग हैं जहां हमारा मार्ग रुका हुआ है जगह जगह भ्रष्टाचार के अड्डे बन हैं हमारे कनक क्यों पीछे रहें चपरासी मुझसे मिलने का एक रुपया वसूल करता है मैने चिट व्यवस्था बन्द कर दी है, तो भीड पर काबू पाना कठिन हो गया बड़ा विचित्र माया जाल है सब जगह हम कीचड़ म फस गए हैं और नाक तक दब गए हैं इस कीचड से निकलना बड़ा दुर्लभ हो गया है। एक कुण्ड मे निकलने का प्रयत्न कीजिए दूसरे कुण्ड आपको आ दबोचेंगे। मैं सोचता हूं हमारी व्यक्तिगत ईमानदारी क अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है हम नियम बनाकर भ्रष्टाचार को रोक नहीं सकते हमारे नियम हैं, पति पत्नि राजकीय सेवा मे हों तो, एक ही स्थान पर रखा जाए अधिकारी यह सुविधाए नही दे रहे हैं उनके जिले म कोई जगह खाली है और बाहर के जिले में सेवारत अपने जिले म आना चाहता है वे उसकी सहायता करने के बजाय उसे दण्डित करते हैं परसों मैंने आप लोगों के पास 110 प्रार्थना पत्र भेजे हैं, वे आपसी तबादलों के हैं पर ये एक दूसरे नहीं लगता और ??? कर्मचारियो को सुविधाए मिलती हैं लेकिन नहीं देंगे हमारे यहां शिक्षक संघ सगठित है उसके साथ हमारे कुछ समझौते हुए हैं, उन समझौते के लाभ भी उनको नहीं मिलते और उसके लिए वे हडताल पर जाते और हम एक बार और समझौता कर समस्या को टालते हैं। इसलिए नियम हमारी समस्या को एक सीमा तक हटा हो सकता है पर वह राम बाण नहीं है क्योंकि हम उसका पालन नहीं करते हैं फल यह होता है कि समस्याए बढती जाती हैं। आन्दोलन धरने विद्रोह फलते जा रहे हैं जब हम जनता के प्रतिनिधि हैं तो हम क्या रोड़े अटकाए ? आखिर आंकड़े हमारे पास हैं महंगाई के भी—हम उनको सामने रखकर हम राज्य के कार्यों को प्रगति दें कई हड़तालें समाप्त हो जाएगी असमानताए मिट जाएगी तो आंकड़े सही दिशा देंगे, एक विभाग क्लर्क 800) रु. तो दूसरे विभाग का क्लर्क 400) रु. छोड़िए अनेकों समस्याए

तो हम टेबुल पर बैठकर निपटा सकते हैं, जिनको हम छू नही रहे हैं और वे गुणित होती जा रही हैं।

इतने मे टेलीफोन की घन्टी बजी–मुख्य म त्री ने उठाया हां–समझ गया आप मुख्य सचिव से परामश कर ले और उसके बाद आवश्यकता हो तो मुझे भी बुलालें या आप यहा आ जाए बस बैठक अभी समाप्त हो रही है म यहा ही हू कही नही जा रहा हू।

मुख्य मन्त्री ने कहा–आप सब अपने अपने निवास पर रह मिल के मजदूरो ने हडताल करदी, दो घन्टो म जमकर लडाई हुई, लगभग 50 घायल और 5 मर गए।

डर यह है कि यह साम्प्रदायिकता का रूप न ले ले, मै तो यहीं हू, गृह म त्री जी आप भी यही रहिए और उद्योग मन्त्री जी भी मैं सोचता हू हमे समस्याओ से उलझना नही है उनको निपटाना है।

मुख्य मन्त्री उठे सब उठे और तीन के अलावा सब म त्री महोदय अपने अपने घर गए। मुख्य मन्त्री उदास व खिन्न थे।

□

समस्त राज्य के विद्यार्थियो ने सम्मेलन बुलाया उसम विरोधी दल के समथको की सख्या अधिक थी इसलिए उदघाटन समारोह मुख्य मन्त्री से कराने का प्रश्न अपने आप टल गया, और इस सम्मेलन के द्वारा राज्य से जो अपेक्षाए की जानी थी, वे नही रही। उनके स्थान पर *वतमान परिस्थितियो पर तीखा व्यग था।*

अध्यक्ष का स्थान लिया विद्यालय छात्र सघ के अध्यक्ष ने।

कालेज म बिना सिफारिश के दाखला नहीं मिलता, परीक्षा म श्रेणियां खरीदी जाती हैं, राजनेता हमारे भाग्य विधाता हो रहे हैं, और श्रेणी प्राप्त विद्यार्थी को आगे बैठने के लिए उसका विषय पढ़ने को नही दिया जाता, उसके लिए सिफारिश की जरूरत रहती है नियमो को भुला दिया गया है, भापा धापी, रिश्वत खोरी, भाई भतीजे वाद का बोल बाला है।

अच्छी से अच्छी श्रेणी में सफलता प्राप्त करने के बाद भी नौकरी में उसको स्थान मिलता है जिसकी सिफारिश है। लोक सेवा आयोग को जितना पवित्र रखने की कोशिश की वह उतना ही दूषित हो गया इस वर्ष जो परिणाम सामने आए हैं उसमें स्वर्ण पदक प्राप्त उम्मीदवार नहीं चुना गया और द्वितीय श्रेणी विद्यार्थी को चुना गया।

न्यायालय भ्रष्टाचार के अड्डे बन हैं और न्याय बिक रहा है, म श्रीगण उन सब बुराईयों में लिप्त हैं जिनसे समाज की गतिविधियां भ्रष्ट हो गयी हैं राज्य की निष्पक्षता का विश्वास चला गया है अविश्वास का द्वंद्व चल रहा है कोई किसी का भरोसा नहीं करता।

ऐसी स्थिति में केवल युवक ही देश को नया नेतृत्व देकर उबार सकते हैं हम यदि सुधर गए तो देश सुधर गया एक बार अगर ये अनिश्चितताएं और अनियमितताएं छा गईं तो उन्हें समाप्त करना कठिन होगा। फिर राष्ट्र बिखर जाएगा आज हमें हमारा विश्वास नहीं रहा हमारी संस्कृति का विश्वास नहीं रहा, हम बहक गए हैं नशे में डूब कहां जा रहे हैं नहीं जानते लड़खड़ा रहे हैं पर जम नहीं पा रहे हैं हमारे रक्षक हमारे भक्षक हो गए हैं।

आज मन्त्री अधिकारी सब भ्रष्ट हैं उनका चरित्र नष्ट हो गया है, पाप धर्म बन गया है बिना रिश्वत के कोई काम नहीं होता।

डाके पड़ते हैं पुलिस बचाना तो दूर किनार, घटना की रिपोर्ट लिखने में रिश्वत मांगती है—अनाचार अत्याचार अतिक्रमण ने नियमों का रूप ले लिया है हमारी पढ़ाई किस काम की, जब देश डूब रहा है हम में से नौकरी वहां पाएगा जिसके पास शिक्षा ज्ञान और गुण हैं लेकिन जेब नहीं तो फिर कुछ नहीं में सब पढ़ाई लिखाई ज्ञान सीमा सब बेकार हैं इसलिए हमने यह बैठक इसलिए बुलाई है कि हम इन पापों का भण्डा फोड़ करें, और इस शासन को समाप्त करें आइए हम इस हवन में पूरी शक्ति से लग जाएं और अपना सब कुछ होम कर देश को इस प्रदूषण से बचाएं।

सत्ताधीशो के सामने प्रार्थनाएं अवना बनकर रह जाती हैं, हम शिक्षा दी जाती है कि हम अपने बूते से बाहर जा रहे हैं।

इस माह म जो दुराचरण सामने आए हैं, उससे शासन की छवि मिट गयी है ऐसा लगता है जसे दलालो का राज हो, कोई नियम-बद्ध शासन न हो। जो जितना खच करता है उतना ही राज्य स लाभ उठाता है यह खच सावजनिक नही होते वरन व्यक्तिगत-रिश्वत भ्रष्टाचार।

हम क्या करें, उद्योग चलान के लिए हमे पू जी नही है, वे सेठ साहूकार मार ले जाते हैं नये उद्यमी को एक फसल निकल आयी वह राज के मारे साधनो का उपभोग कर नियमो को बलाये ताक म रखा देते हैं और इसकी एवज म सत्ताधीशो का पेट भरते रहत हैं य नए उद्योगपति सरकार को अपने अहसानो स दबा रहे हैं।

वे उद्योग मे मुक्त कर बताते हैं जबकि राज्य के अधिकारा नियमो मे बाधकर प्रतिवष हानि दे रहे हैं।

कृषि से सफल वही होता है जो कृषि को उद्योग क रूप मे करते हैं उसके लिए बडी जमीन चाहिए साधन चाहिए इसलिए या तो शुद्ध सहकारी कृषि के रूप में की जाएगी फिर अमेरिकन पद्धति के रूप म हमारे लिए दोनो रास्ते बन्द हैं बन्धुओ हमारे लिए कनव की जगह है क्या अनूठे नियम बना रखे हैं बी ए और मेट्रिक एक ही पद पर नियुक्त होते हैं बी ए पास के तीन वष पदोन्नति म बन्द किए जाते हैं, जैसे मेट्रिक और बी ए का स्वभाव जय अन्तर नौकरी मे भी भाग नही देता है।

मैं इन बातो पर जोर नहीं देता। हमारा भविष्य बन्द हो गया है हम उस चौराहे पर खडे हैं जहा चारों ओर रास्ते अवरुद्ध हैं—एक ओर राजनेता—उपदेश दे रहे हैं एक ओर बडे जमीन्दार अपनी सामन्त, शाही की ललकार कर रहे हैं तो एक तरफ पू जी पति देश की अधिक स अधिक नियोजित पू जी का लाभ ले रहे हैं बस एक रास्ता म का खुला है, वहां लाखों की सख्या मे अपनी बारी की इन्तजारी

है कहां हमारा रास्ता है, कहां हम सुविधा पाएंगे कहां हमारे पेट भरने की गुंजाइश होगी ?

क्योंकि नौकरी का रास्ता भी इन राजनेताओं ने भ्रष्टाचार व आपाधापी से बन्द कर रखा है कहीं गुंजाइश नजर नहीं आती तब हमारे जैसे नौजवान क्या पाने के लिए उनके पास जाएं ?

हम राज्य की गतिविधियों को बदलना है डाकुओं और तस्करियों का जन्म देनेवाला हो वह राष्ट्र कैसे आगे बढ़ेगा ?

मुख्य मंत्री घबरा गए हैं वे अस्तीफा दे रहे हैं, क्योंकि उनके पाप खुल गए हैं उनका पर्दाफाश हो गया है वे अब अपने पापों को दबा नहीं सकते इसलिए आदर्शवादिता के नाम पर अस्तीफा दे रहे हैं हमारे यहां की स्वर्ण पदक धारी कृष्णा सदा शिव सकडो द्वार हो आई आखिर मंत्री महोदय ने उसे नौकरी देने का वादा किया, और एवज में उसका चुम्बन मांगा कृष्णा चीत्कार कर उठी उसने कोठी छूट कर पार की उसका पर टूट गया उसकी कहानी उस अबला की कहानी है जिसको ये भेड़िये अपनी वासना तृप्ति के लिए काम में लाते हैं और फिर नौकरी देते हैं।

करतल ध्वनि।

हरिकृष्ण दवान ने अपना भाषण प्रारम्भ किया—मैंने राजाओं का राज्य नहीं देखा लेकिन मेरे पिताजी उस ही एक राज्य में नौकरी कर चुके हैं, उनका कहना कि उनके भी रिश्वत सिफारिश आदि में सीमाएं बांध रखी थी—कत्ल डकैती बलात्कार आदि मुकदमों में व पैसा लेकर या अन्य सिफारिश पर कोई पक्षपात नहीं करते थे उनकी धारणा थी कि यदि वे रिश्वत लेंगे तो उनके ही नहीं उनके उत्तराधिकारियों के शरीर में कीड़े पड़ कर निकलेंगे एक हाकिम का जिक्र किया जो रिश्वत बहुत खाता था और वह अन्तिम दिनों में वर्षों तक नरक के कीड़े की तरह जीते रहे सारा शरीर सड़ गया था कोई पास नहीं जा पाता था और आखिर उससे ही उनकी मौत हुई व अमरिका इलाज करा आए पर एक फर्लांग दूर से ही उनकी बदबू आती थी सन्तान या उत्तराधिकारी कोई पास में नहीं जाता था।

खर वह वक्त नही रहा, ग्राज मूल्य बदल गए हैं, सिफारिश ग्रौर रिश्वत ही सही ग्रथ म मूल्यवान हो गई है नतिकता का नाम दण्ड है । सलिए उसी का शिक्का चलना है ग्रौर कोई नही ।

मैं ग्रब न्तजार नही करूगा ग्रगर यही स्थिति चलती रही तो कोई सडक पर नही चल सकगा प्रत्येक कमचारी रिश्वत लेकर काम करेगा नियम नही रहगे परम्पराए मिट जाएगी इसलिए इतजार का समय नही रहा ग्रब तो हम सब को देश के नेतत्व के लिए तयार हो जाना चाहिए ।

शमशुद्दीन बोलना चाहता था कि उसके पास धमाका हुग्रा बम फटा स्टेज पर बठे लोगो मे 6 7 को चाटें ग्रायी शमशुद्दीन का सिर फट गया लोगो में भगदड मच गई पुलिस ग्रा गई ग्रौर शहर म चर्चा फैल गयी कि शमशुद्दीन को उसका हिदु मित्र मारना चाहता था सारे शहर म तनाव छा गया चलते हुए लोगा पर इट पत्थर फके गय मदिर के बाहर खडे लोगो को इट पत्थर से मारा गया लोग घरो से हथियार ले ग्राए तलवारें चली सारा शहर दगा ग्रस्त हो गया, रात भर मारकाट होती रही पुलिस ने भी ग्रपना काम सम्भाला, प्रात काल होते होते शहर फौज क हवाले कर दिया गया ग्रौर करफ्यू लगा दिया गया । दूसरे दिन छुट पुट समाचार सामने ग्राए, इस दगल म पुलिस की गोलियो से 50 व्यक्ति घायल 6 व्यक्ति मरे ग्रौर ग्रापसी दग म जो व्यक्ति मारे गये, उनकी गिनती न ी की जा सकी, लेकिन फौज तैनात कर दी गयी ग्रौर हर जगह गुप्त गस्त लगा दी गई, घर की खुली खिडकी पर मशीन गनें दागी गयी क्योकि वही से एक दल दूसरे दल पर वार कर रहा था।

पुलिस, मिलटरी घरों म दाखिल हुई शाति कायम रखन के लिए कई गिरफ्तारिया हुई, हथियार बरामद किए गए ग्रौर पशानियां शान्ति सारे शहर में छा गयी ।

मुख्य मन्त्री ग्रौर गृह मन्त्री पुलिस के सरक्षण मे घूमे कुछ घरों मे गए जहा ग्रधिक लूट पाट ग्रौर हिंसा व ग्रागजनी हुई थी ।

ठण्ड के दिन थ दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह शर्मी जारा पर थी लूटपाट मे घर का सामान भी ले गए और जो लोग घरो म बचे, वे सिकुडकर बैठ रहे न बिस्तर, न वस्त्र, न बर्तन और न खाने का सामान अनेक घर उजड गए अनेक घरो मे आग लगा दी गई।

लोगो का ध्यान सब समस्याओ से हटकर साम्प्रदायिक दगे म जा अटका, शासन ठीक नही है, म त्रीगण भ्रष्ट हो गये हैं, अधिकारी अपना सब कुछ लो चुके हैं और रह गया मात्र प्रशासन का ढाचा, लेकिन दगे न लोगो को बाट दिया समस्याए मिट गई और सब लाग भा गए राज्य का मात्र एक काम रह गया—दगाग्रस्त प्रदेश म शान्ति स्थापित करना। वहा कुछ प्रशासनिक सीमाए डाल रखी हैं धारा 144 का लागू करना और जो तोडे उसे गिरफ्तार करना उसके आगे करफ्यू करफ्यू म कुछ सीमाए रखी हैं सडक पर आवागमन बन्द करना, खिडकियो पर मनुष्य का न दिखाई देना मरण मौत पर मुर्दे को अन्तिम सस्कार के लिए न जाना विवाह आदि मगल कार्यक्रम करना, इसके लिए छूट दी जाए लाइसेंस न दिया जाए या बिल्कुल रद्द।

आज का करफ्यू भी दिखाने पर गोली मार देना था और नतीजा यह हुआ कि कई व्यक्ति अनजाने खिडकी पर आ गए तो उनको खामियाजा उठाना पडा इन सब का एक मात्र कारण उद्देश्य यह होता है कि आदमी आदमी को न देख पाए और उसकी भावनाए उत्तेजित न हो।

भर गया घर गोप।

सारी समस्याए एक समस्या बन कर रह जाती है।

समगुदीन न औषधालय से एक विज्ञप्ति जारी की कि न उस पर किसी अन्य व्यक्ति न आक्रमण किया बल्कि प्रशासन अपना कर्तव्य पालन मे असफल रहा है इसलिए उसन लोगों को अपनी असफलताओ से ध्यान मोडन के लिए यह बम्ब विस्फोट किया है न किसी ने मुझ पर बम्ब फेका जिसन बम्ब फेका वह राज्य कर्मचारी था आपको मालुम है कि विद्यार्थी सघ म मै एक मात्र सगठनकर्ता हू और भारतीय

नागरिक के रूप मे राज्य काय को ठीक चलवाना और उस पर निर तर दृष्टि रखना मेरा पुनीत कत्त व्य है और इसीलिए म भाषण दे न आया।

जो काम ब्रिटिश हुकूमत करती आ रही थी, वहा हमारी सरकार करती है। म हि दु मुसलमान भाईया से अपील करता हू कि वे झूठी अफवाहो मे न आए और राज्य की शाति को भग न करें आज राज्य जिन अभावो स ग्रस्त है वे अभाव गोण हो गए रह गया मात्र हमारा कोढ जो भारतीय र ष्ट्र को प गु कर रहा है।'

इस विस्फोट को साम्प्रदायिक रूप देना गलत हुआ, बल्कि इसका परिणाम दूर गामी हुआ राजधानी म ही न ही उसी वक्त सारे राज्यो मे बडे कस्बो म ये विस्फोट हुए उसम कही हिदु बहुल क्षत्र मे हुआ तो कही मुसलिम बहुल क्षेत्र मे।

समस्त 23 जिला म लगभग 200 व्यक्ति मार गए और एक हजार के करीब घायल हुए।

इतन बडे पैमाने पर विस्फोट किसी जाति विशेष क कारण नहा हुए सुनियोजित कायवाही के अ तीन जिसके द्वारा राज्य की जनता का ध्यान अ यत्र लग जाए हि दु मुसलमान सम ओ पर-पुलिस प्रशासन जनता सब इसमे लग गई और मुख्य समस्या गोण हो गया।

छात्र सघ का जलसा विश्वविद्यालय की ओर ही तो था समस्त कालजो की तरफ था और इस सुनियोजित राज्य विरोधी मोहिम को असफल करना प्रशासन का काम था।

पुलिस क सिपाही बट गए, अधिकारी एव कमचारी भी न भागो म बट गए और वे अपन कत्तव्य का भूलकर मात्र स म्प्रदायिक हो गए और फौज न आकर सब जगह निय त्रण किया उसमे पुलिस अधिकारियो को भी पकडा गया कई को निलम्बित किया गया।

राज्य का प्रशासन ढीला हो गया था भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी और पक्षपात का बोल बाला था उसम न हिदु का ख्याल था, न मुसलमान सबके साथ एक ही मद्दो पर विचार किया जाता था इसलिए समस्या उनकी बन गयी जिनको इन अनैतिक आधारो पर

लाभ हो और वे जो कहीं पहुच पाते थे ऐसे लोग जहा तक पहुच पाते व इतने कमजोर थे कि उनकी आवाज उन तक ही सीमित हो जाती थी मन मारकर ऐसे दलाल इस तरह विवश थे कि उनकी नहीं चल पा रही थी। इसलिए अधिकांश व्यक्ति लाचार और निराश थे और कतिपय लोगो को ही इन विकृतियो का लाभ मिलता था ऐसे छोटे दलाल अपने किए पर पछतावा कर लोगो को प्रसन्न करते थ—वे भाग्य की रेखा मानकर ऐसे दलालो के भक्त बने रहते थे।

लेकिन जब हिंदु मुसलमानो को ऐसी हिंसक घटनाओ म लिप्त किया गया तो सारे राज्य मे दावानल भडक उठा, राज्य की ओर से ध्यान हटाकर लोगो न साम्प्रदायिक जगन म बाढ़ फैला दिए।

यह कहना बडा कठिन है कि राज्य अपनी बचत क लिए ऐसे ही हथकण्डे अपनाती रही है।

लेकिन इस वक्त तो इस दगे का प्रारम्भ जिस आन्दोलन को लेकर हुआ वह आन्दोलन राज्य के विरुद्ध था।

तत्काल दूसरे दिन मन्त्री मण्डल एव उच्च अधिकारियो की बठक बुलाई गई, उसम विद्यार्थी सघ का कर्म और घायल विद्यार्थियो का चर्चा भी चला गया।

मुख्य मन्त्री न कहा—लगता ह हमारा नियन्त्रण ढीला होता जा रहा है चन्द पुलिस ने फेंका न किसी अधिकारी ने न किसी दलगत नेता ने ही—फिर यह दोष मढना गलत है हम इससे पूव उन सब समस्याओ पर विचार कर रहे हैं जिसम सब जगह विद्रोह की आग सुलग रही है, हमारे सन्त्यों को पीटा जा रहा है, उनकी बहन बेटियो क साथ बलात्कार और उनकी सम्पत्ति की लूट—खसोट भी मैं असमंजस मे था, सोचा मैं मन्त्री मण्डल से त्याग पत्र दे दू और शासन की बागडोर विरोधी पक्ष को सौंप दू जिसस जनता का अधिक हित हो हमने कई योजनाए लागू की अनेक मगलकारी काय किए, जिसस निम्नस्तर का व्यक्ति ऊपर उठे गरीबी समाप्त हो स्वास्थ्य सवायें ठीक ही नही की, उनका विस्तार इतना किया कि गत 30 वष म नहीं हुआ शिक्षा का

प्रसार अनेक मगलकारी योजनाए, सिचाई सडकें म उनको सम्याओ के माया जाल म नगी फेयू गा, तथय अपने आप योन रहे हैं। फिर भी मैं दुखी था और हू और अपनी और साथिया की कमजोरी ढ ढ रहा था हम पर भ्रष्टाचार भाई भतीजे वाद का अभियोग है लकिन आज उनकी चुनौती को स्वीकार कर अपनी विवशताग्रा को मुखरित नही करना है नही तो जनता कहेगी कि हम चुनौतियो स डर कर भाग गए यही क्यो इतिहास मे हम हीन मान जायेग, प्रशासन को नही सम्भाल सके, और भ्रष्ट हो गए। आज मुझ मे साहस आ गया है, आप अपनी कमजोरी निकालिए अपने दिल को टटोलिए इतिहास आपकी तरफ देख रहा है हम असफल हो गए तो भविष्य हमे कभी नही माफ करगा इसलिए मैं पूरी शक्ति से मु ाबले क लिए तैयार हू हम म कमजोरिया हो सकती हैं लेकिन कौन है जो कमजोरियो स परे है ?

आप आज्ञा दें तो मैं अब इस चुनौती को स्वीकार रू —क्या दूसरी पार्टी का राज्य हम से अच्छा था क्या वे पवित्र थ क्या उनकी विद्वता स शासन तन्त्र म कोई अन्तर आया।

सबन एक स्वर स मुख्य मन्त्री का अनुमोदन किया।

हम आज से कसम लत हैं कि अब तक हमने कोई गलती की हो किन्तु भविष्य मे नही दोहराएगं हम जनता क हित म अपने आप को समर्पित करते हैं।

और मुख्य मन्त्री ने कहा—अभी आयुक्तो और उच्च अधिकारियो की बैठक बुलाई है मैं सोचता हू सारे तन्त्र को चुस्त और नियमित करना पडेगा अ यथा हम कही क नही रहेंगे, सत्ता पा कर हम सत्ता के मद मे अपने आपको नही भूलें सत्ता का उपयोग केवल जनहित म करें व्यक्तिगत नही और तब ही सत्ता मर्यादित रहगी आज जिन परिस्थितियो मे हम जी रहे हैं उनन हमारे विराम को अवरुद्ध किया है हम अब भी जनता के पास जाते हैं तो यही नारा लेकर कि हम जनहित मे काय करेंगे गरीब जनता का जीवन सूत्र उठाने म कोई कसर नही रखेंगे गरीब बडी स्पनीय दृष्टि म हमारी तरफ देखता है

ओर एक अनबूझी आशा उनकी आखो से चमकती रहती है हम 5 वर्ष पूरा कर जाते है लूटते हैं, अपने सम्बंधियो को लुटाते हैं, सत्ता का शेयर भी हमारे रिश्तेदारो के साथ करते है, और फिर चुनाव की घोषणा मे हमारा घोषणा पत्र गूंज उठता है। व धुओ हमने बहुत किया, लेकिन शताब्दियो से गरीबी चली आ रही है और हम उस वक्त तक चैन से नहीं सोएंगे जब तक एक पेट भी भूखा हो, एक व्यक्ति के सिर पर छप्पर न हो अंग ढकने का कपडा न हो—फिर आशा म झकडे जाते है गाव म बाध बना नहर आई, कारखाने खुले लोगो को श्रम मिला, सरकार कर रही ह लेकिन और यह ध्येय शताब्दियों तक चलता रहता है अनपढ ह और हमारे जय जयकार के नारे लगाते ह।

अब इस सब को हम बदलना है नियमबद्धता व्यक्ति को ध्यान म रखकर काम करना है वर्ष क अन्त मे हम जायजा लेना ह, हमने कितने पेटो को भोजन दिया—यह अनवरत क्रम ह जो चलता ही रहता है हमारी जनता धर्मभीरु ह, और सत्ताशील होने से वे हम मे देवत्व का प्रकाश पाते है।

सब म त्रीगण मुख्य मन्त्री का भाषण सुनकर मुग्ध हो गए मुख्य म त्री स्वय तरल हो गए, ऐसा लगा जैसे वे सम्पूर्णत बदल गए हैं उनका अग अग बदल गया है।

सब मन्त्रीगण मौन थे शायद अवसान विद्रोह को रोकने का यह भावुक प्रयास ह म त्री कोई हिला न डुला उन्होने सोचा आज तक जितना पैसा लिया उसे गरीबो म बाट दें, और भविष्य म एक पैसा भी न लें वेतन म गुजारा करें सस्ते मकानो म रहें आडम्बर से मुक्ति लें, सरकारी पहरे तिलाजली दें, सब म नयी रोशनी, नमी, नतिकता का उदय हुआ है, गत तीन चार दिनो म जो घटनाए हुई ह, उन्होने इनको हिला दिया है आज हमारे साथियो के साथ हुआ, कल हमारे साथ होगा—तब सत्ता का भोग तो दूर जिन्दा रहना दुलभ हो जाएगा।

उद्योग म त्री जी ने कहा—आप अधिकारियो को आदेश दें, माग दर्शन करें और हम मठकर आपके नेतृत्व मे किस तरह पापो स मुक्त

हुआ जाय, किस तरह हमे जनहित मे लग जाना चाहिए इसकी योजना बना लें और उन सब वरिष्ठ सावियो को भी अभी बुलायें जो इस सत्ता के खातिर पीडित हुए है, कई नाम है कई राजधानी म है कई को बाहर से बुलाना पडेगा, भ्रष्टाचार को जड स मिटाना होगा हम पवित्र हो गए हमारे साथी नही तो फिर कोई अन्तर नही पडेगा हमारे साथी भी ठीक हो गए पर अधिकारी वसे ही रहे तो भी हम बच नही सकेंगे।

आप अधिकारियो से बात करें हम साथियो से और फिर वापिस कल दुपहर तक साथियो के साथ मिलेंगे।

हम मन स जनहित म जाना चाहते हैं ईश्वर हमारी मदद करे।

शिक्षा मन्त्री का चेहरा उतरा हुआ था – बन्धुओ आप मेरे यहां चलो मुझ पर यह अभियोग है कि मैं स्त्रियो स काम वासना की तृप्ति चाह कर उनके काम करता हू अभी भी दो शिक्षिकाए मेरे यहा ठहरी हैं दोनो मेरी बहन हैं और जिनको लोग नही मानते मुझे आज आपको मनाना है और कल जनता को सफाई देना है। सत्ता म रहने वालो का राजनतिक चरित्र भी उज्ज्वल होना चाहिए यदि वह नही है तो सत्ता उसे रसातल तक पहुचादगी।

आप सुन रहे हैं आराम गृह व्यभिचार के अड्डे बन हैं मिनिस्टरो के यहां पहुच महिलाओ के द्वारा होती है अधिकारियो स काल गल्स द्वारा काम लिया जाता है, जनता की यह धारणा बन गयी है कि हम चरित्र भ्रष्ट व्यभिचारी रिश्वत खोर व पक्षपात म लिप्त हैं।

इसमे कुछ सत्य हो सकता है उस हद तक हम अपने आप तो स्पष्ट करदें और भविष्य मे फिर कभी इस मार्ग पर आगे नही बढें हमारा शासन निष्पक्ष हो, जनता हमारे शासन मे सुखी हो उनका जीवन स्तर आगे बढे वे शिक्षित होकर सच्चे नागरिक हो – चरित्र के अभाव मे कोरी घोषणा निरर्थक है।

सब ने कहा चलिए – आज संध्या का भोजन आपके यहा।

महेन्द्र सिंह की बहन मारी गई उसकी लाश उसके ससुराल में जलायी गयी। महेन्द्रसिंह दाह संस्कार में था लौटा तो उसने भी अपने गांव में शोक बैठक की।

गाव के लोग आए सात्वना दी। कुछ कह रहे थे डाकुओं का जोर बढ़ रहा है लेकिन बाई साहब तो शान्ति की मूर्ति थी किसी को काई कष्ट नही न्वी थी।

मूल सिंह ने कहा – यह कर्मों का फल है राज्य की हालत अच्छी नहीं है कानून व्यवस्था ठप्प हो गयी है लेकिन फिर भी मेरी सारी सहानुभूति आपके साथ है। महेन्द्रसिंह–आप न कहें न सही मैं कहता हूं राज्य में जिस सीमा तक आपाधापी फैल रही है उसका खमियाजा मुझे उठाना ही चाहिए अभी तो मेरी बच्ची का पता नहीं है और देखिए आज नोटिस आया कि मैं अपनी हरकतें दूर न कर पाया तो मेरा एक सम्बन्धी भी बाकी नहीं छोड़ा जाएगा। सम्पत्ति नष्ट करदी जाएगी भाई साहब – आप ठीक कह रहे थे – भ्रष्टाचार कभी पनपता नहीं कुछ दिन सुनहरे स्वप्नों का माया जाल भले ही फला दे, राज्य का प्रारम्भ ही दल बदल से हुआ राज्य में सैकड़ो दलाल हैं और मंत्रीगण ही नहीं स्वयं मुख्य मंत्री तक भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

महेन्द्रसिंह की आखें गीली हुई उसने रूमाल से आँसू पोछे–मैं स्वयं इनके लिए जिम्मेदार हूं आदमी जब आदमी नहीं रहता पाप सिर पर चढ़कर बोलता है।

आत्मा अपना मान खो देती है भौतिकता प्रकट हो जाती है और वही हमारी नीति निर्धारण करती है। निरंतर यह सत्ता पाप ही नहीं छोड़ देती है वह रगों में बट जाती है और प्रारम्भ में दल का न्याय बनता है उसके बाद उसमें व्यक्तिगत स्वार्थ पनपता प्रारम्भ होता है और अन्त में वह रेशम के कीड़े की तरह अपनी जाल में फस जाता है।

प्रभु करे हम इस स्थिति से ऊपर उठें, भाई साहब आपकी सीख मानते तो न इन्द्र सिंह जी और न हम दल बदलते। सत्ता का पौधा अब

गुणों मे ही फलता है, उसकी आधार शिला पक्षपात है उसके पत्त पत्ते पर भ्रष्टाचार फैल गया है, डाली डाली की बात क्या कहू ?

मूल सिंह ने अपना हाथ उसके क धे पर रखा–मैं क्या कहू भाई साहब ? कितने कम हैं जो हमे प्रभावित करते हैं लकिन वतमान तो हमें प्रभावित तत्काल करते हैं पर खडड म पडेगा तो टूटेगा सिर के टक्कर लगाओ तो सिर से खून निकलेगा । छोडिए अब तो कर्मों का फल भोगना ही पडेगा, उसको कौन टालेगा।

मुख्य म त्री आए, महेन्द्र सिंह चौंका–आप सर क्यो कष्ट कर रहे हैं, डाका पडा तो धन भी जाएगा और जान भी।

मुख्य म त्री उदास था उनके चेहरे पर हवाईया उड रही था, उनके साथ इ द्र सिंह भी था और दस पाच आदमी और थे। सब जसे गमजदा हो।

मुख्य म त्री–हमने निणय लिया है कि या तो ये डकैतिया समाप्त होगी या हमारा शासन त त्र यह चुनौती है। आप पीडा न रखिए हमने जो किया राज्य के हित मे किया नगर परिषद पचायत क चुनाव भी आवश्यक थे जा वर्षों से नही हो पा रह थे चुनाव के बाद लोक्त त्र नया जीवन पाता है मुझे मालुम है हमारे साथियो ने ऐसा कोई काम नही किया जिसस हमारा मुह लज्जा स झुक जाए, और जो किया वह वतमान परिस्थितियो म आवश्यकता खर छोडिए हमने तय किया है कि भविष्य म यदि राज्य की ईमानदारी निष्पक्षता हम कायम रख सकें तो–हम उदाहरण प्रस्तुत करेंगे–आज आप दुख मत उठाए आपकी बहन हम सब की बहन है कर्मों का योग है कि उनको डाकुओ के हाथो मरना पडा।

मूल सिंह–मुख्य म त्री महोदय मैं नही कहता इनकी बहन की मौत का कारण सस्करण म जुडा हुआ है राज्य म भ्रष्टाचार, डाकुओ के उदभव का आधार तो है ही मैं दूर दराज क गिद्ध ना का रगीन इन्द्र धनुष नही बनाता परन्तु जो हो रहा है वह हमारे भावी चमगार का प्रतीक है प्रारम्भ है। भाइ साहब मह द्र सिंह जी ! आप तो

उनने वापिस उनके साथ चलते चलते कहा—नर, इधर से नहीं, आप सीधे पधार, आज मजदूर तूफान मे हैं। उनमें जनून आ गया है, वे इधर ही आ रहे हैं। हमारे यहा पुलिस का इतना जाबता नहीं कि हम इस तूफान को रोक सक, आप इधर से पधारें 10 मील का चक्कर पडेगा।

मुख्य मन्त्री ने सशय की दृष्टि से देखा—वे कुछ कहे लेकिन नहीं बोल।

सेठ भी उनके साथ रवाना हुआ।

मजदूरो की आवाज दूर स आ रही थी—मजदूर सघ जिन्दाबाद मजदूर नेता एक हो सेठ का नाश हो।

बाहर वठ लोग उधर ही रवाना हुए दूर पीपल के पेड के नीचे लोग जमा थे मीटिंग चल रही थी। मजदूर नेता बोल रहे थे—भाईयो! हमने जिस हुकूमत की कल्पना की वह तो है नहीं यह तो चोरो और मेली गुना की सरकार है जो जनता का खून चूसने म लगे है अभी हम मुख्य मन्त्री को विज्ञापन देते हैं यदि एक सप्ताह म कुछ नही हुआ तो हम स्वय हथियार उठाना पडेगा सरकार सेठ स मिल गयी है। सेठ का पसा राज्य का पैसा है। मजदूर का श्रम मजदूर की सम्पत्ति है।

हम समझ लेंगे महेन्द्रसिंह जिन पापो को ढोता रहा उसका फल उसे मिल गया घर का घर तहस नहस हो गया अब भीतो से सिर टकराओ। सत्ता क्या आ गयी अन्धा हो गया हमे भूल गया, किसानो को भूल गया सिर्फ सेठ का धन और उनकी कुमारियाँ महेन्द्रसिंह के लिए सब कुछ थी, उसी का नतीजा है। ऐसे भण्ड्यों का जडमूल से नाश होना चाहिए। ये जिन्दा रहे तो दुनिया डूब जायेगी, पाप का बाढ़ हमे बहा ले जायगा और नरक के सागर म लपट लगा।

पन्ना भील बडबडाया—अरे, साधु को ढोंगी बता रहे हो, कवर साहब तो गरीबो के दास थे मुझ स क्या किसी से न एक पसा स्वय ने लिया और न किसी को देने दिया।

हमीरा चमार—अरे ये मिल भी कंवर साहब ने खुलवाई यहाँ मिल कहाँ से बनती यह तो भला हो कि राज्य ने रुपये में बारह आना अपना लगाकर सेठ को मौका दिया हमारे मजदूर काम कर रहे हैं, सरकार का पैसा लुटाने के लिए तो नहीं है।

पन्ना—भाई ये सब बुरे थ सब मे आज 250) रु माहवार घर मे ला रहे हैं ये हराम जादे कमाए और साम को दूना पी जाते है, 1000) रुपये माहवार भी हो तो ये साले सब पी जायेंगे।

हमीरा ने कहा—भाई साहब मैं भी पीता तो हूँ लेकिन घर का खर्च करने के बाद जो बचता है उसका आधा रुपया खर्च करता हूँ 250) रु कम नहीं होता भाई मैं दिन भर हल बनाता हूँ, जूते गाठना मुश्किल से 50 रुपट्टी भी नहीं मिलते। भला हो कंवर सा का जो 15 बीघा जमीन दिला दी और कुआ खोदने का कर्ज। गए साल बुरा जमाना था फिर भी खाने जितना नाज हो गया। आगे भी फसल ठीक हुई तो सब नारायण जी दया तो घर भर जाएगा अरे शराब और रण्डी तो सेठ का दिवाला निकाल देता है। ये मजदूर क्या चाहते हैं? क्या सेठ अपना खजाना इनके लिए खोल दे?

मजदूर यूनियन का सचिव खड़ा हुआ—हमने हमारा मांग पत्र समय म श्री को दे दिया है आज अगर हमारी मांगें मन्जूर नहीं होती हैं तो हम समय म भी जी को घेर लेना चाहिये वे हमारा गांव छोड़ कर नहीं जा सकते चाहे फिर हमारी लाश ही साथ।

पन्ना भील—अरे, सारा राज तेरे पास आ जाए मांग करता है तो फिर कम क्या? मजदूर क्या रहे मुख्य मन्त्री बन जाए ताकि सेठ रामधन भी पीछे पीछे फिरे। हमीरा भाई—यह मील अभी लगा अभी सीमेण्ट बनाने का कारखाना लग रहा है। 20 करोड़ रुपये लगेंगे, यह सब तो हमारा कंवर साहब का प्रताप है। मुझे याद है ये मजदूर दिन भर इधर उधर टाल घूमा करते थे कभी किस पेड़ की छांह तो कभी किस पेड़ की छांह में बसेरा ढूंढते थे। काम था नहीं, मजदूरी कहां से

ग्राती। लेकिन साले सब नुगरे है महेन्द्रसिंह जी क्वर के घर गाज पडी ये साले वहा बैठने तक नही गए गाव का ठाकुर ग्रौर ग्राज गाव की तरक्की हो रही है सब उनकी वजह से, ये रिश्वत खाते है खाते हागे, ली होगी सेठ से, इन मजदूरो को क्या हानि हुई ? इनसे तो रिश्वत ली नही। भगवान को भी राजी करना हो तो प्रसादी बोलो। कवर साहब की जागीरी गयी ग्रब क्या करे ? सब कसे निभाए हम लोगो की भलाई करे ग्रौर उन लोगो से ले जिनका खाए तो नही खटे।

हमीरा—हां भाई तुम सच कहते हो। ऐसे देवता पुरुष को गाली देते हैं भगवान कभी नही बख्शेगा बोल हमारे गाव मे तो सबका भला किया ग्रौर हम गए तो खर्चा भी खुद ने किया।

इतने म रामा दरोगा इनके पास ग्राया—वह भी मिल मे मजदूरी करता है पढा लिखा है। रामा को देख कर पन्ना बोला—भाई क्या लेना चाहते हो ? 250) रु कभी देखे नही माहवारी का माहवारी घर मे डालो ग्रौर सब्र तो करो। रामा दरोगा—तुम नही जानते हो, भोले लगते हो, सेठ लाखो रुपया कमाता है। हमारी मजदूरी के नाम पर 1000) रु महीना से ज्यादा बचाता है उसका चार ग्राने भी नही देता उसको खाने का क्या हक है ?

ग्ररे भाई तिजोरी से खोल कर लाखो रुपये लगाये, ग्ररे सेठ, रामधन नही होता हमारे कवर साहब नही चाहते तो गाव म मिल खुल सकता था।

रामा दरोगा—हमे हमारी कमाई का हिस्सा मिलना चाहिए, सेठ करोडो कमाए ऐश करे हम पेट भर भी भोजन नहीं मिले।

हमीरा रेगर—भाई तुम ठीक कहते हो, ग्रादि जुगा से यह होता ग्रा रहा है। गरीब ग्रमीर लाख गरीब दोनो ग्रमीर गाव मे नगर सेठ एक ठाकुर एव ग्रौर रियाया सबको, तुम जानो तुम्हारा काम जाने लेकिन कवर साहब की बहन मर गयी, इस वक्त तुम उनकी इज्जत लो ग्रच्छा नही। जब समय बीत जाए तब लेखा जोखा लेते रहना।

मजदूर नारे लगाते जा रहे थे इस सत्यानाशी सरकार का नाश हो। भ्रष्टाचारी राज का अन्त हो मास्टर एकता जिन्दाबाद।

किसी ने आकर खबर दी कि मुख्य मन्त्री सीधे ही चले गये मास्टर नेता ने माथा हाथ में लिया–डर गया मुख्य मन्त्री भग गया मारा चोर के टिकाव नहीं होता वह भाग गया जाएगा कहां–हम एक बार मन्त्रीसिंह जी के यहां बैठ आए आखिर मौत हुयी है क्या कारण है भगवान जाने बेचारी बहन ने क्या किया ? कवर ने भ्रष्टाचार किया तो कवर भोगे।

किसी ने कहा–अरे यह कवर बड़ा बदजात है चोर और–और औरतों की तीन भग कर रहा है। डाकुओं ने बदला लिया इसकी बहन का शील भंग कर मार दिया। इस कवर कहता है कि एक नहीं कई ने उसके साथ जीना किया है। नरक यहीं है स्वर्ग यहीं है किये का भोग तो भोगना ही पड़ेगा।

मास्टर पर नेता बोला–भाई अच्छा यह है कि हम शान्त शान्त मन्त्री जी के यहां बैठ आयें– वहां हमें खोटी बात नहीं करना चाहिये। मौत का घर है गम जदा।

सब ने कहा–ठीक तो है 12 दिन बाद समझ लेंगे। हमारे किशन की लुगाई के साथ जिना किया वह फाड़ जाएगा लेकिन आज नहीं चलो शान्ति से।

सिलसिला टूटता नहीं वह चलता ही रहता है □ सुशीला देवी ने पत्र लिख कर भेजा रतन देवी के तबादले के लिए और वह सीधी शिक्षा मन्त्री जी के बंगले पर चली गयी। पत्र पढ़कर उन्होंने एक बार रतन देवी की तरफ देखा फिर बाल–बहन जी लोगों की सहायता दो तो बदनाम न दो तो गाली फिर भी आप के केस की रिपोर्ट मंगवा लेता हूं आप कल सुबह आइए।

आपकी साख अच्छी है आप विधवा हैं घर की पोषक आप ही हैं। मन्दपुरा में कोई रिक्त स्थान है या किसी को हटाना पड़ेगा... जिसको हटायेंगे वही मुझ पर लांछन लगायेगा।

रतन देवी आंखे नीचे किए सुन रही थी, उसकी आँसुग्र धारा फूट पड़ी।

शिक्षा मन्त्री ने कहा–आप रो रही हैं, देखिये हम जिस पद बठे हैं वहा निष्पक्षता अपेक्षित है दया की कोई गुंजाइश नही नियम बने हैं लेकिन लगता है आप का मुकदमा सही है। मैं को कोशिश करूंगा कि तबादिला हो जाय और आप अपनी म ी साम की कर सकें।

रतन देवी सुंदर स्वस्थ थी गुलाबी रग और दुबले होठ ब बडी आँखें–ऊपर भवरे छाए हुए, कसा हुआ बदन–ओह ! आप अ 20 भी पार नही कर पायी होंगी और विधवा की गाज पड गयं बस इन दिनो आपने पत्र पढे होगे मुझ पर बडे अभियोग हैं। एक भी कि मैं स्त्रियो के साथ छोड़िये मैं चिन्ता नही करता–जब इस पद पर बैठा हू शुद्ध मन से काम करता रहूंगा।

रतन देवी न आमू पू छ कर वहा–सर, सुशीला जी मेरी व है उन्होन मुझे आपके पास भेजा है। मैं तो इस शहर म अजनबी धमशाला म अकेली औरत को रहन नही दन, होटल–हुजूर मैं किरा बरदास्त भी नही कर सकती और फिर अकेली पाकर हजारों निग ताकती रहती हैं, मुझे कहा कि मैं हुजूर के अतिथि गृह म - आग न बाल सकी–आमू लुढ़कते रहे।

शिक्षा मन्त्री जी उठे चपरासी को कहा कि वे रतन देवी लिए ठहरने की व्यवस्था अतिथि गृह में करदें सुशीला मेरी बहन है आप उनकी मुझे क्या आपत्ति है। मैं सचिवालय जा रहा हू सध्या क 8 बजे आवूंगा–हा मोहन तुम बाई के लिए–भोजन की व्यवस्था क दना आप सामान भी साथ लाई हैं उसे उसी मे रख दीजिए कोशिश करूंगा कि आपका काम हो जाए। रतन देवी ने हाथ जो दिये, शिक्षा मन्त्री दफ्तर के लिए रवाना हुए, मोहन ने आकर रतन देवी की पेटी ली, और बोला आप चलिए नहा धो लीजिए, चाय पहले लेंगी या बाद में।

रतन देवी–अभी नही।

हा वे स्मग मिथार गइ बेचारे साहव थके है दिन भर काम करत हैं थक जादे पड रहते हैं सुशीला बहन जब आई तो थोड़ा दुख भूल गये।

रतन देवी उसके पीछे पीछे गई अतिथि घर मे पहुचकर चारो ओर देखा- ो पलग पड है, इनलप क गद्दे साफ सुथरे-सपेद।

मोहन ने कहा-दखिए यह नहान है और यह दखिए टकी है आप नहा लीजिए मैं नाश्ता ल आवू गा।

रतन दवी-स्त ्ध उसने स्नान कर कुर्सी पर बठने की हिम्मत नही की।

मद्द सोफा स्प्रिगदार।

नौकर नास्ता ले आया-सैंडविच मिठाई नमकीन, चाय। नौकर बोला-बाई जी आप इस अपना ही मानिए अपना घर समझें साहव बहुत उदार हैं जो कमात है वह गवा दत हैं यार दोस्त मित्रो और अतिथि सत्कार म

आप भोजन करें तो घन्टी बजा दें नौकर चला गया।

रतन दवी को तथादन का फिक्र था चारो ओर अखबार मे भ्रष्टाचार क आरोप लग रह थे जिन्हा मन्त्री ही क्यो ? कई प्रधान विधायक और कार्यकर्ता पमे क बनावा स्त्री का अग भी लेते हैं उसने अगडाई ली काच क सामन खडी हुई अपने सौन्दर्य पर स्वय रीझ गई सुशीला ने उसे भेजा है सीधा उसक पास जिसके पास सर्वाधिकार है क्या करें ? वह पलग पर लेट गई रात भर निद्रा विहीन थी कल दुपहर की गाडी म बैठी थी रास्ते म चार घ टे तक गाडी लाइन साफ न होने से रुक गई थी इसलिए पलग पर लेटते ही नींद आ गयी, उठी तो खिडकी से बाहर झाका सूना राजमार्ग-वह वचन निबाहने के लिए कुर्बानी करने को तैयार है क्या अपनी लाज को अपने साथ न,ो ल जा सकती अभी वह कच्ची आयु की नही सुशीला क कहन स उस वहां आ जाना चाहिए।

भाजन किया वापिस सो गयी जब उठी तो 7 बज रह थे, बाहर दफ्तर म मन्त्री जी बुक थे उसन मुह धाया और नौकर स पूछा साहब से मिल सकती हू ?

मोहन ने वापिस आकर कहा—कई आदमी बैठे हैं—मैं थोड़ी देर बाद पूछूंगा।

उसके मन में उत्तेजना आ गयी नौकर चाय लाया उसने जल्दी जल्दी चाय पीयी उसका शरीर उत्तेजित था मन में खलबली मची थी ऐसा लग रहा था जैसे वह शीघ्र ही अग्नि परीक्षा से गुजरेगी अब तैयार होने का प्रश्न है तैयारी का कोई अर्थ नहीं है और वह निश्चल हो गयी, जो होगा देखा जाएगा।

लगभग 8 बजे चपरासी आया—बाई साहब ईन।म से आपका काम हो गया साहब भोजन के लिए याद कर रहे हैं।

जब वह मंत्री महोदय के पास पहुंची तो थर थर कांप रही थी जाकर मुंह नीचा कर खड़ी हो गई प्रणाम भी नहीं कर सकी।

मंत्री ने कहा—बाई एक अध्यापिका अपना स्थानान्तरण चाह रही थी उनकी जगह तुम्हारा तुम्हारे गांव में कर दिया।

रतन देवी—जैसे रो पड़ी हुजूर आगे नहीं बोल सकी मैं क्या कहूं हुजूर।

बैठो।

और उन्होंने उसको हाथ में आदेश पकड़वा दिया फिर बोले—तुम्हारे यहां रतन देवी किसी अन्य का नाम है क्या ?

नहीं सर, मैं ही हूं।

ओह तब तो तुम्हारा नाम पदोन्नति के लिए चल रहा है, तुम चाहो तो सारंग में तुम्हें.. गांव से कितना दूर है ?

हुजूर बीस मील।

तो 100) रु माहवार की तरक्की होगी, बस आती जाती है माहवारी पास बना लोगी तो 40) रु लगेंगे 60) रु मासिक तो बचेंगे।

और यदि अपनी सास को सारंग में साथ रखो तो 100) रु का बचत है।

रतन देवी—हुजूर की कृपा है।

लेकिन तुम बैठी नहीं—हाथ धोलो, भोजन आ रहा है।

मैं

नहीं उसकी जरूरत नहीं अहसानमन्द होने की आवश्यकता नहीं सुशीला जी ने तुम्हें भेजा है, तुम जानती हो आज कल वातावरण हमारे विरुद्ध है फिर भी सीधा मार्ग मिल गया।

थालियां आ गई दोनों ने भोजन किया।

मन्त्री ने कहा—और कोई तकलीफ तो नहीं हुई नौकर का व्यवहार तो ठीक रहा।

हुजूर के यहां आकर नहीं सर, किसी तरह का कष्ट नहीं हुआ। वह इन्तजार करती रही कि आगे मन्त्री महोदय क्या कहते हैं ?

माफ करना मैं सोचता हूं तुम्हारा ब्याह हुए ज्यादा समय नहीं बीता।

विवाह तो मेरा 12 वर्ष की आयु में हो गया।

लेकिन जब बारात लौट रही थी तब दुर्घटना में वे चल बसे।

रतन देवी आंसुओं से प्लावित हुई।

मन्त्री महोदय—ओह ! भाग्य की रेखा है 8 वर्ष बीत गए। मन्त्री महोदय ने उसके आंसू पूछे नहीं, अब रोने में क्या मिलेगा ?

लेकिन रतन देवी रो रही थी मन्त्री महोदय आंसू पूछ रहे थे तब उन्होंने रतन देवी के कन्धे पर हाथ रखा—नहीं मत रोओ प्रभु ने जो ले लिया उसका क्या करें ? मैं जो भी सेवा कर सकता हूं करूंगा यह घर अपना ही घर समझो। मैं 31 भी पार नहीं कर पाया घर में आंगन में कोई किलकारी नहीं सुनी और वह चल बसी अकेला रह गया। संसार में बेसहारा चल रहा हूं, व्यस्त दिन और सूनी रातें।

रतन देवी ने अपनी गरदन मन्त्री महोदय के कन्धे पर लगा दी, वह बराबर रोती जा रही थी।

उसने कहा—चलो, मैं तुम्हें सुला देता हूं, और उसके साथ-साथ शयन कक्ष में गए पलंग पर उसे लेटाया और उसके आंसू पूछते रहे।

देखो अब मत रोओ।

वे उनके पास ही बैठ गए रोते हुए चेहरे को अपनी गोद मे लिया।

आंसू पूछे और फिर उसे ऊपर उठाया और अपने होठ उसके होठो के लगा दिये और स्वय भी उस पलग पर लुढक गए।

उठे तो रतन देवी शान्त थी—उसने उनके चरणो म प्रणाम किया आप ही मेरे रक्षक हैं। आपके हाथ अपना भविष्य छोड रही हू।

तुम निश्चिन्त रहो मैं जीवन मे एकाकी, तुम भी एकाकी। रतन तुम वास्तव म रतन हो।

मैं कसम खाता हू कि तुम्हारे भविष्य का भार अपने पर लेता हू दुनिया कुछ भी कहे प्रकृति के आवेग को कौन रोक सकता है अभी तुम जीवन मे प्रवेश भी नही कर पायी कि प्रभु ने सब कुछ छीन लिया।

रतन देवी—प्रभु ने छीन लिया और मुझे नये प्रभु मिल गए, आपको सौंप कर मैं निश्चिन्त हू मैं जब गाव मे निकली तो कितनी लोभी आखें मुझे घूर रही थी कितने आदमी थे जो मुझे सहायता देने के लिए तयार थे सुबह गाडी से उतरी तो ढेर सारे आदमी मदद के लिए दौड पडे सुशीला बहन का भला हो कि उसने आप तक पहुँचा दिया।

मैं तरक्की का आदेश शीघ्र भेज रहा हूँ, तुम आराम से रहो, चाहो तो यहा तबादला कर दू अपनी सास को भी यहा ले आवो।

मैं सोचता हू यहा सब मिलाकर 200) रु मासिक का अन्तर पडेगा और कोई खर्चा करने की जरूरत नही होगी। यहा सब प्रभु का दिया हुआ है।

रतन देवी ने करवट ली और अपने बाहु फैलाकर मन्त्री महोदय को कस लिया।

मन्त्री महोदय ने जब मुह ऊपर उठाया तो रात के 12 बज रहे थे।

तुम सुबह जाओगी ।

जैसी आज्ञा ।

कल और रुक जाओ तरक्की का आदेश मिल जाए तो उसे भी लेते जाना—और रतन, मैं सोचता हूँ पत्नि के बाद जीवन में इतना सुख कभी नहीं भोगा कोई नारी मेरे सम्पर्क में न आ पायी, आप पहली नारी हो जो मुझ में समा गई हो। हां, तुम सुन रही हो भ्रष्टाचार बहुत फैल रहा है उसमें स्त्री संग को भी भ्रष्टाचार का रूप दिया गया है, यह गलत है—दो व्यक्तियों का मन मिल गया तो क्या दोष ? और सच यह है कि मैंने किसी प्रलोभन में आकर तुम्हारा काम नहीं किया काम तो होना था मुझे कोई इधर उधर करने की जरूरत नहीं पड़ी फिर कौन पाप कर दिया।

रतन एक टक लेटी रही मन्त्री महोदय को देख रही थी। उसका एक हाथ उसकी छाती पर था।

मन्त्री महोदय—मैं पद पर हूँ इसलिए लोग अंगुली उठा कर मुझे कोसते हैं। जैसा तुमने बताया अनेकों दलाल हैं जो पैसा भी लेते और स्त्री का सवस्व भी मैं किसी दलाल के चक्कर में नहीं हूं, मुझे दलाल की आवश्यकता क्या है ? तुम्हें नहीं मालूम मुख्य मन्त्री 65 पार कर चुके हैं अब भी उनका जी नहीं भरा। तरह-तरह की सुन्दरियां रोज आती हैं सौदा होता है, किसी की तरक्की किसी का डेपुटेशन और उनसे उनका सतीत्व लूटा जाता है।

प्रधान विधायक सब इसमें लिप्त हैं और बदनाम मन्त्री मण्डल हो रहा है। सुबह जब आयी तो न आपने कुछ देना चाहा और न मैंने आपसे लेना चाहा काम हो गया यह तो अकस्मात है। परमब के लेन देन का हमें मिला क्या ? तुम भी नौकरी कर रही हो मैं भी 3 वर्ष से शिक्षा मन्त्री हूं।

बस लोग कहते हैं कि मैं स्त्रियों से उनका शरीर मांगता हूं और उनका काम कराता हूं। यह झूठ है, सरासर झूठ, मैंने आपसे

पास कोई माँग रखी ?

कल मुख्य मन्त्री न मीटिंग बुलाई है। मैं स्पष्ट कहूँगा कि डर कर राज्य नहीं होता हाँ रुपया लेकर किसी का काम किया तो मुझे नहीं मालूम पर आपका मेरा मिलन सहज था, आप कल तो रुकिये... दिन भर मैं व्यस्त रहा आप से कुछ बात तक नहीं कर सका। परसों मैं स्वय दौरे पर जा रहा हूँ आप मेरे साथ चलिए आपके गाँव छोड दूँगा।

रतन देवी ने एक बार और मजबूत पकड मे म त्री महोदय को आबद्ध कर लिया। □

अनियमितताओ और अनीतियो से चारो ओर राज्य के विरुद्ध विद्रोह सा पलने लगा था सत्ताधारी पार्टी के विधायक खिसकने लगे थे विधान सभा सत्र सिर पर आ रहा था। इधर ह जी न उद्यमियो से 20 लाख रुपये इकट्ठे किए दल के विधायको को किसी को गाडी दिलाई गयी, किसी के घर बनाने मे पैसा। फिर भी मुख्य मन्त्री अपने आपको सुरक्षित नहीं पा रहे थे। विधान सभा पर पार्टी से वे विधायक जिनको कुछ नहीं मिला अब हावी हो रहे हैं जितना दिया जा रहा है उससे अधिक माँग रहे हैं। खनिज पट्टाधारियों की रकम भी खच कर राज्य को बचा सके तो अच्छा है।

भ्रष्टाचार आपाधापी तो किस राज्य म नहीं—मुख्य मन्त्री ने अपने दलीय विधायको प्रधानो और प्रमुखो को बुलाया। □

शैलेन्द्रकुमार माथुर न कहा—सर मैंने कभी म सूयदेव आय को अपने साथ लाने का तय कर लिया है आप सूयदेव को निगम का अध्यक्ष बना दें, और किसी तरह का प्रलोभन देने की आवश्यकता न ी है। मैं श्रीमती आय को साथ लाया हू बहन जी बडी कुशल और सामाजिक महिला है इनकी स्वय राजनीति मे रुचि है या य मैट्रिक पास हैं। आप चाह इनको निगम का अध्यक्ष बना दें।

मुख्य मन्त्री ने मुस्कराकर श्रीमती आय का अभिवादन किया, फिर कहा—आपके पति देव हमारे बडे आलोचक रहे हैं। रह क्या

अन्तर आता है, मैं आलोचकों का प्रशंसक हूँ, वे हमारे सही मार्ग दर्शक हैं। माथुर साहब आपने आय साहब से बात करली।

जी हां कल्ली सुबह आ रहे हैं किसी निगम में मनोनयन करना होगा।

मुख्य मन्त्री जी—श्रीमती जी आपने हम पर कृपा की व्यर्थ ही बिना इक्वान बढ़ रहा है, दल के विधायकों में असन्तोष विरोधी विधायक कटु और आप जनता हम भ्रष्टाचारी समझती हैं। जो काम करता है उसकी आलोचना होनी ही चाहिए मैं इससे नहीं डरता।

मुख्य मन्त्री ने ड्रावर खोली और 10 हजार के नोट माथुर साहब को थमा दिए।

श्रीमती आय हमारे दल में आ रही हैं, इनके भेंट में परिचय और इनके ठहरने की व्यवस्था मयुर में कर दें मैं सेठ रामधन को फोन कर देता हूँ वे दो कमरों की व्यवस्था कर देंगे और एक कार भी भेज देंगे।

माथुर और श्रीमती आर्यं उठ कर बाहर आये, मुख्य मन्त्री ने ड्राईवर को कहा कि उन्हें मयुर होटल छोड़ आयें बीच में कहीं जाना हो तो ले जाना और जब तक छुट्टी न दे मत आना, मेरे लिए मैं गाड़ी मंगवा लूंगा।

फोन उठाया, हां दौलतराम, रामधन और महेन्द्र कुमार को बुला लो वे भी मिल जायें, देर न करे और सेठ रामधन को कह दें कि मयुर में माथुर साहब के लिए दो कमरों की व्यवस्था करा दें। हां, सबका बनिया माथुर हमारे साथी हैं और आय भी साथी बन रही हैं।□

उद्योग मन्त्री आ गए—सर सब ठीक हो गया लेकिन महेन्द्रसिंह का बड़ा धक्का लगा है वे विक्षिप्त लगते हैं। मैंने बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन वे मेरी नहीं सुनते। बस एक धुन लगाये हैं, जब तक सार्वजनिक रूप से अपने पापों को स्वीकार नहीं करूंगा तब तक मुझे चैन नहीं है, उनकी स्वीकृति का अर्थ होगा हमारा पलायन।

आप उन्हें समझायें, मैं चलू शायद मान जायें लेकिन कुछ उद्योगपतियो को बुलाया है। सत्र के प्रारम्भ होने में चार दिन रह गये हैं हमे सब तरह का प्रतियात लेना होगा। अभी माथुर आय को लेकर आया था वह हमारे दल मे आ गया।

इन्द्रसिंह आ गया, ऐसा आलोचक खूब!

मुख्य मन्त्री–उसकी पत्नी मुझे मिल गयी है मैं समझता हू माथुर से उसके घनिष्ट सम्बन्ध हैं मैंने सारी व्यवस्था करदी है, आप भी लगे रहिये।

मैं जनता के विद्रोह की परवाह नही करता वह कहा नही है और शासन तन्त्र तो अनेक तन्त्रो पर है। चपरासी क्लर्क, अधिकारी मन्त्री–आप किस किस की ईमानदारी का ठेका लेंगे। हम ईमानदार हो गए तो क्या? क्या नीचे से ऊपर तक सब ईमानदार हो जायगा? मैं तो विधान सभा मे अपने साथियो और विपक्ष सदस्यो स निपट लेना चाहता हूँ।

हा अब तक दल के 15 सदस्यों को राजी कर चुका हू, विपक्षी 5 सदस्य भी हमारी पार्टी म आने का निश्चय कर चुके ह और अपने नाम अध्यक्ष महोदय को भेज चुके है, आपके पास तो अभी बहुमत है अभी उद्योगपतियो को बुलाया है, उनको वक्त पर हाजिर रहने की बात कर लू।

उद्योग मन्त्री–य सेठ सौदेबाज हैं आप उन्हें कह दें कि कुछ रकम भेज दें फिर जरूरत पडी तो फिर माग लेंगे।

वन मन्त्री जी भी इकट्ठी कर रहे हैं मेरे हिसाब से उनके पास भी लगभग 10 लाख एकत्रित हो गये हैं। राज्य म शासनतन्त्र ढीला पडा है उससे हो हल्ला ज्यादा है और विरोधी उसका लाभ उठाना चाहते हैं।

इतने मे स्वायत्त शासन मन्त्री आ गए वे व्यस्त थे–नहीं सर वक्त पर साथ छोडना बडा कमीना है। मैंने निर्णय कर लिया है कि मरते दम तक आपका साथ दू, हा नाजायज बस्तियों को जायज करने की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी। इसमे कुल कितनी रकम चाहिये मैं सोचता हू इससे मैं दस लाख इकट्ठे कर सकू गा।

आपके मन पर असर होगा मुझे आज्ञा दीजिए आपको राहत मिले, मेरा परम कर्त्तव्य है मै आज रहकर आपकी सेवा करना चाहती हू, शायद आप को नींद भी नही आए मैं सहलाकर सुला दू गी, ऐसे उत्तेजक वातावरण म शांति की बडी आवश्यकता है।

मुख्य म त्री–मैं सोच रहा था तुम्हे बुला लू ।

अच्छा हुआ तुम आ गई, मेरा मस्तिष्क चक्कर खा रहा है। सुबह चार बजे से बैठा हू अब तक कुर्सी नही छोडी, आप अन्दर बैठिए चाय तयार करलें और मुझे बुला लीजिए, मैं सठो स निपट लू वे आए हैं। ज्याजा देर नही करू गा 10 मिनिट म निपटा दू गा।

दमय ती अन्दर चली गई–सेठ आए–उन्होने 1–1 लाख रुपये उनके सामने रखे।

मुख्य म त्री जी–धन्यवाद, शायद अधिक जरूरत पडे।

रामधन–हम हाजिर हैं वक्त पर काम नही आए तो कब आए गे और मनें मयुर म इन्तजाम करा दिया है और यह भी कहला दिया है कि कुछ और कमरे खाली रखें।

धन्यवाद तो आप पधारें कष्ट के लिए धन्यवाद लेकिन पैसा तो आपके पास है वह आप से आएगा हम से राज्य की उचित रियायत लाजिए और उद्योग चलाइए देश तरक्की करेगा–लोगों को रोजगार मिलेगा। य तो आप लोग है कि इतना बडा साहस कर रहे हैं हम क्षत्रिए या किसी ठाकुर को–वह तलवार चला लेगा लेकिन उद्योग नही, तो आप अभी विधान सभा के सत्र तक शहर न रहें म सोचता हू मैं आपको अनुचित दबाव नहीं दूगा लेकिन राज्य को चलाना है, आपका सहयोग अपेक्षित है।

मुख्य मन्त्री – बस, पैसा वाला पैसा देगा, गरीब कहीं पिस न जाए, यह ध्यान रखना। हमारा उद्देश्य गरीब को अधिक से अधिक सुविधा देना है। उनकी कच्ची बस्तियों को मात्र ठेके की रकम लेकर जायज कर दो। हां दस लाख तैयार रखना, संभव है अब जरूरत पड़ जाए सत्ता को हाथ से नहीं जाने देंगे और हमने छोड़ दी तो क्या विपक्षी ईमानदार, पवित्र और साधु होंगे सत्ता जिसके हाथ में रही वही हाथ खून से सने रहे। चाहे राम का राज्य रहा हो या महाभारत मुगलों का साम्राज्य रहा या राजपूतों का शासन – डर हो तो अपना हाथ साफ रखना है हम उनसे पैसा ले रहे हैं जो पैसे में अघा गए उनके प्रधान के लिए भी हमने साधन दिए हैं सेठ मोलतराम हो या रामधन महेन्द्र कुमार या श्री चन्दा, करोड़ों कमा रहे हैं हम टुकड़े डाल रहे हैं तब भी हमें चाहिए हमारे दल की शक्ति के लिए या चुनाव के लिए।

अब महेन्द्रसिंह जी से बात करने, मैं लगभग 10॥ बजे यहां से निवृत्त होऊंगा कईयों को बुला रहा हूं तब मैं महेन्द्रसिंह से बात करूंगा। मैंने पुलिस को चेतावनी दे दी कि उनका भविष्य महेन्द्र सिंह जी की बच्ची को जीवित लाने में है। बहन तो चली गई क्या करें? सच यह है कि आई0जी0 पी0 हमारी मदद के लिए कटिबद्ध हैं वे कभी भी लापरवाही नहीं करेंगे उन्होंने इन मुकदमों को अपना मान लिया है और इस डकैती के डाकुओं को तो गिरफ्तार कर लिया है कुछ माल भी बरामद हो गया। कल होम मिनिस्टर वक्तव्य दे रहे हैं और उस दिन से उद्योग मन्त्री बने गये।

इतने में दमयन्ती आ गई – सर, मेरी सेवाओं की आवश्यकता हो तो। मैंने अपना भविष्य आप के कारण निश्चित किया है। निश्चिन्त आज्ञा आप नहीं देंगे तब तो मैं आत्म हत्या कर लेंगी, आपने तो मुझे प्रशान्ति दी है, मैं उसे कभी नहीं भूल सकती अभी मैं शहर में ही हूं आपका स्वास्थ्य कैसा है? आज कल तो जनता में बहुत उत्तेजना है

आपके मन पर असर होगा मुझे आज्ञा दीजिए आपको राहत मिले, मेरा परम कर्त्तव्य है मैं आज रहकर आपकी सेवा करना चाहती हू शायद आप को नींद भी नहीं आए मैं सहलाकर सुला दूगी, ऐसे उत्तेजक वातावरण म शांति की बडी आवश्यकता है।

मुख्य म त्री–मैं सोच रहा था तुम्हे बुला लू ।

अच्छा हुआ तुम आ गई, मेरा मस्तिष्क चक्कर खा रहा है। सुबह चार बजे से बैठा हू अब तक कुर्सी नही छोडी आप अन्दर बैठिए चाय तयार करालें और मुझे बुला लीजिए मैं सेठो से निपट लू वे आए हैं। ज्यादा देर नही करूगा, 10 मिनिट म निपटा दूगा।

दमयन्ती अन्दर चली गई–सेठ आए-उन्होने 1–1 लाख रुपये उनके सामने रखे।

मुख्य मन्त्री जी–धन्यवाद शायद अधिक जरूरत पडे।

रामधन–हम हाजिर हैं वक्त पर काम नही आए तो कब आएगे और मर्नें मयुर मे इन्तजाम करा दिया है और यह भी कहला दिया है कि कुछ और कमरे खाली रखे।

धन्यवाद तो आप पधारें कष्ट के लिए धन्यवाद लेकिन पैसा तो आपके पास है वह आप से आएगा, हम से राज्य की उचित रियायत लीजिए और उद्योग चलाइए देश तरक्की करेगा–लोगो को रोजगार मिलेगा। ये तो आप लोग हैं कि इतना बडा साहस कर रहे हैं हमे चहिए या किसी ठाकुर को-वह तलवार चला लेगा लेकिन उद्योग नही, तो आप अभी विधान सभा के सत्र तक शहर म रहे म सोचता हू मैं आपको अनुचित दबाव नहीं दूगा लेकिन राज्य को चलाना है, आपका सहयोग अपेक्षित है।

नये उद्योग पति भी आ गये थे पी ए ने उनको फोन किया था।

सेठ रामधन चले गए नए उद्यमी अन्दर आए–सर इस कठिन घडी म आज्ञा दीजिए हम सोचते हैं आप का शासन सर्वोत्तम रहा पता नही क्यो आप को बदनाम कर रहे हैं और 4 उद्यमियो ने एक आफर दस जमा किया, मर दो लाख। फिर जरूरत पड तो फोन

कर दें हम हमेशा तैयार हैं, आपके शासनकाल में जो तरक्की हुई है पिछले 20 वर्ष में नहीं हुई–आप हैं कि आपने हम नव उद्यमियों को अनेक रियायतें दी और हमने भी थोडे से समय मे उद्योग चालू कर दिए। वे हाथ जोड कर उठ और चले गए।

मुख्य मन्त्री उठ कर अन्दर गए जहां दमयन्ती उनके आन्तरिक बैठक कक्ष में बैठी चाय पी रही थी।

मुख्य मन्त्री ने कहा–आपको मालूम है महेन्द्रसिंह जी की बहन को डाकू उठा ले गए और उसे मार दिया उनकी लडकी को कोई उठा ले गया।

उसका कहीं पता नहीं चल रहा है महेन्द्रसिंह जी समझ्न है विक्षिप्त तो नहीं कहना लेकिन अपने पापा का स्वयम् भण्डा फोडकर प्रायश्चित करना चाहते हैं भण्डा फोड का भय है हम सब का भण्डा फोड क्योंकि उनके पापा में वे स्वयम ही नहीं संलग्न हुए हम सब संलग्न थ मैं सोचता हू तुम पर भी प्रभाव पड़े।

वे हमे नंगा कर दें लेकिन हमारे नंगा होने पर कोई स्त्री नंगी होती है तो बड़ा कलंक है मैं एक बार उनके पास जाना चाहता हू सत्ता के भागीदार कई बनना चाहते हैं हम उन्हें विधायक नहीं बना सके लेकिन वे सत्ता का टुकड़ा हमारे द्वारा लोगों में बांटते रहे हैं। मैं सोचता हूं तुम को भी उन्होंने ही भेजा और वे तुम से भी कुछ पा सकें।

दमयन्ती बोली–भण्डा फोड, उससे लाभ ? मुख्य मन्त्री के पास जा खड़ी हुई मुझे आप्त कीजिए मैं क्या कर सकती हूं, उसने मुख्य मन्त्री जी का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे चूम लिया।

मुख्य मन्त्री जी भी उत्तेजित हुए उन्होंने दमयन्ती का चूम लिया।

दमयन्ती हंसी–सभी सब द्वार खुले हैं और दर्या जा रहे हैं, मैंने अपना बिस्तर बैठक में मंगवा लिया है आपके शयन कक्ष में उसका द्वार तो है ही।

मुख्य म त्री ने उसके गाल को छुआ, फिर बाल मैं महेद्रसिंह जी के पास जा रहा हू, उनसे बात करने शायद देर हो जाय तुम भोजन कर लो जाना ।

दमयन्ती न मुस्करा कर कहा क्या कोई बडा खतरा है ?

मुख्य म त्री–नहीं हर चीज बिकाऊ है विधायक एव कार्यकर्ता फिर भय कैसा?शीघ्र ही चुनाव आ रहे हैं,उनका चयन मेरे हाथ होगा ।

दमयन्ती–सब लोग भ्रष्टाचार की बात कर रह हैं ।

मुख्य मन्त्री–भ्रष्टाचार कहाँ नही है आज भ्रष्टाचार का बवण्डर मचाने वाले विपक्षी विधायक हमारे दल म आ मिले हैं और मैं चाहता हू कि 10 12 और विधायकों को ले लू तुम निश्चित रहो मेरा शासन काल अभी समाप्त नही होगा । चुनाव के बाद जनता ही मुकर जाए तो बात अलग है मैने गरीबो के कल्याण क लिए अनक योजनाए जारी कर दी हैं और प्रत्येक म त्री और दल क विधायक को उसकी जिम्मेदारी सौप दी, गरीब ज्यादा हैं, उनक मत से विपक्षी दलो के विभक्त मतो स अधिक प्राप्त करना सरल है ।

दमयन्ती, तो मैं भी चलू शायद उनको रोकन म सहायक होऊ यो मै उनक यहा शोक सवाद क लिए गयी भी नही हू और कौन कौन जा रहे हैं ?

उद्योग मन्त्री ।

वित्त मन्त्री तो नही ?

नही ।

आप एक कप चाय पी लीजिए मैं बात करलू , अभी तो केवल मुह भर–ज्यादा देर नही लगेगी ।

वे दोनो रवाना हुए, रास्त भर दोनो मौन रहे अग रक्षक एव पाईलेट जीप साथ थी एक पी ए और चपरासी भी, फोन कर दिया गया, कि चीफ मिनिस्टर आ रहे हैं उद्योग मन्त्री को भी पहुचन के लिए कह दिया । ◻

जब महेन्द्रसिंह जी बैंक मकान पर पहुंचे, उद्योग मन्त्री आगे खड़े मिले।

उतर कर महेन्द्रसिंह जी के कक्ष में गए, और आदमियों को हटा दिया था मुख्य मन्त्री बैठने के लिए दो बार पहले आ चुके थे।

महेन्द्रसिंह जी उदास थे मुख्य मन्त्री जी ने कहा—यह आपकी भ्रान्ति है कि आपके बुरे कामों से आपको भगवान ने इसी जन्म में सजा दी है। आपने लाखों गरीबों की सेवा भी की है उसका फल नहीं मिलता ?

महेन्द्रसिंह—जी एस साहब आप ठीक कहते हैं, पहिले पहले ही चन्द्रवती बहन और बेबी लीना मेरे जीवन के आधार स्तम्भ थे, अब अकेला रह गया न पुत्र और न अन्य पुत्री, लेकिन पाप का प्रायश्चित तो करना ही पड़ेगा, उसके बिना तो कोई रास्ता नहीं है, दम घुट रहा है मैं जैसे जलते तवे पर पानी की बूंद सा जल रहा हूं।

रूपवती—भाई साहब आपका प्रायश्चित किसी दूसरे को पाप से डस दे यह तो आप नहीं चाहेंगे जब आप अपने कृत्य का बखान करेंगे तो उसमें दूसरे भी उसकी चपेट में आ जाते, दुनियां में आपने जो काम किया उससे कई गुणा अधिक पाप हो रहा है—यही बस मुख्य मन्त्री जी उद्योग मन्त्री जी पर तो लांछन आएगा ही, और मुझ पर तो पहाड़ ही टूट पड़ेगा, जीवन दुर्लभ हो जाएगा, मुझे आत्महत्या करना पड़े।

महेन्द्रसिंह—पर मैं क्या करूं ? मुझ में ज्वालाएं उठ रही हैं जो मुझे भस्मसात कर देंगी, मैं इस विषमता को बरदाश्त नहीं कर सकता, मुझे चैन नहीं है मन ऐंठ रहा है, नींद नहीं आ रही है जब तक मैं उसको स्वीकार नहीं करूं तब तक मुझे शान्ति नहीं है, मैं सोचता हूं मुझे स्वीकार कर वैराग्य ले लेना चाहिए। शायद वहीं शान्ति मिले।

उद्योग मन्त्री—हमने कई मार दिए हैं और आज भी पापों को करते जा रहे हैं, जितने दिए-उनसे ज्यादा-अधिक... लेकिन कुछ तो

आवश्यक है उसके बिना काम नही चल सकता, आपका कथन हम सब को ले डूबेगा हम क्या मुह लेकर जनता के सामने जा पायेंगे, आप नहीं जानते !

महन्द्रसिंह—लेकिन मरा क्या इलाज है ? सर, मैं किसी की कठिनाई म नही पडना चाहता और खास कर किसी नारी क जावन को बरबाद करू तो इसस ज्यादा भयकर भट्ठी म जलना पडगा अभी आपकी आयु क्या है विवाह होना दुलभ हो जाएगा गृहस्थ जीवन कलकित हो जाएगा पद पर बना रहना भारी हो जाएगा मैं स्वय इन फलितो का भूला नहीं हू, नही तो शायद दो दिन पूव ही स्वीकृति कर लेता।

दमयन्ती—मैं न अभिमान करती हू और न दुखी हू कुछ काम तो होत ही हैं, आप चाहे या न चाहें कुछ स्वीकृति से कुछ विवशता स, मुझे बताइए मैं क्या नकर आयी और क्या मरा काम नहीं कराया, मुझे निलम्बन से नहीं बचाया मन्त्री और मुख्य म त्री जी तो बाद म आत हैं सबसे पहले ता आपका ही योगदान रहा है क्या आप इन सब को भण्डा फोड कर अपनी आत्मतुष्टि करेंगे और हम सब को नही जलाएग व जलने क लिए फेंक देंगे ?

महेन्द्रसिंह ने दोनो हाथो से सिर को दबाया फिर बोला—नहीं मैं किसी को अग्नि ज्वाला मे नही फेंकूगा इनके द्वारा नए कर्मों का बन्धन नही बाधूगा, इससे जो पाप लगेगा उसका निस्तार कहा होगा ?

सर, मुझे माफ करें। बहुत जी मैं आपस क्षमा चाहता हू। नहीं मैं अब किसी प्रकार का बयान नहीं दूगा व देकर नये पीडाए नही पालूगा। मुख्यमन्त्री जी न कहा—बात बहुत हो गई आप आराम करें, मैं कल सुबह फिर आवूगा। और वे चल पड।

उद्योग म त्री उनको दरवाजे तक छोडने आए मुख्य म त्री ने एकान्त म ले जाकर उद्योग म त्री को कुछ कहा। उत्तर म उद्योग मन्त्री न केवल गदन हिला दी।

मुख्य मन्त्री बगले पर पहुंचे, तो रसोईया तैयार बैठा था उसने जल्दी से रोटी सेकी और दो थालियां लगा दी दमयन्ती ने कहा–आप बहुत थके हैं ड्रिंक नहीं लेंगे।

मुख्य मन्त्री ने नौकर को आवाज दी, वह एक बोतल और दो गिलास ले आया दमयन्ती ने कहा–भाई यह नहीं कैसर कस्तूरी को लाओ।

वह दूसरी बोतल उठा लाया–नौकर ने काक खोला और दमयन्ती गिलासों में डालती रही

मुख्य मन्त्री ने तब उसका हाथ पकड़ा–नहीं अब बरदाश्त से बाहर हो रहा है रात को कोई सूचना आ सकती है टेलीफोन कमरे में लेकर सो रहा हूं, दुघटनाएं हो रही हैं स्थिति बेकाबू होती जा रही है।

दमयन्ती–नहीं सर आज आप सबको भूल जाएं मैं टेलीफोन का तार निकाल देती हूं आवाज ही लगेगी ही नहीं।

मुख्य मन्त्री ने कहा–भाई किवाड़ बन्द कर दो, और इनकी व्यवस्था कहां की है बैठक में–

सर ठीक कर दिया है 11 बज रहे हैं नींद का समय हो रहा है। नौकर के सामने दमयन्ती बैठक में चली गई और कीवाड़ बन्द कर लिए नौकर ने 5 मिनिट पर दस्तक दी फिर मुख्य मन्त्री ने कहा, अच्छा अब जाओ वह चला गया तो बैठक का कीवाड़ खोला–दमु, आओ।

और दमयन्ती शयनकक्ष में आ गई और मुख्य मन्त्री के पास पलंग पर लेट गयी पूरे 6 माह बाद मौका मिला है आपके अहसानों को नहीं भूल सकती निलम्बन हुआ साथ ही पदोन्नति कर यहां बुला लिया और अब मुझे आज्ञा दीजिए मैं आपकी सेवा कर सकूं, किसी मूल को बरगलाना हो, किसी को सबक सिखाना हो।

मुख्य मन्त्री ने करवट बदली दमु और वे उसे पास में खींच कर उसमें डूब गए। जब अलग हुए तो बोले–महेन्द्रसिंह जी मेरे कारण नहीं आपके कारण अपनी जिद को छोड़ पाया लेकिन आपने देखा उनके मन में जबरदस्त उहापोह है जरा निर्णय की स्थिति में नहीं है लीचनार सा रही है अच्छा है अब वह ऐसा कोई कदम नहीं उठाएगा जिससे शासन पर आंच आए।

दमयन्ती—कुछ आदमी बड़े भावुक होते हैं वे द्वन्द्वों मे नही जी सकते। उनके मन की शांति समाप्त हो जाती है मुझे आना हो तो जब तक आपका वायु मण्डल दूषित रहे मैं यहा ही रहू, आप अकेले हैं कही महेन्द्रसिंह जी का भूत आप पर सवार न हो जाए।

मुख्य मन्त्री—इसे आप अपना घर मानिए यहा ही आकर रहें तो कोई आपत्ति है?

खर अभी तो यहां ही हू आपकी सुविधा का ख्याल रखूगी और काय के बोझ से हल्का करूगी स्त्री का पास रहना आवश्यक है।

□

मुख्य मन्त्री जब सुबह दफ्तर म आकर बठे तो अल्प सख्यक वग के कुछ विधायक मिलने आए। विधान सभा की कुल 282 सीटो म 8 मुसलिम प्रतिनिधि बनकर गए—उन्होंने एक ज्ञापन दिया और सत्ता दल के सदस्य ने ही कहा—सर मन्त्री मण्डल म हमारा प्रतिनिधित्व बहुत कम है आप कम से कम 2 अल्प सख्यकों को लें सेवामें भी उनका स्थान सुरक्षित हो, साम्प्रदायिक दगो म पुलिस का हाथ रहता है इसलिए पुलिस मे 50 प्रतिशत अल्प सख्यक को मिले ताकि साम्प्रदायिक दगों को रोका जा सके।

मुख्य मन्त्री ने कहा—मैं मन्त्री मण्डल से विचार कर लूगा, रहा मन्त्री बनने का प्रश्न—तो आगे जब भी सख्या म वृद्धि होगी मैं पूरा ध्यान रखूगा चुनाव सिर पर आ रहे हैं, मैं भला आपको भूल सकता हू, आपकी उचित मागों पर पूरा विचार होगा।

शलेन्द्रकुमार सूय देव आय को ही नही तीन अन्य विपक्षी सदस्यो को लेकर आया और उन्होंने सत्ता पक्ष मे आने की घोषणा की।

उनको निजी सचिव ने शलेन्द्र के द्वारा मांगी रकम दिला दी और उनके घोषणा पत्र अध्यक्ष विधान सभा को भेज दिए, इन तीनों पर 3 लाख का भार आया। मुख्य मन्त्री न शलेन्द्र को अलग लेजाकर कहा—यह तो आपकी बात रख रहा हू लेकिन और कोई आए तो 50

मुख्य मन्त्री बगले पर पहुचे, तो रसोईया तैयार बैठा था उसने जल्दी से रोटी सेकी और ला थालिया लगा दी दमयन्ती ने कहा—आप बहुत थके हैं ड्रिंक नही लेंगे।

मुख्य म त्री ने नौकर को आवाज दी, वह एक बोतल और दो गिलास ले आया दमय ती ने कहा—भाई यह नही कसर कस्तूरी की लाओ।

वह दूसरी बोतल उठा लाया—नौकर ने काक खोला और दमयन्ती गिलासा में डालती रही

मुख्य म त्री ने तब उसका हाथ पकडा—नहीं अब बरदास्त से बाहर हो रहा है रात को कोई सूचना आ सकती है टेलीफोन कमरे मे लेकर सो रहा हू दुघटनाए हो रही है स्थिति बेकाबू होती जा रही है।

दमयन्ती—नही सर आज आप सबको भूल जाए मैं टेलीफान का तार निकाल देती हू आवाज आएगी ही नहीं।

मुख्य म त्री ने कहा—भाई किवाड बन्द कर दो, और इनकी व्यवस्था कहा की है बैठक मे—

सब ठीक कर दिया है 11 बज रहे हैं नीद का समय हो रहा है। नौकर के सामने दमय ती बठक म चली गई और कावाड बद कर दिए नौकर ने 5 मिनिट पर दवाए फिर मुख्य म त्री ने कहा, अच्छा अब जाओ वह चला गया तो बठक का कीवाड खोला—दमु, आवो।

और दमय ती शयनकक्ष मे आ गई और मुख्य म त्री के पास पलग पर लट गयी पूरे 6 माह बाद मौका मिला है आपके अहसाना को नही भूल सकती निलम्बन हटा साथ ही पदोन्नति कर यहां बुला लिया और अब मुझे आज्ञा दीजिए मैं आपकी सेवा कर सकू किसी मूख को बरगलाना हो, किसी को भय दिखाना हो।

मुख्य मन्त्री ने करवट बदली, दमु और वे उसे पास म खीच कर उसमे डूब गए। जब चेतना हुए तो बोले—महेन्द्रसिह जो मेरे कारण नहीं आपके कारण अपनी जिद्द को छोड पाया लेकिन आपने देखा उसके मन मे जबरदस्त उहा पोह है जसे निर्णय की स्थिति मे नही है खीचतान चल रही है अच्छा है अब वह ऐसा कोई कदम नही उठाएगा जिसस शासन पर आच आए।

दमयन्ती—कुछ आदमी बड़े भावुक होते हैं वे द्वन्द्वों मे नही जी सकते। उनके मन की शान्ति समाप्त हो जाती है मुझे आज्ञा हो तो जब तक आपका वायु मण्डल दूषित रहे मैं यहा ही रहू आप अकेले हैं कही महेन्द्रसिंह जी का भूत आप पर सवार न हो जाए।

मुख्य मन्त्री—इसे आप अपना घर मानिए यहा ही आकर रहे तो कोई आपत्ति है ?

खैर अभी तो यहा ही हू आपकी सुविधा का ख्याल रखूगी और कार्य के बोझ से हल्का करूगी स्त्री का पास रहना आवश्यक है।

□

मुख्य मन्त्री जब सुबह दफ्तर म आकर बैठे तो अल्प सख्यक वर्ग के कुछ विधायक मिलने आए। विधान सभा की कुल 282 सीटो म 8 मुसलिम प्रतिनिधि बनकर गए—उन्होने एक आवेदन दिया और सत्ता दल के सदस्य ने ही कहा—सर मन्त्री मण्डल मे हमारा प्रतिनिधित्व बहुत कम है आप कम से कम 2 अल्प सख्यको को लें सेवामे भी उनका स्थान सुरक्षित हो, साम्प्रदायिक दगो मे पुलिस का हाथ रहता है इसलिए पुलिस मे 50 प्रतिशत अल्प सख्यक को मिले ताकि साम्प्रदायिक दगो को रोका जा सके।

मुख्य मन्त्री ने कहा—मैं मन्त्री मण्डल से विचार कर लूगा, रहा मन्त्री बनने का प्रश्न—तो आग जब भी सख्या में वृद्धि होगी मैं पूरा ध्यान रखूगा चुनाव सिर पर आ रहे हैं, मैं भला आपको भूल सकता हू आपकी उचित मांगों पर पूरा विचार होगा।

शलेन्द्रकुमार सूर्य देव आय को ही नही तीन अन्य विपक्षी सदस्यो को लेकर आया और उन्होंने सत्ता पक्ष म आन की घोषणा की।

उनको निजी सचिव ने शलेन्द्र के द्वारा मांगी रकम दिला दी और उनके घोषणा पत्र अध्यक्ष विधान सभा को भेज दिए, इन तीनों पर 3 लाख का भार आया। मुख्य मन्त्री ने शलेन्द्र को अलग लेजाकर कहा—यह तो आपकी बात रख रहा हू, लेकिन और कोई आए तो 50

हजार से ऊपर तय नहीं करता आपको मालूम है हम बदनाम हैं, पर फिर जैसे होगा देखा जाएगा।

दमयन्ती ने आज छुट्टी ले रखी थी, वह बंगले पर ही रही, उसने चपरासी को भेज कर स्लिप मुख्यमन्त्री के पास भेजी।

मुख्य मन्त्री जल्दी उठकर आ गए लीजिए नाश्ता ठंडा हो रहा है उसके बाद खूब व्यस्त रहिए भोजन कब करेंगे ?

बस 1॥ बजे।

मुख्य मन्त्री ने एक चपत उसके गाल पर लगाई।

फिर वे उठकर कार्यालय में चले गए मिलने वालों का तांता लगा था। दल के साथी शायद यह जानकर आ रहे हैं कि यह सरकार अब गिरेगी जो भी आदेश लेना हो ले लो।

रामपुरा के भूतपूर्व राजा आए वे सीधे बैठक में आ गए मुख्य मन्त्री उठकर बैठक में आए चाय की व्यवस्था की गई।

सर जो सुन रहा हूं वह सही नहीं हो फिर भी मेरी शक्ति आपके साथ है जो आज्ञा हो कहला दीजिए ?

आपका सहयोग अपेक्षित है मैं उस पर विश्वास मानकर चलता हूं।

यह तो है।

इतने में खबर आई कि खान मन्त्री और उद्योग मन्त्री के घर पर बम फेंके गए धारा और जनता ने उनको घेर रखा है क्या हालत है कुछ सूचना नहीं मिल रही है मैं स्वयम जा रहा हूं

फिर घन्टी बजी — सर खान मन्त्री और उद्योग मन्त्री दोनों मारे गये हैं मैंने लोगों को तितर बितर करने के लिए गोलियां चलाई हैं।

मुख्य मन्त्री स्तब्ध हक्का बक्का।

एक भीड़ मुख्य मन्त्री के बंगले के पास आ गई बाहर पुलिस का पहरा है। डिप्टी सुप्रिंटेन्डेन्ट ने फोन किया लगभग 200 सिपाही 5 मिनट में मशीन गनों से लेश आ पहुंचे।

डि सु ने आदेश सुनाया, सब तितर बितर हो जाए नहीं तो   आगे नहीं सुनाई दिया। भीड मुख्य मन्त्री मुर्दाबाद के नारे लगा रही थी और विभिन्न मांगो को दुहरा रहे थे, भ्रष्टाचार आपा धापी बन्द करो, जनता के सब्र के बांध टूट गए हैं, सलाव चला आ रहा है, बाहर आवो, अपनी गोलियां हमें मारें उससे पहले आप स्वागत स्वीकार कर हमारे समक्ष आत्म समर्पण करो नहीं तो हम राज्य में सर्वनाश कर देंगे।

इतने म अश्रु गैस के गोले फेंके गए। गोलियों की बौछार से भीड तितर बितर होने लगी, एक कोने पर 10-12 व्यक्ति बठ पुलिस पर गोलियां बरसा रहे थे उसने कहा – यह राज खत्म होना चाहिए पुलिस हट जाए नहीं हटेगी तो सब मौत के घाट उतारे जाए गे।

मुख्य म त्री अपने शयन कक्ष म थे दमयन्ती भी उनके साथ थी, सर इतनी बडी बगावत, यह नियन्त्रित नहीं हुआ तो फिर कोई म त्री या अधिकारी सुरक्षित नहीं है।

गृह मन्त्री का फोन आया–सर, आई जी पी की छाती म गोली लगी वे मारे गये हैं। अब चारों ओर से भीड आपकी तरफ आ रही है मैंने फौज बुलाली है।

मुख्य म त्री उदास उद्विग्न था उसके चेहरे पर मलीनता छाई थी।

वे बड बडाए मन रिश्वत कभी नहीं ली न लू गा। दल चलाने क लिए चुनाव लड़ने के लिए पसा आता है उसी मे खर्चा होता है।

इतने मे एडिशनल आई जी पी आ गए, सर बहुत बड़ी बगावत है इतनी बडी आक्रामक स्थिति मने नहीं देखी, हमने पूरी व्यवस्था करली है फिर भी मैं बुलेट प्रूफ गाडी ले आया हू पीछे के द्वार पर है आप को अधिक सुरक्षित स्थान पर पहुचाना है।

नहीं आई जी पी साहब नहीं मे उनको फेस करू गा, वे ईमानदार हैं तो मैं भी हू, उन्हें आक्रमण का अवसर है और मैं उस आक्रमण को सहने का हौंसला रखता हू, आप सुरक्षा का यहीं इन्तजाम

कर दें म बगला छोडकर नही जाऊ गा, इस समय मने कायरता दिखा दी तो अधिकारियो का मोरल गिर जाएगा।

भीड बहुत पास आ गयी थी, भाई जी ने फोन किया जवाब था फौज के सिपाही रवाना हो गए।

थाने मे फोन किया वहा से भी जाबता मगवाया।

मुख्यम त्री ने सब मन्त्रियो को फोन करवाया, बाकी सब सुरक्षित है स्वायत्त शासन मन्त्री का बगला घिरा हुआ है।

भाई जी ने फोन कर रिजव पुलिस फोस वहा भेजा।

माइक पर अनजान स्थल से आवाज आ रही थी, भ्रष्टाचार को समाप्त करो या कुर्सी छोड दो।

इतने म फौज आ पहुची और उसके चारो ओर कोरडन कर लिया और छिपे हुए विद्रोहियों पर काबू पा लिया।

सारे शहर म करफ्यू लगा दिया था सडक पर जो भी दिखाई दे उस पर गोली मारने का आदेश था। सब नियम, धाराए और उपनियम समाप्त थे।

मुख्यमन्त्री ने कहा—क्या लोकत त्र म भी वही सुरक्षा के उपाय काम मे लिए जाते हैं जो फौजी हुकूमत मे। आज फौज के हाथ म शासन है और वह मुझे बचा रही है और जनता को भून रही है।

भाई जी विद्वान सज्जन थ—सर जब भीड सारी सीमाए लाघ दे, अनुशासन भग हो जाए तो क्या उपदेश काम देंगे।

मैं सोच रहा था मैं आज जनता के सामने चला जाऊ और अपने आप को समपण कर सीमायें कायम रखू जो शातिकाल मे होती हैं।

दमयन्ती की आखें तर थी इतना वडा रिस्क आपको कोई अधिकारी नही लेने देगा और सबसे पहले मैं आपका रास्ता रोकू गी, जो बीता उसे भूला दीजिए जनता मे नया ज्ञान उदय होगा और वह आप जैसे महान पुरुष का सम्मान करेंगे, नही तो मैं अपनी कुर्बानी देकर उस सीमा को कायम करू गी जो आपकी कुर्बानी से नही आएगी।

/

मुख्य मन्त्री–यह मेरी कायरता थी फिर हम निर्वाचित प्रतिनिधि कहां रहे? खैर, ये सब स्वप्न की बात हो गई। आप सब थानों से शहरों से पूरा ब्यौरा मंगवालें और उद्योग मन्त्री और खान मन्त्री के दाह संस्कार की व्यवस्था भी पुलिस की निगरानी में कराना होगा मैं स्वयं उस संस्कार में शरीक होऊंगा।

थानेदार सारी सूचनायें इकट्ठी कर रहा था।

भाई जी ने कहा–मर अब सब जगह काबू में है कुछ पुलिस के सिपाही दो थानेदार और एक डिप्टी सुप्रिटेण्डेण्ट के मारे जाने की खबर मिली है। दूसरे शहरों और कस्बों में शांति है। दूर दराज के थानों से रपट आना शेष है, हम काबू कर लेंगे आप निश्चित रहें।

मुख्य मन्त्री ने कहा–मुझे स्पीकर साहब से बात करवादें, कल विधान सभा सत्र प्रारम्भ हो रहा है।

भाई जी साहब–मैं सोचता हूं सत्रावसान प्रारम्भ होने से पूर्व ही करवालें।

हां आप मुझे राज्यपाल से बात करवादें, विधि सचिव से भी–प्रारम्भ होने से पूर्व ही मीटिंग बदली जाए या सत्रावसान किया जा सकेगा, सत्रावसान तो एक बार प्रारम्भ हो जाए उसके बाद ही होगा।

फोन मिला–राज्यपाल नहीं थे, विधि सचिव था।

ठीक है, प्रारम्भ होने से पहले हो सकती है यही आपका कहना है।

स्पीकर का फोन आया–देखिए सारे शहर में कर्फ्यू लगा है हालात खतरनाक होने जा रहे हैं, दो मन्त्री मौत के घाट उतार दिये गये हैं। मैं भीड़ से घिरा बैठा हूं, मैं सोचता हूं कल की बैठक का स्थगन अभी से कर दिया जाए। विधायकों को सूचना तार, टेलीफोन से करादी जाय फिर भी कोई आ पहुंचेगा तो सच ही तो मांगेगा।

भाई जी ने कहा–मैं उद्योग और खनिज मन्त्री के घर जाना चाहूंगा और आप बराबर नजर रखें इन विप्लवियों पर, भाई जी की साहब के घर भी जाऊंगा।

ग्राज मैने घरों की तलाशी का ग्रादेश जारी कर दिया है। पुलिस ग्रौर फौज मुस्तैदी से काम मे लगे हैं, सूट एट साइड म ग्रनेको जख्मी हुए हैं, दो चार मार भी गए हैं इतना बडा विद्रोह पहले कभी नही हुग्रा।

गृह मन्त्री–ग्राप निश्चित रहे ग्रापके घर ग्रौर भाई के घर डाका पडा है तीन मारे गए हैं पूरी खबर की इन्तजार है।

मुख्य मन्त्री–मेरे बड़े भाई का फोन ग्राया है, मैं सोचता हू उनके लडके पत्नि, बच्चिया मारे गए होगे न, हा भाई, ऐसा ही बता रहा था तीन के मरने की खबर है बाकी घायल हैं, पर क्या करें ? लेकिन ग्राज मेरे सामने सब मेरे सम्बन्धी हैं सब की सम्पत्ति मेरी सम्पत्ति है, किस को तरजीह दू जो व्यवस्था सब जगह कराई जा रही है वसी व्यवस्था वहा भी करने को कह चुका हू, मेरे भाई के भी पीछे पडे हैं मैं क्या करता ? व राज्य छोड कर बाहर जायें कायरता, क्या हम उनको सुरक्षा नही दे सकते ? मेरे खिलाफ भी वैसी ही बगावत है, मोर्चे पर पुलिस ग्रौर मिलिटरी नही पहुचती तो–क्या नही हो जाता ?

भाई जी–सर शिवदानपुरा का थाना जला दिया गया, दो सिपाही मारे गए हैं म सोचता हू, बडे शहरो ग्रौर कस्बों म 24 घटे का कफ्यू लगा दिया जाए स्थिति बे काबू होती जा रही है, राज्य की सत्ता को चुनौती है, सत्ता हार गई तो फिर गुण्डों का राज होगा, पुलिस, फोज सब भयहीन हो जाएगी।

मुख्य मन्त्री–ग्राप ठीक कह रहे हैं, जबसे शासनतन्त्र लागू हुग्रा तबसे बराबर एक स्थिति चली ग्रा रही है कि वह ग्रपने पर किसी तरह का ग्राक्रमण बर्दास्त नही करती ग्रौर पूरी ताकत से उसे निपटती है। विश्व की क्रान्तिया के पीछे यही रहा है फिर एक शासनतन्त्र जिस सत्य को लेकर दूसरा नया शासनतन्त्र उसी सत्य का लेकर ग्राविर्भूत हुग्रा व्यक्ति बदले, शक्ति का स्वरूप बदला लेकिन शासन की सत्ता नही बदली वह चाहे राजा का राज हो उन राजाग्रो म राम का राज्य हो या ग्रग्रेज सा का हुकूमत पर जोर नही ग्राना चाहिये जनतन्त्र म भी यही हुग्रा वह जनतन्त्र चाहे एक दल का था या बहु दलीय।

इसलिए हुकूमत खतरा बर्दास्त नहीं कर सकती।

गृ" म त्री—सर, आप अभी बाहर न निकलें और हम म"त्रीगण के दाह संस्कार के समय सारी व्यवस्था करा लेंगे तब आप आयें, उस समय शोक क वातावरण म कोई गडबडी करना नही चाहेगा और अगर करता है तो जनता स्वय उससे निपट लगी पुलिस, फौज की आवश्यकता नही रहती जनता अपनी रक्षक बन जायगी।

आज चार बजे उनकी अर्थी निकलेगा लेकिन यह बडा भयानक हादसा है। बर्मा में नेविन का मन्त्रीमण्डल एक साथ मौत के घाट उतारा गया, आज आपक म"त्री मण्डल के दो साथी चल बसे। आप पर भी घात थी पुलिस की सतर्कता से बचाव हो गया। मैं भी इसी तरह बच कर आया हू सत्ता के प्रति इतना बडा विद्रोह हमारी कमजोरियों की तरफ ध्यान आकर्षित करता है, लोकत त्र की रक्षा होनी चाहि ए।

तो मैं चल् 3 बजे भाई जी पूरे जाब्ते के साथ आपके पास आ जायेंग बावली जनता का कोप भाजन बनना बुद्धिमानी नहीं है।☐

महे"द्रसिंह उद्योग म"त्री के मृत शरीर के पास आकर खडा रहा वे उनके भाई हैं वह रो नही सका। स्तब्ध चकित खडा रहा और लौट आया।

अपने कमरे मे गया कीवाड ब"द किए, वापिस खोला फिर स्नान किया कपडे बदले गोखडे से बाहर झांका अस्थिर खडा रहा। क्षितिज तक आकाश मे सूनापन झलक रहा था वह वापिस लौटा।

फिर पत्र लिखा और उसे वहीं टेबुल पर रखा।

ब"दूक उठाई उस अपनी ठुड्डी के नीच लगाई और बटन को अगूठे स दबाया और वह धडाम से जमीन पर गिर पडा खून बह चला ब दूक भी लुढक गई।

फौरन मुख्य म"त्री को सूचना दी गई नौकर चाकर भयभीत आसू बहा रहे थे।

उनके मौसेरे भा" सग्रामसिंह आवाज सुनकर लपक कर आये।

, सागर वि"श्वविद्यालय सागर—470003

धीरे धीरे भीड बढ गयी, कमर म ,
इकट्ठे हो गए। ~~

हरिजन आदिवासी मुह लटकाए खड़े थे, दरोगे रो रहे थे। संग्रामसिंह ने चारो तरफ देखा।

इतने म मुख्य मन्त्री जी आ गए, लोगो ने रास्ता दिया और वे सीधे महेन्द्रसिंह जी के कमरे म पहुच।

महेन्द्रसिंह जी के शरीर पर श्वेत वस्त्र डाल रखा था, कमरे में खून ही खून था।

संग्रामसिंह ने टेबुल से उठा कर पत्र मुख्य मन्त्री को दिया, वे गम जदा थे, आखे आसुआ से तर थीं।

पत्र मे लिखा था–'मैं स्वय आत्म हत्या कर रहा हू अपने पापो का ढेर दिखाई दे रहा है और मैं उसे बरदास्त नही कर सकता। मेरे पास एक ही उपाय शष था कि मैं आम जनता के सामने अपन पापों को स्वीकार कर लू और उस वजन से हल्का हो जाऊ, और भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न करू, लेकिन वह मैं कर नही सका, मेरी स्वीकृति म मेरे कई मित्र उघडते, कई नारियों को कलकित होना पड़ता। फिर भी मैं यह तो स्वीकार करू गा कि मैने भ्रष्टाचार किया है,पापाचारी की है कई नारियो के सतीत्व के साथ खिलवाड किया है। वे बेचारी विवश हमारे समक्ष समर्पित होती गई। राज्य का अधिकारी जब नारी के सतीत्व से खेल कर उसका काय सम्पादन करता है तब कितनी नारिया अपने सतीत्व की रक्षा कर पाती हैं ?

"मेरी बहन को डाकू उठा ले गय और उसके साथ बलात्कार किया डाक्टरों की पोस्ट माटम रिपोट साफ है। एक ने नही कई ने उसके साथ बलात्कार किया। मेरी लडकी अब भी लापता है। उसका जीवन अधर मे होगा या मार दी गई होगी? उसके सतीत्व की रक्षा भी कसे हो पाती। यह सब हुआ मरे कर्मों से, किया मैने फल उनको भोगना पडा। मैंने उन युवा युवतियों के साथ वासना की पूर्ति कर उनके सवा किले और तरक्की करवाई है जिनका मैं [पिता हो सकता था, जवान रक्त और शरीर क साथ खिलवाड की, लोगो से रिश्वत ली और सिफारिश कर उनका काम करवाया। इस कई काम न्याय की

. ... बाहर से कई अधिकार छीने गये कई की बेबात सम्पदा लुटाई गयी राज्य से ऐसी रियायतें दिलाई जो किसी राज्य में प्रचलित नहीं थी।

'अनेकों के अधिकारों को समाप्त किए और पैसे लेकर अनाधिकृत व्यक्तियों को उनका हक छीन कर दिलाया।

राज्य को करोडों का नुकसान देकर लाखों रुपये लेकर कुछेक सेठों को दिलाए। केवल अपनी तिजोरियों को भरने के लिए अपने ऐश आराम का सामान मोहिया करने में अनेकों के हक छीने हैं।

मेरे सामने बलात्कार से व्यथित मेरी बहन और बेटी थी जो मुझ से याचना कर रही थी कि मैं इनके सतीत्व की रक्षा करूं लेकिन वह सब मेरी पहुंच के बाहर था लेकिन यह सब प्रतिशोध से किया गया।

'जब से मेरी बहन गायब हुई या बच्ची को उठा ले गए मेरा पक्का विश्वास बन गया कि ये मेरे कर्मों का फल है जनता ने मुझसे बदला लिया है इसी कारण सार्वजनिक रूप से इन पापों का बखान कर मैं उनके सामने रखूं जनता मेरे पापों को जानकर क्षमा करे या मुझे फांसी पर लटकाए या कोड़ों से मार कर मेरा प्राण ले।

'लेकिन इन पापों के प्रकटीकरण के अलावा मेरे पास मानसिक शांति का कोई उपाय नहीं था। मैं जल रहा था शायद मेरी बहन और पुत्री को उठाकर न ले जाते तो मैं अपने पापों का कभी अनुभव नहीं करता और इसी प्रकार पाप की गठरी सिर पर लिए मैं मौत को गले लगाता। लेकिन इनको कर मैं कितनों को तबाह करता वे सब नारियां जिनको मैंने भोगा है वे क्या वैश्यायें थी, या राज्य की अनियमितताओं की विवश शिकार? हमने ऐसे मार्ग अपनाये जिनमें नारियाँ विवश होकर अपना सतीत्व बेचती हैं और मैं उसका हक खरीददार रहा हूं। प्रभु मुझे क्षमा करे, जीवित रहकर उनकी विवश आंखों में जलता घृणा का दीपक नहीं देख सकता और इसीलिए मैं आत्म हत्या कर रहा हूं। मेरी मौत से राज्य की कार्य प्रणाली में अन्तर आये यह शुद्ध बने, नियमित हो, इसी उद्देश्य से मैं इस मार्ग पर अग्रसर हुआ हूं प्रभु मुझे क्षमा करे।"